बिखरे मोती

लेखक

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

बिखरे मोती

नज़रसानी व तसहीहशुदा एडीशन

(जिल्द-7)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह

एस० ख़ालिद निज़ामी

किताब का नाम	:	बिखरे मोती, जिल्द-7
हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह	:	एस० ख़ालिद निज़ामी
तादाद	:	1100
पहली बार	:	2012

Published by

فریدبکڈپو(پرائیویٹ)لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off: 2158, M. P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N Delhi-2
Ph.: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail : farid@ndf.vsnl.in Websites : faridexport.com, faridbook.com

Bikhre Moti, Part-7
Pages : 302 Size : 23x36/16
First Edition : 2012

Branches:

DELHI : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 011-2326 5406, 2325 6590

MUMBAI : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
208, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan
Dongri, Mumbai - 400009 Ph.: 022-2373 1786, 2377 4786

Composed at : Uruf Enterprises, 09313675461

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

तहरीर

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ज़ैद मुजद्दिहुम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ اَمَّا بَعْدُ:

नह्मदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम। अम्मा बअद!

"बिखरे मोती' मेरी पसन्दीदा बातों का मजमूआ है। इसके छः हिस्से नज़रसानी के बाद शाये हो चुके हैं। सातवाँ हिस्सा नज़रसानी और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद शाये करने की इजाज़त हाजी नासिर ख़ान, फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली, को दे रहा हूँ।

फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली से जो ऐडीशन शाया हो रहा है, उसमें ग़लतियों की तसहीह का पूरा एहतिमाम किया गया है और मुफ़ीद इज़ाफ़े भी किए गए हैं। इसलिए नाशिर पुरानी किताबों को शाया न करें, वस्सलाम।

अल्लाह की रिज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

तक़रीज़

मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मुहद्दिस कबीर, फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत मौलाना
मुफ़्ती सय्यद अहमद साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम

(उस्ताद : हदीस दारुल उलूम देवबन्द और शारेह हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ
الْمُرْسَلِيْنَ، وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ، أَمَّا بَعْدُ:

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन,
वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल मुर्सलीन, व अ़ला आलिही
व सहबिही अज्मईन, अम्मा बअ़द :

'बिखरे मोती' में जनाब मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ने गुलहाए रंग-रंग चुनकर हसीन गुलदस्ता तैयार किया है। यह किताब मौलाना ज़ैद मुजद्दिहिम का कश्कूल है, जिसमें आपने क़ीमती मोती इकट्ठा किए हैं। एक हसीन दस्तरख़ान है जिसपर अनवाअ़ व अक़साम के लज़ीज़ खाने चुने गए हैं। इस किताब में जहाँ तफ़्सीरी फ़वाइद व नुकात हैं, हदीसी नसीहतें व इर्शादात भी हैं। दावती और तब्लीग़ी चाशनी लिए हुए सहाबा और बाद के अकाबिर के वाक़िआत भी हैं जिनसे दिल जल्द असरपज़ीर होता है। नीज़ ऐसी दुआएँ भी शामिले किताब की गई हैं जो गौना अमलियात का रंग लिए हुए हैं। इस तरह किताब बहुत दिलचस्प बन गई है।

नीज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी, उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द की नज़रसानी ने इसकी एतिबारियत में इज़ाफ़ा किया है, गोया किताब में चार चाँद लगाए हैं। इसलिए उम्मीद है कि किताब लोगों के लिए बेहद मुफ़ीद साबित होगी। अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए और मुसन्निफ़ के लिए ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनाए और उम्मत को उससे फ़ैज़याब फ़रमाए। वस्सलाम।

सय्यद अहमद अफ़ाउल्लाह अन्हु पालनपुरी

तआरुफ़ व तबसिरा

अज़ हज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दावत व तब्लीग़ के नामवर ख़तीब व वाइज़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (जिन्होंने अपनी पूरी उम्र दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी थी, जो हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) के ख़ास तर्बियतयाफ़्ता थे, और हज़रत जी की वफ़ात के बाद तो बड़े इज्तिमाआत को उमूमन मौलाना ही ख़िताब फ़रमाते थे। मौलाना की तक़रीर बड़ी मुवस्सिर और आम-फ़हम होती थी। दुआ भी तवील फ़रमाते थे। मौलाना यूनुस साहब इन्हीं) के फ़रज़न्द अर्जमन्द हैं और मौलाना की वफ़ात के बाद अपने वक़्त का बड़ा हिस्सा मर्कज़ निज़ामुद्दीन में गुज़ारते हैं। मौलाना को मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि से बैअ़त व ख़िलाफ़त का शर्फ़ भी हासिल है, जिसकी वजह से हज़रत की तस्नीफ़ात का भी ज़ौक़ व शौक़ के साथ मुताला फ़रमाते हैं। बड़े इज्तिमाआत में शिर्कत का पूरा एहतिमाम रहता है। जिस वक़्त ये सतरें लिखीं जा रही हैं, दो अहम इज्तिमाआत में शिर्कत के बाद यानी 9 ज़िलहिज्जा को इश्क़ व सरमस्ती के आलम में अरफ़ात में होंगे। अल्लाह तआला हज्जे-मबरूर नसीब फ़रमाए, यह एक दूर-इफ़्तादा की दुआ है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अंतस्-समीउल अ़लीम०

मौलाना अपनी तक़रीर में अहादीस शरीफ़ा और तक़ारीर और बुज़ुर्गों के तज़्किरों में मज़्कूर मुवस्सिर वाक़िआत व हिकायात और नसायह व हुक्म को बयान करते, और सामईन के दिलों को गर्माते और दीनी ग़ैरत व हमीयत को जगाते हैं। मौलाना अर्से से ऐसे मुअस्सिर

वाक़िआत, तालीमात और बाज़ ज़रूरी मसाइल व फ़तावा की बयाज़ भी तैयार करते जाते हैं, जो वाक़ई बिखरे मोतियों का बड़ा दिलकश हार है, जो पढ़नेवाले के दिल को खींचता है और रूह को बालीदगी अता करता है, ख़ुसूसन रमज़ानुल-मुबारक में मौलाना मौसूफ़ का तरावीह के बाद मुम्बई में दो जगह वअ़्ज़ और तफ़्सीर क़ुरआन पाक बयान करने का मामूल है, जिसका सिलसिला बारह बजे रात तक जारी रहता है और इख़्तिताम गुलूगीर आवाज़ में तवील दुआ पर होता है। लोगों ने दूर-दूर कनेक्शन ले रखे हैं जिससे घरों में मस्तूरात भी शौक़ के साथ मौलाना के मुअस्सिर वअ़्ज़ को सुनती हैं, उन तक़रीरों और बयान में मौलाना के उन्हीं बिखरे मोतियों को मौक़ा व मुनासिबत से ज़ीनते बयान व तक़रीर बनाते जाते हैं; जो अब किताबी शक्ल में आ गए हैं। उन बिखरे मोतियों का मुताला बड़ा मुफ़ीद और दिल को गर्मानेवाला है, ज़बान व बयान असान व रवाँ है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इससे ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

मौलाना शम्सुल नदवी

तक़रीज़

मौलाना मुफ़्ती अमीन साहब पालनपुरी

(उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल-उलूम देवबन्द)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَحْدَہٗ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنْ لَّا نَبِیَّ بَعْدَہٗ اَمَّا بَعْدُ:

अलहम्दुलिल्लाहि वह्दहू, वस्सलातु वस्सलामु अला मन ला
नबिय-य बअदहू, अम्मा बअद :

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी; हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स-सिर्रहू के बड़े साहबज़ादे हैं। मौसूफ़ ने सन् 1393 हि० मुताबिक़ सन् 1973 ई० में मज़ाहिर उलूम सहारनपुर से उलूमे मुतदावला से फ़राग़त हासिल की है। तालिबे इल्मी के ज़माने से आपका महबूब मश्ग़ला अस्लाफ़ व अकाबिर की किताबों का मुताला और पसन्दीदा बातों को कापी में महफ़ूज़ करना है।

उलूम मुतदावला से फ़राग़त के बाद एक तवील अर्से तक वालिद मुह्तरम के ज़ेरे-साया दावत व तब्लीग़ के काम में शबो-रोज़ लगे रहे और वालिद मुह्तरम के औसाफ़ व कमालात को जज़्ब करते रहे। जिन हज़रात ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स सिर्रहू के बयानात सुने हैं और उसको क़रीब से देखा है, वह इस बात की खुले दिल से गवाही देंगे कि मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब अख़्लाक़ व आदात और औसाफ़ व कमालात में उमर-सानी हैं।

दावत व तब्लीग़ के काम से मौलाना जो दिलचस्पी रखते हैं वह 'अज़हर मिनश्शम्स' है, और रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद मुम्बई में मौसूफ़ के जो बयानात होते हैं उनसे आपकी उलूमे-क़ुरआन के साथ मुनासिबत अयाँ है। हज़ारों आदमी अपने घरों में कनेक्शन सिर्फ़ मौलाना

के बयानात सुनने के लिए रखते हैं। इस तरह मर्दों के साथ-साथ औरतें भी आपके बयानों से ख़ूब इस्तिफ़ादा करती हैं।

दूसरी तरफ़ मौलाना उन पसन्दीदा बातों को जो आप तालिबे इल्मी के ज़माने से अब तक मुंतख़ब व महफ़ूज़ फ़रमा रहे हैं 'बिखरे मोती' के नाम से शाये फ़रमा कर पूरी उम्मते-मुस्लिमा को फ़ैज़ पहुंचा रहे हैं। बिला शुब्हा यह किताब इस्मे-बामुसम्मा है, जो ख़ुशक़िस्मत उसको देखता है, पूरा पढ़े बग़ैर दम नहीं लेता।

इस किताब के कई हिस्से 'फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली' से शाये (प्रकाशित) हो चुके हैं, अब सातवाँ हिस्सा पहली बार हिन्दी में 'फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली' से शाया हो रहा है, साबिक़ा हिस्सों की तरह इस हिस्से में भी मौलाना ने इबरतआमेज़ वाक़िआत, निहायत मुफ़ीद मज़ामीन और कारआम बातें जमा कर दी हैं। अल्लाह तआला इस किताब को उम्मत के लिए रुश्दो-हिदायत का ज़रीया बनाए और मौसूफ़ को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए। आमीन या रब्बुल आलमीन!

मुहम्मद अमीन पालनपुरी

ख़ादिम हदीस व फ़िक़्ह

दारुल उलूम देवबन्द

अर्ज़े-नाशिर

इस किताब (बिखरे मोती) के सभी तसहीह शुदा हिस्से उर्दू में फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के कई नाशिराने कुतुब ने पाकिस्तानी ऐडीशन को जूं का तूं शाया किया है। उन ऐडीशनों में बहुत ज़्यादा ग़लतियाँ हैं, नीज़ अक्सर अरबी इबारतों पर आराब भी नहीं हैं, और बाज़ जगह सिर्फ़ अरबी इबारत है, उसका तर्जमा नहीं है। मगर किसी नाशिर ने उसकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

बिल आख़िर साहिबे किताब हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ने नाशिर से राब्ता किया और इग़लात की तसहीह, अरबी इबारतों पर आराब लगाने और उनके तर्जमे करने की फ़रमाइश की। इसी फ़रमाइश का नतीजा है कि बिखरे मोती (उर्दू) के सभी हिस्से और हिन्दी के छः हिस्से शाया हो चुके हैं। सातवाँ हिस्सा आपके हाथ में है।

अलग़र्ज़ किताब को आसान और उमदा बनाने की पूरी कोशिश की गई है, यह महज़ अल्लाह जल्ले शानुहू का फ़ज़्ल व करम और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की दुआओं की बरकत है। अल्लाह तआला इस किताब को मौलाना और उनके अहले ख़ाना के लिए सदक़-ए-जारियह् और क़ारईन के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रीया बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहम्मद नासिर ख़ान
फ़रीद बुक डिपो,
नई दिल्ली-2

नाबीनाओं के लिए ख़ास फ़ज़ीलत

सवाल : जन्नत में अल्लाह का दीदार सबसे पहले कौन करेगा?

जवाब : हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि सबसे पहले जो शख़्स अल्लाह तआला के चेहरे-अक़दस की ज़ियारत करेगा, वह इस दुनिया का नाबीना (अंधा) होगा। और हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला जन्नतवालों के सामने तजल्ली फ़रमाएँगे और जन्नती अल्लाह की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होंगे तो जन्नत की तमाम नेमतें भूल जाएँगे।

अजब तेरी है, ऐ महबूब! सूरत
नज़र से गिर गए सब ख़ूबसूरत

(जन्नत के हसीन मनाज़िर, पेज : 591)

वे गुनाह जिसकी वजह से अल्लाह तआला हवाओं को पागल ज़मीनों को बेवफ़ा और समुन्दरों को सरकश बना देते हैं

हज़रत अली (रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत पन्द्रह (15) क़िस्म की बुराइयों का इरतिकाब करेगी तो उम्मत पर बलाएँ और मुसीबतें आ पड़ेंगी। किसी ने पूछा : या रसूलुल्लाह! वे क्या-क्या बुराइयाँ हैं? आँहज़रत (सल्ल०) ने फ़रमाया :

1. जब माले-ग़नीमतको शख़्सी दौलत बना लिया जाएगा।
2. और अमानत को ग़नीमत समझ लिया जाएगा।
3. और ज़कात को तावान समझ लिया जाएगा।
4. और इल्मे-दीन को दुनिया-तलबी के लिए सीखा जाएगा।

5. मर्द अपनी बीवी की इताअत करने लगेगा।
6. और अपनी माँ की नाफ़रमानी करने लगेगा।
7. और आदमी अपने दोस्त के साथ नेक सुलूक करेगा और अपने बाप के साथ सख़्ती और बदअख़्लाक़ी से पेश आएगा।
8. और मस्जिद में शोर व ग़ुल होने लगेगा।
9. जब क़बीले का सरदार उनका बदतरीन शख़्स बन जाएगा।
10. और क़ौम का सरबराह ज़लील-तरीन शख़्स होगा।
11. आदमी का ऐज़ाज़ व इकराम उसके शर से बचने के लिए किया जाएगा।
12. लोग कसरत से शराब पीने लगेंगे।
13. मर्द भी रेशम के कपड़े पहनने लगेंगे।
14. नाचने-गानेवाली औरतों और गाने बजाने की चीज़ों को अपना लिया जाएगा।
15. इस उम्मत के पिछले लोग अगलों पर लानत भेजेंगे।

तो उस वक़्त सुर्ख़ आँधी, ज़लज़ला, ज़मीन में धँस जाने, शक्ल बिगड़ जाने और पत्थरों के बरसने का इंतिज़ार करो। और उन निशानियों का इंतिज़ार करो जो एक के बाद दूसरे इस तरह आएँगी जैसे किसी हार की लड़ी टूट जाने से उसके दोनों एक के बाद दूसरे बिखरते चले जाते हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़ : 2/44)

वालिदा की फ़रमाँबरदारी का अजीब वाक़िआ

हज़रत मूसा (अलैहि०) ने पूछा, "या अल्लाह! मेरा जन्नत का साथी कौन है"? तो फ़रमायाा कि फ़लाँ क़साई। क़साई का पता बताया। अल्लाह ने न किसी अबदाल का, न किसी क़ुतुब का, न किसी शहीद का, न मुहदिद्स का नाम न बताया।

कहा कि फ़लाँ क़साई! हज़रत मूसा (अलैहि०) हैरान हो गए। फिर

उस क़साई को देखने चले गए। देखा कि क़साई बाज़ार में बैठा गोश्त वेच रहा है। शाम ढली उसने दुकान बन्द की और गोश्त का टुकड़ा थैले में डाला और घर चल दिया। मूसा (अलैहि०) भी साथ हो गए। कहने लगेः भाई तेरे साथ जाऊँगा। उसको नहीं पता था कि यह मूसा (अलैहि०) हैं। कहने लगा, "आ जाओ।" घर गए। उसने बोटियाँ बनाकर सालन चढ़ाया, आटा गूंधा। रोटी पकाई। सालन तैयार किया। फिर एक बुढ़िया थी उसे उठाकर कन्धे का सहारा दिया। सीधे हाथ से लुक़मा बना-बनाकर उसे खिलाए। उसका मुँह साफ़ किया, उसको लिटा दिया। वह कुछ बोली, बड़-बड़ाई। मूसा (अलैहि०) ने पूछा, यह कौन है? उसने कहा कि मेरी माँ है। सुबह को इसकी सारी ख़िदमत करके जाता हूँ और रात को आकर पहले इसकी ख़िदमत करता हूँ। अब अपने बच्चों को देखूंगा। मूसा (अलैहि०) ने फ़रमाया : यह कुछ कह रही थी? कहा : हाँ, जी! रोज़ कहती है, अजीब बात है। मैं रोज़ इसकी ख़िदमत करता हूँ तो कहती है कि अल्लाह तुझे मूसा (अलैहि०) का साथी बनाए। मैं कहाँ क़साई और मूसा (अलैहि०) अल्लाह के नबी? (अल्लाहु अकबर)

माँ की नाफ़रमानी क़ियामत की अलामत है

अल्लाह के नबी (सल्ल०) से पूछा गया कि या रसूलुल्लाह! क़ियामत कब आएगी? फ़रमाया कि अल्लाह ही को पता है कब आएगी। कहा, कोई निशानी तो बताएँ। फ़रमाया, देखो! जब औलाद माओं से नौकरों की तरह बात करे तो बस क़ियामत आ गई, जब औलाद वालिदैन के साथ ऐसे बात करे जैसे नौकरों से की जाती है और उनसे वह सुलूक करे जो नौकरों से किया जाता है तो फिर समझना क़ियामत क़रीब आ चुकी है।

लम्हों ने ख़ता की और सदियों ने सज़ा पाई

अफ़ग़ानिस्तान के एक शहर में क़हत आ गया। यहाँ एक आले रसूल (सल्ल०) का ख़ानदान था। वह फ़ौत हो गया और बच्चे यतीम हो गए तो उन्होंने क़हत की वजह से शहर छोड़ दिया। एक जवान औरत

समरक़न्द पहुँची। एक मस्जिद में बच्चों को बिठाया। जो समरक़न्द कावाली था उसके पास पहुँची कि मैं आले रसूल हूँ, मेरे साथ यह क़िस्सा हुआ है। मुझे पनाह चाहिए। मुझे खाना भी चाहिए। तो वह कहने लगा कि तुम गवाह पेश करो कि मैं आले रसूल (सल्ल०) हूँ। उसने कहा कि मैं परदेसी हूँ, मेरा गवाह कहाँ से आएगा? कहने लगा, इधर हर आदमी आले रसूल (सल्ल०) के दावे करता है। चली जाओ। उठकर बाहर निकली तो उसको किसी ने कहा कि एक मजूसी है, आतिश-परस्त, वह बड़ा सख़ी है। उसके पास चली जा। वह औरत उसके पास चली गई। उसने उसका इकराम किया। फिर अपने घर लाया। खाना-पानी मयस्सर किया। रात को वाली-ए-समरक़न्द ने ख़्वाब देखा कि जन्नत में अल्लाह के नबी खड़े हैं और एक बड़ा आलीशान महल है। वह कहता है कि या रसूलुल्लाह! यह महल किसका है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : यह ईमानवाले का है। उसने कहा कि या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! मैं भी ईमानवाला हूँ। आपने फ़रमाया कि अपने ईमान पर गवाह पेश करो। तो उसका रंग पीला पड़ गया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मेरी बेटी तेरे पास आई थी और तू उससे गवाहियाँ माँगने लगा कि गवाह पेश कर। ऐसी डाँट पड़ी। जब आँख खुली तो पसीने-पसीने हो गया। सीधे उस (मजूसी) के दरवाज़े पर गया और रोने लगा कि यह ख़ानदान मुझे दे दे और मुंह माँगी दौलत मुझसे ले ले। कहा : यह नेमत मुझे दी है। मैं तुम्हें कैसे दूँ? तुझे पता है रात को ख़्वाब देख रहा था और तुझे डाँट पड़ रही थी और मुझे अता किया जा रहा था। मैं ईमान ला चुका हूँ, मैं मुसलमान हो चुका हूँ। वह महल तेरे नाम से कटकर मेरे नाम लगा दिया। मैं यह घर कैसे दे दूँ? महल के बाहर तुझे डाँट पड़ रही थी और मैं महल में खड़ा-खड़ा सुन रहा था।

इबरत-अंगेज़ मकालिमा

एक बार एक आदमी रसूले ख़ुदा (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और शिकायत की कि या रसूलुल्लाह! मेरी माँ बदमिज़ाज है। प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया :

"नौ महीने तक मुसलसल जब यह तुझे पेट में लिए फिरी उस वक़्त तो यह बदमिज़ाज न थी।"

वह शख़्स बोला, "हज़रत! मैं सच कहता हूँ, वह बदमिज़ाज ही है।"

हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब यह रात-रात भर तेरी ख़ातिर जागती थी और अपना दूध तुझे पिलाती थी उस वक़्त तो यह बदमिज़ाज न थी?"

उस आदमी ने कहा, "मैं अपनी माँ को इन बातों का बदला दे चुका हूँ।"

हुज़ूर (सल्ल०) ने पूछा, "तू क्या बदला दे चुका है भला?"

उसने कहा, "मैंने अपने काँधों पर बिठाकर उसको हज कराया है।"

रहमते आलम (सल्ल०) ने फ़ैसलाकुन जवाब देते हुए फ़रमाया, "क्या तू उसे उस दर्देज़ह की तकलीफ़ का बदला भी दे सकता है जो तेरी पैदाइश के वक़्त उसने उठाई है?" (माख़ूज़ हुस्ने मुआशिरत : पेज 48)

माँ की ख़िदमत से कबीरा गुनाहों की माफ़ी

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) के पास एक आदमी आया और उसने कहा, "हज़रत! मैंने एक जगह शादी का पैग़ाम भेजा लेकिन लड़की ने इन्कार कर दिया। एक दूसरे आदमी ने पयाम भेजा लड़की ने मन्ज़ूर कर लिया। यह देखकर मुझे बड़ी ग़ैरत आई और मैंने जज़्बात से बेक़ाबू होकर उस औरत को मार डाला। हज़रत बताइए, अब मेरे लिए तौबा की कोई शक्ल है?" हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने उससे पूछा, "यह बताओ क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है?" वह आदमी बोला, "हज़रत! माँ का तो इंतिक़ाल हो चुका है।" आपने फ़रमाया, "जाओ सच्चे दिल से तौबा करो और जहाँ तक तुमसे हो सके ऐसे काम करो जिनसे ख़ुदा का क़ुर्ब और उसकी रिज़ा हासिल हो।" हज़रत ज़ैद बिन असलम, हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) के पास पहुँचे और पूछा : हज़रत यह तो बताइए, उस आदमी से आपने यह क्यों पूछा था कि क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया : ख़ुदा का क़ुर्ब और उसकी रिज़ा हासिल

करने के लिए माँ के साथ नेक सुलूक से बढ़कर मुझे नहीं मालूम कि कोई और अमल भी हो सकता है।

इसी तरह का एक वाक़िआ हुज़ूर (सल्ल०) के ज़माने में भी पेश आया। एक आदमी प्यारे रसूल (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा : ऐ ख़ुदा के रसूल! मैं एक बहुत बड़ा गुनाह कर बैठा हूँ। ऐ ख़ुदा के रसूल! क्या मेरे लिए भी तौबा की कोई सूरत मुमकिन है? रहमते आलम (रज़ि०) ने फ़रमाया, "क्या तेरी माँ ज़िन्दा है?" उस आदमी ने कहा, हुज़ूर! वालिदा तो ज़िन्दा नहीं हैं। फिर आपने पूछा : अच्छा तुम्हारी ख़ाला है? उसने कहा, जीं हाँ। आपने फ़रमाया : ख़ाला के साथ नेक सुलूक करो।

इन वाक़िआत से माँ की अज़मत और माँ की ख़िदमत की दीनी अहमियत का अन्दाज़ा हो सकता है कि अगर आदमी बड़े से बड़ा गुनाह कर ले तो उसके अज़ाब से बचने और ख़ुदा को ख़ुश करने की शक्ल हुज़ूर (सल्ल०) ने यह बताई कि माँ के साथ नेक सुलूक किया जाए। और यह ख़ुदा की रहमत की इंतिहा है कि अगर माँ इंतिक़ाल कर गई हो तो माँ की बहन के साथ अच्छा सुलूक करके आदमी अपनी आख़िरत बना सकता है। (माख़ूज़ हुस्ने मुआशरत : पेज 53)

औलाद से आम शिकायत

यही औलाद, जिसकी ख़िदमत में नहीफ़ माँ ने दिन-रात मशग़ूल रहकर अपने जिस्म व जान की क़ुव्वतें घुला दीं और झोली फैला-फैलाकर उनके लिए हर वक़्त दुआएँ करती रही, अगर माँ की उम्मीदों पर पानी फेर दे और उसकी तवक़्क़ोआत के ख़िलाफ़ वह नाफ़रमान और बाग़ी बनकर उठे तो अन्दाज़ा किजिए उस माँ का क्या हाल होगा? उसकी रूहानी अज़ीयत और दिली रंज व ग़म को अल्फ़ाज़ बयान नहीं कर सकते।

आज के दौर में चन्द ख़ुश नसीब घरानों को छोड़कर हर घर में यही रोना है कि औलाद बेकही हो गई है। बेटे हों या बेटियाँ, माँ-बाप के

हुक़ूक़ से ग़ाफ़िल हैं, माँ-बाप का अदब व एहतिराम और फ़रमाँबरदारी का जज़्बा जैसे दिलों से बिल्कुल ही निकल चुका है। ऐसा मालूम होता है कि माँ बाप के साथ सुलूक, उनकी ख़ुशनूदी का ख़्याल, उनकी ख़िदमत व फ़रमाँबरदारी, उनका अदब व एहतिराम, उनके जज़्बात का पास व लिहाज़, यह सब मानो बेमाना अल्फ़ाज़ हैं।

एक आम-सी शिकायत है कि औलाद नाफ़रमान, बाग़ी और सरकश हो रही है, जिस मज्लिस में बैठिए, जिस घर में जाइए, वालिदैन यही रोना रोते नज़र आएँगे। फिर कुछ बड़ी-बूढ़ियाँ आपको अपनी तरफ़ मुतवज्जह करके कहना शुरू करेंगी, अरे बेटी! एक हमारा ज़माना था, भला क्या मजाल कि औलाद माँ-बाप के सामने ऊँची आवाज़ में बात भी कर सके। और फिर माहौल की ख़राबी, ज़माने की रंगा-रंगी, ग़लत और गुमराहकुन अफ़्कार व नज़रियात की इशाअत, फ़हश लिट्रेचर, बेअख़्लाक़ तालीम और आज़ादरवी की रंजदेह शिकायत की तवील दास्तान शुरू हो जाएगी। और हर ख़ातून एक तरह एक इत्मीनान महसूस करते हुए यूँ सोचेगी, इन हालात में यही कुछ होना भी चाहिए, माँ-बाप के बस की क्या बात है। यह सूरते हाल इंतिहाई अफ़सोसनाक है।

मासूम बच्ची का हसरतनाक वाक़िया

क़बीला बनू तमीम में बच्चियों को ज़िन्दा दफ़न करने का ज़ालिमाना रिवाज कुछ ज़्यादा था। इस क़बीले के सरदार क़ैस-बिन-आसिम जब इस्लाम लाए तो उन्होंने अपनी मासूम बच्ची को अपने हाथों से दफ़न करने का हसरतनाक वाक़िआ सुनाते हुए कहा :

"या रसूलुल्लाह! मैं घर से बाहर सफ़र पर गया हुआ था। मेरे बाद मेरे घर में एक बच्ची पैदा हुई। मैं घर में होता तो उसकी आवाज़ सुनते ही उसको मिट्टी में दबाकर हमेशा के लिए ख़ामोश कर देता। माँ जैसे-तैसे उसको चन्द रोज़ तक पालती रही। मगर चन्द दिन पालने की वजह से माँ की ममता ने कुछ ऐसा जोश मारा कि वह उस तसव्वुर से लरज़ उठती कि बाप आकर इस फ़रिश्ते को मिट्टी में ज़िन्दा दबा देगा। चुनाँचे

मेरे डर से उसने अपनी प्यारी बच्ची को उसकी ख़ाला के यहाँ भेज दिया कि वहाँ परवरिश पाकर जब बड़ी हो जा जाएगी तो बाप को भी रहम आ जाएगा। मैं जब सफ़र से वापस आया तो मालूम हुआ कि मेरे यहाँ मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ था और बात आई-गई हो गई। बच्ची अपनी ख़ाला के ज़ेरे साया पलती रही यहाँ तक कि काफ़ी बड़ी हो गई। ख़ुदा का करना किसी ज़रूरत से एक दिन घर से बाहर गया। माँ ने यह सोचा कि आज बच्ची का बाप घर नहीं है क्यों न उसको बुला लूँ और माँ ने उसको बुला लिया। शामत आमाल, कुछ देर के बाद मैं भी घर पहुँच गया। क्या देखता हूँ कि निहायत ख़ूबसूरत बनी-सँवरी प्यारी-सी बच्ची घर में इधर-उधर दौड़ती फिर रही है। मेरे दिल में एक अनजानी मुहब्बत ने जोश मारा। बीवी ने भी मेरी निगाहों का अन्दाज़ा देखकर भाँप लिया कि पिदरी मुहब्बत जाग उठी है और ख़ून का असर रंग ले आया है। मैंने बीवी से पूछा, नेक बख़्त! यह किसकी बच्ची है? बड़ी प्यारी बच्ची है!

और बीवी ने सारा क़िस्सा सुना दिया। मैंने बेइख़्तियार बच्ची को गले से लगाया। माँ ने उसको बताया कि यह तेरे बाप हैं और वह मुझसे चिमट गई। बाप का प्यार पाकर वह तो कुछ ऐसी ख़ुश हुई कि अब्बा! अब्बा! कहते उसका मुँह सूखता था। और जब अब्बा! अब्बा! कहकर दौड़कर आती तो मैं उसे गले लगाकर अजीब सुकून-सा महसूस करता।

इस तरह दिन गुज़रते गए और लड़की प्यार व मुहब्बत के साए में हर फ़िक्र से बेपरवाह परवरिश पाती रही। मगर उसको देख-देखकर मैं कभी कभी सोचता कि इसकी वजह से मुझे दामादवाला बनना पड़ेगा। मुझे यह ज़िल्लत भी बर्दाश्त करनी होगी कि मेरी लड़की किसी की बीवी बनेगी। मैं लोगों के सामने क्या मुँह दिखाऊँगा। मेरी तो सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाएगी। और आख़िरकार मेरी ग़ैरत ने मुझे झिंझोड़ा, मेरे सब्र का पैमाना लबरेज़ हो गया। और मैंने तै कर लिया कि इस ज़िल्लत के सामान को दफ़न करके ही दम लूँगा। और मैंने बीवी से कहा : बच्ची को तैयार कर दो, एक दावत में साथ ले जाऊँगा। बीवी ने उसको नहलाया-धुलाया, साफ़-सुथरे कपड़े पहनाए और बना-सँवार कर तैयार कर दिया। बच्ची ख़ुशी से चमक रही थी कि अब्बा जान के साथ जा रही है।

और मैं उसे लेकर एक सुनसान जंगल की तरफ़ रवाना हो गया। बच्ची कूदती-फाँदती मेरे साथ चल रही थी और मुझ संगदिल पर यह जुनून सवार था कि जल्द से जल्द इस शर्म की पोटली को मिट्टी में दबा दूँ।

बच्ची को क्या ख़बर थी, मासूम बच्ची ख़ुशी में कभी मेरा हाथ पकड़ती, कभी मुझसे आगे-आगे दौड़ती, कभी प्यारी ज़बान से बातें करती। यहाँ तक कि मैं एक जगह जाकर रुक गया। फिर मैंने ज़मीन में एक गढ़ा खोदना शुरू किया। बच्ची हैरान थी कि अब्बा जान यहाँ सुनसान जंगल में यह गढ़ा क्यों खोद रहे हैं और पूछती : अब्बा यह क्यों खोद रहे हैं? उसे क्या ख़बर थी कि ज़ालिम बाप उस चहकती फूल-सी बच्ची के लिए क़ब्र खोद रहा है ताकि हमेशा के लिए उसे ख़ामोश कर दे।

गढ़ा खोदते हुए जब मेरे पैरों और कपड़ों पर मिट्टी आती तो मासूम बच्ची अपने छोटे-छोटे, प्यारे और नाज़ुक हाथों से मिट्टी झाड़ती और तोतली ज़बान में कहती : अब्बा आपके कपड़े ख़राब हो रहे हैं। जब मैंने गहरा गढ़ा खोद लिया तो एक दम उस बेगुनाह, हँसती-खेलती बच्ची को उठाकर उस गढ़े में फेंक दिया और जल्दी-जल्दी उसपर मिट्टी डालने लगा। बच्ची मुझे हसरत से देखते हुए चीख़ती रही, अब्बा जान! मेरे अब्बा जान! यह क्या कर रहे हो? अब्बा आप क्या कर रहे हो? अब्बा मैंने कुछ भी तो नहीं किया है। अब्बा आप मुझे क्यों मिट्टी में दबा रहे हैं? और मैं बहरा अंधा और गूँगा बना अपना काम करता रहा। या रसूलुल्लह! मुझ संगदिल और ज़ालिम को ज़रा भी तो रहम न आई। बच्ची को मैं ज़िन्दा दफ़न करके इत्मीनान की साँस लेता हुआ वापस आ गया।"

मासूम बच्ची की मज़्लूमियत, बेबसी का यह हसरतनाक वाक़िआ सुनकर रहमते आलम (सल्ल०) का दिल भर आया, आँखों से टप-टप आँसू रवाँ हो गए। आप रो रहे थे और कह रहे थे : "यह इंतिहाई संगदिली है, जो दूसरों पर रहम नहीं खाता ख़ुदा उसपर कैसे रहम खाएगा।"

इबरतनाक कारगुज़ारी

नबी (सल्ल०) के सामने एक साहब ने अपने ज़मान-ए-जाहिलियत की आप बीती सुनाई और उसका हसरतनाक नक़्शा कुछ इस तरह खींचा कि नबी (सल्ल०) बेक़रार हो गए :

"या रसूलुल्लाह! हम लोग नावाक़िफ़ थे। हमें कुछ ख़बर न थी। पत्थर के बुतों को पूजते थे और अपनी प्यारी औलाद को ख़ुद अपने ही हाथों से मौत के घाट उतार देते थे। या रसूलुल्लाह! मेरी एक बहुत ही प्यारी बच्ची थी। मैं जब भी उसको बुलाता वह दौड़कर मेरे पास आ जाती। एक दिन मैंने उसको अपने पास बुलाया, वह ख़ुशी-ख़ुशी दौड़ती हुई मेरे पास आई। मैं उसको अपने साथ लेकर चला। आगे-आगे मैं था और वह मेरे पीछे दौड़ी चली आ रही थी। मेरे घर से कुछ ही फ़ासले पर एक गहरा कुआँ था। जब मैं उस कुएँ के क़रीब पहुँचा तो रुक गया। लड़की भी मेरे क़रीब आ गई, फिर या रसूलुल्लाह! मैंने उस बच्ची का हाथ पकड़ा और उठाकर उस कुएँ में डाल दिया। मासूम बच्ची कुएँ में चीख़ती रही और बड़ी दर्द भरी आवाज़ में मुझे अब्बा! अब्बा! कहकर पुकारती रही। या रसूलुल्लाह! यही उसकी ज़िन्दगी की आख़िरी पुकार थी।"

ख़ुदा के रसूल ने यह दर्द भरी दास्तान सुनी तो दिल भर आया और बेइख़्तियार आँखों से आँसू रवाँ हो गए। एक सहाबी ने उनको बुरा-भला कहा कि तुमने ख़ाह-मख़ाह यह दर्दनाक आपबीती सुनाकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दुख पहुँचाया। रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने सुना तो फ़रमाया, "नहीं इनसे कुछ न कहो, इनसे कुछ न कहो। इनपर जो मुसीबत पड़ी है यह उसका इलाज पूछने आए हैं।" और फिर उन्हीं की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया, "हाँ मियाँ, एक बार फिर तुम अपनी आप बीती सुनाओ"। सहाबी ने दोबारा अपनी दर्दनाक आपबीती सुनाई। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का अजीब हाल था। रोते-रोते आप (सल्ल०) की दाढ़ी तर हो गई। और फिर उनसे कहा, तुम इस्लाम ले आए हो तो इस बरकत से

ज़मान-ए-जाहिलियत के सारे गुनाह माफ़ हो गए। जाओ और अब अच्छे काम करो। (मुस्नद दारमी)

ख़ुदा ही बेहतर जानता है कि कितनी बेगुनाह और बेबस बच्चियाँ इस ज़ुल्म और सफ़्फ़ाकी का निशाना बनीं। और कितने दिनों तक बेटियाँ अपने माँ-बाप के हाथों ज़िन्दा दफ़न होती रहीं। अगरचे उस दौर में भी कुछ रहमदिल ख़ुदातरस इंसान ज़रूर थे, जो लड़कियों को इस ज़ुल्म और बर्बरियत से बचाने के लिए अपनी कोशिशें करते रहते थे, लेकिन यह इंफ़िरादी कोशिशें इस हौलनाक रस्म को ख़त्म न कर सकीं।

फ़र्ज़दिक़ के दादा ने चौरानवे (94) बच्चियों को ज़ालिम बापों के चंगुल से बचा लिया

फ़र्ज़दिक़ अरब के मशहूर शाएर थे। उनको इस बात पर बड़ा फ़ख़्र था कि उनके दादा हज़रत साअसआ ने कितनी ही लड़कियों को उस दौर में ज़िन्दा दफ़न होने से बचा लिया, जिसमें अहले अरब लड़की के तसव्वुर से शर्म महसूस करते थे। हज़रत साअसआ ख़ुद ही अपना वाक़िआ बयान करते हैं :

"एक बार मैं अपनी दो गुमशुदा ऊँटनियों की तलाश में निकला। दूर एक आग नज़र आई, कभी उसके शोले भड़क उठते और कभी बुझ जाते। मैंने सोचा चलकर देखना चाहिए, मुमकिन है किसी मुसीबतज़दा ने जला रखी हो और मैं उसके काम आ सका तो ज़रूर उसकी मुसीबत दूर करने की कोशिश करूँगा। चुनाँचे मैंने ऊँट तेज़ किया और थोड़ी ही देर में बनी अनमार के मुहल्ले में पहुँच गया। क्या देखता हूँ कि एक बूढ़ा शख़्स लम्बे- लम्बे बालोंवाला अपने घर के सामने बैठा सोग मना रहा है, और बहुत सारी औरतें एक औरत को घेरे में लिए बैठी हैं जो दर्देज़ह में मुब्तला है। सलाम-दुआ के बाद मैंने उनसे मामले की नौइयत मालूम की तो पता चला कि तीन रोज़ से यह औरत इस तकलीफ़ में मुब्तला है। बड़े मियाँ से यह गुफ़्तुगू हो रही थी कि औरतों की आवाज़ आई, बच्चा पैदा हो गया। बूढ़ा चिल्लाया, अगर लड़का है ते ख़ैर और अगर लड़की

है तो मैं उसकी आवाज़ सुनना नहीं चाहता। मैं इसी दम उसे मार डालूँगा।

मैंने बड़ी लजाजत से बड़े मियाँ से कहा कि शेख़! ऐसा न कीजिए, आप ही की बेटी है। रहा रोज़ी का सवाल तो इसकी रोज़ी देनेवाला अल्लाह है। बूढ़ा फिर गरजा : नहीं मैं इसको ज़िन्दा नहीं छोड़ सकता, मैं इसे क़त्ल करके ही दम लूँगा। मैंने नर्मी से फिर इसरार किया तो उसने ज़रा तेवर बदल कर कहा कि अगर तुम ऐसे ही रहमदिल हो तो इसकी क़ीमत दो और ले जाकर पाल लो। मैंने बिला ताम्मुल कहा : हाँ, मैं ख़रीदने के लिए तैयार हूँ। और मैं बच्ची को ख़रीद कर ख़ुशी-ख़ुशी लौट आया और मैंने ख़ुदा से अहद किया कि इस बच्ची को शफ़क़त व मुहब्बत से पालूँगा और मैंने ख़ुदा से यह भी अहद किया कि जब भी कोई संगदिल किसी मासूम बच्ची को मार डालने का इरादा करेगा मैं हरगिज़ उसको ऐसा न करने दूँगा। क़ीमत देकर उस बच्ची को हासिल करूँगा और निहायत प्यार व मुहब्बत के साथ उसकी परवरिश करूँगा।

फिर यह सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि ख़ुदा ने हज़रत.....को मबऊस फ़रमाया। उस वक़्त तक मैं चौरानवे (94) बच्चियों को ज़ालिम बापों के चंगुल से बचा चुका था और फिर तो हुज़ूर (सल्ल०) ने इस लानत को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया।

इस्लाम ने क़त्ले-औलाद की तमाम ज़ालिमाना रस्मों से अपने मुआशरे को पाक किया और ख़ुदा के प्यारे बन्दों की पहचान यह बताई कि वह औलाद के लिए यह दुआ करते रहते हैं कि परवरदिगार इनको हमारी आँखों की ठण्डक बना दे :

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ (الفرقان:آیت۷۴)

"और रहमान के बन्दे वे हैं जो कहते हैं कि हमारे रब हमारे जोड़ों को और हमारी औलाद को हमारे लिए आँखों की ठण्डक बना दे।"

(सुरह् फ़ुरक़ान, आ 74)

हज़रत फ़ातिमा रजि० और हज़रत अली रजि० में नोक-झोक

रसूले करीम (सल्ल०) एक दिन अपने दामाद हज़रत अली (रज़ि०) के यहाँ पहुँचे। घर में फ़ातिमा (रज़ि०) तन्हा थीं, और अली (रज़ि०) नहीं थे। बेटी से पूछा, "कहाँ हैं तुम्हारे चचा के बेटे?" बेटी ने कहा, "मेरे और उनके दर्मियान कुछ नागवारी हो गई। वह मुझपर बिगड़ गए और ख़फ़ा होकर कहीं चले गए। यहाँ उन्होंने क़ैलूला भी नहीं किया।"

नबी (सल्ल०) ने एक आदमी से कहा, "ज़रा देखकर तो आओ अली कहाँ हैं?" उस आदमी ने बताया, "वह मस्जिद की दीवार से लगे सो रहे हैं।" नबी (सल्ल०) उनके पीछे निकले, देखा कि वह चित लेटे हुए हैं, चादर भी कुछ सरक कर गिर गई है और जिस्म पर मिट्टी लग रही है। नबी (सल्ल०) उनकी पीठ से मिट्टी झाड़ते जा रहे थे, और कह रहे थे, "उठ अबू तराब! उठ अबू तराब!"

हज़रत याक़ूब (अलैहि०) की एक अजीब तमन्ना

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं एक बार नबी (सल्ल०) ने एक वाक़िआ सुनाया। आपने बताया कि एक बार किसी आदमी ने हज़रत याक़ूब (अलैहि०) से पूछा : हज़रत आपकी आँखें किस वजह से जाती रहीं और आपकी कमर किस वजह से झुक गई है? हज़रत याक़ूब (अलैहि०) ने जवाब दिया, आँखें तो यूसुफ़ के ग़म में रोते-रोते जाती रहीं और कमर उसके भाई बिनयामीन के सदमे से झुक गई है। हज़रत जिबरील (अलैहि०) उसी वक़्त हज़रत याक़ूब (अलैहि०) के पास आए और बोले, "आप ख़ुदा की शिकायत कर रहे हैं?" हज़रत याक़ूब (अलैहि०) बोले, "नहीं, बल्कि अल्लाह तआला के सामने अपने ग़म और दुख की फ़रियाद पेश कर रहा हूँ।" हज़रत जिबरील (अलैहि०) ने फ़रमाया, "आपने अपना जो दुख बयान किया है, ख़ुदा को सब मालूम है।" फिर जिबरील (अलैहि०) चले गए और हज़रत याक़ूब (अलैहि०)

अपने कमरे में दाख़िल हुए और कहने लगे : ऐ मेरे परवरदिगार! क्या तुझे एक बूढ़े आदमी पर रहम नहीं आता! तूने मेरी आँखें भी छीन लीं और मेरी कमर भी झुका दी। परवरदिगार! मेरे दोनों फूलों को मुझे लौटा दे कि दोनों को सिर्फ़ एक बार सूँघ लूँ, फिर तू जो चाहे मेरे साथ सुलूक कर। हज़रत जिबरील (अलैहि०) फिर तशरीफ़ लाए और बोलेः ऐ याक़ूब! अल्लाह तआला तुम्हें सलाम कहता है और फ़रमाता है कि याक़ूब ख़ुश हो जाओ, अगर तुम्हारे दोनों बेटे मर गए होते तो भी तुम्हारी ख़ातिर उन्हें ज़िन्दा करके उठा देता ताकि तुम दोनों को देखकर अपनी आँखें ठण्डी करते। (तर्ग़ीब व तर्हीब, जिल्द 3, पेज 350)

अज़ीम माँ की तर्बियत लोगों की तक़दीरें बदल देती हैं

सौदागरों का एक क़ाफ़िला बग़दाद की तरफ़ जा रहा था। उनके साथ एक नौउम्र लड़का भी था जिसको उसकी माँ ने कुछ हिदायात देकर उस क़ाफ़िल के साथ इसलिए कर दिया था कि हिफ़ाज़त के साथ यह अपनी मंज़िल पर पहुँच जाए और दीन का इल्म हासिल करके ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा की हिदायात और रौशनी दिखाए।

क़ाफ़िला इत्मीनान से चला जा रहा था कि एक जगह कुछ डाकुओं ने उसपर हमला कर दिया। क़ाफ़िलेवालों ने अपने माल व असबाब बचाने के लिए बड़ी चालें चलीं कि किसी तरह उन डाकुओं से अपना माल बचा लें लेकिन डाकू न उनकी चालों में आए और न उनकी रहम की अपीलों से उनके दिल पसीजे। क़ाफ़िले के एक-एक आदमी से उन्होंने सब कुछ छीन लिया।

डाकू जब अपना काम कर चुके तो उनमें से एक ने उस नौउम्र ग़रीब और परेशान हाल बच्चे से पूछा :

डाकू : कहो मियाँ, तुम्हारे पास भी कुछ है?

नौउम्र लड़का : जी हाँ, मेरे पास चालीस दीनार हैं।

डाकू : तुम्हारे पस चालीस दीनार हैं! (डाकू को यक़ीन न आया कि उस ख़स्ताहाल और ग़रीब के पास भला चालीस दीनार कहाँ से आए और अगर होते भी तो यह हमें क्यों बताता। डाकू ने सोचा और इस अजीब व ग़रीब लड़के को अपने सरदार के पास ले गया।)

डाकू : सरदार! इस लड़के को देखिए! कहता है कि मेरे पास चालीस दीनार हैं।

सरदार : मियाँ साहबज़ादे! क्या तुम्हारे पास वाक़ई दीनार हैं?

नौउम्र लड़का : जी हाँ मेरे पास चालीस दीनार हैं।

सरदार : भला तुम्हारे पास दीनार कहाँ रखे हैं? सरदार ने ग़रीब लड़के को हैरत से देखते हुए पूछा।

नौउम्र लड़का : जी मेरी कमर से एक थैली बँधी हुई है, उसमें हैं।

सरदार ने लड़के की कमर से थैली खोली, दीनार गिने। वाक़ई चालीस दीनार थे। सरदार हैरत से कुछ देर उस लड़के को देखता रहा फिर बोला, साहबज़ादे! तुम कहाँ जा रहे हो?

नौउम्र लड़का : मैं दीन का इल्म हासिल करने के लिए बग़दाद जा रहा हूँ।

सरदार : क्या वहाँ तुम्हारा जाननेवाला कोई है?

नौउम्र लड़का : जी नहीं, वह एक अजनबी शहर है, मेरी अम्मी ने मुझे यह चालीस दीनार दिए थे कि मैं इत्मीनान के साथ इल्मे-दीन हासिल कर सकूँ। उस अजनबी शहर में मेरी ज़रूरियात का कौन ख़्याल करेगा और क्यों किसी का एहसान उठाऊँ!

सरदार बड़ी दिलचस्पी और हैरत के साथ नौउम्र लड़के की बातें सुन रहा था। उसकी संजीदगी बढ़ती जा रही थी। वह सोच रहा था कि इस नोउम्र ने यह रक़म छुपाई क्यों नहीं। अगर यह न बताता तो मेरे किसी साथी को गुमान भी न होता कि इस परेशान-हाल मुफ़्लिस लड़के के पास भी कुछ हो सकता है। इस लड़के ने यह क्यों न सोचा कि मैं एक अजनबी मक़ाम पर जा रहा हूँ, मेरे मुस्तक़बिल और तालीम का दारोमदार

इसी रक़म पर है। आख़िर उसने यह रक़म छुपाई क्यों नहीं? बच्चे की सादगी और सच्चाई ने उसके ज़मीर को झिंझोड़ना शुरू किया, और उसने पूछा : साहबज़ादे! तुमने यह रक़म छुपाई क्यों नहीं? अगर तुम न बताते और इंकार कर देते तो हमें शुब्हा भी न होता कि तुम्हारे पास भी कोई रक़म हो सकती है।

नौउम्र लड़का : जब मैं घर से निकल रहा था तो मेरी माँ ने मुझे यह नसीहत कर दी थी कि बेटा कुछ भी हो तुम झूठ हरगिज़ न बोलना। भला मैं माँ के हुक्म को कैसे टाल देता!

सरदार के अन्दर का इंसान जाग गया। वह सोचने लगा यह नौउम्र लड़का अपनी माँ का ऐसा इताअतगुज़ार है कि वह अपना मुस्तक़बिल तबाह होते हुए देख रहा है, लेकिन माँ का हुक्म टालने को तैयार नहीं और मैं कितने समय से बराबर अपने परवरदिगार के हुक्मों को रौंद रहा हूँ, उसने लड़के को गले से लगाया और उसके दीनार उसको वापस कर दिए, इसके साथ ही क़ाफ़िलेवालों का सामान भी वापस किया और ख़ुदा के सामने सज्दे में गिरकर गिड़गिड़ाने लगा। सच्चे दिल से उसने तौबा की और ख़ुदा की रहमत ने उसे अपनी आग़ोश में ले लिया। वह डाकू फिर अपने वक़्त का एक ज़बरदस्त वली बना और ख़ुदा के बन्दों को लूटनेवाला ख़ुदा के बन्दों को दीन की दौलत तक़्सीम करनेवाला बन गया। अज़ीम माँ की तर्बियत ने सिर्फ़ नौउम्र लड़के को ही ऊँचा नहीं उठाया बल्कि डाकुओं की भी तक़दीर बदल दी। यह वही होनहार लड़का है जिसको सारी इस्लामी दुनिया अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० के नाम से जानती है और जिसका नाम आते ही दिल अक़ीदत व एहतिराम से झुक जाते हैं।

मुनासिब रिश्ते की तलाश

बच्चे-बच्ची की शादी में ताख़ीर बिल-उमूम इसलिए होती है कि मुनासिब रिश्ता नहीं मिल पाता। आपकी यह ख़ाहिश और कोशिश बिल्कुल बजा है कि आपके बेटे या बेटी के लिए मुनासिब रिश्ता मिले, बल्कि यह फ़िक्र व जुस्तुजू आपका फ़र्ज़ है। इस्लामी तालीमात का

तक़ाज़ा भी यही है कि आप मुनासिब रिश्ते के लिए पूरी जिद्दोजुहद करें।

इस्लाम का मुतालबा आपसे यह हरगिज़ नहीं है कि आपको जो भला-बुरा रिश्ता मिल जाए, आँख बन्द करके बस उसे क़बूल ही कर डालें, और इस मामले में कुछ ग़ौर व ख़ौज़ न करें। शादी निहायत अहम मामला है। पूरी ज़िन्दगी का मसला है। न सिर्फ़ दुनिया के बनने-बिगड़ने तक उसके असरात महदूद हैं बल्कि आख़िरत की ज़िन्दगी पर भी इसके असरात पड़ सकते हैं।

यह मामला निहायत संजीदा है। शरीके-हयात के इंतिख़ाब में सोच-विचार लाज़मी है।

सोचने की बात सिर्फ़ यह है कि आपक सोच-विचार इस्लाम की रौशनी में हो। इंतिख़ाब का जो मेयार इस्लाम ने बताया है वही आपके पेशे-नज़र हो। उसका जायज़ा लेना ज़रूरी है। अपनी औलाद के लिए शरीके-हयात के इंतिख़ाब में इन्हीं बुनियादों को सामने रखिए जिनको पेश नज़र रखने की इस्लाम ने हिदायत दी है। बेलाग जायज़ा लीजिए कि बच्चे की शादी में कहीं इसलिए तो ताख़ीर नहीं हो रही है कि आपने लड़के या लड़की के इंतिख़ाब में कुछ ऐसी बातों को अहमियत दे रखी है जिनकी दीन में कोई अहमियत नहीं है। आप और बातों को इसलिए अहमियत दे रहे हैं कि समाज में आम तौर पर उन्हीं को अहमियत दी जा रही है या आपको इसलिए इनपर इसरार है कि आपने यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि इस सिलसिले में इस्लाम की तालीमात व हिदायात क्या हैं?

शरीके-हयात के इंतिख़ाब का मेयार

शरीके-हयात के इंतिख़ाब में आम तौर पर पाँच बातें पेशे-नज़र रहती हैं :

(1) माल व दौलत (2) हसब व नसब (3) हुस्न व जमाल (4) दीन व अख़्लाक़ और (5) तालीम।

इसमें कोई शक नहीं कि ये पाँचों बातें अपनी जगह अहम हैं। माल व दौलत की अहमियत से कौन इनकार कर सकता है, बिलखुसूस इस दौर में। ख़ानदान और हसब व नसब भी कुछ पहलुओं से नज़र-अन्दाज़ कर देने के क़ाबिल नहीं हैं। कुछ ख़ानदान या बिरादरियाँ जो असा-ए-दराज़ से पसमान्दा हैं उनमें कुछ मआशरती, ज़ेहनी और अख़्लाक़ी कमज़ोरियाँ ज़रूर होती हैं और तर्ज़े-मआशरत, अन्दाज़े-फ़िक्र और सुलूक व बर्ताव का फ़र्क़ कभी-कभी इस दर्जे असर-अन्दाज़ होता है कि खुशगवार इज़्दवाजी ज़िन्दगी की तवक़्क़ो ही नहीं की जा सकती।

इंतिख़ाब में हुस्न व जमाल को भी बुनियादी अहमियत हासिल है और लड़की के इंतिख़ाब में तो ख़ास तौर पर यही चीज़ फ़ैसलाकुन होती है। इससे इनकार की क्या गुंजाइश है कि खुदा तआला ने इंसान को ज़ौक़े-जमाल दिया है और ख़ूबसूरती पसन्द करने ही की चीज़ है।

तालीम की अहमियत और ज़रूरत भी मुसल्लम है और दौरे-हाज़िर में तो तालीम और डिग्री का रिश्ते के मामले में खुसूसी ख़याल रखा जाने लगा है। यह वाक़िआ है कि ऊँची तालीम हौसलों को बुलन्द करती है। तहज़ीब से आरास्ता करती है, इज़्ज़त व एहतिराम का ज़रिया बनती है, खुशहाल ज़िन्दगी और समाज में वक़अत व अज़्मत का सबब बनती है।

रहा दीन व अख़्लाक़ का मामला तो ज़ाहिर है मुसलमानों के नज़दीक इसकी अहमियत और क़द्र तो होना ही चाहिए। मुसलमान माँ यह कैसे गवारा कर सकती है कि वह ज़ेरे-तज्वीज़ फ़र्द में सब कुछ तो देखे लेकिन इस पहलू को नज़र-अन्दाज़ कर दे या उसे कोई अहमियत ही न दे।

आपकी ख़्वाहिश, आरज़ू और कोशिश अगर यह है कि आपकी बेटी या बेटे को ऐसा शरीके-ज़िन्दगी मिले जो इन पाँचों ख़ूबियों में मेयारी हो तो आपकी तमन्ना भी मुबारक, आपकी आरज़ू भी दुरुस्त और आपकी कोशिश भी हक़ बजानिब है। कौन नहीं चाहेगा कि उसके जिगर-गोशे को ऐसा ही जोड़ा मिले जो इन पाँचों ख़ूबियों से आरास्ता हो।

इस्लाम आपकी इस ख़्वाहिश, तमन्ना और कोशिश की हरगिज़

नाक़दरी नहीं करता। वह आपके इन जज़्बात का एहतिराम करता है।

अगर आपको ऐसा जोड़ा मिल जाए जिसमें ये सारी ख़ूबियाँ मौजूद हों तो यक़ीन कीजिए कि यह ख़ुदा की ख़ुसूसी नवाज़िश है। मगर आम हालात में यह इंतिहाई मुश्किल है कि हर रिश्ते के लिए आपको ये सारी ख़ूबियाँ यकजा मिल जाएँ। किसी में कुछ ख़ूबियाँ मिलेंगी तो कुछ ख़राबियाँ भी होंगी। अस्ल में इसी में आपका इम्तिहान है कि आप इंतिख़ाब में इस्लामी नुक़्त-ए-नज़र अपने सामने रखें और उन्हीं ख़ूबियों को वजहे-तर्जीह बनाएँ जिनको इस्लाम ने तर्जीह दी है।

रसूले ख़ुदा (सल्ल०) की हिदायत

रसूले ख़ुदा (सल्ल०) की हिदायत यह है कि आप इंतिख़ाब करते वक़्त दीन व अख़्लाक़ को अव्वलीन अहमियत दें। दीन व अख़्लाक़ के साथ दूसरी चार चीज़ों में से जो भी मयस्सर आ जाएँ उसपर ख़ुदा का शुक्र अदा करें और फिर बेवजह टाल-मटोल न करें। हाँ, वह रिश्ता आपके लिए हरगिज़ क़ाबिले-क़बूल न होना चाहिए जिसमें सारी ख़ूबियाँ तो हों मगर दीन व अख़्लाक़ की तरफ़ से मायूसी हो। मुसलमान माँ-बाप के लिए देखने की अव्वलीन चीज़ दीन व अख़्लाक़ है, जो शख़्स इससे कोरा है वह दूसरी तमाम चीज़ों में मिसाली हो तो भी इस लायक़ नहीं कि आप अपने जिगर-गोशे के लिए उसका इंतिख़ाब करें। उसे अपने घर की बहू बनाएँ या अपना दामाद बनाएँ। दूसरी तमाम चीज़ों के नुक़्स की तलाफ़ी तो दीन व अख़्लाक़ से हो सकती है, या यूँ कहिए कि दीन व अख़्लाक़ की ख़ातिर दूसरी कमज़ोरियों को तो गवारा किया जा सकता है लेकिन किसी बड़ी से बड़ी ख़ूबी की ख़ातिर भी दीन व अख़्लाक़ से महरूमी को गवारा नहीं किया जा सकता, दीन व अख़्लाक़ की तलाफ़ी किसी दूसरी ख़ूबी से नहीं हो सकती। ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) की हिदायत है :

"निकाह के लिए आम तौर पर औरत में चार चीज़ें देखी जाती हैं: (1) माल व दौलत (2) ख़ानदानी शराफ़त (3) हुस्न व जमाल और (4) दीन व अख़्लाक़। तुम दीनदार औरतों से शादी करो, तुम्हारा भला

होगा।"

यह हदीस आपको बताती है कि आप अपने बेटे के लिए ऐसी बहू बियाह कर लाएँ जो दीनदार हो और इस्लामी अख़्लाक़ से आरास्ता हो। ऐसी बहू के ज़रीये ही आपका घर इस्लाम का गहवारा बन सकता है। और ऐसी बहू से ही यह तवक़्क़ो की जा सकती है कि उसकी गोद से ऐसी नस्ल उठे जो दीन व ईमान और इस्लाम के लिए जज़्ब-ए-इशाअत व जिहाद से सरशार हो।

इसी तरह दामाद और बहू के इंतिख़ाब के लिए भी आप (सल्ल०) की हिदायत है कि दीन व अख़्लाक़ ही को बुनियादी अहमियत देनी चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) का बयान है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे यहाँ कोई ऐसा शख़्स निकाह का पैग़ाम भेजे जिसके दीन व अख़्लाक़ से तुम मुत्मइन और ख़ुश हो तो उससे अपने जिगर-गोशे की शादी कर दो। अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में ज़बरदस्त फ़साद फैल जाएगा।"

यह हदीस आपको फ़ैसलाकुन अन्दाज़ में बताती है कि जब आपके यहाँ किसी ऐसे लड़के का पैग़ाम आ जाए जिसके दीन व अख़्लाक़ की तरफ़ से आपको इत्मीनान हो, आपकी यक़ीनी मालूमात ये हो कि यह ख़ुदा-तरस, दीनदार, रोज़ा व नमाज़ का पाबन्द और इस्लामी अख़्लाक़ से आरास्ता है तो फिर बिला वजह ताख़ीर और टाल-मटोल करना किसी तरह सही नहीं। ख़ुदा के भरोसे पर उसके साथ ही शादी कर दीजिए और ख़ैर की तवक़्क़ो रखिए। इसलिए कि रिश्ता व निकाह में मुसलमान के लिए अव्वलीन अहमियत की चीज़ दीन व ईमान ही है और जिस समाज में दीन व ईमान को नज़रअन्दाज़ करके दूसरी चीज़ों को अहमियत दिया जाता है या माल व दौलत और हुस्न व जमाल को दीन व अख़्लाक़ पर तर्जीह दी जाती है तो ऐसे समाज में फ़ितना व फ़साद का तूफ़ान उठकर रहेगा और दुनिया की कोई ताक़त ऐसे समाज को इस तूफ़ान से बचा न सकेगी।

ज़रा ग़ौर करें

मरने से पहले मौत की तैयारी कीजिए

1. क्या आपने वसीयतनामा लिख लिया है?
2. क्या आपने तौबा कर ली है?
3. क्या आपने अपना क़र्ज़ अदा कर दिया है?
4. क्या आपने बीवी का मेह्र अदा कर दिया है?
5. क्या आपने तमाम माली हुक़ूक़ अदा कर दिए हैं?
6. क्या आपने तमाम जानी हुक़ूक़ अदा कर दिए हैं?
7. क्या आपके ज़िम्मे कोई नमाज़ बाक़ी है?
8. क्या आपके ज़िम्मे कोई रोज़ा बाक़ी है?
9. क्या आपके ज़िम्मे कोई ज़कात बाक़ी है?
10. क्या आपके ज़िम्मे कोई हज फ़र्ज़ बाक़ी है?

क़ुरआन पाक का अदब व एहतिराम

सवाल :

मोहतरम मक़ाम आली जनाब मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ज़य्यदुल ताफ़िकम

सलाम मसनून

क़ुरआन पाक के बोसीदा औराक़ की बहुर्मती, मसाजिद में बेतर्तीब और बेढंगे तौर पर कलाम पाक का रखा होना और बिना जुज़दान या बेहद बेतर्तीबी रखे क़ुरआन शरीफ़ को देखकर हमें बेहद अफ़सोस होता है। हम "बिखरे मोती" बराबर पढ़ते हैं, और वाक़ई यह ऐसी किताब है कि हज़ारों घरों में इसे पढ़ा जाता है। अगर आप यह सवाल अपने जवाब के साथ आइंदा इशाअत में शाए फ़रमा दें तो उम्मत पर यह आपका एहसाने-अज़ीम होगा। कलाम पाक के साथ इस बेहुर्मती का क्या सद्दे बाब होना चाहिए, इसपर रौशनी डालिए ताकि क़ुरआन हकीम के साथ

होनेवाली इस बेहुर्मती की रोक-थाम हो सके। आपके जवाब का इंतिज़ार रहेगा।

नियाज़मन्द

मुहम्मद अफ़ज़ल लादीवाले

ए-201, अली चैम्बर्स, नज़्द दारुल फ़लाह

मुम्बई-पुणे रोड, कोसा, मिम्बर 1 ज़िला : थाना

अल-जवाब :

आपने अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद के ताल्लुक़ से जो सवाल पूछा है इसपर मैं भी बेहद रंजीदा हूँ। ख़ास तौर पर जब मसाजिद या घरों में कलाम पाक की बेहुर्मती दिखाई देती है तो बड़ी रूहानी अज़ीयत होती है।

पहले तो यह समझ लीजिए कि क़ुरआन पाक का दर्जा क्या है और उसकी किस क़द्र वक़अत है?

पहले आसमानी कुतुब सिर्फ़ किताबे इलाही कहलाती थीं, मगर क़ुरआन पाक का ऐज़ाज़ यह है कि यह 'किताबे-इलाही' भी है और "कलामे इलाही" भी है। पूरा कलाम पाक पहले लौहे महफ़ूज़ पर रक़्म किया गया और फिर हस्बे ज़रूरत 23 सालों में थोड़ा-थोड़ा नाज़िल फ़रमाया गया। यह नुज़ूल इस तरह अमल में आता था कि अल्लाह तआला, हज़रत जिबरील अमीन (अलैहि०) को अपना कलाम सुनाते और हज़रत जिबरील अमीन (अलैहि०) नबी पाक (सल्ल०) पर बतौर वह्य नुज़ूल फ़रमाते।

इतनी अज़ीम मरतबत और आफ़ाक़ी किताब जो अल्लाह का कलाम भी है, इसके साथ आज उम्मत के ज़रीये हो रही बेहुर्मती पर जितने आँसू बहाए जाएँ, कम हैं। नबी पाक (सल्ल०) अल्लाह के आख़िरी रसूल और नबी हैं और क़ुरआन पाक अल्लाह की आख़िरी किताब है यानी अब सुबह क़ियामत तक न कोई नबी आएगा और न ही कोई दूसरी किताब।

आज यह आख़िरी किताब यानी क़ुरआन अज़ीम हमारे दर्मियान है,

मगर हम इसका हक़ अदा करने से क़ासिर हैं, जैसा कि उसका हक़ है। आज सिर्फ़ मरहूमीन को ईसाले-सवाब के लिए इसका विर्द किया जाता है या फिर हल्फ़िया बयान के लिए उसे हाथों पर उठाया जाता है। जबकि यह नाज़िल इसलिए किया गया था कि इसपर ग़ौर व फ़िक्र किया जाए, तदब्बुर किया जाए और इसकी रौशनी में ज़िन्दगी के मराहिल तै किए जाएँ, दुनिया व उक़बा को सँवारा जाए।

जब क़ुरआन पाक की बेहुर्मती ख़ुद मुसलमानों के हाथों हो तो इससे ज़्यादा अफ़सोस की बात और क्या हो सकती है?

बात लिखने की नहीं लेकिन इबरत के लिए लिख रहा हूँ कि आज हमारा हाल यह है कि ख़ुद तो बेहतरीन कपड़े पहनकर घूमते हैं और जब क़ुरआन शरीफ़ पर जुज़दान चढ़ाने की बात आती है तो बीवी से कहा जाता है कि पुरानी इज़ार का कपड़ा तराश कर जुज़दाद बना दो। बताइए कितनी गिरी हुई ज़ेहनियत का इज़्हार इस अमल से होता है। वह अज़ीमुश्शान किताब जो अल्लाह का कलाम है और आप (सल्ल०) हामिले क़ुरआन हैं, इसकी यह बेहुर्मती कितनी बड़ी जसारत है? क्या अल्लाह पाक इस तौहीन आमेज़ हरकत को बर्दाश्त करेंगे?

अब मैं इस बात पर भी रौशनी डालता चलूँ कि अगर क़ुरआन पाक के औराक़ बोसीदा हो चुके हैं तो इसके लिए क्या करना चाहिए?

बड़ी सीधी-सी बात है कि आप क़ुरआन के बोसीदा औराक़ को मसाजिद के बाहर लगे बाक्स में डाल दीजिए। मसाजिद के मुंतज़िमीन इसे जमा करके दरिया में डाल देते हैं। अगर यही काम आप घर पर भी चाहें तो आसानी से कर सकते हैं। एक थैली मुस्तक़िल इसी काम के लिए रखिए। क़ुरआन शरीफ़ के बोसीदा औराक़, अख़्बार के वह तराशे जिनमें दीनी बातें दर्ज हों, और रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा-इफ़्तार के टाईम टेबिल वग़ैरह जिनपर क़ुरआनी आयात और अहादीस शाए की जाती हैं, उन्हें घर में रखी हुई इस थैली में जमा करते जाइए, महीने दो महीने में जब थैली भर जाए तो उसे ख़ुद जाकर समुन्दर में डाल आइए। इस तरह क़ुरआन पाक की बेहुर्मती भी नहीं होगी और न ही ग़ैरों को

कहने का मौक़ा मिलेगा कि अपनी मज़हबी किताबों को जा-बजा फेंकते हैं।

ख़ूब समझ लीजिए : बा-अदब बा-नसीब, बे-अदब बे-नसीब!

कलाम पाक या दीगर दीनी किताबों के बोसीदा औराक़ की बेअदबी या बेहुर्मती गुनाहे अज़ीम है। मस्जिद में क़ुरआन पाक को साफ़ और उम्दा जुज़दान में लपेटकर रखिए। तर्तीब से रखिए। यह नहीं कि जहाँ जी में आया, क़ुरआन शरीफ़ उठाकर रख दिया। छोटी साइज़ के क़ुरआन शरीफ़ अलग रखिए, बड़े साइज़ के क़ुरआन अलग रखिए, यह नहीं कि छोटे क़ुरआन पर बड़ा क़ुरआन रख दिया कि ग़लती से हाथ लग जाए तो क़ुरआन पाक नीचे गिर जाने का डर रहे।

बहुत-से नमाज़ी मिम्बर पर क़ुरआन शरीफ़ रख देते हैं। यह भी ग़लत है। क़ुरआन की जगह मिम्बर पर नहीं, बल्कि मसाजिद में लगे हुए ताक़ या अलमारी में होनी चाहिए। मिम्बर तो सिर्फ़ ख़तीब व इमाम के खड़े होने और बैठने की जगह है। मिम्बर ख़ुत्बा या तक़रीर के लिए होता है इसपर हरगिज़-हरगिज़ क़ुरआन मजीद नहीं रखना चाहिए, और न कोई दीनी किताब रखनी चाहिए।

आपकी ख़्वाहिश का एहतिराम करते हुए आपका यह सवाल जवाब के साथ "बिखरे मोती" में शामिल कर रहा हूँ ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा क़ारईन तक पहुँच सके। अल्लाह पाक हमें अपनी आख़िरी किताब 'क़ुरआन हकीम' की इज़्ज़त और तौक़ीर करने की सआदत नसीब फ़रमाए और उसकी बेअदबी या बहुर्मती से हमें महफ़ूज़ रखे। (आमीन!)

(मौलाना) मुहम्मद यूनुस पालनपुरी
13/शव्वालुल मुकर्रम, सन् 1427 हि०
26, अक्टूबर, सन् 2007 ई०

माल से हम किताबें तो ख़रीद सकते हैं इल्म नहीं ख़रीद सकते

माल से दुनिया के चन्द बड़े फ़ायदे तो हासिल किए जा सकते हैं, मगर हर मुश्किल में माल काम नहीं आता। जैसे :

माल से हम ऐनक तो ख़रीद सकते हैं, बीनाई नहीं ख़रीद सकते।

माल से हम नर्म बिस्तर तो ख़रीद सकते हैं, मीठी नींद नहीं ख़रीद सकते।

माल से हम किताबें तो ख़रीद सकते हैं, इल्म नहीं ख़रीद सकते।

माल से हम ख़ुशामद तो ख़रीद सकते हैं, किसी की मुहब्बत नहीं ख़रीद सकते।

माल से हम ज़ेवरात तो ख़रीद सकते हैं, हुस्न नहीं ख़रीद सकते।

माल से हम घर में नौकर तो ला सकते हैं, बेटा नहीं ला सकते।

माल से हम ख़िज़ाब तो ख़रीद सकते हैं, शबाब नहीं ख़रीद सकते।

इसलिए इंसान को चाहिए कि तालिबे-माल बनने के बजाय तालिबे-इल्म बनकर दुनिया और आख़िरत में सुर्ख़रूई हासिल करे।

दीनदार ग़ुरबा अल्लाह के क़रीब होंगे

हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) का फ़रमान हैः "क़ियामत के दिन सब लोगों से ज़्यादा अल्लाह तआला के क़रीब वह होगा जिसका फ़ाक़ा, प्यास और ग़म दुनिया में तवील मुद्दत तक रहा। अगर वे ग़ायब हो जाएँ तो लोग तलाश न करें, जब रात को लोग बिस्तर बिछा लेते हैं तो वे रब के हुज़ूर पेशानियाँ और घुटने बिछा लेते हैं और जब ज़मीन उन्हें खोती है तो रोती है। जब तू उनको किसी शहर में देखे तो जान ले कि ये लोग इस शहर में ईमान की अलामत हैं।"

दोस्त को दोस्त क्यों कहते हैं?

सल्फ़े-सालेहीन से मंक़ूल है कि दोस्त का लफ़्ज़ चार हुरुफ़ से मिलकर बना है, जिसकी तफ़्सील यह है :

दाल : से दर्द; यानी दुख-दर्द को बाँटनेवाले हों।

वाव : से वफ़ा; यानी जिनकी आपस में वफ़ा ऐसी हो कि ज़िन्दगी भर साथ निभाएँ।

सीन : से सच्चाई; यानी एक-दूसरे के साथ सच्चाई का मामला करें।

ता : से ताबेदारी; यानी हर एक-दूसरे की बात मानने के लिए तैयार रहे।

हज़रत हसन बसरी (रह०) की सवानेह-हयात पढ़ लीजिए

(1) उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) को किसी ने खुशख़बरी दी कि उनकी कनीज़ 'ख़ैरा' ने एक लड़के को जन्म दिया है। यह ख़बर सुनकर उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) का दिल बाग़-बाग़ हो गया, चेहर-ए-मुबारक पर ख़ुशी की लहर दौड़ गई। पहली फ़ुरसत में बच्चे को देखने का शौक़ दिल में पैदा हुआ, लिहाज़ा ज़च्चा और बच्चा दोनों को अपने घर बुलाने के लिए पैग़ाम भेजा। उन्हें अपनी इस कनीज़ से बेहद प्यार था। उसका बहुत ख़याल रखा करती थीं। आपकी दिली ख़ाहिश थी कि वह ज़चगी के दिन यहाँ गुज़ारे।

(2) पैग़ाम भेजे अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि आपकी कनीज़ "ख़ैरा" अपने हाथों में नौ मौलूद बच्चे को उठाए पहुँच गई। जब हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) की निगाह बच्चे के मासूम चेहरे पर पड़ी तो वफ़ूरे शौक़ से आगे बढ़ीं और उसे अपनी गोद में लेकर प्यार किया। यह बच्चा क्या था, क़ुदरत का अनमोल हीरा! इतना ख़ूबसूरत, गुले-रुख़, माह-जबीं और सेहतमन्द कि क्या कहना! हर देखनेवाला क़ुदरत के इस शाहकार को देखता ही रह जाता।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अपनी कनीज़ से पूछा : ऐ ख़ैरा! क्या बच्चे का नाम तज्वीज़ कर लिया है? उसने कहा, अम्मी जान! अभी नहीं, यह मैंने आपपर छोड़ रखा है, जो नाम आपको पसन्द हो रख दीजिए।

फ़रमाया : हम इसका नाम अल्लाह तआला की रहमत व बरकत से 'हसन' तज्वीज़ करते हैं। फिर हाथ उठाया और नौमौलूद के हक़ में दुआ की।

(3) हसन की पैदाइश से सिर्फ़ उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि०) का घर ही ख़ुशियों का गहवारा न बना बल्कि मदीना मुनव्वरा का एक और घराना इस ख़ुशी में बराबर का शरीक रहा और वह था कातिबे वह्य हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) का घराना। वह ख़ुशी में इसलिए शरीक थे कि नौमौलूद का बाप यसार उनका ग़ुलाम था और उनके दिल में अपने ग़ुलाम की बड़ी इज़्ज़त थी और उसे क़द्र की निगाह से देखते थे।

(4) हसन बिन यसार ने जो बाद में हसन बसरी के नाम से मशहूर हुए, रसूले अक़दस (सल्ल०) के घर में आपकी ज़ौजा मुहतरमा हिन्द बिन्ते अबी उमैया की गोद में परवरिश व तर्बियत पाई, जो उम्मे सलमा (रज़ि०) के नाम से मशहूर थीं।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) अरब ख़्वातीन में सबसे बढ़कर अक़्लमन्द, सलीक़ा-शेआर, मुहतात, हस्सास, पैकरे-हुस्न व जमाल और साहिबे-फ़ज़्ल व कमाल थीं। इल्म व हुनर और तक़वा व ख़शिय्यत में मुमताज़ मक़ाम पर फ़ाइज़ थीं। आपसे 378 अहादीस मरवी हैं, ज़मान-ए-जाहिलियत में आपका शुमार उन ख़्वातीन में होता था जो लिखना जानती थीं।

हज़रत हसन बसरी का ताल्लुक़ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) के साथ सिर्फ़ उनकी कनीज़ के बेटे की हैसियत से ही नहीं था बल्कि इससे भी कहीं गहरा और क़रीबी ताल्लुक़ पाया जाता है, वह इस तरह कि कभी-कभी हसन की वालिदा ख़ैरा हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०)

के किसी ज़रूरी काम को निपटान के लिए घर से बाहर जातीं तो यह बचपन में भूख व प्यास की वजह से रोने लगते। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) उन्हें अपनी गोद में ले लेतीं। माँ की ग़ैर हाज़िरी में बच्चे को तसल्ली और दिलासा देने के लिए अपनी छाती उसके मुँह को लगातीं, दूध उतर आता, बच्चा जी भरकर पीता और ख़ामोश हो जाता।

इस तरह हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) की हसन बसरी के साथ दो निस्बतें थीं। एक उम्मुल मोमिनीन के एतिबार से माँ की और दूसरी रज़ाई माँ होने की।

(5) उम्महातुल मोमिनीन के बाहमी ख़ुशगवार ताल्लुक़ात और घरों के आपस में क़ुर्ब व रब्त की वजह से इस ख़ुश-नसीब बच्चे को तमाम घरों में आने-जाने का मौक़ा मिलता रहता और इस तरह से अहले-ख़ाना के पाकीज़ा अख़्लाक़ व अतवार अपनाने की सआदत हासिल हुई।

हज़रत हसन बसरी (रह०) बयान करते हैं कि बचपन में अज़वाजे मुतह्हरात के घरों में मेरे आने-जाने और खेल-कूद से चहल पहल-रहती और तमाम घर ख़ुशियों का गहवारा बने रहते। फ़रमाते हैं कि कभी-कभी मैं उछलता-कूदता हुआ घरों की छतों पर चढ़ जाता, मुझे कोई रोक-टोक न थी।

(6) हज़रत हसन बसरी का बचपन अनवारे नुबूव्वत की चमकीली और मुअत्तर फ़िज़ाओं में हँसते-खेलते गुज़रा और यह रुश्द व हिदायत के उन मीठे चश्मों से जी भरकर सैराब हुए जो उम्महातुल मोमिनीन के घरों में जारी व सारी थे। बड़े हुए तो मस्जिदे नबवी में कबार सहाबा किराम (रज़ि०) के सामने ज़ानुए-तल्मिज़ के शर्फ़ से नवाज़े गए और उनसे इल्म हासिल करने में कोई कसर न उठा रखी।

उन्हें हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत अली बिन अबी तालिब, हज़रत अबू मूसा अशअरी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) जैसे जलीलुल-क़द्र सहाबा किराम से अहादीस रिवायत करने का शर्फ़ हासिल हुआ। लेकिन सबसे बढ़कर अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि०) से प्यार था। दीनी मसाइल में उनके मज़बूत दलाइल,

इबादत में गहरी दिलचस्पी और दुनियावी ज़ेब व ज़ीनत से बेरग़बती ने बहुत मुतास्सिर किया था। हज़रत अली (रज़ि०) का सहर-अंगेज़ बयान, हिक्मत व दानिश से लबरेज़ बातें, मसजा व मुक़फ़्फ़ा इबारतें और दिल हिला देनेवाली नसीहतें उनके दिल पर असर-अन्दाज़ हुईं, तो उनके होकर रह गए।

हजरत अली (रज़ि०) के तक़वा व अख़्लाक़ का रंग उनपर चढ़ा और हज़रत हसन बसरी ने फ़साहत व बलाग़त में हज़रत अली (रज़ि०) का उस्लूब इख़्तियार किया।

हज़रत हसन बसरी जब अपनी उम्र की चौदह बहारें देख चुके तो अपने वालिदैन के हमराह बसरा मुंतक़िल हो गए और वहीं अपने ख़ानदान के साथ मुस्तक़िल रिहाइश इख़्तियार कर ली। इस तरह हसन बसरा की तरफ़ मुंतक़िल हुए और लोगों में हसन बसरी के नाम से मशहूर हुए।

(7) जिन दिनों हज़रत हसन बसरी बसरा में आबाद हुए, बिलाद इस्लामिया में यह शहर उलूम व फ़ुनून का सबसे बड़ा मर्कज़ तसव्वुर किया जाता था। इसकी मर्कज़ी मस्जिद सहाबा किराम और ताबईने-उज़्ज़ाम से भरी रहती थी।

मस्जिद का हॉल और सेहन मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून के हलक़ा-हाए दर्स से आबाद था। हज़रत हसन बसरी उम्मते मुहम्मदिया अली साहिबहस्सलात वस्सलाम के जय्यद व मुमताज़ आलिमे दीन, मुफ़स्सिरे क़ुरआन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) के हलक़-ए-दर्स में शामिल हुए और उनसे तफ़्सीर, हदीस और तज्वीद का इल्म हासिल किया, फ़िक़्ह, लुग़त और अदब जैसे इल्म दीगर सहाबा किराम से हासिल किए। यहाँ तक कि यह एक रासिख़ आलिमे दीन और फ़िक़्ह के मर्तबा को पहुँचे। इल्म में रसूख़ की वजह से आम लोग दीवानावार उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए, लोग उनके पास बैठकर ख़ामोशी से ऐसे मवाइज़ सुनते जिनसे पत्थर दिल मोम हो जाते, और गुनाहगारों की आँखों से आँसू टपक पड़ते, आपकी ज़बान से निकलनेवाली हिक्मत व

दानिश की बातों को लोग सरमाय-ए-हयात समझते हुए अपने दिलों में महफ़ूज़ कर लेते और आपकी क़ाबिले-रश्क सीरत को अपनाने के लिए हरदम कोशाँ रहते।

(8) हज़रत हसन बसरी का नाम पूरे मुल्क में मशहूर हो गया। लोग अपंनी मज्लिसों में उनका ज़िक्रे-ख़ैर करने लगे। हुक्मरान उनकी ख़ैरियत दरयाफ़्त करना अपने लिए सआदत समझते, उनके शब व रोज़ के मामूलात से आगाही की दिली तमन्ना रखते।

ख़ालिद बिन-सफ़वान बयान करते हैं कि मैं इराक़ के एक क़दीम शहर 'हैरा' में बनू-उमैया की जरनल और फ़ातेह क़ुस्तनतीनिया मुस्लिमा -बिन-अब्दुल मलिक से मिला, उसने मुझसे दरयाफ़्त किया।

ख़ालिद! मुझे हसन बसरी (रह०) के मुताल्लिक़ कुछ बताओ। मेरा ख़्याल है उन्हें जितना तुम जानते हो कोई और नहीं जानता।

मैंने कहा : आपका इक़बाल बुलन्द हो, हरदम कामयाबी आपके क़दम चूमे, बिला शुबहा मैं उनके मुताल्लिक़ आपको बेहतर मालूमात बहम पहुँचा सकता हूँ, क्योंकि मैं उनका पड़ोसी भी हूँ और हमनशीन भी, बल्कि अहले-बसरा में सबसे ज़्यादा उन्हें जानता हूँ। उसने कहा : उनके मुताल्लिक़ कुछ मुझे भी बताएँ। मैंने कहा : उनका बातिन ज़ाहिर जैसा है, उनके क़ौल व फ़ेअ्ल में कोई तज़ाद नहीं पाया जाता। जब वह किसी को नेकी का हुक्म देते हैं, पहले ख़ुद उसपर अमल करते हैं। जब किसी को बुराई से रोकते हैं तो ख़ुद भी उस बुराई के क़रीब नहीं फटकते। मैंने दुनियावी माल व मताअ से उन्हें बिल्कुल मुस्तग़नी व बेनियाज़ पाया। वे इल्म व तक़वा का ख़ज़ाना हैं। लोग उनसे इल्म हासिल करने के लिए दीवानावार उनकी तरफ़ लपकते हैं। वे लोगों के महबूबे-नज़र हैं। ये बातें सुनकर जनरल मुस्लिमा-बिन-अब्दुल मलिक पुकार उठा :

"ख़ालिद! अब बस कीजिए! इतना ही काफ़ी है, भला वह क़ौम कैसे गुमराह हो सकती है, जिसमें हसन बसरी (रह०) जैसी अज़ीम मर्तबत शख़्सियत मौजूद हो।"

(9) जब हज्जाज-बिन-यूसुफ़ सक़फ़ी इराक़ का गवर्नर बना और उसने अपने दौरे हुकूमत में ज़ुल्म व तशद्दुद की इंतिहा कर दी, तो हज़रत हसन बसरी (रह०) उन मादूदे चन्द अश्ख़ास में से एक थे जिन्होंने उसकी सरकशी और ज़ुल्म व जोर को आगे बढ़कर रोका। उसके बुरे कारनामों की डट कर मुख़ालिफ़त की और हक़ बात डंके की चोट पर उसके मुँह पर कही।

हज्जाज-बिन-यूसुफ़ ने वस्त शहर में अपने लिए एक आलीशान महल तामीर करवाया। जब उसकी तामीर मुकम्मल हो गई, उसने इफ़्तताही तक़रीब में लोगों को दावते आम दी ताकि वे अज़ीमुश्शान महल को देखें, उसकी सैर करें, बज़बाने खुद तारीफ़ करें और दुआइया कलिमात से नवाज़ें।

हज़रत हसन बसरी (रह०) के दिल में ख़्याल आया कि इस सुनहरे मौक़े को हाथ से न जाने दिया जाए। वह यह नीयत करके घर से निकले कि आज लोगों को नसीहत करेंगे, उन्हें दुनियावी माल व मताअ से बेरग़बती इख़्तियार करने का दर्स देंगे। और जो अल्लाह के यहाँ इनामात हैं, उन्हें हासिल करने की तर्ग़ीब देंगे। जब आप मौक़े पर पहुँचे तो देखा कि लोग उस आलीशान और बुलन्द व बाला महल के चारों तरफ़ जमा हैं और इमारत की ख़ूबसूरती पर फ़रेफ़्ता, उसकी वुसअत पर अंगुश्त बदन्दाँ और उसकी आराइश व ज़ेबाइश से मरऊब नज़र आते हैं। आपने लोगों को झिंझोड़ते हुए कहा :

"हमें यह मालूम है कि फ़िरऔन ने इससे ज़्यादा मज़बूत, ख़ूबसूरत और आलीशान महलात तामीर किए थे लेकिन अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को हलाक कर दिया और उसके महलात को भी तबाह कर दिया।

काश! हज्जाज को यह मालूम हो जाए कि आसमानवाले उससे नाराज़ हैं और ज़मीनवालों ने उसे धोखे में रखा हुआ है।"

वह पूरे जोश व वलवले से हज्जाज के ख़िलाफ़ बरस रहे थे। उनके मुँह से अल्फ़ाज़ तीरों की तरह निकल रहे थे, मज्मा उनकी शोला बयानी

पर दम-बख़ुद था। यहाँ तक कि सुननेवालों में से एक शख़्स ने हज्जाज बिन यूसुफ़ के इंतिक़ामी जज़्बे से ख़ौफ़ज़दा होकर हज़रत हसन बसरी (रह०) से कहा, जनाब! अब बस कीजिए, इतना ही काफ़ी है, क्यों अपने आपको हलाकत के मुँह में दे रहे हैं।

हज़रत हसन बसरी (रह०) ने उस नेक दिल शख़्स से कहा कि मेरे भाई! अल्लाह तआला ने अहले-इल्म से यह पैमान लिया है कि वह ज़ालिम के मुँह पर बिना किसी ख़ौफ़ के हक़ बात की तब्लीग़ करते रहेंगे और कभी इस राहे-वफ़ा में जफ़ा का गुज़र नहीं होने देंगे। यही हमेशा हक़वालों का वतीरा रहा है और यही फ़रीज़ा आज मैं अदा कर रहा हूँ।

(10) दूसरे रोज़ हज्जाज गवर्नर हाउस में आया तो उसका चेहरा ग़ुस्से से लाल पीला था। उसने ग़ज़बनाक अन्दाज़ में अहले-मज्लिस से कहा : लाख लानत है तुम्हारे वुजूद पर, बुज़दिलो! कमीनो! मेरी आँखों से दूर हो जाओ, कितने अफ़सोस की बात है कि बसरे का एक ग़ुलाम इब्ने ग़ुलाम आम मज्मा में बेलगाम जो जी में आता है मेरे ख़िलाफ़ कह जाता है और तुममें कोई भी ऐसा नहीं जो उसकी ज़बान को रोके, शर्म करे, हया करो। ऐ गरोहे बुज़दिलाने अक़्लीम मन! कान खोलकर सुनो! अल्लाह की क़सम! अब मैं उसके ख़ून तुम्हें पिलाकर रहूँगा। उसे आज ऐसी इबरतनाक सज़ा दूँगा कि दुनिया अंगुश्त बदन्दाँ रह जाएगी। फिर उसने तलवार और चमड़े की चादर मंगवाई। ये दोनों चीज़ें फ़ौरन उसकी ख़िदमत में पेश कर दी गईं। उसने जल्लाद को हुक्म दिया। वह पलक झपकते ही सामने आ खड़ा हुआ। फिर पुलिस को हुक्म दिया कि हसन बसरी को गिरफ़्तार करके लाया जाए।

पुलिस थोड़ी ही देर में उन्हें पकड़ कर ले आई। मंज़र बड़ा ही ख़ौफ़नाक था। हर तरफ़ दहशत फैली हुई थी। लोगों की नज़रें ऊपर उठी हुई थीं। हर शख़्स मग़मूम था, दिल कांप रहे थे। जब हज़रत हसन बसरी (रह०) ने तलवार, जल्लाद और चमड़े की चादर को देखा तो वह ज़ेरे लब मुस्कुराए और कुछ पढ़ना शुरू कर दिया।

जब वे हज्जाज के सामने आए तो उनके चेहरे पर मोमिन का जाहो-

जलाल, मुसलमान की शान व शौकत और मुबल्लिग़ की आन-बान का अक्स जमील नुमायाँ था।

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उनकी तरफ़ देखा तो उसपर हैबत तारी हो गई, ग़ुस्सा काफ़ूर हो गया और बड़ी धीमी आवाज़ में कहा : अबू सईद हसन बसरी! मैं आपको ख़ुशामदीद कहता हूँ। आइए तशरीफ़ रखिए और मेरे क़रीब बैठें। आप बैठने लगे तो उसने कहा : ज़रा और क़रीब हो जाइए यहाँ तक कि उन्हें अपने साथ तख़्त पर बिठा लिया। लोग यह मंज़र हैरत, इस्तेजाब और ख़ौफ़ के मिले-जुले जज़्बात से देख रहे थे। जब हज़रत हसन बसरी (रह०) बड़े इत्मीनान से तख़्त पर बैठ गए तो हज्जाज ने उनसे दीनी मसाइल दरयाफ़्त करने शुरू कर दिए।

हज़रत हसन बसरी (रह०) हर सवाल का जवाब बड़ी दिलजमई, सहर बयानी और आलिमाना अन्दाज़ में देते रहे। हज्जाज बिन यूसुफ़ उनके जवाबात से बहुत मुतास्सिर हुआ और कहने लगा :

अबू सईद! तुम वाक़ई उलमा के सरदार हो। फिर क़ीमती इत्र मंगवाया और उनकी दाढ़ी से मुहब्बत भरे अन्दाज़ में लगाकर रुख़्सत किया।

हज़रत हसन बसरी (रह०) दरबार से निकले तो हज्जाज का दरबान भी उनके पीछे हो लिया। थोड़ी दूर जाकर उसने कहा : ऐ अबू सईद! हज्जाज ने आज आपको किसी और ग़र्ज़ से बुलवाया था, लेकिन उसकी तरफ़ से यह हुस्ने सुलूक देखकर मैं दंग रह गया। मुझे एक बात बताएँ कि जब आप गिरफ़्तार होकर दरबार में तशरीफ़ लाए थे, आपने तलवार, जल्लाद और चमड़े की चादर को देखा तो आपके होंठ हरकत कर रहे थे। आप क्या पढ़ रहे थे?

हज़रत हसन बसरी (रह०) ने फ़रमाया : मैंने उस वक़्त यह दुआ की थी :

"इलाही! तू मुझपर की गई नेमतों कावाली है। हर मुसीबत के वक़्त मेरा मलजा व मावा है।

इलाही! सारी मख़्लूक़ के दिल तेरे क़ब्ज़े में हैं।

इलाही! हज्जाज के ग़ुस्से को मेरे लिए ठण्डा और सलामतीवाला कर दे, जिस तरह तूने अपने ख़लील इबराहीम (अलैहि०) पर आग को ठण्डा और सलामतीवाला कर दिया था।"

मुद्दई लाख बुर चाहे तो क्या होता है
वही होता है जो मन्ज़ूरे ख़ुदा होता है

मेरी दुआ को अल्लाह तआला ने क़बूल किया और हज्जाज का ग़ुस्सा मुहब्बत में बदल गया।

(11) हज़रत हसन बसरी को जाबिर व ज़ालिम हुक्मरानों के साथ कई बार इसी नौइयत का पाला पड़ा, लेकिन आप हर बार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से हुक्मरानों की निगाह में मुहतरम और उनके दिलों पर अपनी अज़्मत व ख़ुद्दारी के गहरे नुक़ूश सब्त करके वापस लौटे।

इसी क़िस्म का एक हैरतअंगेज़ वाक़िआ उस वक़्त पेश आया जब ख़ुदातरस, मुंसिफ़ मिज़ाज, सादामन्श, पाकबीं, पाक-तीनत, ख़ुश-गहर और पाकीज़ा ख़ू ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) की वफ़ात हसरत आयात के बाद यज़ीद बिन अब्दुल मलिक मुस्नद ख़िलाफ़त पर जलवागर हुआ। उसने उमर बिन हुबैरा फ़ज़ारी को इराक़ का गवर्नर मुक़र्रर किया। फिर उसके इख़्तियारात में इज़ाफ़ा करके ख़ुरासान का इलाक़ा भी उसके मातहत कर दिया।

यज़ीद बिन अब्दुल मलिक ने इनाने इक़्तिदार संभालते ही ऐसा तर्ज़े अमल इख़्तियार किया जो सल्फ़े सालेहीन के तर्ज़े अमल के बिल्कुल बरअक्स था। वह अपने गवर्नर उमर बिन हुबैरा को कसरत से ख़त लिखता और उन ख़ुतूत में ऐसे आदेश जारी करता जो कभी-कभी हक़्क़ के मनाफ़ी होते और उन्हें फ़ौरी तौर पर नाफ़िज़ करने का हुक्म देता।

एक दिन उमर बिन हुबैरा ने हसन बसरी और आमिर बिन शुरहबील को मशविरे के लिए बुलाया और अर्ज़ किया कि अमीरुल मोमिनीन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक को अल्लाह तआला ने मस्नदे

ख़िलाफ़त अता की है जैसा कि आपको मालूम है, उसने मुझे इराक़ और ख़ुरासान का गवर्नर मुक़र्रर किया है। कभी-कभी वह मुझे ऐसे सरकारी ख़ुतूत इरसाल करता है जिनमें कुछ ऐसे इक़्दामात करने का हुक्म होता है जो मेरे नज़दीक इंसाफ़ पर मबनी नहीं होते, क्या ऐसे हुक्मों से पहलू-तही इख़्तियार करने का दीनी लिहाज़ से मेरे लिए कोई जवाज़ निकलता है?

हज़रत आमिर बिन शुरहबील ने ऐसा जवाब दिया जिसमें ख़लीफ़ा के लिए नर्म रवैया और गवर्नर को ख़ुश करने का अन्दाज़ पाया जाता था। लेकिन हज़रत हसन बसरी (रह०) ख़ामोश बैठे रहे।

गवर्नर उमर बिन हुबैरा ने हसन बसरी (रह०) की तरफ़ देखा और कहा कि अबू सईद! आपकी इस सिलसिले में क्या राय है? आपने फ़रमाया : 'ऐ इब्ने हुबैरा! हो सकता है कि आसमान से एक ऐसा सख़्त-गीर फ़रिश्ता नाज़िल हो जो क़तअन अल्लाह तआला के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करता। वह तुझे तख़्त से उठाकर और इस महल की वुस्अतों से निकाल कर एक तंग व तारीक क़ब्र में डाल दे, वहाँ तू यज़ीद को नहीं देख सकेगा, वहाँ तुझे वह अमल मिलेगा जिसमें तूने अपने और यज़ीद के रब की मुख़ालिफ़त की थी।

ऐ इब्ने हुबैरा! अगर तू अल्लाह का हो जाए और हर दम उसकी इताअत में सरगर्म रहे तो वह तुझे यक़ीनन दुनिया व आख़िरत में यज़ीद के शर से महफ़ूज़ रखेगा। और अगर तू अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करते हुए यज़ीद का साथ देगा तो फिर अल्लाह तआला भी तुझे यज़ीद के ज़ुल्म व सितम के हवाले कर देगा। ऐ इब्ने हुबैरा! ख़ूब अच्छी तरह जान लो कि मख़्लूक़ में चाहे कोई भी हो उसका वह हुक्म नहीं माना जाएगा, जिसमें अल्लाह तआला की नाफ़रमानी पाई जाती हो। ये बातें सुनकर इब्ने हुबैरा! इतना रोए कि आँसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो गई, फिर वह हज़रत आमिर बिन शुरहबील को छोड़कर हज़रत हसन बसरी (रह०) की तरफ़ माइल हुए और हद दर्जे उनकी इज़्ज़त व इकराम बजा लाए।

जब दोनों बुज़ुर्ग गवर्नर की मुलाक़ात से फ़ारिग़ होकर मस्जिद में पहुँचे तो लोग उनके इर्द-गिर्द जमा हो गए और उनसे गवर्नर के साथ होनेवाली बातें मालूम करने लगे।

हज़रत आमिर (रह०) ने लोगों के सामने बरमला कहा :

लोगो! हमें हर हाल में अल्लाह तआला को मख़्लूक़ पर तर्जीह देनी चाहिए, मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, आज हसन बसरी (रह०) ने गवर्नर उमर बिन हुबैरा को कोई ऐसी बात नहीं कही जिसे मैं न जानता हूँ, लेकिन मैंने अपनी गुफ़्तुगू में गवर्नर की ख़ुशनूदी को मलहूज़े-ख़ातिर रखा और हसन बसरी (रह०) ने अपनी गुफ़्तुगू में अल्लाह तआला की रिज़ा को पेशेनज़र रखा। अल्लाह तआला ने मुझे गवर्नर की नज़रों में गिरा दिया और हसन बसरी (रह०) को उसकी निगाहों में महबूब बना दिया।

(12) हज़रत हसन बसरी (रह०) 80 साल तक ज़िन्दा रहे। इस दौरान दुनिया को अपने इल्म व अमल, हिक्मत व दानिश और फ़हम व फ़िरासत से फ़ैज़याब करते रहे। उन्होंने नई नस्ल के लिए जो अज़ीम वुरसा छोड़ा वह उनके रिक़्क़त-अंगेज़ पिन्द व नसाइह हैं जो रहती दुनिया तक ख़िज़ाँ गुज़ीदा दिलों के लिए बहार बने रहेंगे। उनकी नसीहतें दिलों में गुदाज़ और इरतआ़श पैदा करती रहेंगी, उनके रिक़्क़त-अंगेज़ मवाइज़ के असर की बिना पर एहसासे-नदामत से आँखों में आँसुओं की झड़ियाँ लगती रहेंगी, बेताब आँसू बहते रहेंगे, परेशानहाल लोगों को रहनुमाई मिलती रहेगी और ग़फ़लतशिआ़र इंसानों को दुनिया की हक़ीक़त से आगाही हासिल होती रहेगी।

एक शख़्स ने हज़रत हसन बसरी (रह०) से दुनिया के मुताल्लिक़ पूछा तो आपने फ़रमाया : मुझसे दुनिया व आख़िरत के मुताल्लिक़ पूछते हो, सुनो! दुनिया व आख़िरत की मिसाल मशरिक़ व मग़रिब जैसी है, जितना ज़्यादा तुम एक के क़रीब जाओगे उतना ही दूसरे से दूर हो जाओगे।

तुम कहते हो कि मैं दुनिया के औसाफ़ बयान करूँ। मैं तुम्हारे

सामने उस घर की क्या सिफ़त बयान करूँ, जिसका आग़ाज़ मशीयत व तकलीफ़ पर मब्नी है और जिसका अंजाम फ़ना व बर्बादी है। उसमें जो हलाल है उसका हिसाब लिया जाएगा और जो हराम है उसके इस्तेमाल पर सज़ा दी जाएगी। जो इसमें तवंगर व मालदार हुआ वह फ़ितने में मुब्तला हुआ, और जो फ़क़ीर व मुहताज हुआ वह हुज़्न व मलाल का शिकार हुआ।

इसी तरह एक शख़्स ने आपसे आपका हाल दरयाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया :

भाई! मेरा हाल क्या पूछते हो, अफ़सोस! हमने अपनी जानों पर कितने ज़ुल्म ढाए, हमने अपने दीन को कमज़ोर कर दिया और दुनियावी हिर्स ने हमें मोटा कर दिया। हमने अपने अख़्लाक़ बूसीदा कर दिए और अपने बिस्तर और कपड़े नए बनवा लिए। हममें से एक अपने बायीं पहलू पर टेक लगाए मज़े से पड़ा रहता है और ग़ैरों के माल बड़ी बेपरवाही से हड़प किए जाता है।

फिर तो नमकीन के बाद मीठा खाने के लिए मंगवाता है, ठण्डे के बाद गर्म पीता है, ख़ुश्क के बाद तर खजूरें खाता है, पापी पेट में दर्द उठता है और क़ै आने लगती है, फिर घर में शोर मचाता है कि जल्दी चूरन लाओ ताकि खाना हज़म हो जाए। ऐ घटिया नादान! अल्लाह की क़सम! तू अपने दीन के सिवा कुछ भी हज़म नहीं कर सकेगा।

अहमक़! तेरा पड़ोसी कहाँ और किस हाल में है? तेरी क़ौम का भूखा यतीम कहाँ है? वह मिस्कीन कहाँ है जो तेरी तरफ़ देखता रहता है? वह मख़्लूक़ कहाँ है जिसकी निगरानी और देखभाल की अल्लाह तआला ने तुझे वसीयत की थी? काश! तुझे इल्म होता कि तू महज़ एक गिनती का हिंदसा है, जब एक दिन का सूरज ग़ुरूब होता है तो तेरी ज़िन्दगी का एक दिन कम हो जाता है।

(13) यकुम रजब सन् 110 हिजरी जुमेरात और जुमा की दर्मियानी शब हज़रत हसन बसरी (रह०) ने अपने रब की सदा पर लब्बैक कहते हुए अपनी जान जाँ-आफ़रीं के सुपुर्द की। सुबह के वक़्त जब उनकी

वफ़ात की ख़बर लोगों में फैली तो बसरा में कोहराम मच गया। आपको गुस्ल दिया गया, कफ़न पहनाया गया और उस मर्कज़ी मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई गई जिसमें ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा आलिम, मुअल्लिम और दाओ व मुबल्लिग़ की हैसियत से गुज़ारा। बसरा के तमाम बाशिन्दे नमाज़े-जनाज़ा में शरीक हुए, उस दिन बसरा की मर्कज़ी मस्जिद में नमाज़े अस्र की जमाअत नहीं हुई क्योंकि शहर में नमाज़ पढ़नेवाला कोई फ़र्द बाक़ी नहीं रहा था।

अल्लाह तआला इस ख़ुशगुहर, पाकीज़ा-ख़ू, सादामंश, शीरीं-सुख़न, पाक-तीनत, पाक-बीं, फ़रख़न्दा और ख़न्दा-जबीं अज़ीम मर्तबत शख़्सियत की क़ब्र को मुनव्वर करे।

आसमान तेरी लहद पर शबनम अफ़शानी करे

(14) हज़रत हसन बसरी (रह०) के मुफ़स्सल हालाते ज़िन्दगी मालूम करने के लिए दर्जे-ज़ैल किताबों का मुताला करें :

1. अत्तब्क़ातुल-कुबरा, 179, 182, 188, 195, 197, 2, 20
2. अत्तब्क़ातुल-कुबरा, 3/233-237
3. हुलियातुल-औलिया इसफ़हानी, 2/131, 161
4. तारीख़ ख़लीफ़ा बिन ख़ियात, 123, 189, 287, 331, 354
5. वफ़यातुल-आयान इब्ने ख़लकान, 1/354, 139
6. शज़रातुज़्ज़हब, 1/138-139
7. मीज़ानुल-एतिदाल, 1/254
8. अमालिउल-मुरतज़ा, 1/152, 153, 158, 160
9. अलबयान-वत्तबिय्यीन, 2/173, 3/144
10. अलमहबर मुहम्मद बिन हबीब, 235, 378
11. किताबुल-वफ़यात अहमद बिन हसन बिन अली, 108-109
12. हसन बसरी, एहसान अब्बास

ईरान की तीन शहजादियों ने मदीना मुनव्वरा के तीन दीनदार लड़कों को पसन्द किया

जिस दिन ईरान के आख़िरी बादशाह यज़िदगर्द को ज़िल्लत-आमेज़ अन्दाज़ में मौत के घाट उतार दिया गया उस दिन उसके तमाम जनरल, हिफ़ाज़ती दस्ता और अहले ख़ाना मुसलमानों के हाथों क़ैदी बन गए और माले-ग़नीमत को समेटकर मदीना मुनव्वरा लाया गया। इस अज़ीम फ़तह के मौक़े पर जिस कसीर तादाद में क़ीमती क़ैदी मदीना मुनव्वरा में लाए गए, उसकी तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती। उन क़ैदियों में ईरान के आख़िरी बादशाह यज़िदगर्द की तीन बेटियाँ भी थीं।

(1) लोग क़ैदियों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उन्होंने पलक झपकते ही उन्हें ख़रीद लिया और रक़म बैतुलमाल में जमा करा दी। सिर्फ़ ईरान के बादशाह यज़िदगर्द की बेटियाँ बाक़ी रह गईं। वह बिला शुबह-हुस्न व जमाल का पैकर, परी रुख़ और सीमीं बदन दोशीज़ाएँ थीं। जब उन्हें फ़रोख़्त करने के लिए पेश किया गया तो मारे ज़िल्लत व रुसवाई के उनकी आँखें ज़मीन में गड़ गईं। हसरत व यास और इंकसारी व दर्मान्दगी की वजह से उनकी ग़ज़ाली आँखों से आँसू बह निकले, उन्हें देखकर हज़रत अली बिन अबी तालिब करमुल्लाहु वजहु के दिल में तरस आ गया और यह ख़्याल आया कि उन्हें वह शख़्स ख़रीदे जो उनसे हुस्ने सुलूक से पेश आए। इसमें हैरान होने की भी कोई बात नहीं थी। रसूले अकरम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया :

"शिकस्त ख़ुरदा क़ौम के मुअज़्ज़िज़ अफ़राद पर तरस खाया करो।"

हज़रत अली (रज़ि०) ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से कहा :

"ऐ अमीरुल मोमिनीन! बादशाह की बेटियों के साथ इम्तियाज़ी सुलूक होना चाहिए।"

हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया : "आप सच कहते हैं, लेकिन इसकी सूरत क्या हो?"

हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया :

"एक तो इनकी क़ीमत ज़्यादा लगाएँ और दूसरे इनको इख़्तियार दे दें कि जिसपर राज़ी हो जाएँ उनके हाथ इन्हें दे दिया जाए और इनपर क़तअन कोई ज़बरदस्ती न हो।"

हज़रत उमर (रज़ि०) को यह सुनकर बहुत ख़ुशी हुई और हज़रत अली (रज़ि०) की इस तज्वीज़ को नाफ़िज़ कर दिया।

उनमें से एक ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) को पसन्द किया। दूसरे ने हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को और तीसरी हुस्न व जमाल की वजह से जिसे मलिक-ए-ख़ातीन कहा जाता था, उसने अपने लिए नवासाए रसूल हज़रत हुसैन (रज़ि०) को पसन्द किया।

(2) थोड़े ही अर्से बाद मलिक-ए-ख़्वातीन ने अपनी दिली रग़बत से इस्लाम क़बूल कर लिया, यह दीन-क़य्यिम की राह पर गामज़न हुई, ग़ुलामी से आज़ाद कर दी गई, कनीज़ से आज़ाद होकर बीवी का बाइज़्ज़त मक़ाम हासिल किया, फिर उसने सोचा कि माज़ी की तमाम शिर्किया यादें यकसर भुला दी जाएँ और उसने अपना नाम शाहज़न्दा से बदल कर ग़ज़ाला रख लिया।

ग़ज़ाला के नसीब में बेहतरीन रफ़ीक़े हयात आया। बड़ी ख़ुशगवार ज़िन्दगी बसर होने लगी, महीने लम्हों में गुज़रने लगे। अब एक ही दिली ख़्वाहिश बाक़ी रह गई थी कि उसे चाँद-सा बेटा नसीब हो जाए। अल्लाह तआला ने उसकी यह ख़्वाहिश भी पूरी कर दी। एक महताब चेहरा बेटे ने जन्म लिया। बरकत के लिए उसका नाम दादा के नाम पर अली रखा गया। लेकिन ग़ज़ाला के लिए यह ख़ुशी चन्द लम्हात से ज़्यादा देखना नसीब न हुई, क्योंकि बेटे को जन्म देते ही अल्लाह को प्यारी हो गई।

(3) इस नौमौलूद की परवरिश व निगहदाश्त एक कनीज़ के सुपुर्द कर दी गई जिसने उसे माँ जैसा प्यार दिया। उसने इसपर अपनी मुहब्बत को इस तरह निछावर किया जिस तरह कोई माँ अपने इकलौते बेटे से

प्यार करती है और उसकी इस तरह परवरिश की कि यह नौमौलूद बड़ा होकर उसे ही अपनी हक़ीक़ी माँ समझने लगा।

(4) हज़रत अली बिन हुसैन (रह०) जब सिने शऊर को पहुँचे ते हुसूले इल्म की तरफ़ शौक़ व रग़बत से मुतवज्जह हुए। पहला मदरसा घर ही था और यह कितना अच्छा मदरसा था।

पहले उस्ताद उनके वालिद हुसैन बिन अली (रज़ि०) थे और यह कितने अज़ीम उस्ताद थे, दूसरा मदरसा रसूले अकरम (सल्ल०) की मस्जिद थी। मस्जिदे नबवी में उन दिनों सहाबा किराम और ताबईन अज़्ज़ाम (रह०) की चहल-पहल थी। सहाबा किराम और ताबईन अज़्ज़ाम बड़ी ही दिली रग़बत के साथ फूलों जैसा नौनिहाल को किताबे-इलाही पढ़ाया करते थे और उसमें ग़ौर व तदब्बुर की तल्क़ीन करते, हदीसे रसूल उनके सामने बयान करते और उसके मक़ासिद समझाते।

रसूले अकरम (सल्ल०) की सीरत और ग़ज़वात के वाक़िआत बयान करते, मुख़्तलिफ़ शायरों के शेर पढ़कर सुनाते और फिर उनके मतालिब बयान करते और उनके दिलों में हुब्बे इलाही, ख़शीयते इलाही और तक़्वा की ज़ोत जगाते। इस तरह यह नौनिहाल बाअमल उलमा और बाकिरदार रहनुमा बनकर उभरते।

(5) हज़रत अली बिन हुसैन (रह०) के दिल में क़ुरआनी इल्म ने घर कर लिया। उसके सिवा किसी और इल्म की तरफ़ दिल राग़िब ही न हुआ। क़ुरआन मजीद के वादा व वईद की वजह से उनके एहसासात में लरज़ा तारी हो जाता। जब क़ुरआन मजीद की कोई ऐसी आयत पढ़ते जिसमें जन्नत का तज़्किरा होता तो दिल शौक़ व रग़बत से उसके हुसूल का मुतमन्नी होता, और जब क़ुरआन मजीद की ऐसी आयत पढ़ते जिसमें जहन्नम का तज़्किरा होता तो एक गर्म और लम्बी साँस लेते। उन्हें यूँ महसूस होता जैसे जहन्नम की आग का दहकता हुआ शोला उनके दामन में उतर आया है।

(6) हज़रत अली बिन हुसैन (रह०) जवानी और इल्म के नुकत-ए-उरूज पर पहुँचे तो मदनी समाज को एक ऐसा जवान मिला जो

बनू हाशिम के जवानों में इबादत और तक़वा में मिसाली शान रखने वाला, फ़ज़्ल व शर्फ़ और अख़्लाक़ व किरदार में सबसे बढ़कर, नेकी व बुर्दबारी में सबसे आला मक़ाम पर फ़ाइज़, उनकी इबादत और तक़वा का यह हाल था कि वुज़ू और नमाज़ के दर्मियान उनके बदन में कपकपी तारी हो जाती और उनका जिस्म मुसलसल रअशे की ज़द में आ जाता और इस सिलसिले में उनसे बात की जाती तो फ़रमाते :

"तुमपर बड़ा अफ़सोस है, क्या तुम जानते नहीं कि मैं किसके सामने खड़ा होनेवाला हूँ? क्या तुम जानते नहीं कि किसके साथ मैं सरगोशी करने का इरादा रखता हूँ?"

(7) इस हाशिमी नौजवान की नेकी, तक़वा और इबादत-गुज़ारी से मुतास्सिर होकर लोगों ने उसे ज़ैनुल-आबिदीन के नाम से पुकारना शुरू कर दिया और इसी नाम से आप मशहूर हो गए। यहाँ तक कि लोग उनके असली नाम को भूल गए, ग़र्ज़ यह कि लक़ब असली नाम पर ग़ालिब आ गया। उनकी संजीदा-रेज़ी और नमाज़ के दौरान दुनिया की बेनियाज़ी की वजह से अहले-मदीना ने उन्हें "फ़ना फ़िस्सुजूद" का लक़ब दे दिया। उनके बातिन की सफ़ाई और दिल की पाकीज़गी की वजह से लोगों ने उन्हें पाक-बाज़ व पाक-तीनत शख़्सियत क़रार दे दिया।

(8) हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रह०) का इस बात पर यक़ीन था कि इबादत का मग्ज़ दुआ है। वह काबा शरीफ़ के पर्दे से चिमट कर घंटों रब्बे-जलील की बारगाह में दुआएँ करते। बैतुल्लाह के साथ कितनी ही मर्तबा चिमट कर उन्होंने यह दुआ की :

"परवरदिगार! तूने बेपायाँ रहमत मुझपर निछावर की, मुझपर इनाम व इकराम की बेइंतिहा बारिश की। मैं बिला ख़ौफ़ व ख़तर तेरी बारगाह में इल्तजा करता हूँ, मुहब्बत व उल्फ़त की बिना पर तुझसे सवाली हूँ, तेरी बारगाह से मज़ीद रहमत का मुल्तजी हूँ। तेरे हुक़ूक़ की अदायगी के लिए हिम्मत व ताक़त की इल्तजा है। इलाही! मैं तुझसे उस बेचारे गहरे पानी में डूबनेवाले के मानिन्द माँगता हूँ जिसे किनारे लगने के लिए तेरे

सिवा कोई सहारा नज़र न आता हो। इलाही! करम फ़रमा और मेरी ज़िन्दगी की मजधार में फंसी हुई नाव को किनारे लगा दे, बिला शुबहा तू सबसे बढ़कर अपनी मख़्लूक़ पर करम करनेवाला है।"

(9) हज़रत ताऊस बिन कीसान (रह०) ने एक बार देखा कि वे (ज़ैनुल आबिदीन) बैतुल्लाह के साए में खड़े मुज़तरिब शख़्स की तरह पेचो-ताब खा रहे हैं। सख़्त बीमार की तरह कराह रहे थे, मुहताज की तरह दुआ कर रहे थे। हज़रत ताऊस बिन कीसान (रह०) खड़े इंतिज़ार कर रहे थे, यहाँ तक कि उन्होंने रोना बन्द कर दिया, दुआ से फ़ारिग़ हुए तो ताऊस बिन कीसान ने उनसे कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल के नवासे! मैंने आज तेरी हालत देखी है, तुझमें तीन ख़ूबियाँ ऐसी पाई जाती हैं जो तुझे ख़ौफ़ से बचा लेंगी।"

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन ने पूछा : "ऐ ताऊस! वह कौन सी ख़ूबियाँ हैं?"

आपने फ़रमाया : "एक तो आप रसूलुल्लाह (सल्ल०) के नवासे हैं, दूसरी आपको अपने नाना की शफ़ाअत हासिल होगी और तीसरी अल्लाह तआला की रहमत आप शामिले हाल होगी।"

उन्होंने फ़रमाया : "ऐ ताऊस! क़ुरआन मजीद की दर्जे-ज़ेल आयत सुनने के बाद मैं समझता हूँ कि मेरा रसूल (सल्ल०) के साथ इंतिसाब मुझे फ़ायदा न देगा। अल्लाह तआला का इरशाद है :

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ

(سورہ مؤمنون آیت ۱۰۱)

"तो जब सूर फूंका जाएगा तो उस दिन उनके दर्मियान कोई हसब व नसब काम न आएगा और न एक-दूसरे को पूछेंगे।"

(सूरह मोमिनून, आयत 101)

जहाँ तक मेरे नाना की शफ़ाअत का ताल्लुक़ है, अल्लाह तआला का यह इरशाद मेरे पेश नज़र है :

وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى (سورہ انبیاء، آیت:۲۸)

"किसी की सिफ़ारिश नहीं करते बजुज़ उसके जिसके हक़ में सिफ़ारिश सुनने पर अल्लाह राज़ी हो।" (सूरह् अंबिया, आयत 28)

और जहाँ तक अल्लाह तआला की रहमत का ताल्लुक़ है, इस सिलसिले में अल्लाह तआला का इरशाद है :

إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ (سورہ اعراف، آیت:۵۶)

"बेशक अल्लाह की रहमत नेक किरदार लोगों से क़रीब है।"
(सूरह् आराफ़, आयत 56)

तक़वा और ख़ौफ़े ख़ुदा ने हज़रत ज़ैनुल आबिदीन में बहुत-सी ख़ूबियाँ पैदा कर दीं। फ़ज़्ल व शर्फ़ और नर्मी व बुर्दबारी के ख़ूगर हुए। इन मिसाली औसाफ़ के दिल-पज़ीर तज़्किरों से सीरत की किताबें मुज़य्यन हैं और तारीख़ के सफ़्हात चमक रहे हैं।

हज़रत हसन बिन हसन बयान करते हैं। मेरे और चचाज़ाद भाई ज़ैनुल आबिदीन के दर्मियान एक मर्तबा इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया। मैं उनके पास गया, वह मस्जिद में अपने साथियों के हमराह बैठे हुए थे, ग़ुस्से में आकर मैंने जो मुँह में आया उन्हें कह दिया। लेकिन वह मेरी कड़वी-कसैली बातें ख़ामोशी से सुनते रहे और मुझे कोई जवाब न दिया। मैं ग़ुस्से का भरपूर इज़्हार करके चला गया। रात को मेरे दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी, यह देखने के लिए उठा कि इस वक़्त मेरे दरवाज़े पर कौन हो सकता है। मैंने देखा कि ज़ैनुल आबिदीन खड़े हैं, मुझे इस बात में कोई शक न रहा कि यह अब अपना बदला लेने आए हैं, लेकिन उन्होंने फ़रमाया :

"मेरे भाई! आज सुबह जो आपने मेरे बारे में कहा, अगर उसमें आप सच हैं तो अल्लाह तआला मुझे माफ़ कर दे और अगर आप उन बातों में सच्चे नहीं हैं तो अल्लाह तआला आपको माफ़ कर दे।"

यह कहा, मुझे सलाम किया और वापस चले गए। मैंने उन्हें रोका और अर्ज़ किया, "आइंदा मैं कोई ऐसी बात नहीं करूँगा जो आपको नागवार गुज़रे। भाई मुझे माफ़ कर दीजिए।"

उनका दिल नर्म हो गया और फ़रमाया : "कोई बात नहीं! मेरे बारे में आपको बात करने का हक़ पहुँचता है।"

(10) मदीना का एक बाशिन्दा बयान करता है कि एक बार ज़ैनुल आबिदीन मस्जिद से बाहर निकले और मैं भी उनके पीछे हो लिया, मैं बिना किसी वजह के उन्हें गालियाँ देने लगा। लोग यह सुनकर मुझपर पिल पड़े। मुझे अपनी जान के लाले पड़ गए। क़रीब था कि वे मेरा कचूमर निकाल देते। ज़ैनुल आबिदीन (रह०) ने लोगों की तरफ़ देखा और फ़रमायाः "रुक जाओ। तो वे सब रुक गए, जब आपने मुझे कांपते हुए देखा तो बड़ी ख़न्दा-पेशानी से मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए, मुझे दिलासा देने लगे ताकि मेरा ख़ौफ़ जाता रहे।

फिर आपने फ़रमाया : "आपने मुझे अपनी मालूमात के मुताबिक़ गाली दी, लेकिन वह ऐब जिनपर पर्दा पड़ा हुआ है, आप नहीं जानते, वह तो कहीं ज़्यादा हैं।" फिर मुझसे पूछा, "क्या तुम्हारी कोई ऐसी ज़रूरत है जिसे पूरा करके हम तुम्हारी मदद कर सकें?"

मैं शर्मिन्दा हुआ और कुछ कह न सका। जब उन्होंने मेरी शर्मसारी देखी तो अपनी क़ीमती चादर उतारकर मुझपर डाल दी और एक हज़ार दिरहम मुझे इनायत किए।

एक ग़ुलाम का बयान है कि मैं ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन (रह०) का ग़ुलाम था। उन्होंने मुझे किसी काम के लिए भेजा। मैंने ताख़ीर कर दी। जब मैं उनके पास आया तो बड़े ग़ुस्से से कोड़ा पकड़ा और मेरी पिटाई शुरू कर दी। मैं रोने लगा। मुझे ग़ुस्सा भी बहुत आया। आपने इससे पहले किसी को मारा भी नहीं था।

मैंने कहा : "ऐ अली बिन हुसैन! अल्लाह से डरें, एक तो आप मुझसे ख़िदमत लेते हैं, मैं आपके हुक्म के मुताबिक़ हर काम पूरी मेहनत

से करता हूँ, ऊपर से आप मेरी पिटाई करते हैं, यह कहाँ का इंसाफ़ है?''

मेरी यह बात सुनकर रो पड़े और फ़रमाया : ''अभी मस्जिदे नबवी में जाओ, दो रकअत नमाज़ पढ़ो फिर यह दुआ करो, इलाही! अली निब हुसैन को माफ़ कर दे, अगर आज आप यह करेंगे तो मेरी ग़ुलामी से आप आज़ाद होंगे।'' मैं मस्जिद गया, नमाज़ पढ़ी और दुआ की। जब मैं घर वापस लौटा तो आज़ाद था।

(11) अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रह०) पर बड़ी वाफ़िर मिक़्दार में माल व दौलत और रिज़्क़ के ख़ज़ाने खोल रखे थे। तिजारत में उन्हें बहुत नफ़ा होता था। ज़राअत में भी बड़ी फ़रावानी मयस्सर थी।

ये दोनों काम आपके नौकर-चाकर अंजाम दिया करते थे। ज़राअत व तिजारत के ज़रिए वाफ़िर मिक़्दार में माल व दौलत उनके हाथ लगता, लेकिन इस तवंगरी व फ़रावानी ने उनके अन्दर नख़ुव्वत या तकब्बुर का कोई शायबा पैदा नहीं किया। अलबत्ता दुनिया के माल को उन्होंने आख़िरत की कामयाबी का ज़रिया बनाया। उनकी दौलत व सरवत हर लिहाज़ से उनके लिए मुफ़ीद व कारआमद साबित हुई। राज़दारी और पोशीदा अन्दाज़ में सदक़ा व ख़ैरात करना उन्हें बहुत महबूब था। जब रात का अंधेरा छा जाता तो ये अपनी कमज़ोर कमर पर आटे की थैले उठाते और मदीने के उन ज़रूरतमन्दों के घर चुपके से छोड़ आते, जो ख़ुद्दारी की वजह से लोगों के सामने दस्ते-सवाल-दराज़ नहीं करते थे। यह काम अंजाम देने के लिए रात की तारीकी में उस वक़्त निकलते जबकि लोग सोए हुए होते।

मदीना मुनव्वरा में बहुत-से घर ख़ुशहाली से ज़िन्दगी बसर कर रहे थे, जिन्हें यह भी पता नहीं था कि उनके पास वाफ़िर मिक़्दार में रिज़्क़ कहाँ से आता है। हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन (रज़ि०) फ़ौत हो गए और उन लोगों के पास आटा आना बन्द हो गया तब पता चला कि यह कहाँ से आता था।

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन को ग़ुस्ल देने के लिए जब तख़्ते पर रखा गया, ग़ुस्ल देनेवालों ने पीठ पर सियाह निशान देखा तो कहने लगे, यह क्या है? उन्हें बताया गया कि यह आटे की बोरियाँ उठाने की वजह से निशान पड़ा, जो वे मदीने के तक़रीबन एक सौ घरों में पहुँचाया करते थे, आज इस तरह फ़य्याज़ी के साथ ख़र्च करनेवाला दुनिया से रुख़्सत हो गया।

(12) हज़रत ज़ैनुल आबिदीन बिन हुसैन (रज़ि०) अपने ग़ुलामों को इस कसरत और फ़य्याज़ी से आज़ाद किया करते थे कि उसका चर्चा मशरिक़ व मग़रिब में सफ़र करनेवाले मुसाफ़िरों तक पहुँच चुका था। उनका यह कारनामा लोगों की फ़िक्र व नज़र के उफ़क़ से भी कहीं बुलन्द था। उसकी परवाज़ तख़य्युलात से भी कहीं ऊँची थी, कोई आम इंसान उसका तसव्वुर भी नहीं कर सकता।

ये हर उस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया करते थे जो उनसे हुस्ने-सुलूक से पेश आता, उसकी आज़ादी उसके हुस्ने सुलूक का बदला होग। ये उस ग़ुलाम को भी आज़ाद कर दिया करते थे जो नाफ़रमानी करता और फिर तौबा कर लेता। उसे अपनी तौबा के बदले आज़ादी मिल जाती। उनके मुताल्लिक़ यह बयान किया जाता है कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में एक हज़ार ग़ुलाम आज़ाद किए। आप अपने किसी ग़ुलाम या किसी कनीज़ से एक साल से ज़ायद ख़िदमत नहीं लिया करते थे।

ईदुल फ़ित्र की रात बहुत ज़्यादा ग़ुलामों को आज़ाद किया करते थे, उनसे यह मुतालबा किया करते थे कि क़िबला रुख़ होकर अल्लाह तआला से यह दुआ करें :

> "इलाही! अली बिन हुसैन को माफ़ कर दे।" इस तरह उन्हें दोहरी ख़ुशी नसीब होती, एक ख़ुशी ईद की और दूसरी ख़ुशी आज़ादी की।

(13) हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन (रह०) की मुहब्बत लोगों के दिलों में उतर चुकी थी। लोग उन्हें बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखा करते थे, लोगों के दिलों में उनका बहुत मर्तबा था। मानो कि ये

लोगों के बेताज बादशाह थे। उनके दौर में यह मक़ाम किसी और को हासिल न था, लोगों को उनसे सच्ची मुहब्बत थी, उनके साथ बड़ी ताज़ीम से पेश आते, बड़ा ही गहरा ताल्लुक़ था, लोगों की निगाहें हरदम उनकी मुतलाशी रहतीं। घर से निकलते हुए या घर में दाख़िल होते हुए, मस्जिद जाते हुए या मस्जिद से वापस आते हुए लोग उनकी ज़ियारत की सआदत हासिल किया करते थे।

(14) एक मर्तबा का ज़िक्र है कि हिशाम बिन अब्दुल मलिक हज के लिए मक्का मुअज़्ज़मा आया। उस वक़्त वह वली-अहद था, वह तवाफ़ करना और हजरे असवद को चूमना चाहता था। हिफ़ाज़ती दस्ते ने लोगों को हटो-बचो करते हुए उसके लिए रास्ता बनाना शुरू कर दिया। लेकिन लोगों में से एक शख़्स ने उनकी तरफ़ देखा ही नहीं और न ही उनके लिए रास्ता बनाया बल्कि वह यह कह रहा था : "यह घर अल्लाह का है, तमाम लोग उसके बन्दे हैं।"

इसी दौरान दूर से ला इला-ह इल्लल्लाहु और अल्लाहु अकबर की आवाज़ें सुनाई देने लगीं, लोग टकटकी लगाकर उसकी तरफ़ देखने लगे, वे क्या देखते हैं कि लोगों के झुरमुट में एक ख़ूबसूरत, छरेरे बदन और रौशन चेहरेवाला शख़्स एहराम बांधे बड़े ही वक़ार के साथ बैतुल्लाह की जानिब चला आ रहा है। उसकी पेशानी पर सज्दों का निशान नुमायाँ है। लोग अक़ीदत का इज़्हार करते हुए उसके लिए रास्ता बना रहे हैं और उसे मुहब्बत व अक़ीदत की नज़र से देख रहे हैं, वह शख़्स हजरे असवद तक पहुँचा और उसे बड़े ही बावक़ार अन्दाज़ में चूमा।

हिशाम बिन अब्दुल मलिक के हाशिया बरदारों में से एक शख़्स ने उससे पूछा, यह कौन है जिसकी लोग इस अन्दाज़ में ताज़ीम बजा ला रहे हैं। हिशाम ने कहा, मैं इसे नहीं जानता।

दुनियाए अरब का मशहूर शायर फ़र्ज़दिक़ वहाँ मौजूद था। उसने कहा, अगर हिशाम इसको नहीं जानता तो क्या हुआ, मैं इसे जानता हूँ और तमाम दुनिया इसे जानती है। यह हज़रत हुसैन (रज़ि०) का फ़रज़न्द-अर्जमन्द अली है जिसे लोग ज़ैनुल आबिदीन के नाम से जानते

हैं, फिर बरजस्ता उनकी शान में शेर कहे जिनका तर्जुमा यह है :

(1)

यह वह शख़्स है जिसके क़दमों की आहट को वादी बुतहा जानती है
बैतुल्लाह भी इसको जानता है और हल व हरम भी इसे जानते हैं

(2)

यह अल्लाह के बन्दों में सबसे बेहतर इंसान का नवासा है
यह मुत्तक़ी परहेज़गार, पाक साफ़ और मुमताज़ इंसान है

(3)

यह फ़ातिमतुज़्ज़हरा का पोता है, अगर तू नहीं जानता तो सुन ले
इसके नाना ख़ातिमुल अंबिया सल्लल्लाहु (अलैहि व सल्लम हैं

(4)

तेरा यह कहना कि यह कौन है, इसे कोई नुक़सान नहीं देगा
तू उसे अगर नहीं जानता, अरब व अजम तो इसे जानते हैं

(5)

इसके दोनों हाथ बड़े फ़य्याज़ी हैं
लोग इसकी फ़य्याज़ी से ख़ूब मुस्तफ़ीज़ होते हैं

(6)

यह नर्म तबीयत है, इसमें तुर्शरूई का शायबा तक नहीं है
दो ख़ूबियों ने आरास्ता किया है वह हुस्ने अख़्लाक़ और नर्म तबीयत है

(7)

तशह्हुद के अलावा इसकी ज़बान पर ला नहीं आता
अगर तशह्हुद न होता तो यह ला भी नअम होता

(8)

इसके एहसानात ख़ल्क़े ख़ुदा पर आम हैं
जिनकी वजह से तारीकियाँ, ग़ुरबत व इफ़्लास ख़त्म हो गए

(9)

जब क़ुरैश ने इसे देखा तो उसका एक शख़्स पुकार उठा
यह वह शख़्स है जिसपर हुस्ने अख़्लाक़ ख़त्म है

(10)

यह हया की वजह से अपनी निगाहें नीची रखता है
और लोग इसकी हैबत से निगाहें झुका लेते हैं

(11)

इसकी हथेली रेशम की तरह नर्म है और इससे कस्तूरी की ख़ुश्बू आती है
और इसकी नाक खड़ी है जिससे शख़्सी अज़्मत आशकार होती है

(12)

इसका असल रसूल (सल्ल०) से मुशतक़ हुआ है
इसका हसब व नसब किस क़दर उम्दा है

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रह०) हर उस शख़्स के लिए नादिर नमूना थे जो पोशीदा और एलानिया अल्लाह तआला से डरता है और जो अल्लाह तआला के अज़ाब से डरते हुए और उसके सवाब का लालच करते हुए अपने आपको बचा-बचाकर रखते हैं।

नोट : बन्दे के वालिद साहब बयानात में अरबी के यह अशआर मय तर्जमा दर्द भरे अन्दाज़ में पढ़ते थे, मज्मा बहुत रोता था, अल्लाह तआला उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए और जन्नत नसीब फ़रमाए। आमीन!

(15) हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रह०) के मुफ़स्सल हालाते ज़िन्दगी मालूम करने के लिए दर्जे-ज़ेल किताबों का मुताला करें—

1. तब्क़ात इब्ने सअद, 5/211
2. तारीख़े अल-बुख़ारी, 6/626
3. अल-मआरिफ़, 214
4. अल-मआरिफ़ा वत्तारीख़, 1/360, 544
5. अल-जिरह वत्तादील, 3/178
6. तब्क़ातुल फ़ुक़्हा (शीराज़ी), 63

7. तारीख़ इब्ने असाकिर, 12/515

8. अल असमा वल्लुग़ात, 1/343

9. वफ़ियातुल आयान, 3/366

10. तारीख़े इस्लाम, 4/34

11. अल-इब्र, 1/111

12. अल-बिदाया वन्निहाया, 9/103

13. अन्नुजूमुज़्ज़ाहिरा, 1/229

हज़रत सुमामा बिन उसाल (रजि०) का वाक़िया

हज़रत मौलाना साहब दामत बरकातहुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ है कि बारहा आपके वाज़ में हज़रत सुमामा बिन उसाल का वाक़िआ सुनता हूँ जो मैंने किसी किताब में पढ़ा नहीं है हालांकि मैं बिफ़ज़लिही व कर्रमा इल्म की दौलत के हुसूल में कुछ अर्सा दे चुका हूँ, बराए करम तफ़्सीली ख़िताब से मुस्तफ़ीज़ फ़रमा कर क़ल्बी फ़रहत का मौक़ा इनायत कीजिए। फ़क़त, वस्सलाम।

जवाबे ख़त

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सन् 6 हिजरी में दावते इस्लामी का दायरा वसीअ करने का इरादा फ़रमाया। इसके लिए आप (सल्ल०) ने अरब व अजम के हुक्मरानों को आठ दावती ख़त लिखे। आपने जिन हुक्मरानों के पास ये ख़ुतूत इरसाल फ़रमाए थे, उनमें से एक सुमामा बिन उसाल हनफ़ी था। सुमामा को अहम हुक्मरानों में शामिल करना और उसके यहाँ दावती ख़त रवाना करना हैरतअंगेज़ और क़ाबिले ताज्जुब इसलिए नहीं था कि वह निहायत बाअसर और अहम शख़्सियत का मालिक था। वह दौरे जाहिलियत में अरब का एक हुक्मराँ क़बीला बनू हनीफ़ा का एक सरबर आवरदा रईस और इलाक़ा यमामा के उन बादशाहों में से था जिनकी कोई बात ठुकराई नहीं जाती थी।

जब सुमामा के पास रसूलुल्लाह (सल्ल०) का क़ासिद पहुँचा तो उसने उसके साथ निहायत तौहीन आमेज़ और ग़ैर-ज़िम्मेदाराना रवैया अपनाया। झूठे पिन्दार और जाहिलाना ग़ुरूर ने उसको गुनाह पर जमा दिया और उसने दावते हक़ से अपने कान बन्द कर लिए, फिर शैतान उसपर सवार हो गया, वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर बेख़बरी की हालत में अचानक हमला करके आप (सल्ल०) का काम तमाम कर देना चाहता था और अपने इस नापाक मन्सूबे की तक्मील के लिए वह किसी मुनासिब मौक़े का इंतिज़ार करने लगा। मगर अल्लाह तआला ने अपने नबी को उसके शर से महफ़ूज़ रखा। सुमामा अगरचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के इराद-ए-क़त्ल से बाज़ आ गया लेकिन वह आपके सहाबा को क़त्ल करने के इरादे से दस्त-बरदार नहीं हुआ, वह बराबर उनकी ताक में लगा रहा। आख़िरकार वह चन्द सहाबा पर क़ाबू पाने में कामयाब हो गया और उनको निहायत दर्दनाक तरीक़े से शहीद कर डाला। इस वजह से रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा में इस बात का एलान फ़रमा दिया कि वह जहाँ कहीं मिले, क़त्ल कर दिया जाए। सहाबा के क़त्ल और नबी करीम (सल्ल०) के इस ऐलान के कुछ ही दिनों बाद सुमामा ने उमरा अदा करने का इरादा किया और इस इरादे से वह अपने इलाक़ा यमामा से मक्का की सिम्त रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर वह काबा का तवाफ़ और उसमें रखे हुए बुतों के लिए क़ुरबानी का इरादा रखता था लेकिन अपने इस सफ़र के दौरान वह मदीना के क़रीब एक रास्ते से गुज़रते हुए अचानक एक ऐसी आफ़त में फँस गया जिसका उसे वहम व गुमान तक नहीं था। हुआ यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के भेजे हुए कुछ मुसलमानों पर मुश्तमिल एक फ़ौजी दस्ते ने—जो इस ख़तरे के पेशे नज़र कि कहीं कोई शरपसन्द रात की तारीकी से फ़ायदा उठाकर मदीना के बाशिन्दों को नुक़सान न पहुँचा दे—सुमामा को देखा और उसे गिरफ़्तार कर लिया (हालांकि उनमें से कोई भी उसे पहचानता न था) और उसको मदीना लाए और उसे मस्जिद के एक सुतून से बाँध दिया और इस बात का इंतिज़ार करने लगे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) खुद इस क़ैदी के हालात से वाक़फ़ियत हासिल करके उसके बारे में कोई फ़ैसला सादिर फ़रमाएँगे।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) घर से मस्जिद की तरफ़ आए और उसमें दाख़िल होने का इरादा किया तो आपकी नज़र सुमामा पर पड़ी जो सुतून से बँधा हुआ था। आपने सहाबा किराम से कहा, "जानते हो तुम लोगों ने किसको गिरफ़्तार किया है?"

सहाबा किराम ने अर्ज़ किया : नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल! हम इससे वाक़िफ़ नहीं हैं।

"यह क़बीला बनी हनीफ़ा का सरदार सुमामा बिन उसाल है। इसके साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना।" आप (सल्ल०) ने क़ैदी का तआरुफ़ कराते हुए फ़रमाया। फिर आप वापस घर तशरीफ़ ले गए और घरवालों से कहा कि "तुम्हारे पास जो भी खाना हो, उसे जमा करके सुमामा बिन उसाल के पास भेज दो।" फिर आप (सल्ल०) ने हिदायत फ़रमाई कि "मेरी ऊँटनी का दूध सुबह व शाम दुहकर उसको पेश किया जाए।" फिर आप सुमामा को इस्लाम की तरफ़ माइल करने के ख़्याल से उसके पास तशरीफ़ ले गए और उससे पूछा कि "सुमामा! तुम्हारा क्या ख़याल है? तुम हमारी तरफ़ से किस क़िस्म के सुलूक की तवक़्क़ो रखते हो?"

"मैं आपके मुताल्लिक़ अच्छा गुमान और आपसे अच्छे बर्ताव की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अगर आप मेरे क़त्ल का फ़ैसला करते हैं तो एक ऐसे शख़्स को क़त्ल कराएँगे जो क़त्ल का मुजरिम है, और अगर एहसान करके मुझे छोड़ दें तो एक एहसान-शनास को अपना ममनू करम पाएँगे और अगर आपको माल की ख़्वाहिश है तो वह भी फ़रमाइए, जितना माल चाहेंगे, दिया जाएगा।" उसने जवाब दिया।

इस गुफ़्तुगू के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सुमामा को उसके हाल पर छोड़ दिया और दो दिन तक उससे कोई तआरुज़ नहीं किया। इस दौरान उसके पास हस्बे मामूल खाने-पीने की चीज़ें और ऊँटनी का दूध बराबर पहुँचता रहा। दो दिन बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) फिर उसके पास तशरीफ़ लाए और वही सवाल किया। सुमामा! तुम्हारा क्या ख़्याल है तुम हमसे किस क़िस्म के सुलूक की तवक़्क़ो रखते हो?"

उसने जवाब दिया, "मेरे पास कहने की वही बातें हैं जो इससे पहले

मैं कह चुका हूँ। अगर आप मेरे ऊपर एहसान करते हैं तो एक ऐसे शख़्स पर एहसान करेंगे जो इसकी क़द्र पहचानता है और अगर मेरे क़त्ल का फ़ैसला करते हैं तो आपका यह फ़ैसला हक़ ब-जानिब होगा क्योंकि मैं आपके आदमियों को क़त्ल करके इसका मुस्तहिक़ क़रार पा चुका हूँ। और अगर आपको माल की ख़्वाहिश है तो बताइए, जो चाहेंगे आपको पेश किया जाएगा।"

इस मौक़े पर भी आप (सल्ल०) ने उससे कुछ और नहीं कहा बल्कि उसको छोड़कर चले गए। अलबत्ता अगले दिन आप (सल्ल०) फिर उसके पास गए और फिर वही सवाल दोहराया। "सुमामा! तुम को हमारी तरफ़ से किस तरह के बर्ताव की उम्मीद है?"

और उसने भी हस्बे साबिक़ वही जवाब दिया। "अगर आप मेरे ऊपर एहसान करते हैं तो एक एहसान-शनास शख़्स पर एहसान करेंगे और मुझे क़त्ल करा देते हैं तो मैं इसका मुस्तहिक़ हूँ, और अगर आपको माल की ज़रूरत हो तो फ़रमाइए, आपका मत्लूब माल मैं आपको पेश करूँगा।"

इस सवाल व जवाब के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा को मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया कि "सुमामा को रिहा कर दो!" और हस्बे इरशाद उसकी ज़ंजीरें खोल दी गईं। रिहाई पाकर सुमामा मस्जिद से निकला और मदीने के बाहर बक़ीअ के क़रीब वाक़ेअ खजूरों के एक बाग़ में गया जिसमें कुआँ था। अपनी सवारी को उसी कुएँ के पास बिठाकर उसके पानी से ख़ूब अच्छी तरह ग़ुस्ल किया और पाक-साफ़ होकर फिर उसी रास्ते से चलकर मस्जिद में वापस आ गया। उसने मस्जिद में मुसलमानों की एक मज्लिस के क़रीब पहुँचकर बुलन्द आवाज़ से कलिम-ए-शहादत पढ़कर अपने इस्लाम लाने का एलान किया फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ मुतवज्जह होकर बोला, "ऐ मुहम्मद! ख़ुदा की क़सम! रूए-ज़मीन पर कोई चेहरा मेरे नज़दीक आपके चेहरे से ज़्यादा मबग़ूज़ और क़ाबिले-नफ़रत न था मगर अब यह मुझे हर चेहरे से ज़्यादा महबूब है, और ख़ुदा की क़सम! आपके दीन से ज़्यादा क़ाबिले नफ़रत मेरे नज़दीक कोई दीन न था, लेकिन अब यह मुझे तमाम धर्मों से ज़्यादा

पसन्दीदा है, और ख़ुदा की क़सम! आपके शहर से ज़्यादा नापसन्दीदा मेरे नज़दीक कोई दूसरा शहर नहीं था, मगर अब आपका यह शहर मुझे तमाम शहरों से ज़्यादा पसन्द है।''

थोड़ी देर रुककर फिर बोले : ''मैंने आपके कुछ साथियों को क़त्ल किया है, उसकी तलाफ़ी के लिए आप मेरे ऊपर क्या हुक्म आयद करते हैं?'' रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ''सुमामा! इस सिलसिले में तुम्हारे ऊपर न क़िसास है न दियत क्योंकि इस्लाम ने तुम्हारी तमाम साबिक़ा ज़्यादतियों और ग़लतकारियों को हर्फ़े-ग़लत की तरह मिटा दिया है।''

फिर आप (सल्ल०) ने इस्लाम लाने की वजह से जन्नत की ख़ुशख़बरी दी, उनका चेहरा फ़र्ते-मसर्रत से चमक उठा। कहने लगे कि ''ख़ुदा की क़सम! मैंने आपके जितने सहाबा को क़त्ल किया है उससे कई गुनाह तादाद में मुश्रिकीन को क़त्ल करूँगा और अपनी ज़ात को, अपनी तलवार को और उन लोगों को जो मेरे मातहत और हमनवा हैं, आपकी और आपके दीन की नुसरत व ताईद के लिए वक़्फ़ करता हूँ।''

क़दरे तौक़िफ़ के बाद फिर कहा : ''ऐ अल्लाह के रसूल! आपके सवारों ने मुझे उस वक़्त गिरफ़्तार किया था जब मैं उमरा की नीयत से निकला था तो आपके ख़्याल में अब मुझे इस सिलसिले में क्या करना चाहिए?'' रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि ''तुम मक्का जाकर उमरा अदा कर लो। मगर यह उमरा अब तुम अल्लाह और उसके रसूल की शरीअत के मुताबिक़ अदा करोगे।'' फिर आप (सल्ल०) ने मनासिके हज और अफ़आले उमरा की तालीम दी।

हज़रत सुमामा बिन उसाल (रज़ि०) उमरा की अदायगी के लिए रवाना हुए, जब बतन मक्का में पहुँचे तो वहीं खड़े होकर बुलन्द आवाज़ से तल्बिया पढ़ना शुरू कर दिया :

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ. إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ.

मैं हाज़िर हूँ! खुदाया मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई शरीक नहीं। मैं हाज़िर हूँ, बेशक सारी तारीफ़ें और तमाम नेमतें तेरे लिए हैं और इक़्तिदार तेरा है, तेरा कोई शरीक नहीं।

वह दुनिया के सबसे पहले मुसलमान थे जो तल्बिया पढ़ते हुए मक्का में दाख़िल हुए। क़ुरैश के लोग नागहानी और ग़ैर मुतवक़्क़े आवाज़ को सुनकर सहम गए और ग़ज़बनाक होकर दौड़े। उन्होंने अपनी तलवारें बेनियाम कर लीं और आवाज़ की तरफ़ लपके ताकि उस शख़्स पर टूट पड़ें जो उसके कछार में घुस आया था। वे लोग सुमामा की तरफ़ बढ़े तो उन्होंने तल्बिया की आवाज़ और तेज़ कर दी। वह उनकी तरफ़ निहायत लापरवाही और बेख़ौफ़ी के साथ देख रहे थे। एक क़ुरैशी जवान ने तीर चलाकर उनको शहीद करना चाहा मगर दूसरों ने उसको यह कहते हुए ऐसा करने से रोक दिया कि "तेरा बुरा हो, जानता है यह कौन है? यह यमामा का बादशाह सुमामा बिन उसाल है। अगर तुमने इसको कोई नुक़्सान पहुँचाया तो उसके क़बीलेवाले हमारे यहाँ ग़ल्ले की बरामद रोक कर हमको भूखों मार देंगे।" फिर वे लोग अपनी तलवारें मियान में करके हज़रत सुमामा (रज़ि०) के सामने आए और उनसे बोलेः "सुमामा! यह तुमको क्या हो गया है? क्या तुम बेदीन हो गए हो? और तुमने अपने और अपने बाप-दादा का दीन तर्क कर दिया है?"

"नहीं! मैं बेदीन नहीं हुआ हूँ, बल्कि मैंन सबसे अच्छे दीन मुहम्मद (सल्ल०) के दीन की पैरवी इख़्तियार कर ली है।" हज़रत सुमामा (रज़ि०) ने जवाब दिया। उसके बाद उन्होंने कहा : "इस घरवाले की क़सम! मेरे वापस जाने के बाद यमामा के गेहूँ का एक दाना और वहाँ की पैदावार का कोई हिस्सा उस वक़्त तक तुम्हारे यहाँ नहीं पहुँच सकता जब तक कि तम सब के सब मुहम्मद (सल्ल०) की इत्तिबा न इख़्तियार कर लो।"

हज़रत सुमामा (रज़ि०) ने क़ुरैश की आँखों के सामने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ उमरा के अरकान अदा किए। उन्होंने ग़ैरुल्लाह और बुतों के लिए नहीं, ख़ुदा तआला की ख़ुशनूदी के

लिए क़ुरबानी के जानवर ज़िबूह किए और अपने वतन वापस लौट आए। वापस आकर उन्होंने अपने क़बीलावालों को क़ुरैश के यहाँ ग़ल्ले की सप्लाई रोक देने का हुक्म दिया, क़बीलावालों ने उनके इस हुक्म की तमील की और अहले मक्क को अपनी पैदावार की सप्लाई बन्द कर दी।

इक़्तसादी पाबन्दी जो सुमामा बिन उसाल (रज़ि०) ने क़ुरैश के ख़िलाफ़ लगाई थी, बतदरीज सख़्त से सख़्ततर होती चली गई। इसके नतीजे में ग़ल्ले की क़ीमतों में ग़ैर-मामूली इज़ाफ़ा हो गया, लोगों में फ़ाक़ाकशी आम हो गई और उनकी तकलीफ़ और परेशानी ज़्यादा बढ़ गई और जब नोबत यहाँ तक पहुँची कि उनको अपने और बाल-बच्चों की भूख से मर जाने का शदीद ख़तरा लाहिक़ हो गया तो उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को लिखा।

हम आपके मुताल्लिक़ पहले से यह बात जानते हैं कि आप सिलारहमी करते हैं और दूसरों को इसकी ताकीद करते हैं, मगर इस वक़्त हम जिस सूरते हाल का सामना कर रहे हैं वह यह है कि आपने हमारे साथ क़तारहमी का तर्ज़े-अमल इख़्तियार कर रखा है। आपने हमारे बापों को तलवार से क़त्ल किया, और बेटों को भूखों मार रहे हैं। सुमामा बिन उसाल (रज़ि०) ने ग़ल्ले की बरामद पर पाबन्दी लगाकर हमें सख़्त तकलीफ़ और परेशानी में मुब्तला कर दिया है। अगर आप मुनासिब समझें तो उसको लिख दें कि वह ग़ल्ला वग़ैरह की आयद पर जो पाबन्दी है ख़त्म कर दे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत सुमामा को लिख दिया कि वह क़ुरैशा के ख़िलाफ़ पैदावार की बरामद की लगाई हुई बन्दिश ख़त्म कर दें, चुनांचे उन्होंने आपके हुक्म के मुताबिक़ वह पाबन्दी उठा ली और क़ुरैश के यहाँ की सप्लाई जारी कर दी।

हज़रत सुमामा बिन उसाल (रज़ि०) ज़िन्दगी भर अपने दीन के वफ़ादार और नबी करीम (सल्ल०) के साथ किए हुए अहद के पाबन्द रहे। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात हो गई और अहले अरब इज्तिमाई और इंफ़िरादी तौर पर अल्लाह के दीन से निकलने लगे और

मुसलमा कज़्ज़ाब ने बनू हनीफ़ा में नुबूवत का झूठा दावा करके उन्हें अपने ऊपर ईमान लाने की दावत देनी शुरू की तो हज़रत सुमामा (रज़ि०) उसके सामने डट गए। उन्होंने अपनी क़ौम को समझाया कि "बनू हनीफ़ा के लोगो! ख़बरदार इस गुमराहकुन दावत को हरगिज़ क़बूल न करना जिसमें नूरे हिदायत का दूर-दूर तक पता नहीं है। ख़ुदा की क़सम! यह शक़ावत व बदबख़्ती है जिसको अल्लाह तआला ने हममें से उन लोगों पर मुसल्लत किया है जो उसे इख़्तियार करें, और ज़बरदस्त इम्तहान व आज़माइश है, उन लोगों के लिए जो इससे इंकार करें।" उन्होंने मज़ीद फ़रमाया : "बनू हनीफ़ावालो! एक वक़्त में दो नबी नहीं हो सकते, मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह तआला के आख़िरी नबी हैं। उनके बाद कोई नबी नहीं है, न उनकी नुबूवत में किसी को शरीक किया गया है।"

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ (سورہ مؤمن، آيات ۱تا۳)

"हा- मीम, इस किताब का नुज़ूल अल्लाह की तरफ़ से है, जो ज़बरदस्त है। सब कुछ जाननेवाला, गुनाह माफ़ करनेवाला और तौबा क़बूल करनेवाला है। सख़्त अज़ाब देनेवाला और बड़ा साहिबे फ़ज़्ल है। कोई माबूद उसके सिवा नहीं, उसी की तरफ़ सबको पलटना है।" (सूरह मोमिन, आयत 1-3)

फिर फ़रमाया कि कहाँ अल्लाह का यह अज़ीम कलाम और कहा मुसलमा कज़्ज़ाब का क़ौल :

يَا ضِفْدَعُ نَقِّي مَا تَنِقِّيْنَ۔ لَا الشَّرَابَ تَمْنَعِيْنَ وَلَا الْمَاءَ تُكَدِّرِيْنَ۔

"ऐ मेंढक! तुम जितना चाहो टर-टर करते रहो, अपनी इस टर-टर से न तुम पानी पीने से रोक सकते हो, न पानी को गदला कर सकते हो।"

फिर वह अपने क़बीले के उन लोगों को लेकर अलग हो गए जो इस्लाम पर साबित क़दम रह गए थे और राहे-ख़ुदा में जिहाद और उसके

दीन को ज़मीन पर ग़ालिब करने के लिए मुरतदीन के साथ जंग व क़िताल में मशग़ूल हो गए।

अल्लाह तआला हज़रत सुमामा बिन उसाल (रज़ि०) को इस्लाम और मुसलमानों की तरफ़ से बेहतरीन जज़ा दे और उस जन्नत से नवाज़े जिसका वादा मुत्तक़ियों से किया गया है।

और हमको भी जन्नतुल-फ़िरदौस में दाख़िल फ़रमाए। 'आमीन'।

पोशीदा क़र्ज़ा अदा कर दीजिए जिस हूर से चाहें निकाह कर लीजिए और जिस दरवाज़े से चाहें जन्नत में दाख़िल हो जाइए

अबू याला में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि तीन काम हैं जो उन्हें ईमान के साथ कर ले वह जन्नत के तमाम दरवाज़ों में से जिससे चाहे जन्नत में चला जाए और जिस किसी हूरे जन्नत से चाहे निकाह कर ले—

1. जो अपने क़ातिल को माफ़ कर दे।
2. पोशीदा क़र्ज़ अदा कर दे।
3. हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस बार सूरह् इख़्लास : क़ुलहु वल्लाहु अहद.....को पढ़ ले।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने पूछा, "या रसूलुल्लाह! जो इन तीनों कामों में से एक कर ले? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, एक पर भी यही दर्जा है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा-5, पेज 616)

मुसलमान रस्म व रिवाज टूटने पर तड़पते हैं और सुन्नतें नबवी के छूटने पर टस से मस नहीं होते

आजकल के मशीनी दौर का आम इंसान ख़ुद भी एक मशीन की तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। काम-काज की ज़्यादती और मआशी व मुआशरती परेशानियों ने उसे उलझा रखा है। पुर आसाइश ज़िंदगी के

बावजूद उसे वसाइल और इत्मीनाने-क़ल्ब की कमी का शिकवा रहता है। एक तरफ़ माद्दी तरक़्क़ी ने उसे अपनी ज़ात के ख़ोल में बन्द कर दिया है, दूसरी तरफ़ साइंसी उलूम ने अक़्ल को इस क़दर मस्हूर कर रखा है कि दीनी उलूम की अहमियत दिलों से निकलती जा रही है, अपनी ज़बान से "दीन व दुनिया बराबर" का नारा लगानेवाले भी अमलन दुनियादाराना ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। रस्म व रिवाज टूटने पर तड़पते हैं और सुन्नते नबवी के छूटने पर टस से मस नहीं होते। मुसलमान नौजवान फ़िरंगी तहज़ीब के इस क़दर दिलदादा बन चुके हैं कि लिबास व तआम और नशिस्त व बरख़ास्त में फ़िरंगी तौर-तरीक़ों को अपनाना रौशन ख़्याली की अलामत समझते हैं। कुफ़्र व इल्हाद ने मुसलमान मुआशरे पर अपने मक्रूह साए डालने शुरू कर दिए हैं, जबकि जदीद तालीम ने जलती पर तेल का काम कर दिया है।

बक़ौल अकबर इलाहाबादी

खुश तो हैं हम भी जवानों की तरक़्क़ी से
लब ख़न्दा से निकल जाती है फ़रियाद भी साथ
हम समझते थे कि लाएगी फ़राग़त तालीम
क्या पता था कि चला आएगा इल्हाद भी साथ

आजकल के मुसलमान बच्चे माँ-बाप की गोद से ही अंग्रेज़ी ज़बान के अल्फ़ाज़ इस तरह सीख रहे हैं जिस तरह माज़ी में कलिम-ए-तय्यिबा और क़ुरआन की आयतें सीखा करते थे। जब बच्चे की उठान ही ऐसी हो तो क्या गिला और क्या शिकवा कि बच्चा बड़ा होकर माँ-बाप का नाफ़रमान बनता है।

तिफ़्ल से बू आए क्या माँ-बाप के अतवार की
दूध डिब्बों का है और तालीम है सरकार की

कुछ औरतों का तो यह नज़रिया होता है कि बच्चा बड़ा होकर खुद-बखुद सँवर जाएगा। लिहाज़ा बच्चे की बुरी हरकात व सकनात देखकर खुद थोड़ा-बहुत डाँट लेती हैं, बाप को रोक-टोक नहीं करने देतीं। हालांकि बचपन की बिगड़ी आदतें जवानी में भी पीछा नहीं छोड़तीं।

बच्चा सियाल फ़ौलाद की तरह बचपन में जिस सांचे में ढल जाए सारी उम्र उसी तरह रहता है। रही सही कसर कालेज और यूनीवर्सिटी की तालीम पूरा कर देती है, जिससे नौजवान तब्क़ा "मानकर चलने" के बजाय "मनवाकर चलने" का आदी हो जाता है। अब अगर उन्हें रोक-टोक की जाए तो ये माँ को दक़यानूसी समझते हैं और बाप से यूँ नफ़रत करते हैं जैसे पाप से नफ़रत की जाती है।

हम ऐसी सब किताबें क़ाबिले ज़िबती समझते हैं।
जिनको पढ़कर बच्चे- बाप को ख़िबती समझते हैं।।

अक्सर नौजवान जब यूनीवर्सिटियों की तालीम पाकर निकलते हैं तो दीन के हर मसले को अक़्ल की तराज़ू पर तौलना उनका महबूब मशग़ला बन चुका होता है। फिर अगर आला तालीम हासिल करने के लिए बेरूने मुल्क जाने का मौक़ा मिल जाए तो अमूमन "ज़ुलुमातुन बाज़ुहा फ़ौ-क़ बाज़" (अंधेरे दर अंधेरे)वाला मामला हो जाता है। ऐसे हज़रात को अपनी इस्लाह के बजाय दीन की इस्लाह की फ़िक्र ज़्यादा होती है। मियाँ-बीवी ख़ुद दीन के मुताबिक़ ढलने के बजाय दीन को अपनी मर्ज़ी व सहूलत के मुताबिक़ ढालते रहते हैं।

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मियाँ-बीवी दोनों मुहज़्ज़ब हैं।।
उन्हें ग़ुस्सा नहीं आता इन्हें ग़ैरत नहीं आती।।

दीन की सच्ची मुहब्बत रखनेवाले हज़रात के लिए लम्हा-ए-फ़िक्र यह है कि उनकी औलाद की अच्छी तर्बियत कैसे हो? जिन घरों में औलाद की तर्बियत के लिए कोशिशें हो भी रही हैं वहाँ ख़ातिर-ख़्वाह नताइज मुरत्तब नहीं हो रहे हैं। उन्हें भी इल्मी तआवुन की ज़रूरत महसूस होती है।

ब्रश, मंजन और टूथ पेस्ट से मिस्वाक का सवाब नहीं मिलेगा

ख़्याल रहे कि जहाँ तक नज़ाफ़त और दांतों की सफ़ाई और सुथराई का हुक्म है, वहाँ तक तो दांतों की सफ़ाई के लिए कोई चीज़ भी

इस्तेमाल करे, नज़ाफ़त और सफ़ाई का हुसूल हो जाएगा और आम नज़ाफ़त और सफ़ाई के हुक्म की तामील का नीयत के पाए जाने पर सवाब मिल जाएगा। मगर मिस्वाक की जो फ़ज़ीलत है इससे नमाज़ का सवाब 70-75 गुना बढ़ जाता है, यह फ़ज़ीलत और उख़्रवी सवाब अहादीस में मिस्वाक की क़ैद से मुक़य्यद होने की वजह से इसी से मुताल्लिक़ रहेगा। इसी तरह मिस्वाक के जो बुनियाद सेहती फ़वाइद हैं, वह मंजन व टूथ पेस्ट से हासिल हो जाएँगे।

इस दौर में ख़ुसूसन जदीद तालीम-याफ़्ता लोगों में और नई उम्र और नए ज़ेहनवाले लोगों में ब्रश और पेस्ट राइज है, इससे वह दुनियावी सफ़ाई व नज़ाफ़त तो हासिल कर लेंगे मगर मिस्वाक की सुन्नत और उसके सवाब से महरूम रहेंगे। अफ़सोस कि अब तो मदारिस के माहौल ने भी मिस्वाक क बजाय टूथ पेस्ट को इख़्तियार कर लिया है। इस्लाम के तौर-तरीक़े को छोड़कर मग़रबियत पर फ़िदा हो रहे हैं। यह मतलब नहीं कि वह ममनूअ् है मगर सुन्नत के सवाब से महरूम और हज़राते अंबिया (अलैहि०) के तरीक़ से तो हटकर है। कुतुबे-फ़तावा से भी इसकी ताईद होती है। चुनांचे फ़तावा रहीमिया में है :

> "जब मिस्वाक की मौजूदगी में उंगलियाँ, जिनके लिए आँहज़रत (सल्ल०) का अमल और क़ौल साबित है, मिस्वाक के क़ायम मक़ाम नहीं हो सकतीं तो ब्रश आदि कैसे मिस्वाक के क़ायम मक़ाम हो सकते हैं। इसलिए कि सुन्नत दरख़्त की मिस्वाक है।" (तौज़ीहुल मसाइल, पेज 35, फ़तावा रहीमिया, हिस्सा-1, पेज 126)

इसी तरह फ़ज़ाइले मिस्वाक में आया है :

> "मंजन का इस्तेमाल जाइज़ है। लेकिन महज़ मंजन पर इक्तिफ़ा कर लेने से मिस्वाक की फ़ज़ीलत हासिल न होगी।"
>
> (पेज 73)

सआया में हाशिया हिदाया जो नफ़ूरी के हवाले से है कि "उंगलियों से मलना मिस्वाक मिलने और पाए जाने की सूरत में सुन्नत अदा करनेवाला न होगा।" (पेज 117)

इन अकाबिर की तसरीहात से मालूम हुआ कि नज़ाफ़त और सफ़ाई और चीज़ है, सुन्नत का सवाब और चीज़ है। मंजन और पेस्ट के इस्तेमाल से आम सफ़ाई व पाकीज़गी हासिल हो जाएगी, मगर मिस्वाक का सवाब न मिलेगा। लिहाज़ा सुन्नत के सवाब और उसकी ताकीद व तर्ग़ीब के पेशे-नज़र उम्मते मुस्लिमा का फ़रीज़ा है कि मिस्वाक की सुन्नत को तर्क न करें। मंजन और पेस्ट के अलावा खुसूसन नमाज़ के औक़ात में मिस्वाक का एहतिमाम ज़रूर रखें ताकि नबियोंवाला तरीक़ा माहौल में राइज हो।

मिस्वाक करते वक़्त यह नीयत कीजिए

इमाम ग़ज़ाली ने लिखा है कि मिस्वाक करते वक़्त यह नीयत करे कि "खुदा के ज़िक्र और तिलावत के लिए मुँह साफ़ करता हूँ।" इसकी शरह अहया में है कि महज़ इज़ाल-ए-गन्दगी की नीयत न करे बल्कि इसके साथ यानी सफ़ाई की नीयत के साथ ज़िक्र व तिलावत की नीयत भी करें ताकि इसका भी सवाब मिले। (इतहाफ़ुस्सादा, जिल्द-2, पेज 348)

मिस्वाक करने का मसनून तरीक़ा

अल्लामा इब्ने नजीम ने अल-बहरुर्राइक़ में लिखा है कि मिस्वाक करने का तरीक़ा यह है कि मिस्वाक दाँत के ऊपरी हिस्से और निचले हिस्से और तालू पर मले और मिस्वाक मलने में दायीं जानिब पहले करे फिर बायीं जानिब कम-से-कम तीन बार ऊपर के दांतों को इसी तरह तीन बार नीचे के दांतों को मले, मिस्वाक दाएँ हाथ से पकड़कर लम्बाई और चौड़ाई दोनों में करे।

तहतावी अली मराक़ी में तरीक़-ए-मिस्वाक बयान करते हुए लिखा है कि दाँत के अन्दरूनी हिस्सा और दाँत के बाहरी हिस्से दोनों जानिब करे और मुँह के ऊपरी हिस्से में भी करे। (तहतावी अलल-मराक़ी, पेज 38)

अल्लामा शामी ने लिखा है कि मिस्वाक दाँतों के बाहरी हिस्से पर घुमा-घुमा कर करे और चौव्वे दाँत के ऊपरी हिस्से के और दोनों दाँतों के जोड़ में भी करे। (शामी, जिल्द-1, पेज 114)

मिस्वाक पकड़ने का मसनून तरीक़ा

मिस्वाक पकड़ने का मसनून तरीक़ा यह है कि दाएँ हाथ की ख़िन्सर (सबसे छोटी उँगली) को मिस्वाक के नीचे करे और बिन्सर (उसके बग़ल वाली) और सब्बाबा यानी अंगुश्ते-शहादत मिस्वाक के ऊपर रखे और अंगूठा मिस्वाक के सिरे के नीचे रखे, और मिस्वाक दाएँ हाथ से पकड़े।

(अन इब्ने मसऊदः अस्सआया, पेज 119, उम्दतुल-क़ारी, जिल्द-3, पेज 175)

मिस्वाक की मोटाई कितनी हो?

मिस्वाक की मोटाई छोटी उँगली के बराबर हो।

(अस्सआया, पेज 118 उम्दतुल क़ारी, पेज 185)

मतलब यह है कि ऐसी हो कि सहूलत से कुचला जाए और नर्म हो। अगर इससे मोटा मिले तो न छोड़े, ले ले कि इसे भी किया जा सकता है।

मिस्वाक की लम्बाई कितनी हो?

मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ायद न हो वर्ना उसपर शैतान सवार हो जाता है। हाँ मिस्वाक करते वक़्त छोटा हो जाए तो कोई हरज नहीं।

(अस्सआया, पेज 119)

मिस्वाक को बिछाकर न रखिए बल्कि खड़ी करके रखिए, जुनून से हिफ़ाज़त होगी

मिस्वाक को बिछाकर न रखिए, बल्कि खड़ी करके रखें।

(अस्सआया पेज 119, अश्शामी, पेज 115)

मिस्वाक को धोकर रखे और फिर करते वक़्त धोए। मिस्वाक ज़मीन पर न रखे कि जुनून का अन्देशा है, बल्कि ताक़ या किसी और ऊँचे मक़ाम, दीवार वग़ैरह् पर खड़ी रखिए। (शामी, जिल्द-1, पेज 115)

हज़रत सईद बिन जबीर (रज़ि०) से नक़ल किया गया है कि जो

शख़्स मिस्वाक को ज़मीन पर रखने की वजह से मजनूँ हो जाए तो वह अपने नफ़्स के अलावा किसी को मलामत न करे कि यह खुद उसकी अपनी ग़लती है।

मिस्वाक करने में नीचे लिखी बातों का ख़्याल रखिए वरना कई बीमारियों का अन्देशा है

मिस्वाक को मुट्ठी में पकड़ कर न करे इससे मर्ज़े-बवासीर पैदा होता है। (अस्सआया, पेज 119)

मिस्वाक लेटकर न करे क्यों कि इससे तिल्ली बढ़ती है।

(तहावी, पेज 38)

मिस्वाक को चूसे नहीं कि इससे नाबीनाई, अंधापन आता है। (हाँ मगर मिस्वाक नई हो तो पहली बार सिर्फ़ चूसा जा सकता है।)

(अस्सआया, पेज 199)

पहली बार नई मिस्वाक को चूसना जुज़ाम और बर्स को दफ़ा करता है। मौत के अलावा तमाम बीमारियों से शिफ़ा है, इसके बाद चूसना निस्यान पैदा करता है। (इतहाफ़ सादा, पेज 531, शामी जिल्द-1, पेज 115)

बिला इजाज़त दूसरे की मिस्वाक इस्तेमाल करना मकरूह है

मिस्वाक करने से पहले भी धोए और करने के बाद धोकर रखे, वर्ना शैतान मिस्वाक करने लगता है। (तहतावी, पेज 37)

मिस्वाक को हमेशा अपने पास जेब वग़ैरह् में रखना बेहतर है, ताकि जब जहाँ नमाज़ व वुज़ू का मौक़ा हो मिस्वाक की फ़ज़ीलत के साथ हो।

(फ़ज़ाइल मिस्वाक, पेज 79)

दीनदारों के साथ दुश्मनी न रखिए

हम किसी मुअज़्ज़िन या किसी ख़ादिमे-मस्जिद से चाहे दरबान हो,

सफ़ाई करनेवाला हो या ग़ुस्ल ख़ानों को साफ़ करनेवाला हो कभी दुश्मनी पैदा न करें। खुसूसन अगर ये लोग अपने फ़र्ज़े-मंसबी को महज़ सवाब समझकर या किसी और अच्छी नीयत से करते हों तब तो और ज़्यादा उनका एहतिराम करना चाहिए, और यह अदब अगरचे सब मुसलमानों के लिए है लेकिन उनकी ख़ास रिआयत करनी ज़रूरी है। अल्लाह तआला की अज़्मत का ख़्याल करके इन लोगों से अदावत न करें, वे ख़ुदा के दरबार के ख़ादिम हैं जिनमें सबसे ज़्यादा मर्तबा मुअज़्ज़िन का है क्योंकि वह अक्सर सुबह की अज़ान के लिए सुबहे-सादिक़ से पहले जाग उठता है और पिछली रातों को ख़ुदाई लश्करों के साथ दरबारे-ख़ास में हाज़िर होता है।

नफ़्स के बारीक-बारीक धोखों से बचिए

जब तक अपने नफ़्स के बारीक-बारीक धोखों की मुबालिग़ा के साथ तफ़्तीश न कर लें उस वक़्त तक किसी मुसलमान से क़ता-ताल्लुक़ और बोल-चाल बन्द करने में जल्दी न करें, क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि क़ता-ताल्लुक़ी तो ख़ाहिशे-नफ़्स की वजह से होती है और नफ़्स यह समझाता रहता है कि मैं तो अल्लाह के वास्ते क़ता ताल्लुक़ करता हूँ और इसपर बहुत-से दलाइल भी बाँधता है, अगर हम इस बात पर ग़ौर कर लिया करें कि क़ता-ताल्लुक़ के गुनाह की वजह से हमारा कोई अमल आसमान तक नहीं पहुँचेगा तो हरगिज़ क़ता-ताल्लुक़ी में जल्दी न करेंगे।

मुख़ालिफ़ के साथ ख़ैरख़ाही का मामला कीजिए

जो शख़्स भी हमारा मुख़ालिफ़ हो और हमारी बदख़ाही में लगा रहता हो, हमें चाहिए कि हम उसके साथ ख़ैर-ख़ाही और एहसान व सुलूक का मामला करते रहें, हमें हक़ तआला के साथ उसके बन्दों के बारे में वैसा ही मामला करना चाहिए जैसा कि वह हमारे साथ कर रहा है, जैसे हम दिन-रात अल्लाह तआला की नाफ़रमानियाँ कर रहे हैं लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआला के अलताफ़ व एहसानात मुंक़ता नहीं होते, ऐसा ही मामला हमें उसकी मख़्लूक़ के साथ करना चाहिए।

इससे मालूम हुआ कि हर वह शख़्स जो अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाला हो उसपर यह बात वाजिब है कि अदब और तमीज़ से बाहर होनेवालों का इलाज नर्मी और हिक्मत से करे और उनसे सुलूक व एहसान से पेश आता रहे, क्योंकि वह राअ़ी है और हर राअी से उसकी रईयत के बारे में सवाल होगा। अल्लामा अब्दुल वहाब शोरानी (रह०) फ़रमाते हैं कि एक बार मुझे उन ज़ाकिरीन से नफ़रत हो गई जो मेरे पास रहते थे और मैंने उनको छोड़ देने का इरादा किया तो उसी रात मुझे सय्यद अली ख़ास (रह०) की ज़ियारत हुई। देखा कि मुझसे फ़रमा रहे हैं कि तुमको रसूलुल्लाह (सल्ल०) हुक्म फ़रमाते हैं कि अपने लोगों की सोहबत पर अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के लिए सब्र करते रहो और अच्छी नसीहत से हर वक़्त उनकी ख़बरगीरी करते रहो। उस शख़्स की तरह न बनो जिसकी बकरियाँ दुश्वार-गुज़ार ज़मीन में मुंतशिर हो गईं और ग़ुस्से में उनको जंगल में भेड़िये के वास्ते छोड़ आया कि वह उनको फाड़ खाए।

जब कोई ज़ालिम हमारे ऊपर ज़ुल्म करे तो अपने आपको उससे भी ज़्यादा का मुस्तहिक़ समझें। जो शख़्स आग में जलाने के क़ाबिल हो फिर ज़रा-सी राख उसपर डालकर उससे सुलह कर ली जाए तो उसके ख़ुश होने का मक़ाम है कि बड़ी बला आने से नजात मिली और थोड़ी-सी ही पर टल गई।

जब अल्लाह तआला मख़्लूक़ के सामने हमारे उयूब ज़ाहिर कर दें तो हम हक़ तआला का शुक्र बजा लाएँ और जब वह हमको अपने बन्दों में रुसवा करें तो यह समझकर अल्लाह तआला से राज़ी रहें कि उसने हमारे साथ यह बर्ताव किसी हिक्मते कामिला ही की वजह से किया है जिसपर हम जैसों की नज़र नहीं पहुँच सकती। पस हमको इस मामले में ख़ुदा तआला की पैरवी करनी चाहिए और यह कहना चाहिए कि ख़ुदा का शुक्र है कि उसने मख़्लूक़ पर हमारे ऐबों को इसलिए ज़ाहिर कर दिया कि वह हमको उनसे मुतला कर दें ताकि हम उनसे बाज़ रहें और आइंदा हमेशा उनसे बचते रहें। क्योंकि इंसान की हालत यह है कि जब

किसी ऐब के साथ लोगों में उसकी तनक़ीस होने लगती है तो वह अपने ज़ाहिर व बातिन को उससे बचा लेता है।

फिर इस सूरत में दूसरों को मलामत हरगिज़ नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हक़ीक़त में मलामत के क़ाबिल हम ही हैं कि हमने ख़ुदा तआला से ग़ाफ़िल होकर ऐसे अफ़आल का इरतिकाब किया जो कि बदनामी और पर्दादरी का सबब बन गए और हम अल्लाह तआला की निगहदाश्त रखते और उससे पूरी तरह शर्माते तो हरगिज़ तंहाई में कोई गुनाह न करते। फिर जब हम इस बात से न रुके कि अल्लाह तआला हमारे अफ़आल को जानते हैं तो उसने मख़्लूक़ को हमारे हाल की ख़बर कर दी कि उन ऐबों से हम बाज़ आ जाएँ, और उसमें मिंजानिबिल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से) हमारे लिए बहुत बड़ी धमकी है कि हमें मख़्लूक़ की तो परवाह है और ख़ुदा तआला के मुतला होने की ज़रा भी परवाह नहीं है।

हकीम तिर्मिज़ी का अजीब ख़्वाब

हकीम तिर्मिज़ी (रह०) को अल्लाह तआला ने दीन का भी हकीम बनाया था और दुनिया की भी हिक्मत दी थी। ये तिर्मिज़ के रहनेवाले थे। दरिया आमू के बिल्कुल किनारे इनका मज़ार है। आप अपने वक़्त के एक बहुत बड़े मुहद्दिस भी थे और तबीब भी। अल्लाह तआला ने आपको हुस्न व जमाल इतना दिया था कि देखकर दिल फ़रेफ़्ता हो जाता था, इसके साथ-साथ अल्लाह तआला ने आपको बातिनी हुस्न व जमाल भी अता किया हुआ था। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको अपने इलाक़े में क़बूलियत ताम्मा अता कर रखी थी।

आप ऐन जवानी के वक़्त एक दिन अपने मतब में बैठे थे कि एक औरत आई और उसने अपना चेहरा खोल दिया। वह बड़ी हसीना व जमीला थी। कहने लगी कि मैं आपपर फ़रेफ़्ता हूँ, बड़ी मुद्दत से मौक़े की तलाश में थी, आज तंहाई मिली है, आप मेरी ख़्वाहिश पूरी करें।

आपके दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब हुआ तो रो पड़े। आप इस अन्दाज़ से रोए कि वह औरत नादिम होकर वापस चली गई। वक़्त गुज़र गया और आप इस बात को भूल गए।

जब आपके बाल सफ़ेद हो गए और काम भी छोड़ दिया तो एक बार आप मुसल्ले पर बैठे थे, ऐसे ही आपके दिल में ख़याल आया कि फ़लाँ वक़्त जवानी में एक औरत ने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया था, उस वक़्त अगर मैं गुनाह कर भी लेता तो आज मैं तौबा कर लेता। लेकिन जैसे ही दिल में यह ख़याल गुज़रा तो रोने बैठ गए। कहने लगे, ऐ रब्बे-करीम! जवानी में तो यह हालत थी कि मैं गुनाह का नाम सुनकर इतना रोया कि मेरे रोने से वह औरत नादिम होकर चली गई थी, अब मेरे बाल सफ़ेद हो गए तो क्या मेरा दिल सियाह हो गया। ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने कैसे पेश होऊँगा, इस बुढ़ापे के अन्दर जब मेरे जिस्म में क़ुव्वत ही नहीं रही तो आज मेरे दिल में गुनाहों का ख़्याल क्यों पैदा हुआ।

रोते हुए इसी हालत में सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़ियारत नसीब हुई। पूछा, हकीम तिर्मिज़ी! तू क्यों रोता है? अर्ज़ किया, मेरे महबूब! जब जवानी का वक़्त था, जब शहवत का दौर था, जब क़ुव्वत का ज़माना था, जब अंधेपन का वक़्त था, उस वक़्त तो ख़शीयत का यह आलम था कि गुनाह की बात सुनकर मैं इतना रोया कि वह नादिम होकर चली गई, लेकिन आज अब जब बुढ़ापा आया है, मेरे बाल सफ़ेद हो गए, तो ऐ अल्लाह के महबूब! लगता है कि मेरा दिल इस क़द्र सियाह हो गया है कि मैं सोच रहा था कि मैं उस औरत की ख़्वाहिश पूरी कर देता और बाद में तौबा कर लेता। मैं इसलिए आज बहुत परेशान हूँ। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया : "यह तेरी कमी और क़ुसूर की बात नहीं, जब तू जवान था तो उस ज़माने को मेरे ज़माने से क़ुर्ब की निस्बत थी, उन बरकतों की वजह से तेरी कैफ़ियत इतनी अच्छी थी कि गुनाह की तरफ़ ख़याल ही न गया।

अब तेरा बुढ़ापा आ गया है तो मेरे ज़माने से दूरी हो गई है, इसलिए अब दिल में गुनाह का वसवसा पैदा हो गया था।"

घर में दाख़िल होकर सूरह् इख़्लास पढ़लीजिए इंशा-अल्लाह रोज़ी में बरकत होगी

तबरानी में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सूरह् इख़्लास को घर में जाते वक़्त पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस घरवालों से और उसके पड़ोसियों से फ़क़ीरी दूर कर देगा।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द-5, पेज 616)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक का इंतिक़ाल कैसे हुआ?

उस्तादुल मुहद्दिसीन हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह०) के पास हदीस पाक पढ़नेवाले हज़ारों तलबा होते थे। मुकब्बिर जैसे नमाज़ में आगे तकबीर कहते हैं इसी तरह लोग उनसे हदीसे पाक आगे नक़ल करते थे। एक मज्मे में उन मुकब्बिरीन की तादाद ग्यारह सौ (1100) थी। मज्मे का अन्दाज़ा आप खुद लगा लें। एक मज्मे में दवातों को गिना गया तो उस मज्मे मे (40000) चालीस हज़ार दवातें थीं। इतने बड़े मज्मे में वे हदीस पाक का दर्स दिया करते थे। जब उनके आख़िरी लम्हात आए। बिस्तर पर लेटे हुए थे और कैफ़ियत बदल रही थी। इसी असना में अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि मुझे उठाकर नीचे ज़मीन पर लिटा दो। शागिर्द हैरान थे कि अब क्या करें? उस वक़्त चिप्स के फ़र्श नहीं होते थे, फ़क़त मिट्टी होती थी। फिर फ़रमाया, मुझे उठाओ और ज़मीन पर लिटा दो। शागिर्दों ने हुक्म की तामील की और मिट्टी पर लिटा दिया। उन्होंने देखा कि वक़्त के इतने बड़े शैख़ अपने रुख़्सार को ज़मीन पर मलने लगे और यह कह रहे थे कि ऐ अल्लाह! तू अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमा।

मेरे दोस्तो! जिनकी ज़िन्दगी हदीस पाक की ख़िदमत में गुज़री, जब वह अपने आख़िरी वक़्त में अल्लाह तआला के हुज़ूर इस तरह आजिज़ी

करते थे तो हमें भी आजिज़ी व इंकिसारी करनी चाहिए, क्योंकि हमारे पास तो अमल भी नहीं है। हम वाक़ई क़ाबिले रहम हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारे हाल पर रहम फ़रमाए। आमीन!

जो हाल आदमी को अल्लाह से क़रीब कर दे वह अच्छा हाल है

सहाबा किराम की इस बात पर बड़ी नज़र होती थी कि हमारे ऊपर ग़म और परेशानियाँ आ रही हैं या नहीं। वे इसको अल्लाह तआला की मुहब्बत की अलामत समझते थे। भूख और फ़ाक़ा आता था तो वे ख़ुश होते थे कि फ़ाक़े वे नेमतें हैं जो परवरदिगारे आलम अपने प्यारों को अता किया करते हैं। ग़म और परेशानी पर ख़ुश होते थे कि परवरदिगार ने हमें अपना समझा है, इसलिए यह परेशानी भेजी है।

एक सहाबिया का वाक़िआ है कि घर के अन्दर लेटी हुई थीं। मियाँ ने कहा कि मुझे पानी ला दे। कहने लगीं कि बहुत अच्छा, वह गईं और पानी का प्याला लेकर आ गईं। मगर रात का वक़्त था मियाँ को नींद आ गई। अब यह ख़ुदा की बन्दी पानी का प्याला लेकर इंतिज़ार में खड़ी रही कि मियाँ की आँख खुलेगी तो मैं उन्हें पानी का प्याला पेश कर दूँगी। जब सुबह का वक़्त होने लगा तो उनकी आँख खुली। उन्होंने देखा कि बीवी पानी का प्याला लेकर उनके इंतिज़ार में खड़ी है। यह देखकर बहुत ख़ुश हुए। कहने लगे कि अच्छा! मैं तुझसे इतना ख़ुश हूँ कि तू आज जो भी मुतालबा करेगी मैं तेरे उस मुतालबे को पूरा कर दूँगा। बीवी ने कहा : अच्छा! फिर मेरा मुतालबा यह है कि आप मुझे तलाक़ दे दीजिए। अब परेशान हुए कि इतनी मुहब्बत करने वाली, इतनी ख़िदमत करने वाली, इतनी वफ़ादार, इतनी नेक बीवी तलाक़ का मुतालबा कर रही है। और क़ौल भी मैं दे बैठा हूँ। पूछने लगे कि तलाक़ क्यों चाहती है? बीवी ने कहा कि आपने ख़ुद ही कहा है जो मुतालबा करेगी मैं पूरा करूँगा। अब अपने क़ौल को निभाइए और मुझे तलाक़ दे दीजिए। फ़रमाने लगे, सुबह को हम नबी अकरम (सल्ल०) के पास जाएँगे और अपना मसला पेश करेंगे। कहने लगी : बहुत अच्छा! फ़ज्र की नमाज़ के

बाद चल पड़े। अभी रास्ते में जा रहे थे कि ख़ाविन्द का पाँव किसी पत्थर से अटका और वह नीचे गिर गया। उसके बदन से कुछ ख़ून निकला, बीवी ने फ़ौरन दुपट्टा फाड़ा और उसका ज़ख़्म साफ़ करके पट्टी बांधी और कहने लगी कि नहीं अब मसला पूछने की ज़रूरत नहीं क्योंकि अब मुझे आपसे तलाक़ लेने की ज़रूरत नहीं है। वे कहने लगे कि यह क्या बात हुई, तलाक़ माँगी थी तो भी मेरी समझ में बात न आई। जब मुतालबा छोड़ दिया तो भी यह बात समझ में नहीं आ रही। अस्ल बात क्या है? बीवी ने कहा, घर चलें वहाँ बताऊँगी। जब घर पहुँचे तो ख़ाविन्द ने बैठते ही कहा कि बताइए, अस्ल बात क्या थी? कहने लगी : आपने ही तो नबी अकरम (सल्ल०) की हदीस सुनाई थी कि जब अल्लाह तआला किसी से मुहब्बत करते हैं तो परेशानियाँ उसकी तरफ़ यूँ दौड़ती हैं जिस तरह पानी ऊँची जगह से नीची जगह की तरफ़ जाता है। मैं आपकी बीवी हूँ, कितना अर्सा आपके साथ गुज़ार चुकी हूँ। मैंने आपके घर में दौलत देखी, सुख देखा, आराम देखा, खुशियाँ देखीं मगर मैंने आपके घर में कभी ग़म और परेशानी नहीं देखी। मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि कहीं ऐसा तो नहीं कि आपके दिल में निफ़ाक़ हो, जिसकी वजह से हमारे साथ अल्लाह तआला का बर्ताव अपने प्यारों जैसा नहीं है। इसलिए मैंने कहा कि मेरे आक़ा (सल्ल०) की हदीस सच्ची है जो कुछ देख रही हूँ यह ग़लत हो सकता है। लिहाज़ा मैंने चाहा तुमसे तलाक़ ले लूँ। लेकिन जब रास्ते में जाते हुए आपको ज़ख़्म लगा, परेशानी आई तो मैंने फ़ौरन समझ लिया कि आपके ईमान में किसी क़िस्म का शक नहीं किया जा सकता। अब मैं सारी ज़िन्दगी आपकी बीवी बनकर आपकी ख़िदमत करूँगी।

भरे बाज़ार में कुत्ते, बिल्ली और ख़िन्ज़ीर

हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी (रह०) अपने बयानात में एक अजीब बात इरशाद फ़रमाया करते थे कि मैं एक बार बाज़ार जा रहा था। वहाँ मुझे एक मजज़ूब नज़र आए, मैंने उनके क़रीब होकर सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब दिया और पहचान कर पूछा, अहमद

अली! इंसान कहाँ बसते हैं? मैंने हैरान होकर भरे बाज़ार की तरफ़ इशारा करके कहा, हज़रत! ये सब इंसान ही तो हैं। जब यह कहा तो उन्होंने हैरान होकर इधर-उधर देखा और हसरत भरे लहजे में कहा, 'ये सब इंसान हैं'? उनकी तवज्जोह की तासीर ऐसी थी कि जब मेरी निगाह मज्मे पर दोबारा पड़ी तो मुझे बाज़ार में कुत्ते, बिल्ली और ख़िन्ज़ीर चलते हुए नज़र आए। जब वह कैफ़ियत ख़त्म हुई तो मैंने देखा कि वह मजज़ूब जा चुके थे। यह वाक़िआ अपने बयानात में सुनाकर हज़रत (रह०) फ़रमाते थेः

मालिक तो सब का एक, मालिक का कोई एक
हज़ारों में न मिलेगा लाखों में तू देख

जी हाँ! लाखों में से कोई ही होगा जो सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ूनों तक अपने आपको परवरदिगार के हवाले कर दे और कह दे कि अल्लाह! मैं तेरा बन्दा हूँ, तेरे हुक्मों के मुताबिक़ मेरी आइंदा ज़िन्दगी गुज़रेगी। इसको कहते हैं :"उद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़ह् "यानी तुम पूरे के पूरे सलामती में दाख़िल हो जाओ"। मगर मेरे दोस्तो! हम तो अपनी मर्ज़ी के मालिक बने फिरते हैं। हम दोस्तों में बैठकर कहते हैं कि हम काम तो वह करेंगे जिसके लिए हमारा दिल चाहेगा और फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से ख़ास रहमतें भी तलब करते हैं। याद रखिए कि जब तक हम अपने आपको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सुपुर्द नहीं करेंगे, तब तक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से ख़ास रहमतें नाज़िल नहीं होंगी।

कुत्ते की दस सिफ़तें

हैवान अपने मालिक का ज़्यादा वफ़ादार होता है, जबकि इंसान अपने परवरदिगार का इतना वफ़ादार नहीं होता। हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाया करते थे कि कुत्ते के अन्दर दस सिफ़ते ऐसी हैं कि अगर उनमें से एक सिफ़त भी इंसान के अन्दर पैदा हो जाए तो वह अल्लाह का वली बन जाए। फ़रमाते हैं कि :

(1) कुत्ते के अन्दर क़नाअत होती है, जो मिल जाए वह उसी पर क़नाअत कर लेता है, राज़ी हो जाता है, यह क़ानिअीन या साबिरीन की अलामत है।

(2) कुत्ता अक्सर भूखा रहता है, यह सालेहीन की निशानी है।

(3) कोई दूसरा कुत्ता उसपर ज़ोर की बजह से ग़ालिब आ जाए तो वह अपनी जगह छोड़कर दूसरी जगह चला जाता है, यह राज़िईन की अलामत है।

(4) उसका मालिक उसे मारे भी तो वह अपने मालिक को छोड़कर नहीं जाता। यह सादिक़ीन की निशानी है।

(5) अगर उसका मालिक बैठा खाना खा रहा हो तो वह बावुजूद ताक़त और क़ुव्वत के उससे खाना नहीं छीनता, दूर से ही बैठकर देखता रहता है। यह मसाकीन की अलामत है।

(6) जब मालिक अपने घर में हो तो यह दूर जूते के पास बैठ जाता है। अदना जगह पर राज़ी हो जाता है। यह मुतवाज़िअीन की अलामत है।

(7) अगर उसका मालिक उसे मारता है तो वह थोड़ी देर के लिए चला जाता है। फिर मालिक उसे दोबारा टुकड़ा डाल दे तो दोबारा आकर खाना खा लेता है, उससे नाराज़ नहीं होता। यह ख़ाशिईन की अलामत है।

(8) दुनिया में रहने के लिए उसका अपना कोई घर नहीं होता, यह मुतवक्किलीन की अलामत है।

(9) रात को वह बहुत कम सोता है, यह मुहिब्बीन की अलामत है।

(10) जब मरता है तो उसकी कोई मीरास नहीं होती। यह ज़ाहिदीन की अलामत है।

ग़ौर करें कि क्या इन सिफ़ात में से कोई सिफ़त हममें भी मौजूद है?

हमने तो जहन्नम की बहुत की तदबीर
लेकिन तेरी रहमत ने गवारा न किया

गुनाह करने की चार वुजूहात हैं

अमूमन गुनाह करने की चार वुजूहात होती हैं। अल्लाह तआला ने उन तमाम वुजूहात के जवाबात क़ुरआन मजीद में इरशाद फ़रमा दिए हैं।

पहली वजह : यह होती है कि आदमी यह समझता है कि मुझे गुनाह करते वक़्त कोई नहीं देख रहा है। परवरदिगारे आलम ने उसका जवाब यूँ दिया है कि "तेरा रब तेरी घात में लगा हुआ है।" (सूरह् फ़ज्र, आयत 14) शिकारी जब शिकार पर अपना निशाना बाँधता है तो थोड़ी देर के लिए बहुत ही ज़्यादा मुतवज्जोह होकर उसकी तरफ़ देखता है। तवज्जोह की इस कैफ़ियत के साथ देखने को 'मिरसाद' कहते हैं। मानो अल्लाह तआला इस क़द्र ग़ौर से इंसान को देख रहा है।

दूसरी वजह : गुनाह करने की दूसरी वजह यह होती है कि इंसान समझता है कि उसके पास कोई नहीं है। इसके जवाब में फ़रमाया कि जब तुम तीन होते हो तो वह चौथा होता है : *"व हु-व म-अकुम् ऐन-मा कुन्तुम्"* यानी वह तुम्हारे साथ होता है तुम जहाँ कहीं भी होते हो।

(सूरह् अल-हदीद, आयत 4)

तीसरी वजह : गुनाह करने की तीसरी वजह यह होती है कि आदमी के दिल में यह एहसास होता है कि मेरी हरकतों का किसी को पता नहीं चला, जबकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :*"यअ्-ल-मु ख़ाइ-न-तल अअ्युनि वमा तुख़्फ़िस्सुदूर"* वह जानता है तुम्हारी आँखों की खियानत को और जो तुम्हारे दिल में छुपा हुआ है"। (सूरह् हदीद, आयत 4)

चौथी वजह : गुनाह करने की चौथी वजह यह होती है कि आदमी यह कहता है कि मैं अगर यह बुराई करता भी हूँ तो कोई मेरा क्या कर लेगा। जी हाँ! जब इंसान बाग़ी हो जाए और गुनाह पर जुरअत बढ़ जाए तो वह बेशर्म होकर ऐसी बातें कह देता है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उसका भी जवाब देते हैं, फ़रमाया : *"इन्न अख़्ज़हू अलीमुन शदीद"* यानी उस परवरदिगार की पकड़ बड़ी दर्दनाक और बड़ी शदीद है। (सूरह् हूद, आयत 102) *"वला यूसिक़ु व साक़हु अहदुन"* यानी "ऐसे बाँधेगा कि तुम्हें ऐसे

कोई दूसरा बाँध नहीं सकता।" (सूरह् फ़ज्र, आयत 26) और कहा "मैं परवरदिगार वह अज़ाब दूँगा कि जहानों में कोई दूसरा अज़ाब दे नहीं सकता।" (सूरह् माइदा, आयत 115)

गुनाह करने की इन वुजूहात का जवाब क़ुरआन मजीद में देने की वजह यह थी कि इंसान गुनाहों से बच जाए और अपने परवरदिगार का फ़रमाँबरदार बन्दा बन जाए। शैतान की यह कोशिश होती है कि इंसान को गुनाहों में मस्त रखे और रहमान की यह कोशिश होती है कि इंसान ज़ाहिर हो या पोशीदा जो भी गुनाह करता है उसको छोड़ दे। अब बन्दे को चाहिए कि अपने परवरदिगार की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए गुनाहों भरी ज़िन्दगी को छोड़ दे और नेकियोंवाली ज़िन्दगी को इख़्तियार करे।

हज़रत जुनैद बग़दादी नबी करीम (सल्ल०) की क़ुराबत की ख़ातिर बिल-क़सद कुश्ती हार गए

हज़रत जुनैद बग़दादी (रह०) अपने वक़्त के शाही पहलवान थे। बादशाहे वक़्त ने एलान करवा रखा था कि जो शख़्स हमारे पहलवान को गिराएगा उसको बहुत ज़्यादा इनाम दिया जाएगा। सादात के घराने का एक आदमी बहुत कमज़ोर और ग़रीब था। नाने शबीना को तरसता था। उसने सुना कि वक़्त के बादशाह की तरफ़ से ऐलान हो रहा है कि जो हमारे पहलवान को गिराएगा हम उसे इतना ज़्यादा इनाम देंगे। उसने सोचा कि जुनैद को रुस्तमे-ज़माँ कहा जाता है, मैं उसे गिरा तो नहीं सकता मगर मेरे घर में ग़रीब बहुत ज़्यादा हैं, मुझे परेशानी भी बहुत है और सादात में से हूँ; इसलिए किसी के आगे जाकर अपना हाल भी नहीं कह सकता। चलो मैं मुक़ाबले की कोशिश करता हूँ। चुनांचे उसने जुनैद से कुश्ती लड़ने का एलान कर दिया। वक़्त का बादशाह बहुत हैरान हुआ कि इतने बड़े पहलवान के मुक़ाबले में एक कमज़ोर-सा आदमी। बादशाह ने उससे कहा कि तू शिकस्त खा जाएगा। उसने कहा कि नहीं मैं कामयाब हो जाऊँगा।

मुक़ाबले के लिए दिन तय कर दिया गया। बादशाहे वक़्त भी कुश्ती देखने के लिए आया, जब दोनों पहलवानों ने पंजा आज़माईश शुरू की तो वे सय्यद साहब कहते हैं कि, जुनैद! तू रुस्तमे-ज़माँ है, तेरी बड़ी इज़्ज़त है, तुझे बादशाह से रोज़ीना मिलता है, लेकिन देख मैं सादात में से हूँ, ग़रीब हूँ, मेरे घर में इस वक़्त परेशानी और तंगी है, आज अगर तू गिर जाएगा तो तेरी इज़्ज़त पर वक़्ती तौर पर हर्फ़ आएगा लेकिन मेरी परेशानी दूर हो जाएगी। इसके बाद उसने कुश्ती लड़ना शुरू कर दी। जुनैद हैरान थे कि अगर चाहते तो बायीं हाथ के साथ उसको नीचे पटख़ सकते थे, मगर उसने नबी करीम (सल्ल०) की क़राबत का वास्ता दिया था। यह महबूब (सल्ल०) की निस्बत थी, जिससे जुनैद का दिल पसीज गया था। दिल ने फ़ैसला किया कि जुनैद! इस वक़्त इज़्ज़त का ख़्याल न करना, तुझे महबूब (सल्ल०) के यहाँ इज़्ज़त मिल जाए, तो तेरे लिए यही काफ़ी है। चुनांचे थोड़ी देर पंजा आज़माई की और उसके बाद जुनैद ख़ुद ही चित हो गए और वह कमज़ोर आदमी उनके सीने पर बैठ गया और कहने लगा कि मैंने इनको गिरा लिया।

बादशाह ने कहा, नहीं कोई वजह बन गई होगी लिहाज़ा दोबारा कुश्ती करवाई जाए। चुनांचे दोबारा कुश्ती हुई, जुनैद ख़ुद ही गिर गए और उसे अपने सीने पर बिठा लिया। बादशाह बहुत नाराज़ हुआ, उसने जुनैद को बहुत ज़्यादा लान-तान की, यहाँ तक कि उसने कहा कि जी चाहता है कि जूतों का हार तेरे गले में डालकर पूरे शहर में फिरा दूँ, तू इतने कमज़ोर आदमी से हार गया। आपने वक़्ती ज़िल्लत को बर्दाश्त कर लिया, घर आकर बताया तो बीवी भी परेशान हुई और बाक़ी अहले ख़ाना भी परेशान हुए कि तूने अपनी इज़्ज़त को आज ख़ाक में मिला दिया, मगर जुनैद का दिल मुत्मइन था। इस सिफ़त की वजह से जुनैद बग़दादी बने हैं और अल्लाह ने उनसे ख़ूब दीन का काम लिया।

अल्लाह ने कहा : तूने उसे मेरी बन्दी समझकर माफ़ कर दिया, जा मैं तुझे अपना बन्दा समझकर माफ़ कर देता हूँ

एक आदमी की बीवी से कोई ग़लती हो गई, नुक़सान कर बैठी, अगर वह चाहता तो उसे सज़ा दे सकता था, अगर वह चाहता तो उसे तलाक़ देकर घर भेज सकता था, क्योंकि वह हक़ बजानिब था। ताहम उस आदमी ने यह सोचा कि मेरी बीवी नुक़सान तो कर बैठी है, चलो मैं उस अल्लाह की इस बन्दी को माफ़ कर देता हूँ। कुछ अर्से के बाद उस शख़्स की वफ़ात हो गई। किसी को ख़्वाब में नज़र आया। ख़्वाब देखनेवाले ने पूछा कि सुनाओ! आगे क्या मामला बना? कहने लगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मेरे ऊपर मेहरबानी फ़रमा दी। उसने पूछा, वह कैसे? कहने लगा कि एक बार मेरी बीवी ग़लती कर बैठी थी, मैं चाहता तो सज़ा दे सकता था, मगर मैंने उसको अल्लाह की बन्दी समझकर माफ़ कर दिया। परवरदिगारे आलम ने फ़रमाया कि तूने उसे मेरी बन्दी समझकर माफ़ कर दिया, जा मैं तुझे अपना बन्दा समझकर माफ़ कर देता हूँ।

ख़्वाब में खारा पानी अपने खेत में देखना और उसकी ताबीर

सवाल : बख़िदमत हज़रत मौलाना साहब दामत बरकातुहुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ है कि मैं ख़्वाब में अपने खेत का हाल देखता हूँ कि वह खारे पानी से भरा हुआ है, तो मेरे लिए अपने खेत की यह हालत नफ़ा-बख़्श है, या ज़रर-रसाँ। बराए करम जवाब देकर तश्वीशे क़ल्ब को दफ़ा कीजिए। फ़क़त वस्सलाम

जवाब : आपका अपने खेत को इस हालत पर देखना नुक्सानदेह साबित होगा। क्योंकि खारा पानी क़ाबिले ज़राअत नहीं है। लिहाज़ा खेत

समावी आफ़ात का शिकार हो सकता है, अब आप बुरे ख़ाब की ताबीर से बचाव के लिए सुन्नतों का एहतिमाम लाज़िम समझिये। और आयत

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

पढ़ने का एहतिमाम कीजिए, और हमेशा बावुज़ू रहने का भी एहतिमाम कीजिए।

हज़रत उक़बा बिन आमिर को हुज़ूर (सल्ल०) की बड़ी अजीब नसीहत

मुसनद अहमद में है कि हज़रत उक्बा बिन आमिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मेरी रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) से मुलाक़ात हुई। मैने जलदी से आपका हाथ थाम लिया और कहा : या रसूलुल्लाह! मोकिन की नजात किस अमल पर है? आपने फ़रमाया : ऐ उक़बा! ज़बान थामे रख, अपने घर में ही बैठा रहा कर और अपनी खताओं पर रोता रह। फिर दोबारा जब हुज़ूर (सल्ल०) से मेरी मुलाक़ात हुई तो आपने ख़ुद मेरा हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया : उक़बा! क्या मैं तुम्हें तौरात, इंजील, ज़बूर और क़ुरआन में उतरी हुई तमाम सूरतों से बेहतरीन सूरतें बताऊँ, मैंने कहा : हाँ हुज़ूर! ज़रूर इरशाद फ़रमाइये। अल्लाह तआला मुझे आप पर फ़िदा करे। पस आपने मुझे सूरह् क़ुल हूवल्लाहो अहद और क़ुल अउज़ो बिरब्बिल-फ़लक़ और क़ुल अउज़ो बिरब्बिन-नास बताईं। फिर फ़रमाया, देखो उक़बा! उन्हें न भूलना और हर रात इन्हें पढ़ लिया करना। फ़रमाते हैं कि फिर न मैं उन्हें भूला और न कोई रात इनके पढ़े बग़ैर गुज़ारी। मैंने फिर आप (सल्ल०) से मुलाक़ात की और जलदी करके आपके दस्ते-मुबारक को अपने हाथ में लेकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्ल०) मुझे बेहतरीन आमाल इरशद फ़रमाइये। आप (सल्ल०) ने फरमाया : सुन! जो तुझसे कटे तू उससे जुड़, जो तुझे महरूम रखे तू उसे दे, जो तुझपर ज़ुल्म करे तू उससे दरगुज़र कर और माफ़ कर दे।

(तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 616)

"अल्लाह का रंग इख़्तियार करो" इसका क्या मतलब है?

सवालः

ब-ख़िदमत हज़रत मौलाना साहब दामत बरकातहुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ है कि "अल्लाह का रंग इख़्तियार करो" इसका क्या मतलब है?" जैसा कि क़ुरआन मजीद में है (सूरह् बक़रह्, आयात 138)

صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً (سورہ بقرہ، آیت:۱۳۸)

"अल्लाह का रंग इख़्तियार करो, अल्लाह से अच्छा और रंग किसका होगा"

जवाबः

मज़कूरा आयत से दो चीज़ें बतलाना मक़सूद है :

(1) नसारा की एक रस्म की तर्दीद करना (2) अलामाते ईमान का मोमिन की ज़ात और अफ़आल में ज़हूर होना चाहिए।

1) नसारा की यह रस्म जारी थी कि जो बच्चा पैदा हो उसको सातवें दिन एक रंगीन पानी में नहलाते थे और बजाए ख़तना के उसी नहलाने को बच्चे की तहारत और दीने-नसरानियत का पुख़्ता रंग समझते थे। इस रस्म का नाम उनके यहाँ बपतिस्मा है। जो उनके यहाँ लाज़िम था, जिसके बिना वे किसी को पाक तसव्वुर नहीं करते थे। इस आयत ने बतला दिया कि यह पानी का रंग तो धुलकर ख़त्म हो जाता है, उसका बाद में कोई असर नहीं रहता, और ख़तना न करने की वजह से जो गन्दगी और नापाकी जिस्म में रहती है, उससे भी यह रंग नजात नहीं देता। असल रंग दीन व ईमान का रंग है, जो ज़ाहिरी और बातिनी पाकी की ज़मानत भी है और बाक़ी रहनेवाला भी है।

2) अलामाते ईमान का मोमिन की ज़ात और अफ़आल में ज़हूर होना चाहिए। दीन व ईमान को रंग फ़रमा कर इस तरफ़ इशारा हो गया

कि जिस तरह रंग आँखों से महसूस होता है मोमिन के ईमान की अलामात उसके चेहरे-बशरा और तमाम हरकात व सकनात, मामलात व आदात में ज़ाहिर होनी चाहिए।

(तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, ज़िल्द-1, पेज 356)

सौ बिखरे मोती पढ़ लीजिए

(1)

साथियों को चाहिए कि रात के आख़िरी हिस्से में तहज्जुद के लिए उठें। हज़रत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर (रज़ि०) का क़ौल है : "रात के आख़िरी हिस्से में मुर्ग़ का तुझपर उठने में सब्क़त ले जाना, तेरे लिए बाइसे-नदामत है।"

(2)

रात को उठो इसलिए कि उश्शाक़ रात को राज़ की व नियाज़ करते हैं, दोस्त के दरवाज़े और छत के इर्द-गिर्द परवाज़ करते हैं। हर जगह के दरवाज़े रात को बन्द कर दिए जाते हैं, सिवाय दोस्त के दरवाज़े के जिसे रात को खोल देते हैं।

(3)

निहायत ख़ुशूअ् व ख़ुज़ूअ् के साथ चार रकअत, आठ रकअत या बारह रकअत तहज्जुद अदा करे। हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ़ हमदानी का मामूल था कि पहले दोगाना में आयतल-कुर्सीवाला रुकूअ् और सूरह् बक़रह् का आख़िरी रुकूअ पढ़ते। फिर आठ रकआत में दस-दस आयात पढ़कर सूरह् यासीन मुकम्मल करते। आख़िरी दो रकअत में तीन-तीन बार सूरह् इख़्लास पढ़ते (हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ़ हमदानी की सोहबत में हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी और हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी ने फ़ैज़ान पाया। आप इन दोनों हज़रात के पीरे-तालीम कहलाते हैं।)

(4)

अल्लाह के ख़ज़ाने में चार चीज़ें नहीं हैं :

(1) अदम (2) हाजत (3) उज़्र (4) गुनाह

(5)

सवाल : इस्तिग़फ़ार पहले पढ़ें या दुरूद शरीफ़ पहले पढ़ें :

जवाब : शैख़ुल अरब वल-अजम हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर (रह०) से पूछा, "इस्तिग़फ़ार पहले पढ़ें कि दुरूद शरीफ़।" फ़रमाया कि इस्तिग़फ़ार की मिसाल कपड़े धोनेवाले साबुन की-सी है, जबकि दरूद शरीफ़ की मिसाल कपड़े पर लगानेवाले इत्र की-सी है। आप यह बताएँ कि कपड़े को पहले इत्र लगाएँगे या साबुन से धोएँगे? साइल ने अर्ज़ किया : हज़रत पहले साबुन से धोना चाहिए फिर इत्र लगाना चाहिए। फ़रमाया : "बस इसी तरह पहले ख़ूब नादिम व शर्मिन्दा होकर इस्तिग़फ़ार पढ़ें, ताकि दिल धुल जाए फिर मुहब्बत व अक़ीदत से दुरूद शरीफ़ पढ़ें ताकि इत्र लगे और मुहब्बते-रसूल (सल्ल०) की ख़ुश्बू अंग-अंग में समा जाए।"

(6)

एक शख़्स ने राबिया बसरिया (रह०) के पास दुनिया की बुराई का तज़्किरा किया। फ़रमाया, "आइंदा मेरे पास न आना, तुम्हें दुनिया से बहुत मुहब्बत है।"

(7)

कुछ लोगों ने ज़ुन्नून मिस्री (रह०) से कहा : फ़लाँ जमाअत शग़ल व तरब में मशग़ूल है, बद्दुआ करें। फ़रमाया : अल्लाह! जैसे तूने उन्हें दुनिया में ख़ुशियाँ दीं, आख़िरत में भी ख़ुशियाँ अता फ़रमा।

(8)

अगर कोई अहले-दुनिया की ताज़ीम करे तो कौन-सी अजीब बात है, लोग तो साँप और बिच्छू को देखकर भी खड़े हो जाते हैं।

(9)

सवाल : इस्मे-आज़म क्या है?

जवाब : दिल ग़ैर से ख़ाली और पेट हराम से ख़ाली हो तो हर इस्म "इस्मे-आज़म" होता है।

(10)

लुक़मान हकीम ने फ़रमाया : "मैं चाँद और सूरज की रौशनी में परवरिश पाता रहा मगर दिल की रौशनी से बढ़कर किसी को सूदमन्द न पाया।

(11)

दिल सियाह हो तो चमकती आँखें कुछ फ़ायदा नहीं देतीं।

(12)

जिस घर में आराइश न हो बिगड़ जाता है, इसी तरह जिस दिल में ग़म न हो तो वह भी बिगड़ जाता है।

(13)

यहया बिन मुआविया ने फ़रमाया : "दिल हंडिया की तरह है जबकि ज़बान चमचा की तरह। चमचा वही निकालता है जो हंडिया में होता है।"

(14)

क़ियामत के बाज़ार में सौदे की इतनी क़ीमत न होगी, जितना मोमिन का दिल खुश करने की।

(15)

नमाज़ में जी न लगने की वजह ऐसी है जैसे चमड़े के कारख़ाने में काम करनेवाला इत्र की दुकान पर जाए तो उसका दम घुटने लगता है।

(16)

एक ताजिर ने तीस साल रोज़े रखे, घरवाले समझते थे, दिन का खाना दुकान पर खाता होगा, दुकानवाले समझते थे घर से खाकर आता होगा। किसी को पता न चलने दिया, इसे इख़्लास कहते हैं।

(17)

जो इबादत दुनिया में मज़ा न देगी वह आख़िरत में क्या जज़ा देगी।

(18)

जो गुनाह पर पछताए उसे वली समझो, जो परवाह न करे उसे गुनाहगार इंसान समझो, जो गुनाह करके इतराए उसे शैतान समझो।

(19)

गुनाह को न देखो कि कितना छोटा है बल्कि अल्लाह तआला की अज़्मत को देखो कि किसकी नाफ़रमानी की जा रही है।

(20)

अगर तुम ग़लतियों को छिपाने के लिए दरवाज़े बन्द करोगे तो सच भी बाहर ही रह जाएगा।

(21)

अल्लाह तआला की बारगाह में वह बदी जो तुम्हें रंजीदा करे उस नेकी से बेहतर है जो तुम्हें नाज़ाँ करे।

(22)

हज़रत इबराहीम तैमी (रह०) ने कहा : "इख़्लास यह है कि अपनी नेकियों को इस तरह छिपाए जिस तरह अपनी बुराइयों को छिपाता है।"

(23)

साथियों को चाहिए कि लोगों को अल्लाह की नेमतें याद दिलाए ताकि शुक्र करें, गुनाह याद दिलाए ताकि तौबा करें। नफ़्स व शैतान की अदावत याद दिलाए ताकि बच सकें।

(24)

एक ग़ाफ़िल ने किसी शैख़ से कहा कि आपका मुरीद रियाई (दिखावे का) ज़िक्र करता है। फ़रमाया : उसके पास टिमटिमाता चिराग़ है, लिहाज़ा बख़्शिश की उम्मीद है, आपके पास तो यह भी नहीं।

(25)

जिसने मामूलात में पाबन्दी हासिल कर ली उसपर रहमत हो गई। फ़रहते क़ल्ब उसकी लौंडी है जो ख़ुद-बख़ुद मिल जाएगी।

(26)

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की (रह०) फ़रमाते थे कि जो शख़्स बैअ़त की तमन्ना ज़ाहिर करे, तो मैं उसको इसलिए मुरीद कर लेता हूँ कि पीर को क़ियामत के दिन जहन्नम जाता देखकर मुरीद तरस खाएगा। शायद इसी बरकत से बख़्शा जाऊँ।

(27)

एक शख़्स ने किसी बुज़ुर्ग को हदिया देकर दुआ की दरख़ास्त की। फ़रमाया : "हदिया वापस ले जाओ, यह दुआ की दुकान नहीं है।"

(28)

शेख़ गुनाहगार मुरीद को यूँ समझे जैसे किसी हसीना ने चेहरे पर सियाही लगा ली है, अगर धोए तो चाँद-सा चेहरा निकल आएगा।

(29)

तक़वा यह है कि रोज़े-महशर कोई तुम्हारा गरेबान न पकड़े।

(30)

हम ऐसे ज़माने में पैदा हुए हैं कि सल्फ़े-सालेहीन ने अपने इल्म व तक़वा के बावजूद इससे पनाह माँगी थी।

(31)

शैख़ उसमान ख़ैराबादी (रह०) ग्राहकों को खोटे सिक्कों के बदले में भी माल दे देते थे, मरते वक़्त दुआ माँगी कि "मैंने लोगों के खोटे सिक्के क़बूल किए, ऐ अल्लाह! तू मेरे खोटे आमाल को क़बूल फ़रमा।"

(32)

शेख़ शहाबुद्दीन ख़तीब (रह०) दुआ माँगते थे कि या अल्लाह! मरते वक़्त कोई पास न हो, न अपना न पराया, न ही मलकुल मौत। बस मैं और तू।

(33)

अबुल हसन नूरी (रह०) की दुआ यह होती थी : "ऐ अल्लाह! अगर मेरी मग़फ़िरत नहीं करनी तो जहन्नम को मुझसे भर दे और बाक़ी सब इंसानों की मग़फ़िरत नहीं करनी तो जहन्नम को मुझसे भर दे और बाक़ी सब इंसानों की मग़फ़िरत फ़रमा दे।"

(34)

दुआ का एक फ़ायदा यह भी है कि क़ियामत के दिन कहेगा, "ऐ अल्लाह! मैंने तो दुआ की थी, मुझे नेक बना, पस माज़ूर समझा जाएगा।

(35)

जिससे हसद हो उसके लिए बुलन्दी-ए-दर्जात की दुआ करना हसद का बेहतरीन इलाज है।

(36)

मेहनत हमारे हाथ में है, नसीब ख़ुदा के हाथ में है। हमें उसी से काम लेना चाहिए जो हमारे हाथ में है।

(37)

बेकार इंसान मुर्दे से भी बदतर है, क्योंकि मुर्दा कम जगह रोकता है।

(38)

क़ाज़ी बेज़ावी (रह०) ने शीराज़ की क़ज़ा के लिए किसी बुज़ुर्ग से सिफ़ारिश करवाई। उन्होंने सिफ़ारिशी रूक़्क़े में लिखा "यह मर्दे सालेह आलिम फ़ाज़िल है, जहन्नम में एक मुसल्ला की जगह चाहता है।"

(39)

जिस तरह मख़्लूक़ के लिए अमल करना रिया है, उसी तरह मख़्लूक़ के लिए अमल तर्क करना भी रिया है।

(40)

हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया, "हमारे बाज़ारों में ख़रीद व फ़रोख़्त वह करे जो फ़क़ीह हो।" सुब्हानल्लाह! सारे मुल्क को दर्सगाह बना दिया।

(41)

नफ़्स की सरकशी को तोड़ना *'इमाततुल अज़ा अनित्तरीक़'* में दाख़िल है।

(42)

आज आम रूहानी मर्ज़ है:

يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ

"काश कि हमें भी किसी तरह वह मिल जाता जो क़ारून को दिया गया है, वह तो बड़ा क़िस्मत का धनी है!"

(सूरह् क़सस, आयत 79)

(43)

जिससे मुहब्बत हो उसका नाम आए तो नब्ज़ तेज़ हो जाती है, यही मानी 'وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ' का है। (सूरह् अनफ़ाल, आयत 2)

(44)

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ

(سورہ الانبیاء آیت ۹۴)

(सूरह् अल-अंबिया, आयत 94)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने नेकियाँ लिखने की निस्बत अपनी तरफ़ की है। क़ुरबान जाएँ इस इज़्ज़त-अफ़ज़ाई पर।

तर्जमा : फिर जो कुछ भी नेक अमल करे और वह मोमिन भी हो तो उसकी कोशिश की बेक़दरी नहीं की जाएगी, हम तो उसके लिखनेवाले हैं।

(45)

बिना मुसीबत के कोई नेमत छिन जाए तो बेहतर मिलती है :

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا (سورہ بقرہ آیات ۱۰۶)

"जिस आयत को हम मन्सूख़ कर दें, या भुला दें उससे बेहतर या उस जैसी और लाते हैं।" (सूरह् बक़रा, आयत 106) यह सूरह् इसकी दलील है।

(46)

किसी ने हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी से कहा : आप भूख की इतनी तारीफ़ क्यों करते हैं? फ़रमाया : "अगर फ़िरऔन भूखा होता तो *"अना रब्बुकुमुल-अअ़ला"* (सूरह् नाज़िआत, आयत 24) न कहता।

(47)

उलमा के दर्से-निज़ामी का निसाब आठ साला होता है। सनद यह है कि हज़रत शुऐब (अलैहि०) की ख़िदमत में हज़रत मूसा (अलैहि०) के रहने का अह्द आठ साला है लेकिन तख़सूसुस के लिए *"फ इ न अतममता अ़श्रन फ़मिन इन्दि-क"* (सूरह् क़सस, आयत 27) है।

(48)

कुछ अस्लाफ़ के चिराग़ के तेल का ख़र्चा ज़्यादा होता था, और खाने का ख़र्चा कम होता था।

(49)

एक मर्तबा शैख़ुल इस्लाम अज़ीज़ुद्दीन बिन अस्सलाम से किसी ने कहा कि बादशाह के हाथ चूमिए। हज़रत ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम! मैं इसपर भी राज़ी नहीं हूँ कि वह मेरा हाथ चूमे चेजाए कि मैं उसके हाथ चूमूँ।"

(50)

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ (रह०) को बादशाहे वक़्त ने बड़ी जागीर पेश की तो फ़रमाया : "अल्लाह तआला ने सारी दुनिया को *"मताउद्दुनया क़लीलुन"* (सूरह निसा, आयत 77) कहा। इसी क़लील में से थोड़ा-सा हिस्सा आपको मिला है। अब इसमें से भी थोड़ा-सा हिस्सा आप मुझे देंगे तो इतना थोड़ा लेते हुए भी मुझे शर्म आती है।

(51)

एक ककड़ी बेचनेवाले ने आवाज़ लगाई : *"अशरतु ख़ियारिन*

बिदानिक़िन' (दस ककड़ी एक दानिक़ के बदले में)। ख़ियार अरबी में ककड़ी को कहते हैं। हज़रत शिबली (रह०) ने चीख़ मारी कि जब दस ख़ियार की यह क़ीमत है तो हम अशरार की क्या क़ीमत होगी?

(52)

नादानों की बात पर तहम्मुल अक़्ल की ज़कात है।

(53)

बहुत ज़्यादा खाकर बीमार होनेवालों की तादाद फ़ाक़ाकशी से बीमार होनेवालों से ज़्यादा है।

(54)

हर बच्चे की पैदाइश इस बात की अलामत है कि ख़ुदा अभी बन्दे से मायूस नहीं हुआ है।

(55)

सच पर चलनेवालों का हर क़दम शैतान के सीने पर होता है।

(56)

हैरत है कि इंसान हाथ तो दुनिया के आगे फैलाता है, मगर गिला ख़ुदा से करता है।

(57)

बुरी आदतों की ताक़त का अन्दाज़ा उस वक़्त होता है जब उन्हें छोड़ने की कोशिश की जाती है।

(58)

जितनी मेहनत से लोग जहन्नम ख़रीदते हैं उससे आधी मेहनत में जन्नत मिलती है।

(59)

तर्के तब्लीग़ के लिए मुख़ातिब की नागवारी उज़्र नहीं :

أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ۔ (سورة الزخرف آيات ٥)

"क्या हम इस नसीहत को तुमसे इस बिना पर हटा लें कि तुम हद से गुज़र जानेवाले लोग हो।" (सूरह ज़ुख़रुख़, आयत 5)

(60)

दोज़ख़ में भी ईमान की बरकत

गुनाहगार मोमिनीन को जहन्नम में तकलीफ़ का एहसास नहीं होगा

अबू सईद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "वह जहन्नमी जो जहन्नम के मुस्तहिक़ हैं तो उन्हें जहन्नम में न मौत आएगी (कि तकलीफ़ से छुटकारा पा लें) और न उन्हें ज़िन्दगी (का लुत्फ़) नसीब होगा। लेकिन तुम (मोमिनीन) में से कुछ लोग अपने गुनाहों की वजह से जहनम में पहुँचेंगे, फिर अल्लाह तआला उन्हें एक ख़ास क़िस्म की मौत देगा (जिससे तकलीफ़ का एहसास नहीं होगा) यहाँ तक कि जब वे (जलकर) कोयला हो जाएंगे तो (दूसरे जन्नती या हुज़ूर सल्ल०) को (उनके हक़ में) सिफ़ारिश करने की इजाज़त दी जाएगी, लिहाज़ा उन्हें मुख़्तलिफ़ टुकड़ियों में (इस तरह उठाकर) लाया जाएगा जिस तरह सामान उठाया जाता है। फिर उन्हें जन्नत की नहरों पर बिखेर दिया जाएगा। फिर जन्नतवालों से कहा जाएगा कि उनपर (ज़िन्दगी का पानी) बहाओ। चुनांचे (वे उस पानी से इतनी तेज़ी के साथ) ज़िन्दा होंगे (जितनी तेज़ी के साथ) वह घास उगती है जो कीचड़ में होती है।

(मुस्लिम, किताबुल ईमान, 459)

नोट : डॉक्टर का ऑपरेशन मरीज़ के लिए तकलीफ़देह नहीं होता, चमड़ी (खाल) के सुन होने की वजह से। वैसे ही आसी मोमिन का जहन्नम में दिल तकलीफ़देह नहीं होगा, क़ल्ब में ईमान की वजह से।

(61)

अंग्रेज़ी पढ़कर दीनदार बनना अरबी पढ़कर बेदीन बनने से बेहतर है।

(62)

यह तजुर्बाशुदा बात है कि जो बच्चा सूरह् यूसुफ़ पहले याद करे उसे क़ुरआन जल्दी याद हो जाता है।

(63)

मुरशिद की दुआ का असर बहुत ज़्यादा होता है। हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) वफ़ाते नबवी से तीन साल पहले ईमान लाए, मगर हाफ़िज़ा इतना था कि रिवायात सबसे ज़्यादा हैं। चूंकि नबी करीम (सल्ल०) ने दुआ की थी।

(64)

जिस तरह शहवत बिना महल हराम है, उसी तरह ग़ुस्सा भी बिना महल हराम है।

(65)

बुज़ुर्गों का कलाम नक़्ल करने से क्या होता है? देखो तोता कैसे हू-बहू आदमी की तरह बोलता है, क्या वह आदमी हो जाता है, हरगिज़ नहीं।

(66)

सच्चाई की मशाल जहाँ जलती देखो फ़ायदा उठाओ, यह न देखो कि मशालबरदार कौन है।

(67)

मुसलमान को फ़ायदा न पहुँचा सको तो नुक़सान न पहुचाओ। खुश न कर सको तो रंजीदा न करो। तारीफ़ न कर सको तो ग़ीबत न करो।

(68)

सौ साल की उम्र में एक लम्हे की ग़लती इंसान का रुख़ मशरिक़ से मग़रिब की तरफ़ बदल देती है।

(69)

ग़लती के बाद चेहरे को बहाने की चादर से न छुपाओ, क्योंकि चादर चेहरे से ज़्यादा मैली है।

(70)

कमीने आदमी से दोस्ती न करो, क्योंकि गर्म कोयला हाथ जलाता है और ठंडा कोयला हाथ काले करता है।

(71)

हैवानात में मक्खी सबसे ज़्यादा हरीस और मकड़ी सबसे ज़्यादा क़नाअत-पसन्द है। पस अल्लाह तआला ने मक्खी को मकड़ी की ग़िज़ा बना दिया।

(72)

अगर इंसान के ख़यालात शरई गवाह होते तो कई नेक लोग बदमाश होते।

(73)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने नसीहत फ़रमाई : "बुरी नज़र छोड़ दो, ख़ुशूअ की तौफ़ीक़ मिलेगी। बेहूदागोई छोड़ दो, दानाई मिलेगी।

(74)

फ़हश-कलामी करने पर एक नौजवान को किसी बुज़ुर्ग ने कहा : "देख तू ख़ुदा तआला के नाम कैसा ख़त भेज रहा है।"

(75)

अगर ग़ुरूर कोई इल्म होता तो उसके कई सनदयाफ़्ता होते।

(76)

अगर तू हक़ तआला से राज़ी है तो यह निशानी है इस बात की कि वह तुझसे राज़ी है।

(77)

इंकिसारी का सहारा लेकर चलो वरना ठोकर खाकर गिर पड़ोगे।

(78)

हज़रत मूसा (अलैहि०) ने दुआ की : "ख़ुदाया! मख़्लूक़ की ज़बान मुझसे रोक दे।" फ़रमाया : "अगर मैं ऐसा करता तो अपने लिए करता।"

(79)

इशराफ़े-नफ़्स के बग़ैर जो हदिया मिले उसमें बरकत होती है।

(80)

लिबास के तीस दर्जे हैं : एक आसाइश का जो ज़रूरी है, दूसरा ज़ेबाइश का जो जाइज़ है और तीसरा नुमाइश का जो मना है।

(81)

शाह शुजाअ करमानी (रह०) ने 40 साल रात को जागकर इबादत करने का मामूल रखा। एक रात सो गए तो अल्लाह तआला की ज़ियारत नसीब हुई। अर्ज़ किया : "या अल्लाह! मैंने जागने में आपको ढूंढ़ा मगर आप सोने में मिले।" फ़रमाया : "जागने की बरकत से सोने में मिला हूँ।"

(82)

ऐ दोस्त! तू अपने असूल मकान की तरफ़ जा रहा है, लेकिन सुस्त रफ़्तारी के साथ, असूल मकान की तरफ़ तो जानवर भी तेज़ चलते हैं।

(83)

इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) ने इमाम अबू यूसुफ़ (रह०) को नसीहत की कि कोई पीठ की तरफ़ से पुकारे तो जवाब न दो, पीठ की तरफ़ से जानवरों को पुकारते हैं।

(84)

जो नेमत की क़द्र नहीं करता, नेमत नामालूम तरीक़े से छीन ली जाती है।

(85)

वाज़गोई से उजुब पैदा हो तो लिखकर वाज़ करे, इस तरह लोग कहेंगे कि बेचारा देख-देखकर बोल रहा है।

(86)

अपने इख़्तियार व क़सद से किसी की बुराई दिल में रखना और उसे ईज़ा पहुँचाने की तदबीर करना कीना है। अगर किसी से रंज की बात पेश आए और तबीयत मिलने को न चाहे तो यह इंक़िबाज़ है, दूर होने की दुआ करे।

(87)

हज़रत इबराहीम अद्हम (रह०) से कोई फ़ाक़े की शिकायत करता तो फ़रमाते : "तुम फ़ाक़े की क़द्र क्या जानो, हमने सल्तनत देकर ख़रीदे हैं, हमसे पूछो।"

(88)

औरत के लिए ज़ेवर व लिबास की मुहब्बत कम करने का तरीक़ा यह है कि घर में अच्छे कपड़े पहने। दूसरी जगह जाए तो मामूली कपड़े पहने।

(89)

इब्ने अता सिकन्दरी को इल्हाम हुआ कि मैं ऐसा राज़िक़ हूँ कि अगर तू दुआ करे कि रिज़्क़ न मिले तो भी दूँगा, फिर अगर रो-रोकर माँगेगा तो क्यों न दूँगा।

(90)

दरिया के पानी और आँखों के पानी में सिर्फ़ जज़्बात का फ़र्क़ होता है।

(91)

हमारी मशरिक़ी औरतें आम तौर पर आशिक़ातुल-अज़वाज और क़ासिरातुत्तर्फ़ (दूसरों की तरफ़ न देखनेवालियाँ) होती हैं। औरतें फ़ितरतन मर्द के ताबेअ्, मगर मर्द मुहब्बत की वजह से औरत के ताबेअ् होता है।

(92)

बूढ़ा आदमी चिराग़े-सहर है तो जवान आदमी चिराग़े-शाम है।

(93)

अपना बच्चा रोए तो दिल में दर्द होता है, और दूसरे का बच्चा रोए तो सर में दर्द होता है।

(94)

तहज्जुद के वक़्त आँख खुले तो समझ लो कि आसमान से फ़ोन आया है।

(95)

ज़िक्र से ख़ाली बात लग़्व है। इबरत से ख़ाली नज़र कह्व है और फ़िक्र से ख़ाली ख़ामोशी सह्व है।

(96)

हज़रत अबू यूसुफ़ मुहीउद्दीन मदनी फ़रमाते हैं : ख़बरदार! किसी अहलुल्लाह की शान में गुस्ताख़ी न कर देना, वर्ना तुम्हारी ज़िन्दगी फीकी होगी।

(97)

बीमार दिल की चार अलामतें हैं :

(1) इताअत में हलावत महसूस न करे।

(2) उसमें ख़ुदा का ख़ौफ़ न रहे।

(3) दुनिया की चीज़ों को निगाहे इबरत से न देखे।

(4) जो इल्म सुने उसे समझे नहीं।

(98)

हज़रत उसमान अलख़ैरी (रह०) से किसी ने पूछा कि ख़ुदा को ज़बान से याद करता हूँ मगर दिल उसके साथ मुवाफ़िक़त नहीं करता।

फ़रमाया : शुक्र करो कि ख़ुदा की याद में एक अज़्व तो मुतीअ़ हुआ, दूसरा भी हो जाएगा।

(99)

गुनाहों से परहेज़ किया जाए तो दीन व दुनिया में मज़े ही मज़े हैं।

(100)

तमाम बुराइयों की जड़ दुनिया की दोस्ती है।

मस्जिद में दाख़िल होते ही यह दुआ पढ़ लीजिए, शैतान से आपकी हिफ़ाज़त हो जाएगी

हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) फ़रमाते हैं, जब नबी करीम (सल्ल०) मस्जिद में दाख़िल होते तो यह कलिमात कहते :

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

"मैं मर्दूद शैतान से अज़्मतवाले अल्लाह, उसकी करीम ज़ात की और उसकी क़दीम सल्तनत की पनाह चाहता हूँ।"

आदमी जब ये कलिमात कहता है तो शैतान कहता है : बाक़ी सारे दिन में इस आदमी की मुझसे हिफ़ाज़त हो गई।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द-3, पेज 394)

एक क़ीमती नसीहत

हुज़ूर (सल्ल०) की शफ़क़त व दिलजोई का अजीब वाक़िआ

ग़ज़्व-ए-हुनैन के मौक़े पर एक अजीब अफ़रा-तफ़री मची हुई थी। लोगों का इज़्दहाम और भीड़ बहुत ज़्यादा थी, एक सहाबी पैर में मोटा जूता पहने हुए थे, इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि उनका पैर जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़दम मुबारक पर पड़ा और उससे आपका पैर मुबारक रौंद गया। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दस्ते मुबारक में एक कोड़ा था, आपने उस कोड़े के किनारे से उनको मारा, और फ़रमाया : औ जातनी! "यानी तुमने मुझे तकलीफ़ दी है।" वह सहाबी फ़रमाते हैं : मैंने रात किसी तरह गुज़ारी *फ़बित्तु बिलैलतिन कमा यालमुल्लाह*, सुबह हुई देखा एक शख़्स मेरा नाम लेकर आवाज़ लगा रहा है कि फ़लाँ शख़्स कहाँ है? मैंने अर्ज़ किया : वह शख़्स मैं ही हूँ। उन्होंने मुझसे कहा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) आपको बुलाते हैं। मैं चल दिया और दिल में घबराहट थी कि देखिए क्या अंजाम होता है : *फ़न्तलक़्तु व अना मुतख़व्विफ़ून*, चुनांचे मैं पहुँचा। आपने फ़रमाया कि तुमने अपने जूते से मेरे पैर को रौंद दिया था और मैंने तुमको कोड़ा मारा था, यह अस्सी (80) ऊँटनियाँ हैं तुम इसके एवज़ उनको ले लो, और जो तकलीफ़ तुमको पहुँची है उसको दरगुज़र कर दो।

मज़्कूरा वाक़िये पर ग़ौर करें कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अपने सहाबा पर किस क़द्र शफ़क़त थी कि महज़ इस मामूली कोड़े के मार देने से इस क़द्र आपको एहसास हुआ, और उसके एवज़ अस्सी (80) ऊँटनियाँ आपने उनको दीं। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आप (सल्ल०) सहाबा किराम की किस क़द्र दिलजोई फ़रमाया करते थे और उनको ख़ुश करने की किस क़द्र कोशिश करते थे। हमें भी यह मामला अपने अहले-ताल्लुक़ के साथ करना चाहिए कि किसी को अगर कोई नागवारी और तकलीफ़ हमसे पहुँच जाए तो फिर उसका दिल ख़ुश

करने की कोशिश की जाए।

(माहनामा महमूद, 1419 हिजरी मुताबिक़ 1997 ई०, पेज 10)

एक क़ीमती नसीहत
हुज़ूर अकरम (सल्ल०) का बीमार की मिज़ाजपुर्सी का अजीब वाक़िया

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आदते शरीफ़ा यह भी थी कि आप बीमार लोगों की इयादत फ़रमाया करते थे। बीमार आदमी चाहे किसी भी दर्जे का होता — शरीफ़ और मुअज़्ज़िज़ होता या ग़ैर-मुअज़्ज़िज़ और मामूली सबकी इयादत फ़रमाते, यहाँ तक कि ग़ैर-मुस्लिमों तक की इयादत और मिज़ाजपुर्सी फ़रमाया करते थे। जिससे आपको बेहद अज़ीयत और तकलीफ़ पहुँची और जो आपका बहुत बड़ा दुश्मन था, यानी रईसुल मुनाफ़िक़ीन अब्दुल्लाह बिन उबई, उस तक की आपने इयादत फ़रमाई है। हदीस शरीफ़ में आता है कि एक यहूदी लड़का आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ करता था, और कभी-कभार आप उससे कोई काम भी ले लिया करते थे, वह बीमार हो गया। सरकारे दो आलम (सल्ल०) उसके पास इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए और आप (सल्ल०) उसके सर के क़रीब बैठ गए। उस लड़के का आख़िरी वक़्त था। आपने अज़राहे शफ़क़त और अपने हक़्क़े रिसालत को अदा करते हुए उस लड़के को इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई। लड़के ने अपने यहूदी बाप की तरफ़ देखा। बाप हक़ीक़त में दीने मुहम्मदी (सल्ल०) से वाक़िफ़ था ही, इसलिए क़बूले इस्लाम की इजाज़त दे दी और वह लड़का इस्लाम से मुशर्रफ़ हो गया और इस्लाम पर उसका ख़ात्मा हुआ। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को बेहद मसर्रत और ख़ुशी हुई और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए फ़रमाया : *''अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-क़-ज़हु मिनन्नार''* ग़र्ज़ यह कि आप (सल्ल०) की आदते मुबारका को अहले इल्म से मालूम करके हमें अपनी ज़िन्दगियों में लाना चाहिए। आपकी एक-एक सुन्नत और आपकी एक-एक अदा अल्लाह को महबूब है, और जो उसको इख़्तियार करेगा यक़ीनन वह ख़ुदा का महबूब होगा : *''फ़त्ताबिऊनी योहबिबकुमुल्लाह''*

(सूरह आले इमरान, आयत 31) अल्लाह पाक हमें अमल की तौफ़ीक़ दे।

(माहनामा महमूद, 1419 हिजरी मुताबिक़ 1997 ई०, पेज 11)

एक क़ीमती नसीहत
हर नेमत और मुसीबत के दोनों रुख़ देखा करें

हमसे यह अह्द लिया गया कि हर नेमत और मुसीबत के दोनों रुख़ देखा करें। किसी नेमत या मुसीबत की महज़ ज़ाहिरी सूरत को न देखें क्योंकि बाज़ दफ़ा मुसीबतों की शक्ल में नेमतें आती हैं और कभी नेमतों की सूरत में बलाएँ आ जाती हैं।

अगर हम नेमतों के बातिनी रुख़ को देखेंगे तो उनको तरह-तरह की आज़माइशों में घिरा हुआ पाएँगे, कम-से-कम एक बला तो यही है कि अल्लाह तआला नेमतवाले से यह मुतालबा फ़रमाते हैं कि उस नेमत को किसी वक़्त भी किसी मख़्लूक़ की तरफ़ मन्सूब न करे कि फ़लाँ की वजह से मुझको यह नेमत मिली, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ मन्सूब करे, और अल्लाह तआला उससे यह भी मुतालबा फ़रमाते हैं कि नेमत को उन्हीं मौक़े में सर्फ़ करे जहाँ अल्लाह तआला उसके सर्फ़ करने को पसन्द करते हैं। और यह मुतालबा भी होता है कि नेमत का शुक्र बजा लाए महज़ ज़बान से ही नहीं बल्कि अमल से भी। अब जो शख़्स नेमत में उन बलाओं का मुशाहिदा करता हो वह उनसे लज़्ज़त हासिल करने की फ़ुरसत कब पाएगा।

इसी तरह अगर हम तकलीफ़ों और मुसीबतों के बातिन पर नज़र करें तो उनका अपने हक़ में बहुत बड़ी नेमत होना मालूम होगा, क्योंकि उनसे लज़्ज़त व आजिज़ी पैदा होती है और हमारा बाज़ू झुक जाता है और सरकशी जाती रहती है। चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

كَلَّآ إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰٓ أَن رَّءَاهُ اسْتَغْنَىٰٓ

"कुछ नहीं, वाक़ई इंसान सरकश बन जाता है जब अपने को मुस्तग़नी देखता है," (सूरह अलक़, आयत 6-7)। इन तकालीफ़ व मसाइब में यह भी फ़ायदा है कि उनसे दर्जे मिलते हैं लेकिन उनसे ताआत (इबादात) और

उलूम व मआरिफ़ में उजुब पैदा नहीं होता।

मुसीबत से इंसान की आज़माइश उस वक़्त की जाती है जब अल्लाह तआला की नेमतें दरबारे ख़ुदावन्दी की तरफ़ उसको मुतवज्जह न करती हों, जब नेमतें उसको ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह नहीं करतीं तो अब अल्लाह तआला उसको मसाइब में मुब्तला कर देते हैं। चुनांचे अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाते हैं :

وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ

"और हमने उनको राहतों और मुसीबतों में मुब्तला किया शायद कि अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करें," (सूरह् आराफ़, आयत 168)। यानी अव्वल तो उनको राहतों और नेमतों में रखा जब उनसे रुजूअ न हुए तो मसाइब व तकालीफ़ में मुब्तला कर दिया।

और सय्यदी ताजुद्दीन बिन अताउल्लाह ने इससे भी ज़्यादा अजीब बात बयान की है, वह फ़रमाते हैं कि "जो गुनाह ज़िल्लत व इंकसारी पैदा कर दे वह उस इताअत से बेहतर है जो ग़ुरूर व तकब्बुर पैदा कर दे।" (माहनामा अल-महमूद, 1419 हिजरी मुताबिक 1997 ई०, पेज 18)

एक क़ीमती नसीहत : दीन के काम के ज़रिए शोहरत तलब करना कमर को तोड़ देता है

दुनिया में तसर्रुफ़ व करामत के ज़रिए से अपनी शोहरत के तालिब हरगिज़ न हों, क्योंकि जिसको इस बात की ख़्वाहिश होती है उसका दीन बर्बाद हो जाता है, और आलमे आख़िरत में ख़ाली हाथ पहुँचता है। मगर यह कि कोई महज़ अल्लाह तआला के इरादे से बग़ैर अपनी ख़्वाहिश से ज़ाहिर और मशहूर हो गया हो जैसा औलिया कामिलीन को पेश आता है। सुफ़ियान बिन ऐनिया (रह०) फ़रमाते थे कि अगर औलिया कामिलीन को शोहरत की ख़्वाहिश होती तो उनको कोई भी न पहचानता।

सय्यदी इबराहीम मतबोली (रह०) फ़रमाते थे कि दुनिया में दुर्वेश की हालत ऐसी है जैसे कोई पाख़ाना में बैठा हो, अब अगर वह आगे से दरवाज़ा बन्द कर लेगा तो पर्दे के साथ अपनी हाजत पूरी कर लेगा और

ढका वहाँ से निकल जाएगा कि किसी की नज़र उसके ऐबों पर न पड़ी होगी और अगर दरवाज़ा खोल कर बैठा तो उसके उयूब ज़ाहिर हो जाएँगे और उसके अन्दरूनी जिस्म का पर्दा चाक हो जाएगा और जो कोई देखेगा उसपर लानत करेगा।

सय्यदी मुहम्मद उमरी (रह०) फ़रमाते थे कि "ज़हूर और शोहरत की तलब कमर तोड़ देती है।" याद रखें ! इस कारख़ान-ए-दुनिया में कोई वली और आलिम ऐसा नहीं जिसका दिल शोहरत से मकद्दर न हुआ हो, वह शोहरत के बाद इस सदाए क़ल्ब के एक ज़र्रे को ढूँढते और तरसते हैं, जो शोहरत से पहले अल्लाह तआला के साथ अपने दिल में पाते थे, मगर अब नहीं पा सकते, इसी लिए तमाम आरिफ़ीन अपने इब्तिदाई अहवाल की तरफ़ मशाक़ होते हैं, इसको ख़ूब समझ लें।

(माहनामा अल-महमूद, 1419 हिजरी मुताबिक़ 1997 ई०, पेज 19)

सहाबा किराम सुन्नत पर अमल करते थे सुन्नत समझकर और हम सुन्नत को छोड़ देते हैं सुन्नत समझकर, यह कहते हुए कि सुन्नत ही तो है फ़र्ज़ तो नहीं है

शरीअत की रुख़्सतों (आसानियों) पर भी बाज़ औक़ात शौक़ से अमल किया करें, अपना ज़ोअूफ़ ज़ाहिर करने के लिए और अल्लाह तआला की मुहब्बत का मक़ाम हासिल करने के लिए, क्योंकि अल्लाह तआला को हमारे हाथों रुख़्सत का ज़ाहिर करना भी महबूब है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इरशाद है :

إِنَّ اللهَ تَعَالَىٰ يُحِبُّ أَنْ تُؤْتَىٰ رُخْصَةٌ كَمَا يُحِبُّ أَنْ تُؤْتَىٰ عَزَائِمُهُ

"अल्ला तआला रुख़्सतों पर अमल करने को भी यूँ ही पसन्द फ़रमाते हैं, जैसा कि असली अहकाम पर अमल करने को पसन्द फ़रमाते हैं।"

मगर रुख़्सत (आसानियों) पर अमल करते हुए उसकी शर्त का लिहाज़ भी ज़रूरी है। वह शर्त यह है कि असली हुक्म पर अमल करने में सख़्त मशक़्क़त की क़ुदरत नहीं हो सकती। लिहाज़ा जब तक आदतन अफ़ज़ल काम पर आसानी से क़ुदरत हो सके उस वक़्त तक रुख़्सतों पर

न उतरना चाहिए और जब अफ़ज़ल अपनाने में दुश्वारी हो तो मशक़्क़त बर्दाश्त करके उसी पर अड़ना भी न चाहिए क्योंकि जो शख़्स अपने नफ़्स की कमज़ोरी और आजिज़ी ज़ाहिर करता है अल्लाह तआला उससे मुहब्बत फ़रमाते हैं और रहमते इलाही उसकी तरफ़ दौड़ कर आती है।

एक अजीब वाक़िआ

हार भी मिला और हारवाली भी मिली

मक्का मुकर्रमा में एक इबादतगुज़ार हाजी साहब रहते थे। वह कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक रेशमी थैली मिली, जिसमें एक क़ीमती हार था। हाजी साहब सोचने लगे यह तो बड़ा क़ीमती हार है, इसमें हीरे जवाहरात जड़े हुए हैं, यह तो बहुत ही क़ीमती है इसे छुपा लेना चाहिए। तभी हाजी साहब के मन में अल्लाह का डर ग़ालिब आया, अल्लाह का ख़ौफ़ ग़ालिब हुआ कि भाई अल्लाह तो देख रहा है, अगर इसे छुपा लिया तो अल्लाह तो कहीं भी पकड़ सकता है, और जहन्नम में डाल सकता है। इसलिए हाजी साहब ने उसको छुपाने के बजाय तै कर लिया कि थैली का मालिक मिलेगा तो मैं उसके हवाले कर दूँगा। इत्तिफ़ाक़ से मालिक भी मिल गया। हाजी साहब ने देखा कि एक शख़्स कुछ तलाशस करता फिर रहा है, तभी उस शख़्स ने पूछा कि भाई मेरा हार गुम हो गया है। उन्होंने कहा, भाई मेरे पास भी एक थैली है तुम देख लो तुम्हारी तो नहीं, उसने देखा और देखकर पहचान लिया कि हाँ यही मेरी थैली है और यह मेरा हार है। वह बड़ा खुश हुआ, ताजिर ने उसको पाँच सौ अशरफ़ियाँ निकाल कर इनाम में दीं। उसने कहा, मुझको इनाम नहीं चाहिए, मैंने तो यह जो कुछ किया, अल्लाह को खुश करने के लिए किया, अल्लाह की रिज़ा के लिए किया, तेरे इनाम के लिए नहीं किया। उसने बहुत इसरार किया और कहा मैंने नीयत की थी कि अगर हार मिल जाएगा तो मैं उसके पानेवाले को और लानेवाले को पाँच सौ अशरफ़ियाँ दूँगा। इसलिए मैं तुमको दे रहा हूँ। कहा कि नहीं मुझको पाँच सौ अशरफ़ियाँ नहीं चाहिएँ, बहरहाल वहाँ से वह चला गया, और अपनी बस्ती में जाकर

कहा कि ऐसा नेक नौजवान मुझको मिला। ऐसा लड़का अगर मुझको अपने यहाँ मिल जाता तो मैं अपनी बेटी की शादी उससे कर देता। वह अपने यहाँ का बहुत बड़ा ताजिर था।

अब अल्लाह की क़ुदरत देखो, वे नौजवान मक्का मुकर्रमा का रहनेवाला था, उसको सफ़र पेश आया, समुन्दरी सफ़र, सफ़र में चले कि अचानक तूफ़ान आया और कश्ती टुकड़े-टुकड़े हो गई। एक तख़्ते के ऊपर वे लेटे हुए हैं और तख़्ता बहता हुआ चला जा रहा है। तमाम साथी इधर-उधर हो गए, मालूम नहीं कि कौन हलाक हुआ और कौन डूबा और कौन बचा। बहते हुए तख़्ते पर जा रहे हैं। चलते-चलते एक किनारे पर यह तख़्ता रुका। वहाँ एक बस्ती आबाद थी। बस्ती के लोग इत्तिफ़ाक़ से किनारे आए हुए थे। जब देखा कि कोई बेचारा मुसाफ़िर तख़्ते के ऊपर बह रहा है तो उन्होंने उसको निकाल लिया और निकाल कर अपनी बस्ती में ले गए। वहाँ बस्ती में रखा। उनको होश आया, खिलाया-पिलाया, आराम कराया। कई दिन गुज़र गए और हालात मालूम किए तो मालूम हुआ कि यह तो बड़े आलिम हैं, और बड़ी महारत भी इनको है, हाफ़िज़ भी हैं और बहुत नेक सालेह शख़्स हैं। उन्होंने सोचा कि इनको अपने यहाँ इमाम बना लिया जाए। लिहातज़ा अपने बच्चों को पढ़ाने पर मुक़र्रर कर लिया और उनकर तंख़्राह मुक़र्रर कर दी और सबने उनको अपना शैख़ भी बना लिया और अपने सब काम उनके मशविरे से करने लगे।

उन लोगों ने सोचा कि इतना नेक आदमी मिल गया है, इतना बड़ा आलिम। यह किसी तरह यहाँ से चला न जाए, इसलिए ऐसी शक्ल करनी चाहिए कि यह हमारी बस्ती में रहे। ऐसे नेक आदमी का बस्ती से चला जाना तो ठीक नहीं, इसकी क्या शक्ल हो। इसकी शक्ल यह है कि इनकी यहाँ शादी कर दी जाए। शादी के लिए सोचा फ़लाँ लड़की मुनासिब है। एक बड़े ताजिर का इंतिक़ाल हुआ, उनकी बेटी बहुत ख़ूबसूरत, बहुत हसीन और जवान है। उसे रिश्ते की ज़रूरत है। उनसे

कहा कि भाई फ़लाँ रिश्ता तै कर दिया जाए, लड़की से पूछा, लड़की भी तैयार हो गई, उसके घरवालों से मालूम किया वह भी तैयार हो गए। जब दोनों की शादी हो गई और रात को जब बीवी से मुलाक़ात हुई तो देखा कि उसके गले में वही हार पड़ा हुआ है जो हार उनको मक्का मुकर्रमा में मिला था और उन्होंने उस ताजिर को वापस कर दिया था और इनाम लेने से भी इंकार कर दिया था। हालाँकि वह ताजिर कहता था कि अगर वह मुझे मेरे यहाँ मिल जाता तो मैं उसकी शादी अपनी बेटी से कर देता। अल्लाह तआला ने उस नौजवान की उस नेकी और उस तक़वा और परहेज़गारी की बरकत से इतना नवाज़ा इतना नवाज़ा कि अल्लाह ने फ़ैसला किया कि जिसने मेरे डर की वजह से हार वापस किया है, अब हम हार भी देंगे और हारवाली भी देंगे। चुनांचे अल्लाह तआला ने वह हार भी वापस किया और हारवाली भी अता की। फिर यह मकान और कोठी भी और तिजारत भी और जायदाद भी। उस ताजिर की वह तमाम की तमाम मिल्कियत अल्लाह तआला ने उसको अता कर दी।

यह है अलाह का डर और अल्लाह का ख़ौफ़। जिस दिल में अल्लाह का डर होता है और अल्लाह का ख़ौफ़ होता है, अल्लाह तआला उसे दुनिया में भी इस तरह नवाज़ता है। और भाई यह तो दुनिया में है, आख़िरत में भी अल्लाह तआला नवाज़ेंगे। तो भाई हम यहाँ दुनिया में रहते हुए अल्लाह का डर और अल्लाह का ख़ौफ़ हासिल करें, उसकी इताअत व फ़रमाँबरदारी करें और नाफ़रमानियों से परहेज़ करें, और इसी के ऊपर अल्लाह की मदद आती है।

इख़्तिलाफ़ इत्तिहाद को ले डूबता है

अल्लाह के बन्दों को बाहम एक-दूसरे का महबूब बना दें, लिहाज़ा हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि दो शख़्सों के दर्मियान भी दुश्मनी और कीना हरगिज़ बाक़ी न रहे। इसका तरीक़ा यह है कि एक के सामने दूसरे की ख़ूबियाँ बयान किया करें और एक-दूसरे के मुताल्लिक़ यह ख़बर दिया करें कि वह तो मज्लिसों में तुम्हारी ख़ूबियाँ ज़ाहिर करता है,

और लोगों को इस बात की ताकीद करें कि बाहम एक-दूसरे को हदिया दिया करें।

जब किसी महफ़िल में लोग तारीफ़ करें तो ख़ामोश रहा करें

जब किसी महफ़िल में लोग तारीफ़ करें तो ख़ामोश रहा करें और उस वक़्त यूँ न कहें कि हम तो सबसे कमतर हैं या लोगों की जूतियों की ख़ाक हैं वग़ैरह-वग़ैरह। क्योंकि इस क़िस्म की बातें तल्बीसाते नफ़्स में शुमार की गई हैं। इस क़िस्म की बातों से नफ़्स का मंशा यह होता है कि लोग इस वक़्त की ख़ामोशी से मेरे मुताल्लिक़ यह गुमान न करें कि मुझे अपनी तारीफ़ सुनने से ख़ुशी हुई है। और अगर वह ख़ामोशी ही इख़्तियार कर ले तो इसमें मुजाहिदा ज़्यादा है। जो शख़्स नफ़्स से मग़लूब हो उसको ऐसा ही करना लाज़िम है। हाँ, अगर अल्लाह तआला ने किसी बन्दे पर फ़ज़्ल व करम फ़रमाया हो कि नफ़्स उसके क़ब्ज़े में इस तरह आ गया जैसे गधा सधाने से क़ाबू में आ जाता है तो उसको इख़्तियार है कि चाहे तो जवाब दे या ख़ामोश रहे।

इकत्तीस[31] अहम नसीहतें

(1)

नबी करीम (सल्ल०) का इरशाद है : "जो आदमी नाफ़रमानी की ज़िल्लत से निकल कर फ़रमाँबरदारी की इज़्ज़त की तरफ़ आ जाए तो अल्लाह तआला :

(1) बग़ैर माल उसको ग़नी बना देंगे।

(2) बग़ैर लश्कर के उसकी मदद फ़रमाएँगे।

(3) बग़ैर ख़ानदान के उसको इज़्ज़त अता फ़रमाएँगे।

रिवायत है कि आँहज़रत (सल्ल०) एक दिन सहाबा किराम के पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : तुमने किस हाल में सुबह की? उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने इस हाल में सुबह की कि हम अल्लाह

तआला पर ईमान रखते हैं। हुज़ूर (सल्ल०) ने फिर इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे ईमान की अलामत क्या है?

उन्होंने जवाब दिया :

(1) हम तकलीफ़ पर सब्र करते हैं।

(2) ख़ुशहाली पर शुक्र करते हैं।

(3) तक़दीर पर राज़ी रहते हैं।

आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : रब्बे काबा की क़सम! बेशक तुम मोमिन हो।"

(2)

अल्लाह तआला ने बाज़ अंबिया (अलैहि०) की तरफ़ इस तरह की वह्य भेजी है :

1. जो शख़्स मुझसे इस हाल में मुलाक़ात करे कि वह मुझसे मुहब्बत करता हो, मैं उसको अपनी जन्नत में दाख़िल करूँगा।
2. जो शख़्स मुझसे इस हाल में मुलाक़ात करे कि वह मुझसे डरता हो, तो मैं उसको अपनी जहन्नम से दूर रखूंगा।
3. जो शख़्स मुझसे इस हाल में मुलाक़ात करे कि वह मुझसे हया करता हो, मैं किरामन कातिबीन (फ़रिश्तों) को उसके गुनाह भुला दूँगा।

(3)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से मंक़ूल है :

1. अल्लाह तआला ने तुमपर जो चीज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं उनको अदा करो लोगों में सबसे ज़्यादा इबादतगुज़ार बन जाओगे।
2. अल्लाह तआला की हराम-फ़रमूदा चीज़ों से बचो, लोगों में सबसे ज़्यादा ज़ाहिद बन जाओगे।
3. अल्लाह तआला ने तुमको जो कुछ अता फ़रमाया उसपर राज़ी रहो, लोगों में सबसे ज़्यादा ग़नी बन जाओगे।

(4)

हज़रत सालेह मुरक़दी (रह०) से मनक़ूल है कि वह बाज़ मकानों के पास से गुज़रे, (मकानों को मुख़ातिब करके) इरशाद फ़रमाया :

1. तुम्हारे पहले मालिक कहाँ चले गए?
2. तुम्हारे पहले आबाद करनेवाले कहाँ हैं?
3. तुम्हारे अन्दर पहले रहनेवाले कहाँ हैं?

हातिफ़ ग़ैबी ने आवाज़ दी :

1. उनके निशानात मिट गए।
2. उनके जिस्म मिट्टी के नीचे बोसीदा हो गए।
3. उनके आमाल उनकी गर्दनों में हार बनाकर डाल दिए गए।

(5)

हज़रत अली (रज़ि०) से मनक़ूल है :

1. जिसपर चाहो एहसान करो, पस तुम उसके अमीर हो।
2. जिससे चाहो सवाल करो पस तुम उसके ग़ुलाम हो।
3. जिससे चाहो इस्तग़ना इख़्तियार करो, पस तुम भी उसी के मिस्ल (ग़नी) हो।

(6)

मसाइब से मत घबराइए इसलिए कि सितारे अंधेरों में ही चमकते हैं।

(7)

हज़रत इबराहीम बिन अद्‌हम (रह०) से मनक़ूल है, उनसे दरयाफ़्त किया गया कि तुमने किस चीज़ की वजह से ज़ुह्द को इख़्तियार किया। इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ों की वजह से :

1. मैंने देखा कि क़ब्र वहशतनाक जगह है और मेरे पास मेरा कोई

मूनिस नहीं।

2. मैंने देखा कि रास्ता तवील है और मेरे पास तोशा नहीं।
3. मैंने देखा कि फ़ैसला करनेवाला ख़ुदाए जब्बार है और मेरे पास कोई हुज्जत नहीं।

(8)

हज़रत शिबली से मनक़ूल है, जो बड़े आरिफ़ हैं, वह (मुनाजात में) कहा करते थे :

(1) इलाही! मैं अपनी हाजतमन्दी और नातवानी के बावजूद पसन्द करता हूँ कि अपनी तमाम नेकियाँ आपको बख़्श दूँ। पस ऐ मेरे आक़ा! आप कैसे पसन्द नहीं फ़रमाएँगे कि मेरे तमाम गुनाह बख़्श दें, हालांकि आप ऐ मेरे सरदार! मुझसे बेनियाज़ हैं।

(2) उनका यह भी इरशाद है : जब तुम अल्लाह तआला से उन्स हालिस करना चाहो तो अपने नफ़्स से वहशत इख़्तियार करो।

(3) और यह भी इरशाद फ़रमाया : अगर तुम विसाल की हलावत चख लो तो फ़िराक़ की तल्ख़ी पहचान सकते हो, मतलब यह है कि जो शख़्स विसाल की हलावत से नाआशना है वह फ़िराक़ की तल्ख़ी भी नहीं समझ सकता। किसी शायर ने कहा है

जिसने उसे यार पाया
ताज़ीस्त न फिर क़रार पाया

(9)

हज़रत सुफ़ियान सौरी (रह०) से मनक़ूल है, उनसे दरयाफ़्त किया गयाः अल्लाह तआला के साथ उन्स क्या चीज़ है? फ़रमाया यह है कि :

1. किसी हसीन चेहरा, 2. हसीन आवाज़, 3 और ख़ुश बयान ज़बान के साथ उन्स हासिल करो।

(10)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से मनक़ूल हे कि उन्होंने इरशाद फ़रमाया : "ज़ुहद" के तीन हुरूफ़ हैं :

(1) ज़ा (2) हा (3) दाल

1. पस ज़ा से मुराद है ज़ादुल मआद, आख़िरत का तोशा।
2. हा से मुराद है हिदायते-दीन।
3. दाल से मुराद है दवाम अलत्ताअत यानी इताअत पर हमेशगी।

एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया, ज़ुह्द के तीन हुरूफ़ हैं :

1. ज़ा से मुराद है तर्के ज़ीनत यानी ज़ीनत का तर्क कर देना।
2. हा से मुराद है तर्के ख़्वाहिशे-नफ़्स यानी नफ़्स की ख़्वाहिश का तर्क कर देना।
3. दाल से मुराद है तर्के दुनिया यानी दुनिया का तर्क कर देना।

(11)

हज़रत हामिद से मंक़ूल है कि उनके पास एक शख़्स आया और उसने उनसे वसीयत करने की दरख़ास्त की। उन्होंने जवाब दिया, "अपने दीन के लिए ग़िलाफ़ बना लेना, जिस तरह क़ुरआन पाक के लिए ग़िलाफ़ होता है।" उनसे सवाल किया गया, दीन का ग़िलाफ़ क्या है? उन्होंने जवाब दिया :

1. तर्के कलाम, मगर बाज़रूरत।
2. तर्के दुनिया, मगर हस्बे ज़रूरत।
3. तर्के इख़्तिलात, मगर बक़दरे ज़रूरत।

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस तरह से क़ुरआन पाक की हिफ़ाज़त के लिए ग़िलाफ़ की ज़रूरत होती है, उसी तरह दीन की हिफ़ाज़त के लिए भी ग़िलाफ़ की ज़रूरत है और वह ग़िलाफ़ ये तीन चीज़ें हैं कि उन तीनों चीज़ों को बिल्कुल्लिया तर्क कर दिया जाए कि उन

तीनों से ही ज़्यादातर दीन का नुक़्सान होता है, सिर्फ़ बक़दरे ज़रूरत कि उसके बग़ैर चारा ही न हो, इख़्तियार किया जाए। फिर जान लो कि असल ज़ुह्द ये तीन चीज़ें हैं :

1. हराम चीज़ों से इज्तिनाब चाहे वे छोटी हों या बड़ी।

2. तमाम फ़राइज़ की अदाएगी चाहे वे आसान हों या दुश्वार।

3. दुनिया को अहले दुनिया पर छोड़ देना, चाहे वे क़लील हों या कसीर।

(12)

हज़रत लुक़मान हकीम से मंक़ूल है कि उन्होंने अपने बेटे को नसीहत फ़रमाई, बेटा इंसान के तीन हिस्से हैं :

(1) एक हिस्सा अल्लाह का है। और वह अल्लाह का हिस्सा उसकी रूह है।

(2) एक हिस्सा उसके नफ़्स के लिए। और वह उसके नफ़्स के लिए उसका अमल है।

(3) एक हिस्सा कीड़े-मकोड़ों के लिए और वह कीड़े-मकोड़ों के लिए उसका जिस्म है।

(13)

हज़रत अली (रज़ि) से मनक़ूल है, उन्होंने इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ें हिफ़्ज़ को बढ़ाती हैं और बलग़म को दूर करती हैं :

1. मिस्वाक 2. रोज़ा 3. तिलावते क़ुरआन पाक

(14)

हज़रत कअ़ब अहबार (रज़ि०) से मनक़ूल है : मोमिनों के लिए शैतान से हिफ़ाज़त के तीन क़िले हैं :

1. मस्जिद एक क़िला है। 2. अल्लाह का ज़िक्र एक क़िला है।

3. तिलावते क़ुरआन एक क़िला है।

(15)

बाज़ हुक्मा से मंक़ूल है, उन्होंने फ़रमायाः तीन चीज़ें अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से हैं कि वे चीज़ें अल्लाह तआला अपने महबूब बन्दों ही को अता फ़रमाते हैं :

1. फ़क्र (कि उसके ज़रिए बहुत-से गुनाहों और दुनियावी तकालीफ़ से इंसान महफ़ूज़ रहता है)।
2. मर्ज़ (कि इसके ज़रिए से गुनाह बख़्श दिए जाते हैं)।
3. सब्र (कि रफ़ा-ए-दर्जात का सबब है)।

(16)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से मंक़ूल है कि उनसे सवाल किया गया :

1. बेहतरीन दिन कौन-सा है?
2. बेहतरीन महीना कौन-सा है?
3. बेहतरीन अमल कौन-सा है?

उन्होंने जवाब दिया :

1. बेहतरीन दिन जुमा का दिन है।
2. बेहतरीन महीना रमज़ान का महीना है।
3. बेहतरीन अमल पाँच वक़्त की नमाज़ उनके वक़्त पर अदा करना है।

इसकी ख़बर हज़रत अली (रज़ि०) को पहुँची कि उनसे यह सवाल किया गया था और उन्होंने यह जवाब दिया तो हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अगर मशरिक़ व मग़रिब के दर्मियान तमाम उलमा, हुक्मा और फ़ुक़्हा से यह सवाल किया जाए तो वे सब भी यही जवाब देंगे जो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने जवाब दिया, मगर एक बात और कहता हूँ :

1. बेहतरीन अमल वह है जिसको अल्लाह तआला क़बूल कर ले।
2. बेहतरीन महीना वह है जिसमें तुम अल्लाह तआला से कामिल तौबा कर लो।
3. बेहतरीन दिन वह है जिस दिन तुम दुनिया से अल्लाह तआला के पास ईमान की हालत में निकल जाओ।

एक शायर ने कहा है :

क्या तू नहीं देखता किस तरह हमको रोज़ो-शब (दिन-रात) आज़मा रहे हैं और ज़ाहिर व बातिन में खेलने में मशग़ूल हैं, हरगिज़ दुनिया और उसकी नेमतों की तरफ़ माइल मत हो, इसलिए कि इसका वतन असूल वतन नहीं है, और मरने से पहले-पहले अपने लिए अमल कर ले, पस दोस्तों और भाइयों की कसरत तुझको धोखे में न डाल दे।

मक़ूला : जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ ख़ैर का इरादा करता है तो :

1. अल्लाह तआला उसको दीन की समझ अता फ़रमाता है।
2. दुनिया से बेरग़बत बना देता है।
3. अपने नफ़्स के उयूब को देखनेवाला बना देता है।

(17)

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) से मंक़ूल है :

1. लोगों के साथ हुस्ने मुहब्बत से पेश आना निस्फ़ अक़्ल है।
2. हुस्ने सवाल आधा इल्म है।
3. हुस्ने तदबीर आधी मईशत है।

(18)

हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि०) से मंक़ूल है :

1. जो शख़्स दुनिया को तर्क कर देता है, अल्लाह तआला उसको महबूब रखता है।
2. जो शख़्स गुनाहों को तर्क कर दे, फ़रिश्ते उसको महबूब रखते हैं।

3. जो शख़्स मुसलमानों से तमअ् ख़त्म कर ले, मुसलमान उसको महबूब रखते हैं।

(19)

हज़रत अली (रज़ि०) से मंक़ूल है :

1. दुनिया की नेमतों में से नेमते-इस्लाम काफ़ी है।
2. मशाग़िल में से शुग़ले इबादत काफ़ी है।
3. इबरत की चीज़ों में से मौत इबरत के लिए काफ़ी है।

(20)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से मंक़ूल है :

(1) कितने लोग हैं कि उनपर नेमत किए जाने की वजह से वे गुनाहों में मुब्तला हो गए हैं, (वे सोचते हैं कि अगर अल्लाह तआला हमसे नाराज़ होता तो हमसे यह नेमत छीन ली जाती) मालूम हुआ कि लोगों का यह सोचना कि अल्लाह तआला हमारी इस हालत से ख़ुश है, की वजह से वे बदस्तूर गुनाहों में मुब्तला रहते हैं।

(2) कितने ही लोग हैं जो अपनी तारीफ़ किए जाने की वजह से फ़ितने में मुब्तला हो गए हैं, यानी ख़ुशामदी क़िस्म के लोग जो तारीफ़ करते हैं उससे फ़ितने में मुब्तला हो गए कि अगर हम इतने क़ाबिल न होते तो लोग हमारी तारीफ़ क्यों करते, इसलिए बदस्तूर अपनी बदहाली में मुब्तला रहते हैं और अपनी इस्लाह की कोई फ़िक्र नहीं करते।

(3) कितने ही लोग हैं जो अपने ऐबों पर पर्दा-पोशी की वजह से फ़रेब में मुब्तला हो गए हैं कि अल्लाह तआला के पर्दा-पोशी फ़रमाने की वजह से लोग इज़्ज़त व इकराम का मामला करते हैं, जिससे अपने आपको इन्दल्लाह मक़बूल समझते हैं, यह नहीं समझते कि अगर अल्लाह तआला पर्दा-पोशी न फ़रमाते तो कोई बात तक करना गवारा न करता।

(21)

हज़रत दाऊद (अलैहि०) से मंक़ूल है कि उन्होंने इरशाद फ़रमाया है। ज़बूर में वह्य की गई है कि अक़्लमन्द पर लाज़िम है कि तीन चीज़ों के अलावा किसी चीज़ में मशग़ूल न हो :

1. आख़िरत के लिए तोशा कीं तैयारी।
2. कसबे-मआश।
3. हलाल के ज़रिए तलबे-लज़्ज़त।

(22)

हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) से आँहज़रत (सल्ल०) का इरशादे-आली मंक़ूल है :

1. तीन चीज़ें नजात देनेवाली हैं।
2. तीन चीज़ें हलाक करनेवाली हैं।
3. तीन चीज़ें बुलनदि-ए-दर्जात का ज़रिया हैं।
4. तीन चीज़ें गुनाहों के कफ़्फ़ारा का ज़रिया हैं।

तीन नजात देनेवाली चीज़ें

1. ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ (कि ख़िल्वत व जल्वत में अल्लाह तआला की नाफ़रमानी न करे)।
2. तंगदस्ती व ख़ुशहाली में मियानारवी (ऐसा न हो कि ख़ुशहाली में इसराफ़ में मुब्तला हो जाए)।
3. रज़ामन्दी व नाराज़गी में अदूल व इंसाफ़ (ऐसा न हो कि किसी से नाराज़ हो तो उसके बारे में इंसाफ़ भी न करे जैसा कि उमूमन होता है)।

तीन हलाक करनेवाली चीज़ें

1. शिद्दते-बुख़्ल (कि हुक़ूक़े वाजिबा भी अदा न करे)।

2. हवाए-नफ़्सानी जिसकी इत्तिबा की जाए (कि हवाए नफ़्सानी में हुदूदे शरअ की भी परवाह न करे)।

3. ख़ुदपसन्दी (कि दूसरों को हक़ीर समझने लगे)।

तीन दर्जात बुलन्द करनेवाली चीज़ें

1. सलाम को आम करना (कि हर मुसलमान को सलाम करे चाहे उससे तआरुफ़ हो या न हो)।
2. खाना खिलाना (हस्बे वुस्अत)।
3. रात के वक़्त जब लोग सोए हुए हों नमाज़ पढ़ना (यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना)।

फ़ायदा : सलाम करने से :

1. दिल की कदूरतें ख़त्म हो जाती हैं।
2. बाहम उल्फ़त व मुहब्बत पैदा होती है।
3. किब्र ख़त्म हो जाता है।
4. किब्र से पैदा होनेवाली बुराइयाँ भी ख़त्म हो जाती हैं।
5. सलाम एक जामेअ दुआ है। सलाम को आम करने से एक-दूसरे के लिए दुआओं का सिलसिला आम हो जाता है।

खाना खिलाने से :

1. रंजिश ख़त्म हो जाती है।
2. बुख़्ल ख़त्म हो जाता है।
3. बाहम उल्फ़त व मुहब्बत पैदा हो जाती है।
4. बुख़्ल से पैदा होनेवाली बुराइयाँ (हुक़ूक़े-वाजिबा अदा न करना वग़ैरह) ख़त्म हो जाती हैं।

रात के वक़्त नमाज़ पढ़ना :

1. इख़्लास पैदा करता है जो हर अमल की जान है।

2. अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो जाती है, जिससे हर नेकी की रगबत और मआशी से नफ़रत पैदा हो जाती है।

3. जो शख़्स नमाज़े तहज्जुद की पाबन्दी करता है दीगर नमाज़ों की पाबन्दी बदर्जए-ऊला करता है।

तीन गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देनेवाली चीज़ें

1. सर्दी में वुज़ू कामिल करना।
2. बाजमाअत नमाज़ के लिए क़दम उठाकर चलना।
3. नमाज़ के बाद नमाज़ का इंतिज़ार करना।

(23)

हज़रत जिबरील (अलैहि०) की नसीहत

हज़रत जिबरील (अलैहि०) ने आँहज़रत (सल्ल०) को तीन नसीहतें फ़रमाईं :

1. जितना चाहे ज़िन्दा रहो आख़िर को मरना है।
2. जिससे चाहे दोस्ती कर लो आख़िर उससे जुदा होना है।
3. जो चाहे अमल करो आख़िरकार उसका बदला मिलना है।

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब आख़िर को मरना ही है तो उसके लिए तैयारी करना चाहिए और जब हर दोस्त से जुदा होना ही है तो उस ज़ात से ताल्लुक़ क़ायम करना चाहिए जिससे कभी जुदाई नहीं होगी, यानी हक़ तआला शानहू से।

आरिफ़ रूमी (रह०) ने कहा है :

इश्क़ बामुरदा नबाशद पायदार
इश्क़ रा बाहय्य व बा क़य्यूम दार

और जब हर अमल का बदला मिलना है, यानी नेक अमल का अच्छा बदला और बुरे अमल का बुरा बदला तो हर-हर नेकी की कोशिश करनी चाहिए और हर-हर बुराई से परहेज़ करना चाहिए।

(24)

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) से दरयाफ़्त किया गया कि आपको अल्लाह तआला ने किस चीज़ की वजह से ख़लील बनाया? तो उन्होंने इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ों की वजह से :

1. मैंने अल्लाह के हुक्म को उसके ग़ैर के हुक्म पर इख़्तियार किया।
2. जिस चीज़ का अल्लाह तआला ने मेरा ज़िम्मा लिया है मैंने उसकी फ़िक्र नहीं की।
3. मेहमान के बग़ैर सुबह या शाम का मैंने कभी खाना नहीं खाया।

बाज़ हुक्मा से मंक़ूल है :

तीन चीज़ें रंज व ग़म को दूर करती हैं :

1. अल्लाह तआला का ज़िक्र। 2. औलिया अल्लाह की मुलाक़ात। 3. अक़्लमन्दों का कलाम।

(25)

हज़रत हसन बसरी (रह०) से मंक़ूल है :

1. जिसको अदब नहीं, उसको इल्म नहीं।
2. जिसको सब्र नहीं, उसको दीन नहीं।
3. जिसके लिए परहेज़गारी नहीं, उसके लिए क़ुर्बे-ख़ुदावन्दी नहीं।

फ़ायदा : मतलब यह है कि इल्म का तक़ाज़ा अदब है कि हर किसी के साथ उसके मुनासिब अदब से पेश आए। अगर किसी शख़्स में इल्म के बावजूद अदब नहीं तो यह कहा जाएगा कि गोया उसके पास इल्म ही नहीं।

इसी तरह दीन के अन्दर ख़िलाफ़े-मिज़ाज बातों पर सब्र करना चाहिए, अगर किसी के अन्दर सब्र नहीं तो उसका दीन पुख़्ता और कामिल नहीं।

इसी तरह अल्लाह का क़ुर्ब परहेज़गारी के बक़द्र होगा। अगर किसी

में परहेज़गारी नहीं तो अल्लाह का क़ुर्ब भी उसको हासिल नहीं।

मंक़ूल है कि एक इसराईली शख़्स तहसीले-इल्म के लिए निकला, उसकी ख़बर उनके नबी को पहुँची और उन्होंने उस शख़्स को तलब किया। वह शख़्स हाज़िर हुआ तो उन्होंने उससे फ़रमाया : ऐ जवान! मैं तुझको तीन चीज़ों की नसीहत करता हूँ, उनमें अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म है—

1. ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह तआला से डरते रहना।
2. अपनी ज़बान को मख़्लूक़ से रोक लेना और ख़ैर के बग़ैर उनका ज़िक्र न करना।
3. जो खाना खाओ ख़्याल रखना कि वह हलाल हो।

पस वह जवान सफ़र से रुक गया।

फ़ायदा : यानी तीन चीज़ों में तमाम इल्म जमा हो गया, फिर मज़ीद क्यों वक़्त ज़ाया करूँ।

मंक़ूल है कि एक इसराईली शख़्स ने इल्म के अस्सी (80) सन्दूक़ जमा किए और उस इल्म से फ़ायदा हासिल नहीं किया यानी उसपर अमल नहीं किया। अल्लाह तआला ने उनके नबी के पास वह्‌य भेजी कि तू जितना चाहे इल्म जमा कर ले जब तक तीन चीज़ों पर अमल न करे तुझको कोई नफ़ा नहीं होगा।

वे तीन चीज़ें ये हैं :

1. दुनिया से मुहब्बत न करे, इसलिए कि वह मोमिनीन का घर नहीं।
2. शैतान की हम नशीनी इख़्तियार न करे, इसलिए कि वह मोमिनीन का रफ़ीक़ नहीं।
3. किसी को ईज़ा न पहुँचाए, इसलिए कि यह मोमिनीन का पेशा नहीं।

(26)

अबू सुलैमान दुर्रानी (रह०) से मंक़ूल है कि वह मुनाजात में कहा

करते थे :

1. इलाही! अगर तू मुझसे मेरे गुनाह का मुतालबा करेगा तो मैं तुझ से तेरी माफ़ी को तलब करूँगा।
2. अगर तू मेरे बुख़्ल का मुतालबा करेगा तो मैं तुझसे तेरी सख़ावत को तलब करूँगा।
3. अगर तू मुझको जहन्नम में दाख़िल करे तो मैं जहन्नमियों को ख़बरदार करूँगा कि मुझको तुझसे मुहब्बत है। (ताकि जहन्नमियों को मुहिब्बीने-ख़ुदा का हाल मालूम होकर कुछ तसल्ली हो।)

मक़ूला : जिस शख़्स को तीन चीज़ें हासिल हैं वह सआदतमन्द है :

1. जाननेवाला दिल। 2. सब्र करनेवाला बदन।

3. अपने पास जो मौजूद हो उसपर क़नाअत।

(27)

हज़रत इबराहीम नख़ई (रह०) से मंक़ूल है कि पहले लोग जो हलाक हुए वे तीन बातों की वजह से हलाक हुए :

1. फ़िज़ूल कलाम 2. ज़्यादा खाना 3. ज़्यादा सोना।

फ़ायदा : जब फ़िज़ूल कलाम होगा तो ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरह होगी। ज़्यादा खाने से ज़्यादा शहवत पैदा होगी और ज़्यादा सोने से सुस्ती काहिली पैदा होती है।

(28)

हज़रत याहया बिन मुआज़ राज़ी (रह०) से मंक़ूल है, उस शख़्स के लिए मुबारकबाद है जो ये तीन काम करे :

1. जो दुनिया को छोड़ दे इससे पहले कि दुनिया उसको छोड़ दे।
2. जो क़ब्र में दाख़िल होने से पहले क़ब्र को (नेक आमाल के ज़रिए) आरास्ता कर ले।
3. अपने रब से मुलाक़ात से पहले उसको राज़ी कर ले।

(29)

हज़रत अली (रज़ि०) से मंक़ूल है कि जिसके पास तीन चीज़ें नहीं उसके पास कुछ भी नहीं। वे तीन चीज़ें ये हैं :

1. अल्लाह तआला की सुन्नत
2. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सुन्नत
3. औलिया अल्लाह की सुन्नत

दरयाफ़्त किया गया, अल्लाह तआला की सुन्नत क्या है? इरशाद फ़रमाया : राज़ का छुपाना। अर्ज़ किया गया : रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सुन्नत क्या है? इरशाद फ़रमाया : लोगों के साथ नर्मी व मेहरबानी से पेश आना। अर्ज़ किया गया : औलिया अल्लाह की सुन्नत क्या है? इरशाद फ़रमाया : लोगों की तकालीफ़ को बर्दाश्त करना।

पहले ज़माने के लोग एक-दूसरे को तीन चीज़ों की वसीयत किया करते थे। और आपस में एक-दूसरे को लिखकर दिया करते थे। वे तीन चीज़ें ये हैं :

1. जो शख़्स अपनी आख़िरत के लिए अमल करता है अल्लाह तआला उसके दीन और दुनिया दोनों की किफ़ायत फ़रमा देते हैं।
2. जो शख़्स अपने बातिन को दुरुस्त कर लेता है अल्लाह तआला उसके ज़ाहिर को भी दुरुस्त कर देता है।
3. जो शख़्स अपने और अल्लाह तआला के दर्मियान मामला सही कर लेता है, अल्लाह तआला उसके और लोगों के दर्मियान मामले को भी सही कर देता है।

(30)

हज़रत अली (रज़ि०) का इरशाद है :

1. अल्लाह के नज़दीक लोगों में सबसे बेहतर बनकर रहो।
2. अपने नफ़्स के नज़दीक लोगों में सबसे बदतरीन बनकर रहो।

3. लोगों के नज़दीक एक आम इंसान बनकर रहो।

मक़ूला : हज़रत उज़ैर नबी (अलैहि०) की तरफ़ अल्लाह तआला ने वह्य भेजी, अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

1. ऐ उज़ैर! जब तुम छोटा गुनाह करो तो उसके छोटा होने को न देखो, बल्कि उसको देखो जिसका गुनाह किया है।
2. जब तुमको मामूली ख़ैर पहुँचे तो उसके मामूली होने को न देखो, बल्कि उसको देखो जिसने वह तुमको अता की है।
3. जब तुमको कोई तकलीफ़ पहुँचे तो मेरी मख़्लूक़ से मेरी शिकायत न करो, जिस तरह जब तुम्हारे गुनाह मुझ तक पहुँचते हैं तो मैं अपने फ़रिश्तों से तुम्हारी शिकायत नहीं करता।

(31)

हज़रत हातिम असम (रह०) का इरशाद है कि हर दिन सुबह होती है तो शैतान मुझसे कहता है :

1. तू क्या खाएगा? 2. क्या पहनेगा? 3. कहाँ रहेगा?

मैं उसको जवाब देता हूँ :

1. मौत को खाऊँगा 2. कफ़न पहनूंगा 3. क़ब्र में रहूँगा।

छः लाख सीटोंवाला हवाई जहाज़

तफ़्सीर इब्ने कसीर में है कि तख़्ते सुलैमान (अलैहि०) जो हवा पर चलता था उसकी कैफ़ियत यह बयान की है कि सुलैमान (अलैहि०) ने लकड़ी का एक बहुत वसीअ तख़्त बनवाया था, जिसपर ख़ुद मअ् आयाने सल्तनत और मअ् लश्कर और आलाते हरब के सब सवार हो जाते। फिर हवा को हुक्म देते वह उस अज़ीमुश्शान वसीअ व हरीज़ तख़्त को अपने काँधों पर उठाकर जहाँ का हुक्म होता वहाँ जाकर उतार देती थी। यह हवाई तख़्त सुबह से दोपहर तक एक महीने की मुसाफ़त तै करता था, और दोपहर से शाम तक एक महीने की यानी एक दिन में दो महीनों की मुसाफ़त हवा के ज़रिए तै हो जाती थी।

इब्ने अबी हातिम ने हज़रत सईद बिन जुबैर से नक़ल किया है कि उस तख़्ते सुलैमानी पर छः लाख कुर्सियाँ रखी जाती थीं, जिसमें सुलैमान (अलैहि०) के साथ अहले ईमान इंसान सवार होते थे और उनके पीछे अहले ईमान जिन्न बैठते थे, फिर परिन्दों को हुक्म होता कि वे उस पूरे तख़्त पर साया कर लें ताकि आफ़ताब की तैश से तकलीफ़ न हो। फिर हवा को हुक्म दिया जाता था वह उस अज़ीमुश्शान मज्मे को उठाकर जहाँ का हुक्म होता पहुँचा देती थी। और बाज़ रिवायात में है कि उस हवाई सफ़र के वक़्त पूरे रास्ते में हज़रत सुलैमान (अलैहि०) सर झुकाए हुए अल्लाह के ज़िक्र व शुक्र में मशग़ूल रहते थे, दाएँ-बाएँ कुछ न देखते थे, और अपने अमल से तवाज़ोअ का इज़्हार फ़रमाते थे।

(इब्ने कसीर, बहवाला मआरिफ़ुल क़ुरआन, जिल्द-6, पेज 212)

दावत का काम फ़र्ज़ है या वाजिब या सुन्नत?

सवाल :बख़िदमत हज़रत मौलाना साहब!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ यह है कि दावत का काम फ़र्ज़ है या वाजिब या सुन्नत?

जवाब :

अगर उम्मत में फ़राइज़ छूट रहे हैं तो दावत का काम फ़र्ज़ है, अगर वाजिबात छूट रहे हैं तो दावत का काम वाजिब है, अगर सुन्नतें छूट रही हैं तो दावत का काम सुन्नत है। अब आप खुद फ़ैसला करें कि उम्मत इस वक़्त क्या छोड़ रही है और अपने दिल से फ़तवा लें।

जन्नत के हवाई जहाज़ों में सोने (Gold) की कुर्सियाँ होंगी

हदीस में है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! जब जन्नती अपनी क़ब्रों से निकलेंगे, तो उनका इस्तक़बाल किया जाएगा और उनके लिए परोंवाली ऊँटनियाँ लाई

जाएँगी, जिनपर सोने के कजावे होंगे। उनकी जूतियों के तसमे तक नूर से चमक रहे होंगे, यह ऊँटनियाँ एक-एक क़दम इस क़दर दूर रखती हैं जहाँ तक इंसान की निगाह जा सकती है। जन्नती एक दरख़्त के पास पहुँचेंगे, जिसके नीचे से दो नहरें निकलती हैं, एक नहर का पानी ये पिएँगे जिससे उनके पेट के तमाम फ़ुज़ुलात और मैल-कुचैल धुल जाएँगे।

दूसरी नहर से ये ग़ुस्ल करेंगे। फिर हमेशा तक उनके बदन मैले न होंगे। उनके बाल परागन्दा न होंगे और उनके जिस्म और चेहरे बारौनक़ रहेंगे। अब ये जन्नत के दरवाज़ों पर आएँगे, देखेंगे कि एक कुंडा सुर्ख़ याक़ूत का है जो सोने की तख़्ती पर आवेज़ाँ है। ये उसे हिलाएँगे तो एक अजीब सुरीली और मौसीक़ी की सदा पैदा होगी, उसे सुनते ही हर हूर जान लेगी कि उसके ख़ाविन्द आ गए। यह दारोग़ा को हुक्म करेगी कि जाओ दरवाज़ा खोलो, वह दरवाज़ा खोल देगा। यह अन्दर क़दम रखते ही उस दारोग़ा की नूरानी शक्ल देखकर सज्दे में गिर जाएगा, लेकिन वह उसे रोक लेगा और कहेगा : अपना सर उठा, मैं तो तेरा मातहत हूँ, और उसे अपने साथ ले चलेगा। जब वह उस दुर्रे याक़ूत के ख़ैमे के पास पहुँचेगा जहाँ उसकी हूर है वह बेताबाना दौड़ के ख़ैमे से बाहर आ जाएगी और बग़लगीर होकर कहेगी : तुम मेरे महबूब हो और मैं तुम्हारी चाहनेवाली हूँ, मैं यहाँ हमेशा रहनेवाली हूँ, मरूँगी नहीं, मैं नेमतोंवाली हूँ, फ़क्र व मोहताजी से दूर हूँ, मैं आपसे हमेशा राज़ी, खुश रहूँगी, कभी नाराज़ नहीं होऊँगी, मैं हमेशा आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहनेवाली हूँ, कभी इधर-उधर हटूँगी नहीं। फिर वह घर में जाएगा, जिसकी छत फ़र्श से एक लाख हाथ बुलन्द होगी, उसकी कुल दीवारें क़िस्म-क़िस्म के और रंग बिरंग मोतियों की होंगी, उस घर में सत्तर तख़्त होंगे और हर तख़्त पर सत्तर-सत्तर जोड़े होंगे, और उन सब हुल्लों के नीचे से उनकी पिंडली का गूदा नज़र आता होगा, उनके एक जिमाअ् का अन्दाज़ एक पूरी रात का होगा, उनके बाग़ों और मकानों के नीचे नहरें बह रही होंगी जिनका पानी कभी बदबूदार नहीं होता, साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मोती जैसा पानी है।

और दूध की नेहरें होंगी जिसका मज़ा कभी नहीं बदलता, जो दूध

किसी जानवर के थन से नहीं निकला। और शराब की नेहरें होंगी जो निहायत लज़ीज़ होगी और ख़ालिस शहद की नेहरें होंगी जो मक्खियों के पेट से हासिल शुदा नहीं। क़िस्म-क़िस्म के मेवों से लदे हुए दरख़्त उसके चारों तरफ़ होंगे जिनका फल उनकी तरफ़ झुका हुआ होगा। वे खड़े-खड़े फल लेना चाहें तो ले सकते हैं। अगर वह बैठे-बैठे फल तोड़ना चाहें तो शाख़ें इतनी झुक जाएँगी कि वह तोड़ लें। अगर वे लेटे-लेटे फल लेना चाहें तो शाख़ें और झुक आएँगी। फिर आप (सल्ल०) ने आयत *"व दानि-यातन अ़लैहिम ज़िलालुहा अलख़"* पढ़ी यानी उन जन्नती दरख़्तों के साए उनपर झुके हुए होंगे और उसके मेवे बहुत क़रीब कर दिए जाएँगे। वे खाना खाने की ख़ाहिश करेंगे तो सफ़ेद रंग या सब्ज़ रंग परिन्द उनके पास आकर अपना पर ऊँचा कर देंगे। वे जिस क़िस्म का उसके पहलू का ग़ोश्त चाहें खाएँगे। फिर वे परिंदे ज़िंदा का ज़िन्दा जैसा थे, वैसा ही होकर उड़ जाएँगे। फ़रिश्ते उनके पास आएँगे, सलाम करेंगे और कहेंगे कि ये जन्नती हैं जिनके तुम अपने आमाल के बाइस वारिस बनाए गए हो। अगर किसी हूर का एक बाल ज़मीन पर आ जाए तो वह अपनी चमक से और अपनी सियाही से नूर को रौशन करे और सियाही नुमायाँ रहे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 447)

जन्नत का दरख़्त
जिसकी जड़ में से दो नेहरें निकलती हैं

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अली (रज़ि०) का क़ौल मरवी है कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच कर जन्नती एक दरख़्त को देखेंगे जिसकी जड़ में से दो नेहरें निकलती होंगी। एक में वे ग़ुस्ल करेंगे जिससे इस क़द्र पाक-साफ़ हो जाएँगे कि उनके जिस्म और चेहरे चमकने लगेंगे, उनके बाल कंघी किए हुए, तेलवाले हो जाएँगे कि फिर कभी सुल्झाने की ज़रूरत ही न पड़ेगी, न चेहरे और जिस्म का रंग रूप हल्का पड़ेगा। फिर ये दूसरी नहर पर जाएँगे मानो कि उनसे कह दिया गया हो, उसमें से पानी पिएँगे जिनसे तमाम घिन की चीज़ों से पाक-साफ़ हो जाएँगे।

जन्नत के फ़रिश्ते उन्हें सलाम करेंगे, मुबारकबाद पेश करेंगे और उन्हें जन्नत में जाने को कहेंगे कि आप खुश हो जाइए, अल्लाह तआला ने आपके लिए तरह-तरह की नेमतें मुहैया कर रखी हैं, उनमें से कुछ भागे-दौड़े जाएँगे।

और जो हूरें उस जन्नती के लिए मख़्सूस हैं उनसे कहेंगे : लो मुबारक हो! फ़ुलाँ साहब आ गए। नाम सुनते ही खुश होकर वह पूछेंगी कि क्या तुमने खुद उन्हें देखा है, वे कहेंगे : हाँ! हमने अपनी आँखों से देखकर आ रहे हैं। वे हूरें मारे खुशी के दरवाज़े पर आ खड़ी होंगी। जन्नती जब अपने महल में आकर देखेगा कि गद्दे बराबर-बराबर लगे हुए हैं, और आबख़ोरे रखे हुए हैं, और क़ालीन बिछे हुए हैं, उस फ़र्श को मुलाहिज़ा फ़रमाकर अब जो दीवारों की तरफ़ नज़र करेगा तो वह सुर्ख़ व सब्ज़ और ज़र्द व सफ़ेद और क़िस्म-क़िस्म के मोतियों की बनी हुई होंगी, फिर छत की तरफ़ निगाह उठाएगा तो वह इस क़द्र शफ़्फ़ाफ़ और मुसफ़्फ़ा होगी कि नूर की तरह चमक-दमक रही होगी, जिसकी रौशनी ऐसी होगी कि आँखों की रौशनी को बुझा दे, अगर खुदा उसे बरक़रार न रखे। फिर अपनी बीवियों पर यानी जन्नती हूरों पर मुहब्बत भरी निगाह डालेगा, फिर अपने तख़्तों में से जिसपर उसका जी चाहे बैठेगा और कहेगा : खुदा का शुक्र है जिसने हमें हिदायत की, अगर अल्लाह हमें यह राह न दिखाता तो हम तो हरगिज़ इसे तलाश नहीं कर सकते थे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 447)

ये कलिमात पढ़ लीजिए और छः बड़ी-बड़ी फ़ज़ीलतें हासिल कर लीजिए

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ. يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

हुज़ूर अकरम (सल्ल०) ने हज़रत उसमान (रज़ि०) से फ़रमाया : ऐ उसमान! जो शख़्स इसे सुबह को दस बार पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसे छः फ़ज़ाइल अता फ़रमाता है :

1. वह शैतान और उसके लश्कर से बच जाता है।
2. उसे एक क़ुन्तार अज्र मिलता है।
3. उसका एक दर्जा जन्नत में बुलन्द होता है।
4. उसका हूरे-ऐन से निकाह करा दिया जाता है।
5. उसके पास बारह फ़रिश्ते आते है।
6. उसे इतना सवाब दिया जाता है जैसे किसी ने क़ुरआन और तौरात और इंजील व ज़बूर पढ़ी, फिर साथ ही उसे एक क़बूल-शुदा हज और एक मक़बूल उमरा का सवाब मिलता है और अगर उसी दिन उसका इंतिक़ाल हो जाए तो शहादत का दर्जा मिलता है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 439)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़ानगी ज़िन्दगी

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़िन्दगी का हर गोशा इंसानियत के लिए नमूना व उसवा है। इसलिए अल्लाह की मशीयत ने इसका इंतिज़ाम किया कि आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी का हर गोशा महफ़ूज़ और आईना की तरह शफ़्फ़ाफ़ हो।

दुनिया का हर इंसान अपनी ख़ानगी ज़िन्दगी को राज़ रखना चाहता है, मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) का यह एजाज़ है कि आपकी तरफ़ से इस बात की आम इजाज़त बल्कि तर्ग़ीब थी कि आपके अन्दरूने-ख़ाना के हालात व कवाइफ़ को भी आम किया जाए और उससे सबक़ हासिल किया जाए। और यही सबब है कि आप (सल्ल०) की ज़ात की ऐसी दक़ीक़तरीन तफ़्सीलात रिकार्ड में हैं जिनका किसी और के बारे में महफ़ूज़ होना मुमकिन नहीं।

आप (सल्ल०) की घरेलू ज़िन्दगी बिल्कुल उसी तरह दिलकश व दीदा ज़ेब और आला तरीन इंसानी किरदार का नमूना थी, जिस तरह आप (सल्ल०) की बाहर की ज़िन्दगी थी। आप (सल्ल०) घर में भी उसी तरह रहमत व शफ़क़त का पैकर थे, जिस तरह आप सहाबा के साथ थे।

घर में भी आप वैसे ही मुअल्लिमे-अख़्लाक़ व मुरब्बी थे जैसे अपने हल्क़-ए-वाज़ में। मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की हिकमत व तदब्बुर का जो हल घर के अन्दर नज़र आता है वह उससे किसी तरह कम नहीं जो घर के बाहर नज़र आता है। आप अपने मुत्तबिईन को जिस तर्ज़े-अमल और जिन अख़्लाक़ व औसाफ़ की तल्क़ीन करते थे, ख़ुद घर की ख़िल्वतों में भी उसपर मुकम्मल तौर पर अमल पैरा थे। इसलिए आप (सल्ल०) की घरेलू और ख़ानगी ज़िन्दगी भी वैसी ही सबक़ आमोज़ है जिस तरह आपकी इज्तमाई ज़िन्दगी हमारे लिए उसवा और नमूना है।

एक सादा इंसानी ज़िंदगी

आप (सल्ल०) की घरेलू ज़िन्दगी बिल्कुल सादा और सारे तकल्लुफ़ात से बिल्कुल पाक थी। अल्लाह तआला की तरफ़ से आप (सल्ल०) को जो अज़ीम-तरीन मक़ाम व मर्तबा मिला था और ख़ल्क़े-ख़ुदा के दिलों में आपकी जो अज़्मत व मुहब्बत थी, उसके बावजूद आप घर में बिल्कुल सादगी व तवाज़ोअ के साथ रहते थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के घर के अन्दर के मामूलात के सिलसिले में किसी सवाल करनेवाले के जवाब में फ़रमाती हैं :

كَانَ بَشَرًا مِّنَ الْبَشَرِ يَفْلِي ثَوْبَهُ وَيَحْلِبُ شَاتَهُ وَيَخْدِمُ نَفْسَهُ (شمائل ترمذی)

यानी आप (सल्ल०) आम इंसान की तरह घर में रहते और वह तमाम घरेलू व ख़ानगी काम जो आम इंसान करते हैं आप भी अपने घर में कर लिया करते थे। अपनी बकरी का दूध दूह लिया करते थे और अपने ज़ाती काम ख़ुद करते थे।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) ही की एक और रिवायत है कि "आप (सल्ल०) अपने कपड़ों में ख़ुद पेवन्द लगा लेते, जूता दुरुस्त कर लेते" (मुस्नद अहमद)। और अपने अहले-ख़ाना के कामों में हाथ बटाते, नमाज़ का वक़्त होता तो बाहर चले जाते। (बुख़ारी, किताबुस्सलात) घर में दाख़िल होते तो ख़ुद सलाम करके दाख़िल होते, अहले ख़ाना के साथ

खुश-ख़ल्क़ी से पेश आते और नर्मी का मामला करते।

अज़्वाजे-मुतह्हरात के साथ हुस्ने-मुआशरत

आप (सल्ल०) बीवियों के साथ हुस्ने-सुलूक की बहुत ताकीद फ़रमाते और उनकी ख़ल्क़ी व तबअी कमज़ोरियों से सर्फ़े-नज़र करने का हुक्म देते। मुतअद्दिद रिवायात में इसका ज़िक्र है कि औरतों के मिज़ाज में तख़्लीक़ी तौर पर कुछ कजी होती है, उसको बिल्कुल सीधा करना मुमकिन नहीं। उनके साथ गुज़ारे की सूरत यही है कि उनकी इस तबअी कमज़ोरी को दरगुज़र करके उनके साथ बेहतर से बेहतर सुलूक किया जाए। (बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाबुल वसाया बिन्निसा) आप (सल्ल०) ने इस हुस्ने सुलूक को ईमान के कमाल का सबब बतलाया है

(तिर्मिज़ीः किताबुल ईमान)

ख़ुद आप (सल्ल०) का तर्ज़े-अमल इन हिदायात पर पूरा-पूरा था और ऐसा था कि उनसे बेहतर मिसाल मुम्किन नहीं। आपने सहाबा किराम से फ़रमाया कि *"ख़ैरुकुम लिअहलिही"* तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपने अहले ख़ाना के लिए बेहतर हो। वहीं आपने यह भी फ़रमाया कि *"व अना ख़ैरुकुम लिअहली"* और मैं तुममें सबसे ज़्यादा अपने अहले ख़ाना के हक़ में बेहतर हूँ।

(तिर्मिज़ीः मनाक़िब 63, इब्ने माजाः निकाह 50)

अज़्वाजे मुतह्हरात अगरचे सारी दुनिया की औरतों में बेहतरीन और अल्लाह की तरफ़ से अपने रसूल की रिफ़ाक़त के लिए मुनतख़ब औरतें थीं, लेकिन थीं तो औरतें ही, इसी लिए (अल्लाह उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए) उनमें भी औरतों की फ़ितरी कमज़ोरियाँ किसी न किसी दर्जे में मौजूद थीं और उनका इज़्हार भी कभी-कभी हो जाता था, लेकिन आपकी जानिब से हमेशा अफ़्व व दरगुज़र और हुस्ने-सुलूक का मामला ही होता था। यहाँ तक कि आप (सल्ल०) की अज़्वाज आपसे दिन-दिन भर नाराज़ रहतीं और आप हिल्म व अफ़्व का मामला फ़रमाते।

(बुख़ारीः किताबुन्निकाह)

एक मर्तबा हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से नाराज़ होकर बुलन्द आवाज़ से बातें कर रही थीं। इत्तिफ़ाक़न उनके वालिद हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) आ गए और हज़रत आईशा (रज़ि०) को सरज़निश करनी चाही : तू अल्लाह के रसूल से चिल्लाकर बोलती है, मगर आप (सल्ल०) ने ही उनको बचा लिया।

(अबू दाऊदः किताबुल-अदब, बाब फ़िल मज़ाह)

एक बार आप (सल्ल०) ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से फ़रमाया : जब तुम मुझसे नाराज़ होती हो तब भी मुझे पता चल जाता है और जब राज़ी होती हो तब भी मुझे इल्म हो जाता है। उन्होंने अर्ज़ किया : वह कैसे? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब तुम राज़ी होती हो तो कहती हो कि मुहम्मद के रब की क़सम! और जब नाराज़ होती हो तो कहती हो कि इबराहीम के रब की क़सम।

हज़रत आइशा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया : लेकिन ऐ अल्लाह के रसूल! मैं सिर्फ़ नाम लेने की हद तक नाराज़ होती हूँ दिल में नाराज़ नहीं होती।

(सहीह मुस्लिम)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा से फ़रमाया कि हिसाब किताब बराबर हो गया

बीवियों के साथ हुस्ने सुलूक और लुत्फ़ व करम के ऐसे-ऐसे वाक़िआत हदीस की किताबों में ज़िक्र किए जाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अगर साबित न हो तो लोग शायद अपनी शाने-बुज़ुर्गी के ख़िलाफ़ समझें। जैसे हदीस की किताबों में आप (सल्ल०) का और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) का एक अजीब व ग़रीब वाक़िआ मज़कूर है। एक सफ़र में आपके और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा के दर्मियान पैदल दौड़ का मुक़ाबला हुआ। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा जीत गईं, फिर कभी सफ़र में दोबारा ऐसा ही मुक़ाबला हुआ और इस बार उम्मुल मोमिनीन हार गईं। आपने फ़रमाया : आइशा! हिसाब किताब बराबर हो गया।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) चूंकि कम उम्री ही में आप (सल्ल०) के निकाह में आ गई थीं, इसलिए कमसिनी के शौक़ और तक़ाज़े अभी बाक़ी थे। आप उनकी दिलजोई के लिए उनके शौक़ और जाइज़ ख़ाहिशात की तकमील का भी लिहाज़ रखते थे। उनकी सहेलियाँ आपके यहाँ आकर उनके साथ खेलती और गाती थीं, और आपकी तरफ़ से इसकी इजाज़त होती थी, बल्कि अगर सहेलियों को आपकी वजह से खेलने में तकल्लुफ़ होता तो आप ख़ुद बाहर तशरीफ़ ले जाते और उन लड़कियों को हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) के पास भेज देते। उनके शौक़ की तक्मील के सिलसिले का एक वाक़िआ हदीस की मुतअद्दद किताबों में मरवी है कि एक मर्तबा ईद के दिन आपके घर के सामने मस्जिदे-नबवी के सेहन में कुछ हब्शी लोग नेज़ाबाज़ी का मुज़ाहिरा कर रहे थे। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) को उसके देखने का शौक़ हुआ। आपने उनको यह खेल दिखाने का एहतिमाम इस तरह फ़रमाया कि ख़ुद दरवाज़े पर खड़े हो गए और अपने पीछे (ग़ालिबन पर्दे के ख़्याल से) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) को खड़ा कर लिया और वह आपकी आड़ में खड़े होकर आपके कंधे और कान के दर्मियान से काफ़ी देर तक खेल देखती रहीं और आप उनके ख़्याल से मुसलसल खड़े रहे।

(बुख़ारीः किताबुस्सलात)

बीवियों के साथ हुस्ने-सुलूक और उनका दिल ख़ुश करने की यह आला मिसालें हैं। उनकी इत्तिबा भी इत्तिबाए सुन्नत ही है और इसमें उन लोगों के लिए ख़ास सबक़ है जिनके नज़दीक यह तर्ज़े-अमल बुज़ुर्गी और बुलन्द मक़ामी के मनाफ़ी है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत में तमाम हर तरह के तफ़क्कुरात और नुबूवत की अज़ीम ज़िम्मेदारियों के बावजूद वे लतीफ़ एहसासात व जज़्बात जलवा-रेज़ थे जो एक मोतदिल इंसानी फ़ितरत का तक़ाज़ा हैं। आप अपने अइज़्ज़ा व अहले-ख़ाना से मुहब्बत व ताल्लुक़ ख़ातिर में भी एक क़ाबिले तक़लीद नमूना थे।

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से आपको बेइंतिहा मुहब्बत थी, घर में कोई

जानबर ज़िबह करते तो उसका कुछ हिस्सा हज़रत ख़दीजा की सहेलियों के पास भेजते। आप (सल्ल०) उनके इंतिक़ाल के बाद कसरत से उनको याद करते, यहाँ तक कि दूसरी अज़वाजे मुतह्हरात को उनपर रश्क आता। एक मर्तबा हज़रत आइशा (रज़ि०) ने इस तरह का कुछ इज़्हार कर दिया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : ख़ुदा ने मुझको उनकी मुहब्बत दी है। (मुस्लिमः किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा, बाब-फ़ज़ाइल ख़दीजा रज़ि०) हज़रत ख़दीजा के रिश्तेदार मिलने आते तो आप बड़ी मसर्रत का इज़्हार फ़रमाते। (ऐज़न)

दीगर अज़वाजे मुतह्हरात से भी आप (सल्ल०) बहुत मुहब्बत फ़रमाते। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) की ग़ैर मामूली ज़हानत व इल्मी मिज़ाज और दीनी बसीरत की वजह से ख़ास ताल्लुक़ था।

बच्चों से मुहब्बत और शफ़क़त

घर में बच्चे अब तो लायक़े-इल्तफ़ात समझे जाते हैं जबकि पहले (ख़ुसूसन ज़मान-ए-जाहिलियत में) बिल्कुल ही उनको क़ाबिले तवज्जोह और लायक़े इल्तफ़ात नहीं समझा जाता था। लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बच्चों को भी अपनी ख़ासुल-ख़ास रहमतों से नवाज़ा और इस सिलसिले में अपने क़ौल व अमल से ऐसा उसवा और नमूना पेश फ़रमाया जिसकी मिसाल पूरी इंसानी तारीख़ में नहीं मिलती है।

आप (सल्ल०) ने बच्चों के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि यह अल्लाह की ख़ासुल-ख़ास नेमत हैं, उनकी तालीम व तर्बियत और उनको हुस्ने अदब के साथ मुत्तसिफ़ करना माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है। बच्चों का यह भी हक़ है कि वालिदैन और घर के दूसरे बड़े उनके साथ शफ़क़त और मुहब्बत का मामला करें। बच्चों में अगर लड़कियाँ हैं तो उनके साथ हुस्ने-सुलूक और बर्ताव में किसी क़िस्म की तफ़रीक़ न बरतें। ख़ुद आप (सल्ल०) का अमल भी अपने घर के बच्चों के साथ और बच्चियों के बारे में ऐसा ही था। आपको अपनी बेटियों से ग़ैर-मामूली मुहब्बत थी और उनके साथ सिर्फ़ शफ़क़त ही नहीं इकराम का मामला भी फ़रमाते थे। आपकी लख़्ते-

जिगर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि०) के बारे में हदीस की किताबों में यह वाक़िआ मज़्कूर है कि जब वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर होती थीं तो आप पेश-क़दमी फ़रमाकर उनका इस्तक़बाल करते और उनको अपनी जगह बिठाते।

(मुस्लिमः किताबुल फ़ज़ाइलः बाब फ़ज़्ल फ़ातिमा)

उनके फ़ज़ाइल के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बहुत-से अक़वाल नक़ल किए गए हैं। दूसरी साहबज़ादियों के साथ भी आपका मामला इसी तरह का था। उनके मुताल्लिक़ भी आपके इकराम व शफ़क़त का ज़िक्र हदीस की किताबों में मिलता है।

घर के छोटे बच्चों के साथ आप (सल्ल०) का मामला निहायत प्यार व मुहब्बत और शफ़क़त का था (और यही मेयारे कमाल है)। आपके दोनों नवासे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि०) आप ही की गोद में पले हैं। नुबूवत की सारी ज़िम्मेदारियों के बावजूद आप उनकी ज़रा भी हक़तल्फ़ी न फ़रमाते थे। उनको गोद में लेते, अपेन कंधों पर सवार करते, उनको प्यार करते, उनको सूँघते और मुस्तक़बिल में उनको हासिल होनेवाले कमालात का ज़िक्र भी करते और उनको दुआएँ देते, अपने साथ सवारी पर सवार करते। (तिर्मिज़ी बाब फ़ी रहमतुल वलद)

कभी फ़रमाते तुम दोनों मेरे गुलदस्ते हो।

(बुख़ारी व तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब अलहसन वल हुसैन)

एक सहाबी हज़रत अक़रा बिन हाबिस (रज़ि०) ने एक मर्तबा आपको देखा कि आप अपने नवासे हज़रत हसन रज़ि का बोसा ले रहे हैं। उन्होंने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे दस बेटे हैं, मैंने कभी भी उनका बोसा नहीं लिया। आपने फ़रमाया : जो रहम नहीं करता उसपर अल्लाह की तरफ़ से रहम नहीं किया जाता।

(सहीह बुख़ारीः किताबुल अदब, बाबः रहमतुल वलद)

यानी बच्चों को प्यार करना भी रहमते ख़ुदावन्दी के हुसूल का ज़रिया है। हज़रात हसनैन के अलावा आपका मामला दर्जा-ब-दर्जा ख़ानदान के दीगर बच्चों के साथ मुहब्बत व शफ़क़त का ही रहा है। एक

मर्तबा आप (सल्ल०) ख़ुत्बा दे रहे थे कि हज़राते हसनैन घर से निकल आए। नया-नया चलना शुरू किया था, क़दम लड़खड़ा रहे थे, फ़र्ते मुहब्बत में आप (सल्ल०) से रुका न जा सका, आप दर्मियाने ख़ुत्बा मिम्बर से उतरे और बढ़कर उनको गोद में उठा लिया। फिर फ़रमाया : अल्लाह ने सच कहा है : औलाद इंसान की कमज़ोरी है। मैंने देखा, ये दोनों अपने कपड़ों में उलझकर लड़खड़ा रहे हैं। मुझसे सब्र न हुआ और मैंने दर्मियाने ख़ुत्बा ही उतर कर उनको गोद में ले लिया।

(नसईः किताबुल जुमा, बाबः नुज़ूलुल इमाम)

कभी ऐसा भी हुआ कि दर्मियाने-नमाज़ कोई नवासी या नवासा आकर कंधे या पीठ पर सवार हो गया, आपने नमाज़ जारी रखी। जब रुकूअ् या सज्दा किया तो उतार दिया और फिर उठा लिया।

(मुलाहिज़ा हो, बुख़ारीः किताबुल अदब, बा रहमतुल-वलद और मुसनद अहमद, जिल्द 3, पेज 493-494, नसईः किताबुस्सलात)

औलाद से आप (सल्ल०) को बड़ी मुहब्बत थी। हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ज़्यादा औलाद के साथ रहम-दिल व शफ़ीक़ नहीं देखा।

(मुस्लिमः किताबुल फ़ज़ाइल, बाबः रहमत (अलैहिस्सलाम व तवाज़ोअ)

और अगर उनको तकलीफ़ पहुँचती तो आप (सल्ल०) बेताब हो जाते। एक मर्तबा बरसरे-आम कहा, फ़ातिमा मेरी है, मैं फ़ातिमा का हूँ। फ़ातिमा की तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ है।

(मुस्लिमः तिर्मिज़ीः बाब फ़ज़्ल फ़ातिमा)

ग़ज़व-ए-बदर में आप (सल्ल०) के दामाद हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) के शौहर अबुल-आस क़ैदी बने, उनके पास फ़िदया की रक़म नहीं थी। उन्होंने हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) को कहला भेजा कि फ़िदया की रक़म भेज दें। हज़रत ज़ैनब के पास हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) का दिया हुआ एक क़ीमती हार था, जो उनको शादी में मिला था। जब नक़द रक़म पूरी न हुई तो उन्होंने अपने गले का हार भी उतार कर भेज दिया। आँहज़रत (सल्ल०) के सामने जब वह हार आया तो न जाने क्या-क्या यादें नज़र

के सामने घूम गईं। आप बेताब होकर रो पड़े। शदीद रिक़्क़त तारी हो गई। सहाबा से फ़रमाया : अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो तो बेटी को माँ की यादगार वापस कर दूँ। सहाबा ने रज़ामन्दी ज़ाहिर की और वह हार वापस कर दिया।(अबू दाऊदः किताबुल जिहाद, बाब फ़िदाउल-असीर बिल-माल)

आप (सल्ल०) के साहबज़ादा इबराहीम (रज़ि०) मदीना से कुछ दूर अवाली में अपनी वालिदा के साथ रहते थे। आप (सल्ल०) सहाबा के साथ वहाँ जाते और बच्चे को देखकर आते। अल्लाह की तक़दीर कि उनका बचपन ही में इंतिक़ाल हो गया, इबराहीम (अलैहि०) अकेले नरेना औलाद थे। आप (सल्ल०) इंतिक़ाल के वक़्त पहुँच गए, बच्चे ने इस हाल में दम तोड़ा कि उसका सर आपकी गोद में था और आपकी आँखें शिद्दते-ग़म से जारी थीं। मगर उस वक़्त भी सय्यदना मुहम्मद (सल्ल०) बशर के साथ नबी भी थे, इस हाल में आपको अल्लाह की रज़ा का ख़्याल था, पूरे सब्र के साथ ज़बान से यह ईमान अफ़रोज़ कलिमात निकले :

إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ وَالْقَلْبَ يَحْزَنَ وَلَا نَقُوْلُ إِلَّا مَا يَرْضٰى بِهٖ رَبُّنَا وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ
يَا إِبْرَاهِيْمُ لَمَحْزُوْنُوْنَ۔ (بخاری کتاب الجنائز، باب قول النبی انا بك لمحزونون)

"आँख आँसू बहा रही है, दिल ग़मगीन है, मगर सिवाय इस बात के जो अल्लाह को पसन्द हो हम कुछ नहीं कह सकते। बख़ुदा! इबराहीम! तुम्हारी जुदाई से हम बहुत ग़मगीन हैं।"

ख़ादिमों के साथ बर्ताव

घर के लोगों में सबसे कमज़ोर पोज़ीशन मुलाज़िम या ख़ादिम-पेशा लोगों की होती है और अगर ये लोग ग़ुलाम या बांदी हों तब तो उनकी बेचारगी और कसमपुर्सी की कोई हद और इंतिहा ही नहीं रहती। जाहिलियत के ज़माना में उनकी हालत जानवरों से भी बदतर होती थी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनको इस ज़लील मक़ाम से उठाकर आज़ादों के तक़रीबन मसावी मक़ाम दिया। ग़ुलामों के मालिकों को मुख़ातिब करके फ़रमाया : यह तुम्हारे भाई हैं, अल्लाह ने उनको तुम्हारी मिल्कियत में दे दिया है। मालिकों की ज़िम्मेदारी है कि अपने ग़ुलामों के साथ निहायत

अच्छे दर्जे का हुस्ने सुलूक करें, जो खुद खाएँ वही उन्हें भी खिलाएँ, जो खुद पहनें वही उनको भी पहनाएँ। उनकी ताक़त से ज़्यादा का बोझ उनपर न डालें। और अगर किसी वजह से कोई मुश्किल काम उनके सुपुर्द करें तो खुद भी उस काम में शरीक हो जाएँ और उनकी मदद करें। (बुख़ारीः किताबुल ईमान, बाबुल-मआसी मिन अमरुल-जाहिलिया)

गुलामों के साथ हुस्ने सुलूक और उनके हुक़ूक़ की अदायगी के बारे में आप (सल्ल०) की ताकीद और खुद आपके तर्ज़े अमल ने सहाबा किराम के यहाँ महमूद व अयाज़ का फ़र्क़ बाक़ी न रहने दिया था। आपने हज़रत ज़ैद की शादी अपनी फूफीज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) से कर दी थी। वह आपके आज़ाद करदा गुलाम ही थे। आप उनसे और उनके साहबज़ादे हज़रत उसामा (रज़ि०) से ऐसी शफ़क़त व मुहब्बत का मामला फ़रमाते थे कि दीगर सहाबा उन दोनों को "महबूबे-रसूल" के लक़ब से याद करते थे।

एक मर्तबा एक ख़ास मसला में सहाबा ने आप (सल्ल०) से सिफ़ारिश करनी चाही, मगर रौब की वजह से ऐसा नहीं कर पा रहे थे। बाहमी मशविरा से कहा गया कि यह सिफ़ारिश बस उसामा ही कर सकते हैं, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के महबूब भी हैं और महबूबज़ादे भी।
(बुख़ारीः किताब अहादीसुल-अंबिया, मुस्लिमः किताबुल हुदूद, बाब क़ता यदुल्सारिक़)

आपका आम मामूल था कि जो गुलाम भी आप (सल्ल०) के पास आता उसको आप फ़ौरन आज़ाद कर देते। वह आज़ाद हो जाता, लेकिन आपके एहसान व करम की क़ैद से आज़ाद नहीं हो सकता था। हज़रत ज़ैद (रज़ि०) को आपने आज़ाद कर दिया था। उनके बाप उनको लेने के लिए आए लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मुहब्बत व ताल्लुक़ ने उनको जाने नहीं दिया।

आप (सल्ल०) ने अपनी उम्र भर किसी औरत या ख़ादिम पर हाथ नहीं उठाया। (शुमाइल तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस (रज़ि०) आप (सल्ल०) के ख़ादिमे-ख़ास थे। कहते हैं कि मैंने दस साल लगातार आपकी ख़िदमत की, आपने एक मर्तबा भी

मुझसे उफ़ तक नहीं कहा, और न कभी यह कहा कि ऐसा क्यों किया? या ऐसा क्यों नहीं किया। (बुख़ारीः किताबुल-अदब बाब हुस्नुल-ख़ल्क़ वस्सख़ा)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मामूलात

रसूलुल्लाह (सल्ल०) जो वक़्त अपने घर में गुज़ारते थे, उसके आपने तीन हिस्से कर लिए थे। एक हिस्सा अल्लाह तआला की इबादत के लिए था, दूसरा अहले ख़ाना के हुक़ूक़ की अदाएगी के लिए और तीसरा हिस्सा अपने आराम व राहत के लिए। फिर इस तीसरे हिस्से में भी जो अपने आराम व राहत के लिए था आप अपने उम्मतियों को भी शरीक फ़रमा लिया करते थे और उसकी सूरत यह होती थी कि उस वक़्त ख़ास सहाबा किराम को हाज़िरी की इजाज़त होती थी और उनके ज़रिए उलूम व मआरिफ़ अवाम तक पहुँचाते थे, इस तरह अगरचे यह वक़्त उमूमी मुलाक़ात का तो न था लेकिन उसके फ़ैज़ से आम्मतुन्नास भी महरूम न रहते थे। ख़ास सहाबा किराम उस वक़्त अपने और दूसरों के मसाइल लेकर हाज़िर होते और आप (सल्ल०) उन मसाइल को हल फ़रमाते थे कि जो शख़्स किसी भी वजह से अपनी ज़रूरत मुझसे न कह कहता हो, आप हज़रात उसकी हाजत व ज़रूरत मुझ तक पहुँचा दिया करें और यह भी फ़रमाते थे कि इस कारे ख़ैर के बदले अल्लाह तआला उसको साबित क़दम रखेगा। (शुमाइल तिर्मिज़ी)

नमाज़े अस्र के बाद आप उम्महातुल मोमिनीन के यहाँ तशरीफ़ ले जाते और सबसे ख़ैरियत दरयाफ़्त करते ।

(शरहुलमवाहिब लिल-ज़रक़ानी, ज़िक्र उम्मे-सलमा)

रात के मामूलात हदीस की किताबों में तफ़्सील से आए हैं। इशा के बाद अज़्वाजे मुतह्हरात में जिसकी बारी होती, सारी अज़्वाजे मुतह्हरात वहाँ जमा होतीं और कुछ देर मज्लिस रहती। (अबू-दाऊद)

इशा के बाद देर तक जागना आपको नापसन्द था, लेकिन अगर कभी कोई मामला मशविरा तलब होता तो आप अकाबिर सहाबा से उस वक़्त मशविरा करते। (तिर्मिज़ीः किताबुस्सलात)

निस्फ़ शब इबादत करते। हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को कोई अगर रात में सोते देखना चाहता तो देख लेता और अगर नमाज़ पढ़ते देखना चाहता तो देख लेता।

ख़ान-ए-नबवी का ज़ाहिदाना माहौल

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अपने अहलो-अयाल से कामिल मुहब्बत थी और आप (सल्ल०) उनका पूरा-पूरा ख़याल रखते थे। इसका तक़ाज़ा यह हो सकता था कि आप ख़ुद तंगी व परेशानी के साथ गुज़र-औक़ात कर लेते मगर अपने घरवालों के लिए तो कम-से-कम रफ़ाहियत और आराम के इंतिज़ामात कर ही देते। इंसान के लिए ख़ुद परेशानियाँ बर्दाश्त करना आसान होता है, मगर अपने अहले-ख़ाना और बच्चों के चेहरों पर वह फ़क्र के साए नहीं देख सकता। लेकिन आप (सल्ल०) का तर्ज़े अमल इस सिलसिले में बिल्कुल मुम्ताज़ और आप (सल्ल०) की शाने-नुबूवत के मुताबिक़ है। आपके घर का माहौल और अमूमी नक़्शा वैसा ही था जोः

اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْاٰخِرَةِ اور اَلدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ مَلْعُوْنَةٌ مَّافِيْهَا اِلَّا ذِكْرُ اللّٰهِ وَمَا وَالَاهُ.

(यानी असल ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी ही है। और रही दुनिया तो यह लानती है सिवाय उन चीज़ों के जिनका अल्लाह से कुछ ताल्लुक़ है) में कहा गया है।

आप (सल्ल०) ने कभी इसकी फ़िक्र नहीं की कि आपके घरवालों को दुनिया की ज़िन्दगी में रफ़ाहियत हासिल हो। आप (सल्ल०) यह दुआ अक्सर फ़रमाते थे कि :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْ اٰلَ مُحَمَّدٍ قُوْتًا

"ऐ अल्लाह! मुहम्मद के घरवालों को बक़द्रे-ज़रूरत रिज़्क़ अता फ़रमा दीजिए।"

(बुख़ारीः किताबुर्रिक़ाक़, बाबे कैफ़ कान ऐश-उन-नबी)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) जो आप (सल्ल०) को

इंतिहाई महबूब थीं, फ़रमाती हैं कि हमारे घर में कई-कई दिन चूल्हा जलने की नौबत नहीं आती थी। पूछा गया : उम्मुल मोमिनीन (रज़ि०) फिर कैसे बसर होती थी? कहा, बस खजूर और पानी से।

(बुख़ारीः किताबुर्रिक़ाक़)

एक और रिवायत में फ़रमाती हैं कि कभी हमको दो वक़्त लगातार बाक़ायदा खाना नहीं मिला। एक वक़्त ज़रूर सिर्फ़ खजूर पर बसर करते। (बुख़ारीः किताबुर्रिक़ाक़)

अज़वाजे मुतह्हरात के पास सिर्फ़ एक ही जोड़ा कपड़ा रहता।

(बुख़ारीः किताबुल-हैज़)

घर में आटा छाने बिना पकता। कभी चपाती पकाने की नौबत नहीं आती, रातों को चिराग़ नहीं जलते थे।

(बुख़ारीः किताबुस्सलात, बाब सलात अला फ़राश)

आप (सल्ल०) के बिस्तर की यह हालत होती कि ऐसी चटाई पर लेटते कि जिस्म मुबारक पर उसके निशान पड़ जाते।

(हवाला बाला व तिर्मिज़ीः किताबुल-ज़ुहद)

कभी चमड़े के अन्दर भूसा भरकर गद्दा बन जाता, बस यही बिस्तर था। (बुख़ारीः किताबुर्रिक़ाक़)

एक मर्तबा हज़रत उमर (रज़ि०) ने घर के अन्दर नज़र दौड़ाई तो घर की कुल मताअ चन्द किलो जौ और चमड़े के चन्द टुकड़े ही नज़र आए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इस बेसरो-सामानी की ज़िन्दगी पर उनका यह फ़िदाई साथी रो पड़ा। अर्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! आपका यह हाल है, क़ैसर व किसरा अल्लाह के बाग़ी कैसे-कैसे ऐश लूटते हैं? आपका चेहरा सुर्ख़ हो गया और जलाली शान के साथ फ़रमाया : उमर कुछ शक है, उन लोगों को सारे मज़े दुनिया ही में लूट लेने हैं।

(तब्क़ात इब्ने-साअद)

हुजराते नबवी की तामीर का यह हाल था कि तामीर कच्ची ईंट की थी। कुछ हुजरे खजूर की टट्टियों के थे, छत इतनी नीची कि खड़े होकर

हाथ लगता। चौड़ाई छः-सात गज़ और लम्बाई दस हाथ थी। दरवाज़ों को क़ायदे का पर्दा भी मयस्सर न था। बोसीदा कम्बल ही डाल दिया जाता था।

अज़वाजे मुतह्हरात भी इस तर्ज़े अमल पर निहायत क़ानेअ थीं और सब्र व शुक्र से गुज़र करती थीं। जब अल्लाह की तरफ़ से फ़ुतूहात के बाद ग़िज़ाई अशिया और माल व दौलत की कुछ फ़रावानी हुई तो उनको उम्मीद हुई कि आम इंसानों की तरह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने घर के मेयार में कुछ बेहतरी लाएँगे। कम-से-कम दो वक़्त की रोटी की हद तक तो उनको भी उम्मीद थी कि यह मयस्सर हो ही जाएगी और उन्होंने इसका मुतालबा भी किया, मगर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इसको ऐसा नापसन्द किया कि एक माह तक घर के अन्दर तशरीफ़ नहीं ले गए। और अल्लाह की तरफ़ से आपको यह हुक्म दिया गया कि आप अपनी बीवियों से साफ़ कह दें कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की रिफ़ाक़त तो इसी हाल और फ़क्र व फ़ाक़ा के साथ ही मुम्किन है। इस घर का तो यही हाल रहेगा। अगर तुममें से किसी को दुनिया की ज़िन्दगी की रफ़ाहियत व ज़ीनत की तलब है तो वह मुझसे बहुस्न व ख़ूबी अलग हो सकती है और अगर तुमको अल्लाह की रज़ा रसूले ख़ुदा की रिफ़ाक़त और आख़िरत ज़्यादा महबूब है तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए अज्रे अज़ीम तैयार कर रखा है। यह हुक्म क़ुरआन की आयात की शक्ल में नाज़िल हुआ। (सूरह् अहज़ाब : 28-29) आपने अज़वाजे मुतह्हरात को इस फ़ैसले से मुत्तला कर दिया, उन सबने बयक ज़बान अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की रिफ़ाक़त को इख़्तियार किया। (मुस्लिमः किताबुत्तलाक़)

जैसा कि अभी इशारा किया जा चुका है कि यह फ़क्र व ज़बूँहाली उस वक़्त भी क़ायम रही जब आप (सल्ल०) के पास माल व दौलत के ढेर आकर लगने लगे थे। जिस दिन माल आता, आप उस वक़्त तक घर के अन्दर तशरीफ़ न ले जाते जब तक वह तक़सीम न हो जाता। एक बार फ़िदक से कुछ ग़ल्ला आया। हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने बेचकर वह क़र्ज़ अदा किया जो एक यहूदी से आप (सल्ल०) ने किसी दीनी ज़रूरत

के लिए लिया था। आपने हज़रत बिलाल (रज़ि०) से (जो घरेलू उमूर की निगरानी करते थे) पूछा कि कुछ बचा तो नहीं? उन्होंने कहा : कुछ बच रहा है। फ़रमाया : जब तक कुछ बचा रहेगा मैं घर के अन्दर नहीं जा सकता। उन्होंने अर्ज़ किया : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) क्या करूँ, कोई साइल भी तो नहीं। इसलिए आपने रात मस्जिद ही में बसर की। दूसरे दिन हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने इत्तिला दी, अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने आपको सुबुकदोश कर दिया, यानी जो कुछ था वह तक़सीम कर दिया गया। आपने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फिर घर के अन्दर गए।

(अबू दाऊदः बाब हिदायातुल मुश्रिकीन)

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के साथ आपको जैसा ताल्लुक़ था उसका कुछ तज़्किरा पीछे गुज़र चुका है। उनका यह हाल था कि घर के सारे काम-काज करते-करते कपड़े ग़ुबार में अट जाते, चक्की पीसने से हाथों में गट्टे पड़ गए थे, मशक भर-भर कर लाने से गर्दन में निशान पड़ गए थे। एक मौक़े पर कहीं से कुछ ग़ुलाम व बांदियाँ आईं। हज़रत अली (रज़ि०) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) की यह हालत आप (सल्ल०) को बतलाई और एक ख़ादिमा माँगी। आपने हज़रत फ़ातिमा को मुख़ातिब करके फ़रमाया : फ़ातिमा अल्लाह से डरो! घर का काम ख़ुद करो, अल्लाह के हुक़ूक़ व फ़राइज़ अदा करो और सोते वक़्त 33 बार *सुब्हानल्लाह,* 33 बार *अलहम्दु लिल्लाह* और 34 बार *अल्लाहु अकबर* पढ़ कर सोया करो। यह तुम्हारे लिए बांदी से बेहतर है। कुछ रिवायात में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बदर के यतीमों का हक़ तुमसे पहले हैं। दूसरी रिवायात में इसका भी इज़ाफ़ा है कि आपने यह भी का कि अहले सुफ़्फ़ा के पेट भूख से पिचके जा रहे हैं, मैं तुमको कैसे दे दूँ।

(अबू दाऊदः किताबुल ख़िराज, बाब बयान मौज़ूअ क़िस्म ख़ुम्स, बुख़ारीः किताबुल-जिहाद, बाब बयान अनिल ख़ुम्स नवाइब रसूलुल्लाह (सल्ल०))

हज़रत उमर (रज़ि०) का एक तहरीरी फ़तवा

इमाम अहमद (रह०) ने किताबुज़्ज़ुहद में एक रिवायत नक़ल की है कि हज़रत उमर (रज़ि०) से एक तहरीरी इस्तिफ़ता लिया गया कि ऐ

अमीरुल मोमिनीन! एक वह शख़्स जिसे नाफ़रमानी की ख़ाहिश ही न हो और न कोई नाफ़रमानी उसने की हो और वह शख़्स जिसे ख़ाहिशे-मासियत है लेकिन वह बुरा काम नहीं करता तो इनमें अफ़ज़ल कौन है? आपने जवाब में लिखा कि जिन्हें मासियत की ख़ाहिश होती है, फिर नाफ़रमानियों से बचते हैं, यही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने परहेज़गारी के लिए आज़मा लिया है, उनके लिए मग़फ़िरत है और बहुत बड़ा अज्र व सवाब है। **(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 143)**

एक नव मुस्लिमा औरत की अजीब कारगुज़ारी

मैं एक अमेरिकी ख़ातून हूँ और अमेरिका के दिल 'न्यूयार्क' में पैदा हुई। मेरी नौजवानी एक 'अमेरीकी' लड़की ही की तरह गुज़री। मेरा एक ही शौक़ था, अमेरीका के 'अज़ीम शहर' की ग्लैमर भरी ज़िन्दगी में जाज़बियत और दिलकशी की दौड़ में हिस्सा लूँ। मैं फ़्लोरीडा के शहर मयामी के एक साहिली मक़ाम पर रहने लगी, फिर साल गुज़रने लगे और मेरे अन्दर इत्मीनान और सुकून बजाए बढ़ने के कम होता गया। मेरी निस्वानी कशिश जिस क़द्र बढ़ती जाती और जितना मैं (बज़ाहिर) कामयाबियों की मंज़िलें तै करती जाती मेरे अन्दुरूनी ख़ला और बेएतिमादी में भी उसी क़द्र इज़ाफ़ा होता जाता। मैं एक शदीद क़िस्म की ज़िल्लत और हिक़ारत में अपने आपको डूबा हुआ महसूस करती। मैं फ़ैशन की ग़ुलाम बन गई थी और मेरा मसरफ़ बस यह था कि दूसरों की आँखों और दिलों को ख़ुश करूँ।

मेरा मेयारे ज़िन्दगी जितना ऊँचा होता, मेरा एतिमाद उतना ही नीचा हो जाता। मैंने इन हक़ाइक़ से मुँह चुराना चाहा, मगर वह फ़रार के हर मोड़ पर मुझको मुँह चिड़ाने के लिए मौजूद होते। आख़िरकार मैं अपने आपसे ऊब गई। मैंने नशे की पनाह ली, क्लबों और पार्टियों में जाकर दिल बहलाना चाहा, मगर सब बेसूद रहा। मैंने रूहानी मुराक़बों से अपने बेसुकूनी का इलाज करना चाहा, जब ये तदबीरें नाकाम हो गईं तो मज़हब बदले, ऐक्टोइज़्म का सहारा लिया, यानी फ़लाही और इज्तिमाई तहरीकों में लगी, मगर मर्ज़ बढ़ता गया, जूँ-जूँ दवा की के मिस्दाक़ मेरी

तरक़्क़ियों में जो इज़ाफ़ा हो रहा था, और मेरा लाइफ़ स्टाइल जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा था, मेरी अन्दुरूनी बेएतिमादी की आग मुझे जलाती जा रही थी।

मैंने देखा कि इस्लाम और इस्लामी अक़दार व तहज़ीब के ख़िलाफ़ एक ख़तरनाक और चौतरफ़ा हमला हो चुका है। और फिर बद और बदनाम "नई सलीबी जंग" का भी एलान होता है। अब मेरी इस्लाम नामी एक चीज़ की तरफ़ तवज्जोह होती है। अब तक तो मेरे ज़ेहन में इस्लाम के नाम पर सिर्फ़ चन्द तस्वीरों के नक़ूश थे, तिरपालों में लिपटी औरत, बीबियों को पीटते मर्द, घरों के पिछले हिस्से में ज़नान ख़ाने और दहशतगर्दी की दुनिया।

मैं एक समाजी कारकुन थी, जो औरतों की आज़ादी की अलम्बरदार और दुनिया में लोगों की बेहतर ज़िन्दगी के लिए कुछ करना चाहती थी। अपने इस काम के सिलसिले में मेरी मुलाक़ात एक सीनियर कारकुन से हुई जो इस सिलसिले में अच्छा काम कर चुका था। वह बिला किसी तफ़्रीक़ के सारे इंसानों के लिए इंसाफ़ और फ़लाह व बहबूद का दाई था। उस शख़्स से मुलाक़ात के बाद मुझे एहसास हुआ कि इंसाफ़, आज़ादी और एहतिराम, ये आफ़ाक़ी अक़दार हैं और सारे इंसानों को मिलने चाहिएँ, न कि सिर्फ़ कुछ को। अब मुझे एहसास हुआ कि सारे इंसानों के लिए भला सोचना ख़ुलूस के बाद ही मुमकिन है। पहले मैं सिर्फ़ चन्द के लिए अच्छा सोचती थी, अब मैं बिला तफ़्रीक़ हर क़िस्म के लोगों के हुक़ूक़ के बारे में सोचने लगी।

अचानक एक दिन मेरे सामने क़ुरआने मुक़द्दस आया, मग़रिब ने जिसकी बड़ी मनफ़ी तस्वीर बना रखी है। पहले तो क़ुरआन के उस्लूब व अन्दाज़ ने मुझे मुतवज्जह किया, फिर उसने कायनात, इंसान और ज़िन्दगी के हक़ाइक़ और अब्द व माबूद के रिश्ते पर जो रौशनी डाली है; उसने मुझे मस्हूर कर दिया। मैंने देखा कि क़ुरआन ने अपनी बसीरत का मुख़ातिब बराहे-रास्त इंसान और उसकी रूह को बनाया है, और वह किसी बिचौलिये या पादरी के बग़ैर इंसान को अल्लाह का मुख़ातिब बनाता है।

आख़िरकार वह लम्हा आ गया जब मैंने सच्चाई को तस्लीम कर लिया और मैं जिस मंज़िल के लिए सरगरदाँ थी और जिस सुकून के लिए बेताब थी, मुझे यक़ीन हो गया कि वह सिर्फ़ इस्लाम क़बूल करके ही हासिल हो सकता है। मेरी दाख़िली बेताबियों और इज़्तिराब का इलाज सिर्फ़ ईमान से हो सकता है, और मेरे मसाइल का हल मुहिम-जोई में नहीं, अमली मुस्लिम बनने में है।

मैंने एक बुर्क़ा और सर और गर्दन को ढकनेवाला स्कार्फ़ ख़रीद लिया, जो एक मुस्लिम औरत का शरई लिबास है। अब मैं इस इस्लामी बावक़ार लिबास के साथ उन रास्तों और उन दुकानों और लोगों के सामने से गुज़रती जिनके सामने कुछ दिन पहले मेरा गुज़र शार्ट और शानदार मग़रिबी लिबासों में होता था। सब कुछ वही होता जो पहले होता था, बस एक चीज़ बदली हुई थी, यानी मैं और मेरा अन्दुरूनी इत्मीनान व सुकून और ख़ुद-एतिमादी और तहफ़्फ़ुज़ का एहसास। ऐसा एहसास जो मुझे पहली मर्तबा हुआ था। मुझे महसूस हुआ सारी ज़ंजीरें टूटकर बिखर गई हैं, मेरी गर्दन के तौक़ पाश-पाश हो गए हैं, और मैंने आज़ादी हासिल कर ली है। मैं बड़ी ख़ुश थी कि उन आँखों में अब ताज्जुब और दूरी के आसार थे जो पहले मुझको ऐसे देखते थे जैसे शिकारी अपने शिकार को और बाज़ नन्ही चिड़िया को। हिजाब ने मेरी कंधों के एक बड़े बोझ को हल्का कर दिया, मुझे एक ख़ास तरह की ग़ुलामी और ज़िल्लत से निकाल लिया। अब दूसरों के दिलों को लुभाने के लिए मैं घंटों मेकअप नहीं करती थी, अब मैं उस ग़ुलामी से आज़ाद थी।

अभी मैं पर्दे में सिर्फ़ सर और गर्दन ढकती और "उबाया" (बुर्क़ा) पहनती, मगर अब मेरी तवज्जोह नक़ाब की तरफ़ हुई और वह इसलिए कि मैंने देखा कि मग़रिब की मुस्लिम औरतों में नक़ाब का रिवाज बढ़ता जा रहा है। मैंने अपने शौहर से (जिनसे इस्लाम क़बूल करने के बाद मैंने निकाह कर लिया था) मशविरा किया। उनकी राय थी कि चेहरा ढकना यानी नक़ाब अफ़ज़ल है, लाज़मी नहीं; अलबत्ता हिजाब यानी चेहरे के अलावा जिस्म ढकना लाज़िम है। अभी तक मेरा पर्दा यह था कि सिर्फ़

हाथ और चेहरे को छोड़कर मेरा पूरा जिस्म ढका होता। मैं एक स्कार्फ़ और एक ढीला-ढाला लम्बा उबाया (गाउन) इस्तेमाल करती। डेढ़ साल इसी तरह गुज़रा, फिर मैंने अपने शौहर से कहा : मैं चेहरा भी ढकना चाहती हूँ इसलिए कि मुझे लगता है कि यह मेरे अल्लाह को ज़्यादा राज़ी करनेवाला अमल होगा। वे मुझे एक दुकान पर ले गए, जहाँ मैंने 'इसदाल' (एक अरबी बुर्क़ा जो सर से पाँव तक हर चीज़ ढक देता है) ख़रीदा, जिसमें सिर्फ़ आँखें खुलती हैं और कुछ नहीं।

हिदायतयाबी का मेरा यह सफ़र जारी था कि ख़बरें आनी शुरू हुईं कि आज़ादी के अलम्बरदारों और नाम-निहाद इंसानी हुक़ूक़ के लिए काम करनेवालों ने हिजाब व नक़ाब के ख़िलाफ़ मुहिम छेड़ दी है। कोई कहता है कि हिजाब औरत पर ज़ुल्म की अलामत है, कोई एतिराज़ कर रहा है कि यह इत्तिहाद व यकजहती में रुकावट बन रहा है, और अब मिस्र से किसी ने यह कहते हुए सुर में सुर मिलाया कि यह पिछड़ेपन की निशानी है। यह भी कैसी मुनाफ़िक़त और दोग़ला रवैया है कि अगर कोई हुकूमत औरतों के लिबास के लिए कुछ ज़ाब्ते बनाए तो मग़रिब कहता है कि यह इंसानी आज़ादी की मुख़ालिफ़त और हुक़ूक़े-इंसानी की ख़िलाफ़वर्ज़ी है, और अगर औरत अपने इंतिख़ाब से नक़ाब ओढ़े तो आप उसकी आज़ादियों को सल्ब करते हैं, उसको तालीम और सर्विस से महरूम कर देते हैं। यह ज़ुल्म सिर्फ़ ट्यूनिस और मराकश जैसी इस्तबदारी हुकूमतें ही नहीं कर रही हैं बल्कि यह फ्रांस, हॉलैण्ड और बरतानिया में भी हो रहा है।

अब मैं भी फ़ैमनिस्ट (औरतों के हुक़ूक़ की हामी) हूँ मगर एक मुस्लिम फेमनिस्ट, जो मुस्लिम औरतों को दावत देती है कि वह अपनी ईमानी ज़िम्मेदारियों को अदा करें, अपने शौहरों को एक अच्छा मुसलमान बनने में मदद करें, अपने बच्चों की इस तरह तर्बियत करें कि वह इस्तिक़ामत के साथ दीन पर जमें और अंधेरों में भटक रही इंसानियत के लिए मीनारा-ए-नूर बन जाएँ। मेरी आपको दावत है कि आप हर ख़ैर को लाज़िम पकड़ लें और हर शर से नबरद-आज़मा हो जाएँ, हक़ की आवाज़ बुलन्द करें और बदी की मुख़ालिफ़त पर कमर कस लें। हम

अपने नक़ाब व हिजाब के हक़ के लिए लड़ें और अल्लाह को राज़ी करें। मैं चाहती हूँ कि हम सब पर्दा करनेवाली औरतें अपनी उन सारी बहनों को हिजाब के बारे में बताएँ जो बदक़िस्मती से नहीं जानतीं कि पर्दा क्या मुबारक शय है। हम उनको बताएँ कि हिजाब हमारी कितनी अज़ीज़ चीज़ है और हम क्यों निहायत फ़ख़्र व मुहब्बत के साथ इसको गले से लगाए हुए हैं।

मैं उन मुअज़्ज़िज़ ख़्वातीन को जानती हूँ कि जिन्होंने सिर्फ़ हिजाब पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि नक़ाब से चेहरा भी ढका। उनमें से अक्सर मग़रिबी नव मुस्लिम ख़्वातीन हैं। उनमें से कुछ तो ग़ैर शादी-शुदा दोशीज़ाएँ हैं। कुछ के अक्सर नक़ाब की वजह से मसायल भी पेश आते हैं, उनकी सोसाइटी, ख़ानदान और घर के लोग उनकी मुख़ालिफ़त करते हैं।

यह आज़ादाना इंतिख़ाब के हक़ को तस्लीम न करने ही की एक शक्ल है कि मुआशरे में हर तरफ़ से ज़राए-अब्लाग़ के ज़रिए से औरतों पर नंगे होने और भड़कीले कपड़े की हद तक दिलरुबाई इख़्तियार करने की अंधा-धुंध तब्लीग़ की जाए। और अमलन उनको ख़्वाही न ख़्वाही उसको इख़्तियार करने पर मजबूर कर दिया जाए। मेरा कहना है कि औरतों को हिजाब की तहज़ीब को जानने का भी बराबर मौक़ा दिया जाना चाहिए, ताकि वे इस पाक व पुरसुकून तहज़ीब की ख़ूबियों को जान सकें और उनको वह मालूम हो जो मुझे मालूम हो चुका है। मैं कल तक उरयानियत को ही अपनी आज़ादी की अलामत समझती थी, फिर मुझपर मुंकशफ़ हुआ कि वह एक पाबजोलाँ आज़ादी थी, जिसने मुझको ख़ुद एतिराफ़ी और ज़ाती एतिमाद से आरी कर दिया था और मेरी रूह को बेचैनी की आग में डाल दिया था।

मुझे अपने फ़हश लिबास को उतार कर और मग़रिब की दिलरुबा तर्ज़े-ज़िन्दगी को छोड़कर अपने ख़ालिक़ की मारफ़त व बन्दगीवाली एक बावक़ार ज़िन्दगी को इख़्तियार करने से जो मयस्सर व इत्मीनान का एहसास हुआ है, मैं उसकी कोई मिसाल नहीं दे सकती। ऐसी ख़ुशी मुझे

कभी नहीं होती थी, इसलिए चेहरा ढकने और नक़ाब पर मुझे इसरार है, पर्दा मेरा हक़ है जो मैं किसी क़ीमत पर नहीं छोड़ सकती। इसके लिए मैं लड़ मरूँगी मगर इसको किसी क़ीमत पर नहीं छोड़ूंगी।

नक़ाब आज औरत की आज़ादी की एक बाइज़्ज़त अलामत है, जो उसको गन्दी मख़्लूक़ की हवसरानियों का, टॉयलेट पेपर की तरह का, सामान बनने से बचाता है, नक़ाब पहन कर औरत पहचानती है कि वह कौन है? उसका मक़सदे-ज़िन्दगी क्या है? उसको अपने ख़ालिक़ अल्लाह से कैसा रिश्ता व राब्ता क़ायम करना है?

जो औरतें इस्लामी हिजाब की बावक़ार व बाहया तहज़ीब के बारे में मग़रिब के क़दीम घिसे-पिटे मुतअस्सिबाना तसव्वुरात की शिकार हैं उनसे मैं कहती हूँ :

"तुम्हें पता नहीं तुम किस अज़ीम नेमत से महरूम हो।"

और 'तहज़ीब' के नामुबारक ठेकेदारों और नाम-निहाद 'सलीबियों' से मेरा कहना है :

"तुम भी हिजाब को इख़्तियार करो, इसी में तुम्हारी नजात है।"

(माहनामा अल-फ़ुरक़ान, मार्च 2007 ई० पेज 33)

ख़्वाब का बयान

ख़्वाब के आदाब

1. अच्छे ख़्वाबों को पसन्द करना और उनसे ख़ुश होना।
2. बड़ों का छोटे से ख़्वाब मालूम करना।
3. मस्जिद में ख़्वाब मालूम करना।
4. मस्जिद में ख़्वाब की ताबीर देना।
5. ताबीर देते वक़्त दुआ-ए-मासूरा का पढ़ना।
6. फ़ज्र के बाद ख़्वाब की ताबीर देना।
7. ख़्वाब की किसी सालेह, साहिबुर्राय और अहले ताबीर से ताबीर लेना।

8. ख़्वाब सालेह या अहले मुहब्बत से ज़िक्र करना।

9. अच्छे ख़्वाब पर अलहम्दुलिल्लाह कहना।

10. बुरे ख़्वाब पर तअव्वुज़ पढ़ना।

11. परेशानकुन ख़्वाब पर नमाज़ पढ़ना।

12. परेशानकुन और बुरे ख़्वाब का किसी से ज़िक्र न करना।

ख़्वाब मालूम करना

हज़रत समूरा-बिन-जुंदुब (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) की आदते तय्यिबा थी कि अपने असहाब से बकसरत यह पूछा करते थे कि तुममें से किस ने क्या ख़्वाब देखा है? पस जो ख़्वाब देखता वह आपके सामने ख़्वाब पेश करता। (मुख़्तसर बुख़ारी, जिल्द 3, पेज 1043)

फ़ायदा : मोमिन का ख़्वाब मुबश्शिरात इलाही और नबूवत का एक जुज़ है। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ने कहा कि चूंकि आप (सल्ल०) ख़्वाब की ताबीर बहुत उम्दा दिया करते थे, इसलिए आप (सल्ल०) पूछा करते थे और आप (सल्ल०) का यह पूछना फ़ज्र की नमाज़ के बाद हुआ करता था। (बुख़ारी जिल्द 2, पेज 1043)

ख़्वाब पेश करना

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ख़्वाब देखा करता था, वह आप (सल्ल०) की ख़िदमत में पेश करता था। चुनांचे मैंने भी (इसी तमन्ना में कि कोई ख़्वाब देखूँ तो आपकी ख़िदमत में पेश करूँ) कहा, ऐ अल्लाह! कोई ख़ैर हो तो हमें भी दिखा ताकि उसकी ताबीर हुज़ूर पाक (सल्ल०) से मालूम करूँ। चुनांचे मैं सोया तो ख़्वाब देखा।

(मुख़्तसर बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1041)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अहदे नुबूवत में हज़राते सहाबा किराम में से कोई ख़्वाब देखता तो आप (सल्ल०) की ख़िदमत में वह ख़्वाब पेश करता, तो आप फ़रमाते, माशाअल्लाह। मैं नई उम्र का जवान था, निकाह से पहले मस्जिद में सोया करता था, मैं अपने दिल से

कहता : अगर तेरे अन्दर कोई भलाई होती तो तू भी ख़ाब देखता। एक रात मैं सोया तो कहा : ऐ अल्लाह! अगर आप जानते हैं कि मुझमें कोई अच्छाई है तो मुझे भी कोई ख़ाब दिखाइए।

(मुस्नद तयालिसी, जिल्द 1, पेज 350, बुख़ारीः जिल्द 2, पेज 1041)

ख़ाब पसन्द करना

अबू बक्र सक़फ़ी (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी पाक (सल्ल०) को अच्छे ख़ाब बहुत पसन्द थे। आप लोगों से ख़ाब के मुताल्लिक़ पूछा करते थे, फिर उसकी ताबीर देते थे।

(अबू दाऊद तियालिसी, जिल्द 1, पेज 350)

फ़ज्र के बाद ख़ाब मालूम करना

इब्ने ज़मील जुहनी (रज़ि०) कहते हैं कि जब नबी पाक (सल्ल०) फ़र्ज की नमाज़ पढ़ लेते तो पैर निकाल कर बैठ जाते (यानी आराम से) 70 मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़ते, फ़रमाते कि सात सौ के बराबर है। उस शख़्स में कोई भलाई नहीं जिसके एक दिन के गुनाह सात सौ से ज़्याद हों। फिर लोगों की तरफ़ रुख़ फ़रमाते। आप (सल्ल०) ख़ाब को बहुत पसन्द फ़रमाते। आप पूछते कि तुममें से किसी ने कोई ख़ाब देखा है, चुनांचे रावी इब्ने ज़मील कहते हैं कि मैंने अपना ख़ाब बयान किया।

(सीर, सफ़ा 411, मज्मा, जिल्द 6, पेज 183)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) से रिवायत है कि आप जब फ़र्ज की नमाज़ से फ़ारिग होते तो पूछते कि तुममें से किसी ने ख़ाब देखा है और फ़रमाते कि मेरे बाद नुबूवत बाक़ी नहीं रहेगी, मगर अच्छे ख़ाब।

(अबू दाऊद, पेज 584)

फ़ायदा : आप (सल्ल०) की आदते-तय्यिबा थी कि फ़ज्र की जमाअत से फ़ारिग होकर लोगों की जानिब मुतवज्जह होकर ख़ाब मालूम फ़रमाते, कभी हज़राते सहाबा ख़ाब बयान करते, कभी आप अपना ख़ाब हज़राते सहाबा के सामने बयान करते।

ख़्राब की ताबीर सुबह की नमाज़ के बाद देना

हज़रत समुरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) कभी-कभी अपने असहाब से पूछते कि कोई ख़्राब देखा है? पस जिसके बारे में अल्लाह पाक चाहता (जिसको अल्लाह पाक ख़्राब दिखाता) कि ख़्राबे ज़िक्र करे, वह ज़िक्र करता और आप उसकी ताबीर देते।

(बुख़ारी मुख़्तसर, जिल्द 2, पेज 1043)

आप (सल्ल०) की आदते तय्यिबा थी कि आप सुबह की नमाज़ के बाद ख़्राब मालूम करते और उसी वक़्त ताबीर देते।

सुबह की नमाज़ के बाद ही ख़्राब की ताबीर देनी सुन्नत और बेहतर है। चुनांचे इमाम बुख़ारी (रह०) ने सहीह बुख़ारी में एक बाब क़ायम किया है : *"ताबीरुर्रुया बाद सलातिस्सुब्ह"* अल्लामा ऐनी (रह०) ने उम्दतुल-क़ारी में और हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुल-बारी में लिखा है कि तुलूअ शम्स से पहले ख़्राब की ताबीर देनी मुस्तहब है। नमाज़े सुबह के वक़्त ख़्राब और उसकी ताबीर इस वजह से बेहतर है कि रात के क़रीब होने की वजह से ख़्राब महफ़ूज़ होगा, ताज़ा होने की वजह से ज़ेहन से ख़्राब या उसके अज्ज़ा ग़ायब न होंगे, नीज़ और भी दूसरे मसालेह हैं।

पहली ताबीर का एतिबार

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : जो पहली ताबीर दे उसका एतिबार है।(इब्ने माजा, पेज 279)

फ़ायदा : जिससे अव्वलन ख़्राब बयान करे और ताबीर ले उसी ताबीर का एतिबार है। इसी लिए हुक्म है कि हर एक से ख़्राब बयान न करें। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने ज़िक्र किया है कि मुस्नद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में अबू क़लाबा का क़ौल है कि जैसी ताबीर दी जाए, ख़्राब वैसा ही वाक़ेअ होता है।

(फ़त्हुलबारी, जिल्द 12, पेज 432)

ख़्राब की ताबीर देते और सुनते वक़्त क्या पढ़े?

हज़रत ज़ह्हाक जुहनी (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने ख़्राब सुनने के वक़्त पढ़ा :

خَيْرٌ تَلَقَّاهُ وَشَرٌّ تَوَقَّاهُ وَخَيْرٌ لَّنَا لَا عْدَائِنَا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

(سیرۃ، جلد:۷، صفحہ:۴۱۱)

"तुमको भलाई हासिल हो, बुराई से महफ़ूज़ रहो, भलाई हमारे लिए बुराई दूसरों के लिए, तारीफ़ अल्लाह के लिए, जो हर आलम का मुरब्बी है।" (सीरत, जिल्द 7, पेज 411)

मोमिन का ख़्राब नुबूवत का एक हिस्सा है

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी पाक (सल्ल०) को यह फ़रमाते सुना कि अच्छे ख़्राब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है। (बुख़ारी, जल्द 2, पेज 1035)

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ने ख़त्तबी के हवाले से बयान किया है कि अच्छा ख़्राब नुबूवत का छियालिसवाँ हिस्सा इस तरह है कि हुज़ूर अकरम (सल्ल०) नुबूवत से पहले छः माह तक अच्छे ख़्राब देखते रहे, उसके बाद वह्य का सिलसिला शुरू हुआ जो 23 साल तक जारी रहा और एक साल के 6 महीनों के एतिबार से दो हिस्से होते हैं, पस 23 साल के कुल छियालीस (46) हिस्से हुए, इस ऐतबार से 6 माह जो अच्छे ख़्राब देखने का ज़माना है वह नुबूवत का छियालिसवाँ हिस्सा बन गया, और बाज़ हज़रात ने यह कहा है कि हमें इसकी हक़ीक़त और मतलब मालूम नहीं, अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्ल०) ही बेहतर जानते हैं।

अच्छा ख़्राब मोमिन के लिए बशारत है

हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी पाक सल्लल्लाहु (अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : नुबूवत में मुबश्शिरात के अलावा कुछ

बाक़ी नहीं। पूछा कि मुबश्शिरात क्या हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : अच्छे ख़्राब। (बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1035)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) की रिवायत है कि रसूले पाक (सल्ल०) ने फ़रमाया : रिसालत और नुबूवत मुंक़ता हो गई, न मेरे बाद रसूल है न नबी। अलबत्ता मुबश्शिरात हैं। पूछा कि वह मुबश्शिरात क्या हैं? फ़रमाया : अच्छे ख़्राब जिसे नेक मोमिन देखता है, या उसको दिखाया जाता है।

(तिर्मिज़ी, जिल्द 2, पेज 51, अबू दाऊद, अहमद, सीरत, जिल्द 7, पेज 408, इब्ने माजा, पेज 278)

उबादा बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने नबी पाक (सल्ल०) से पूछा कि अल्लाह तआला का क़ौल (उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में बशारत है) का क्या मतलब है? आपने फ़रमाया, वह अच्छे ख़्राब हैं जिनको मोमिन देखता है या दिखाया जाता है।

(इब्ने माजा, पेज 278)

हज़रत अबू दरदा (रज़ि०) से मंक़ूल है कि आपने फ़रमाया : अच्छे ख़्राब मोमिन के लिए दुनिया में बशारत हैं।

(तबरानी, कंज़ुल-उम्माल, जिल्द 15, पेज 393)

वह्य के ख़त्म और ख़्राब के बाक़ी रहने का मतलब हाफ़िज़ इब्ने हजर ने यह ज़िक्र किया है कि मेरी (यानी नबी करीम (सल्ल०) की) वफ़ात से वह्य का सिलसिला, जिससे आइंदा होनेवाले उमूर का इल्म हो, यह तो मुंक़ता हो गया, अलबत्ता सच्चे ख़्राब जिनसे होनेवाली बातों का इल्म हो सकता है, बाक़ी हैं। (पेज 376)

अच्छा ख़्राब देखे तो क्या करे?

अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : जब तुममें से कोई पसन्दीदा ख़्राब देखे तो वह अल्लाह की जानिब से है। इसपर अलहम्दुलिल्लाह कहे और उसे बयान करे।

(बुख़ारी, पेज 1043)

यानी इस नेमत पर शुक्र अदा करे कि अल्लाह तआला ने उसे नुबुव्वत की एक ख़ैर से नवाज़ा।

ख़्राब की नौइयत और उसकी क़िस्में

हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने आप (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि ख़्राब की तीन नोइयतें हैं—

1. नफ़्स व ज़ेहन की बातें, इसकी कुछ हक़ीक़त (ताबीर) नहीं।
2. जो शैतान की जानिब से हो। पस जब नापसन्दीदा ख़्राब देखिए तो शैतान से पनाह माँगे और बायीं जानिब थुकथुकाए। इसके बाद कोई नुक़सान न होगा।
3. वह जो खुदा तआला की जानिब से बशारत हो। मोमिन का ख़्राब नुबूवत का छियालिसवाँ हिस्सा है, उसे किसी ख़ैरख़्राह साहिबुर्राए के सामने पेश करे कि वह अच्छी ताबीर दे और अच्छी बात कहे।

(अबू इसहाक़, सीरत, जिल्द 7, पेज 407)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) की रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : ख़्राब तीन क़िस्म के होते हैं :

(1) अल्लाह की तरफ़ से बशारत (2) ख़याली बातें (3) शैतान का ख़ौफ़ज़दा करना (इब्ने माजा, पेज 279)

हज़रत औफ़ बिन मालिक (रज़ि०) आप (सल्ल०) से नक़ल फ़रमाते हुए कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : ख़्राब तीन क़िस्म के होते हैं : बाज़ वे होते हैं जो शयातीन की जानिब से ख़ौफ़ कुनन्दा होते हैं, ताकि वे इंसान को रंजीदा करें; बाज़ वे होते हैं जिनको इंसान बेदारी में ख़्याल करता है और सोचता है और बाज़ वे हैं जो नुबूवत का छियालिसवाँ हिस्सा हैं (यानी सच्चा ख़्याब जो खुदा की जानिब से है)।

(इब्ने माजा, पेज 279)

फ़ायदा : बसा-औक़ात इंसान बेदारी में जो करता और सोचता है, उसके ज़ेहन में रहता है। वह भी ख़्राब में आ जाता है। उसकी कोई

ताबीर नहीं, वह ख़्याल की एक तस्वीर है। लिहाज़ा ताबीर के वक़्त इसका ख़्याल ज़रूरी है कि वह ख़्वाब किस क़िस्म से मुताल्लिक़ है। सिर्फ़ एक क़िस्म के ख़्वाब की कुछ ताबीर हो सकती है। यह वही है जिसे मुबश्शिरात कहा गया है। लहुमुल-बुशरा से क़ुरआन में इसी की जानिब इशारा है। यही नुबूवत का छियालिसवाँ जुज़ है।

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर ने बयान किया है कि ख़्वाब की मुख़्तलिफ़ क़िस्में होती हैं :

हदीस पाक में तीन क़िस्में जो मज़्कूरा हैं, यह हसर के लिए नहीं है, इसके अलावा और भी ख़्वाब की क़िस्में हैं। जैसे बेदारी की बातें, बअीना ख़्वाब में देखना, जैसे किसी की आदत है, फ़लाँ वक़्त खाने की, चुनांचे इसी वक़्त खाने को वह ख़्वाब में देख रहा है।

(फ़त्हुलबारी, जिल्द 12, हिस्सा 408)

ख़्वाब की एक क़िस्म अज़ग़ास भी है जिसे ख़्वाबहाए-परेशान भी कहा जाता है (फ़त्हुलबारी, जिल्द 12, पेज 408)। इधर-उधर का देखना, इसका ताल्लुक़ भी ख़्याली उमूर से होता है इसकी भी कोई ताबीर नहीं।

शैतानी ख़्वाब

हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अच्छे ख़्वाब अल्लाह की जानिब से होते हैं और बुरे (डरावने, परेशानकुन ख़्वाब) शैतान की जानिब से होते हैं।

फ़ायदा : शैतान परेशान करने के लिए और वहम में मुब्तला करने के लिए डरावने ख़्वाब दिखाता है।

नापसन्दीदा ख़्वाब किसी से बयान न करो

हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : जब तुम कोई पसन्दीदा ख़्वाब देखो तो अपने दोस्तों के अलावा किसी से बयान न करो, और जब नापसन्दीदा ख़्वाब देखो तो किसी से बयान न करो, इससे कोई ज़रर न होगा।

(मुख़्तसर बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1043)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) की रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : नापसन्दीदा ख़ाब देखो तो यह शैतान की जानिब से है। इसकी बुराई से पनाह माँगो और उसे किसी से बयान न करो, तो नुक़सान न होगा। (मुख़्तसर बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1043)

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मैंने ख़ाब में देखा है कि गोया मेरा सर कट गया है। आप मुस्कराने लगे और फ़रमाया : जब तुम्हारे साथ ख़ाब में शैतान खेले तो किसी से मत बताओ। (मिश्कात, पेज 395)

फ़ायदा : जो ख़ाब 'अज़ग़ास अहलाम' होते हैं यानी शैतान की जानिब से परेशानकुन होते हैं, उनकी ताबीर नहीं होती।

शायद आप (सल्ल०) को इसका इल्म बज़रिए वह्य हो गया हो कि उसकी कोई ताबीर नहीं। मुअब्बिरन ऐसे ख़ाब की ताबीर ज़वाले सल्तनत या नेमतों के ज़वाल से देते हैं। (मिश्कात, पेज 395)

नापसन्दीदा ख़ाब देखे तो क्या करे

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : जब तुममें से कोई नापसन्दीदा ख़ाब देखे तो बायीं जानिब हो जाए, अल्लाह तआला से भलाई का सवाल करे, उसकी बुराई से पनाह माँगे। (इब्ने माजा; सफ़ा 279, सीरत; जिल्द 7, पेज 408)

हज़रत जाबिर (रज़ि०) की रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः जब तुममें से कोई नापसन्दीदा ख़ाब देखे तो बायीं जानिब थुकथुका दे और शैतान से अल्लाह की पनाह माँगे (*अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता- निर्रजीम*) पढ़े और करवट बदल ले। (अबू दाऊद, पेज़ 605)

हज़रत जाबिर (रज़ि०) की इब्ने माजावाली रिवायत में है 'बायीं जानिब तीन मर्तबा थुकथुका दे।'

हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : अच्छे ख़ाब ख़ुदा की जानिब से होते हैं और बुरे ख़ाब देखे तो

शैतान मर्दूद से पनाह माँगे यानी (अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम) पढ़े और जिस करवट पर हो उसे बदल ले। (इब्ने माजा, पेज 279)

ख़्वाब से बीमारी

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं कि एक शख़्स आप (सल्ल०) की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि मैं ऐसा डरावना ख़्वाब देखता हूँ कि उसे देखने के बाद बीमार पड़ जाता हूँ? आपने फ़रमाया : अच्छे ख़्वाब अल्लाह की जानिब से होते हैं और बुरे शैतान की जानिब से। अगर तुममें से कोई ऐसा ख़्वाब देखे तो बायीं जानिब 3 मर्तबा थूक दे और (*अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम*) पढ़े तो उससे कोई नुक़सान न होगा। (मज्मा, जिल्द 7, पेज 176)

फ़ायदा : इससे मालूम हुआ कि बाज़ शैतानी ख़्वाब ऐसे भी होते हैं जिससे इंसान बीमार पड़ सकता है।

इमाम बुख़ारी (रह०) ने भी अबू सलमा और अबू क़तादा (रज़ि०) के मुताल्लिक़ बयान किया है कि वे जब ख़्वाब देखते तो बीमार पड़ जाते। (बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1043)

लिहाज़ा अगर इस क़िस्म के ख़्वाब के बाद मज़्कूरा अमल कर लिया जाए तो ज़रर से हिफ़ाज़त हो जाती है।

फ़ायदा : इमाम बुख़ारी (रह०) ने इब्ने सीरीन (रह०) की रिवायत में बयान किया है कि अग नापसन्दीदा ख़्वाब देखे तो उठ जाए और नमाज़ पढ़े और किसी से बयान न करे। (बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1043)

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ने बयान किया है कि अगर बुरे ख़्वाब देखे तो उसके यह आदाब हैं :

1. (*अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम*) पढ़े।
2. बायीं जानिब थुकथुका दे।
3. किसी से बयान न करे।
4. करवट बदल ले।

5. उठकर नमाज़ पढ़ ले।

बाज़ों ने ऐसे मौक़े पर आयतुल-कुर्सी भी पढ़ने को कहा है।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 370)

अल्लामा क़ुरतबी ने बयान किया है कि बुरे ख़्राब के बाद नमाज़ पढ़ना सब आदाब को शामिल किए हुए और जामेअ है।

(फ़तहुलबारी, पेज 371)

इबराहीम नख़ई (रह०) से नापसन्दीदा ख़्राब के बाद यह दुआ मंक़ूल है, इसे पढ़ लिया जाया करे :

أَعُوْذُ بِمَا عَاذَتْ بِهٖ مَلَائِكَةُ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ مِنْ شَرِّ رُؤْيَاهٰذِهٖ أَنْ يُّصِيْبَنِيْ فِيْهَا مَا أَكْرَهُ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ۔

(سعید ابن منصور، فتح ۱۲، صفحہ ۳۷۱)

"मैं इस ख़्राब की तकलीफ़देह उमूर से अपने दीनी और दुनियावी मामलात में पनाह माँगता हूँ, जैसे कि ख़ुदा के फ़रिश्तों और उसके रसूल ने पनाह माँगी है।"

सुबह का ख़्राब ज़्यादा सच्चा होता है

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) नक़ल करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : ज़्यादा सच्चा ख़्राब सुबह के वक़्त का होता है।

(तिर्मिज़ी, पेज 397)

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर ने लिखा है कि सुबह के वक़्त के ख़्राब की ताबीर बहुत जल्द वाक़ेअ होती है, ख़ास कर सुबह-सादिक़ की। दोपहर के वक़्त की भी ख़्राब की ताबीर जल्द वाक़ेअ होती है।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 390)

दिन और रात, मर्द और औरत के ख़्राब का यकसाँ हुक्म है।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 392)

यानी जिस तरह मर्द का ख़्राब सही और क़ाबिले ताबीर होगा। उसी तरह औरत का भी होगा।

सच बोलनेवाले का ख़ाब सच्चा होता है

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : जो सच बोलनेवाला होता है उसका ख़ाब सच्चा होता है।

(इब्ने माजा, पेज 280)

फ़ायदा : जो आदमी झूठ बोलता है उसका ख़ाब भी झूठा होता है, उससे हर शख़्स अन्दाज़ा लगा सकता है कि उसका ख़ाब कैसा होगा। आज झूठ की बीमारी आम है कि कभी-कभी आदमी बिला क़सद व इरादा के भी झूठ बोल देता है। लिहाज़ा जो जितना सच्चा होगा उसका ख़ाब उतना ही सच्चा होगा। इसी लिए हज़राते अंबिया (अलैहि०) का ख़ाब सच्चा होता है। जो लोग नेकी और सलाह में कम हैं, अक्सर उनका ख़ाब अज़ग़ासे अहलाम होता है, बहुत कम सच्चा और लायक़े-ताबीर होता है। (फ़तहुलबारी, पेज 363)

ख़ाब किस से बयान करे?

अबू रज़ीन अक़ीली फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः ख़ाब नुबूव्वत का छियालिसवाँ हिस्सा है। उस वक्त तक कि जब तक बयान न किया जाए, मुअल्लक़ रहता है। उसे अपने दोस्त, समझदार के अलावा किसी से न बयान किया जाए।

एक रिवायत में है कि ख़ाब की जब तक ताबीर न दी जाए मुअल्लक़ रहता है। जब ताबीर दी जाती है तो वाक़ेअ हो जाता है। लिहाज़ा ख़ाब को किसी ख़ैर-ख़ाह दोस्त और साहिबुर्राय के अलावा किसी से न बयान करो। (मिश्कात, पेज 396)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ख़ाब किसी आलिम, या ख़ैर-ख़ाह के अलावा किसी से बयान मत करो। (मज्मअ, जिल्द 7, पेज 182)

हज़रत अनस (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : जब तुममें से कोई ख़ाब देखे तो उसे किसी ख़ैर-ख़ाह या साहिबे इल्म से बयान करो। (कुन्ज़ुल उम्माल, जिल्द 19, पेज 262)

फ़ायदा : मतलब यह है कि हर शख़्स के सामने ख़्राब न बयान करे कि कहीं कोई नापसन्दीदा ग़लत ताबीर न दे दे। बल्कि दीनदार के सामने उसे पेश करे, और उसी से ताबीर ले कि बसा-औक़ात जो ताबीर दी जाती है वाक़ेअ हो जाती है। मज़ीद यह भी ख़्याल रहे कि हर ख़्राब क़ाबिले ताबीर भी नहीं कि ख़्राब की ताबीर के लिए परेशान हो।

ख़्राब अपने ख़ैर-ख़्राह दोस्त से बयान करे

हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमायः जब कोई अच्छा ख़्राब देखे तो उसे अपने दोस्त के अलावा किसी से बयान न करे।

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर ने लिखा है कि आप (सल्ल०) ने दोस्त के अलावा किसी और से इस वजह से मना किया है कि बसा-औक़ात दूसरा शख़्स बुग्ज़ या हसद की वजह से नापसन्दीदा ताबीर दे देते हैं और अक्सर वैसा ही वाक़ेअ हो जाता है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 431)

आप (सल्ल०) से मुतअद्दिद अहादीस में मंक़ूल है कि हर शख़्स से अपना ख़्राब न बयान करे, बल्कि आलिम, ख़ैर-ख़्राह, दोस्त, ज़ीअक़्ल, साहिबुर्राय से बयान करे। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ने लिखा है कि आलिम जहाँ तक मुमकिन होगा अच्छी ताबीर निकालेगा। ख़ैर-ख़्राह ख़ैर ही का रुख़ इख़्तियार करेगा, दोस्त अगर ख़ैर समझेगा तो ताबीर देगा, अगर कुछ शक होगा तो ख़ामोश हो जाएगा।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 369)

ख़्राब के ज़िक्र के आदाब

अहादीस पाक से अच्छे ख़्राब के ज़िक्र के तीन आदाब मालूम हुए :

(1) *अलहम्दुलिल्लाह* कहे (2) उसे ज़िक्र करे (3) उसकी ताबीर किसी आलिम ख़ैर-ख़्राह (वाक़िफ़े-फ़न) से ले।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 370)

ताबीर वाक़ेअ होती है

आप (सल्ल०) ने हज़रत आइशा (रज़ि०) से फ़रमाया कि जब तुम ताबीर दो तो अच्छी ताबीर दो, ख़्वाब की ताबीर देनेवाले के मुवाफ़िक़ वाक़ेअ होती है। (फ़तहुलबार, जिल्द 12, पेज 432)

ताबीर के उसूल

इस हदीस से मालूम हुआ कि बिला सोचे समझे और उसूले ताबीर से वाक़फ़ियत के बग़ैर ताबीर नहीं देना चाहिए। चूंकि ताबीर का देना एक लतीफ़ फ़न है। जो शख़्स आलिमे-रब्बानी, मुत्तक़ी, परहेज़गार, उलूमे-इस्लाम से वाक़िफ़ आलिम इमसाल के नकात व इसरार का आलिम होगा, वही शख़्स अच्छी ताबीर दे सकता है। ख़साइले नबवी में से है : ख़्वाब की ताबीरों को देखना चाहिए। नबी करीम (सल्ल०) और सहाबा किराम और ताबईन से बकसरत ख़्वाबों की ताबीर नक़ल की गई है। फ़ने-ताबीर के उलमा ने लिखा है कि ताबीर देनेवाले शख़्स के लिए ज़रूरी है कि समझदार, मुत्तक़ी, परहेज़गार, किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह (सल्ल०) का वाक़िफ़ हो। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 392)

दरबारे-नुबुव्वत की चन्द ताबीरें

चांद की ताबीर

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) कहते हैं कि नबी पाक (सल्ल०) ने पूछा, "तुममें से किसी ने ख़्वाब देखा है।" इसपर हज़रत आइशा (रज़ि०) ने फ़रमाया, मैंने देखा है कि तीन चाँद हमारे हुजरे में गिरे हैं। आपने फ़रमाया : अगर तेरा ख़्वाब सच है तो मेरा ख़याल (इसकी ताबीर के मुताल्लिक़ यह है कि) इसमें तीन अफ़ज़लीन अहले जन्नत मदफ़ून होंगे। चुनांचे आप सल्ल०, हज़रत अबू बक्र रज़ि०, हज़रत उमर (रज़ि०) उसमें मदफ़ून हुए। (मज्मउज़्ज़वाइद, जिल्द 7, पेज 185)

दूध पीने की ताबीर

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने एक ख़ाब बयान किया है कि मेरे सामने दूध लाया गया, मैंने उसे पिया (और पीकर इस क़दूर सैराब हुआ) कि मैं देख रहा हूँ कि उसकी सैराबी नाख़ून से निकल रही है। फिर बाक़ी उमर को दे दिया। लोगों ने पूछा, आपने क्या ताबीर दी? आपने फ़रमाया : इल्म से। (बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1037)

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर ने लिखा है कि दूध की ताबीर क़ुरआन, सुन्नत इल्म से होती है। (फ़तहुलबार, जिल्द 12, पेज 393)

लिहाज़ा जिसने जितना दूध पीता देखा, उसी क़दूर वह इल्म से मुस्तफ़ीज़ होगा। बकरी का दूध कमाले सेहत, ख़ुशी की तरफ़ इशारा है, गाय का दूध मुल्क की ख़ुशहाली की तरफ़ इशारा है, अलबत्ता दरिन्दों का दूध देखना अच्छा नहीं है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 393)

फूँक मारकर उड़ाने की ताबीर

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने अपना ख़ाब बयान करते हुए फ़रमाया कि मैं सो रहा था, देखा कि मेरे हाथ में सोने के कंगन रख दिए गए हैं, जो मुझे बड़े गिराँ गुज़रे और मुझे रंज में डाल दिया। ख़ाब ही में कहा गया कि मैं उसे फूँकूँ। चुनांचे मैंने फूँक मारी (तो दोनों उड़ गए)। मैंने उसकी ताबीर दी कि दो झूठे नुबूवत के मुद्दई ज़ाहिर होंगे। एक असवद अनसी जिसे फ़िरोज़ ने यमन में मार डाला और दूसरा मुसैलमा कज़्ज़ाब जिसे इकरिमा (रज़ि०) ने वासिले-जहन्नम किया। (बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 1041)

हाफ़िज़ इब्ने हजर ने बयान किया कि जिसने देखा कि वह उड़ रहा है, अगर उड़ान आसमान की तरफ़ हो और बिला किसी सीढ़ी वग़ैरह् के हो तो ज़रर की तरफ़ इशारा है। अगर देखा कि आसमान में उड़ा और ग़ायब हो गया तो मौत की तरफ़ इशारा है। अगर लौट आया तो मर्ज़ से

सेहत की तरफ़ इशारा है। अगर चौड़ाई में उड़ रहा है तो सफ़र की तरफ़ इशारा है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 430)

शहद और घी की ताबीर

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने ख़्वाब में देखा कि उनके दो उंगलियों में से एक उंगली में शहद और दूसरी उंगली में घी है। दोनों को चाट रहे हैं। आप (सल्ल०) ने ताबीर देते हुए फ़रमाया : अगर तुम ज़िन्दा रहे तो दो किताबें यानी तौरात और क़ुरआन पढ़ोगे। यानी उसके आलिम होगे। चुनांचे दोनों के आलिम हुए।

(अबू याला सीरत, जिल्द 7, पेज 410)

फ़ायदा : शहद और घी की ताबीर इल्म और भलाई से होती है।

सर कटने की ताबीर

अबू मुजलज़ (रह०) कहते हैं कि एक शख़्स आप (सल्ल०) की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि मैं ख़्वाब देखता हूँ कि मेरा सर काट दिया गया है और मैं उसे देख रहा हूँ? आप (सल्ल०) मुस्कुराए और फ़रमाया : जब तुम्हारा सर काट दिया गया तो तुम किस आँख से देख रहे थे। अभी कुछ ही देर हुई थी कि उनका इंतिक़ाल हो गया। सर कटने की तावील उनकी वफ़ात से दी और देखने की ताबीर इत्तिबाए सुन्नत से। (सीरत, जिल्द 7, पेज 417)

ख़्वाब गोया हक़ीक़त

हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित (रज़ि०) ने ख़्वाब में देखा कि उन्होंने नबी पाक (सल्ल०) की पेशानी मुबारक पर सज्दा किया, उन्होंने उसका तज़्किरा आप (सल्ल०) से किया। आप (सल्ल०) लेट गए और उन्होंने आपकी पेशानी पर सज्दा किया। (मज्मउज़्ज़वाइद, जिल्द 1, पेज 182)

फ़ायदा : ख़्वाब को आप (सल्ल०) ने हक़ीक़त में पेश कर दिया, जिससे ख़्वाब का सच्चा होना वाज़ेह हो गया। मुल्ला अली क़ारी (रह०) ने इस हदीस पाक से यह उसूल मुस्तंबित किया है कि ख़्वाब में कोई नेक

काम करता देखे तो बेदारी में कर लेना मुस्तहब है।

(मिश्क़ात, जिल्द 4, पेज 550)

सफ़ेद लिबास की ताबीर

हज़रत आइशा (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) से वरक़ा बिन नोफ़ल के बारे में मालूम किया गया। हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने कहा कि उन्होंने तो आपकी तस्दीक़ की थी लेकिन ज़ुहूरे-नुबुव्वत से पहले उनका विसाल हो गया। आपने फ़रमाया कि ख़ाब में दिखाए गए तो उन पर सफ़ेद लिबास था अगर वे दोज़ख़ी होते तो उनका लिबास इसके अलावा होता। (मिश्कात, पेज 396)

सफ़ेद कपड़े में मलबूस होने की वजह से आप (सल्ल०) ने इनको नाजी में शुमार फ़रमाया, इससे मालुम हूआ कि किसी को सफ़ेद मलबूस में देखा जाए तो ये नजात याफ़ता की अ़लामत है।

आज़ा व जवारिह की ताबीर

हज़रत उम्मुल फ़ज़्ल (रज़ि०) कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बयान किया कि मैं अपने घर में आपके आज़ा में से कोई आज़ा देखती हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अच्छा ख़ाब देखा है। फ़ातिमा की औलाद को तुम दूध पिलाओगी।" (इब्ने माजा, पेज 280)

अज़ू से इशारा औलाद की तरफ़ है, और घर में देखने का मतलब यह है कि तुम्हारे घर में उसका रहना होगा। ज़ाहिर है कि बच्चे का रहना परवरिश और दूध पिलाने के लिए ही हो सकता है।

चन्द ख़ाबों की ताबीर

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने शरह बुख़ारी में अहादीस से माख़ूज़ चन्द ताबीरें बयान की हैं। उनमें से हम चन्द ताबीरें नक़ल करते हैं :

(1) ख़ाब में महल का देखना : दीनदार देखे तो अमल सालेह की तरफ़ इशारा है, ग़ैर-दीनदार देखे तो क़ैद और तंगी की तरफ़ इशारा

है और महल में दाख़िल होना शादी की तरफ़ इशारा है।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 416)

(2) ख़्वाब में वुज़ू करते हुए देखना : किसी अहम काम के होने की तरफ़ इशारा है। अगर वुज़ू मुकम्मल किया है तो उसकी तक्मील और अगर अधूरा छोड़ा है तो उसके नाक़िस होने की तरफ़ इशारा है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 417)

(3) ख़्वाब में काबा का तवाफ़ : हज और निकाह की तरफ़ इशारा है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 417)

(4) प्याला का देखना : औरत या औरत की जानिब से माल मिलने की तरफ़ इशारा है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 420)

(5) जिसने ख़्वाब में कोई बड़ी तलवार देखी : अन्देशा है कि किसी फ़ितने में पड़ेगा, तलवार पाने से इशारा है हुकूमत या वलायत या ऊँची मुलाज़िमत की तरफ़। तलवार को मयान में कर लेना इशारा है शादी की तरफ़। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 427)

(6) ख़्वाब में क़मीज़ पहने देखना : दीन की जानिब इशारा है, जिस क़दर लम्बी क़मीज़ और बड़ी देखेगा उसी क़दर दीन और अमले सालेह की ज़्यादती की जानिब इशारा होगा।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 395)

(7) शादाब बाग़ीचे की ताबीर भी दीने इस्लाम से है, कभी हरे-भरे बाग़ की ताबीर इल्मी किताबों से भी होती थी।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 397)

(8) औरतों का देखना : हुसूले दुनिया और कभी वुसअते रिज़्क़ की जानिब इशारा होता है। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 400)

कभी-कभी औरतों का देखना और उससे लुत्फ़ व हिज़ हासिल करना यह शैतानी ख़्वाब होता है, इसकी कोई ताबीर नहीं जैसा कि उमूमन नई उम्रवालों को होता है।

नबी करीम (सल्ल०) को ख़्राब में देखने का बयान

हज़रत अनस (रज़ि०) से मरवी है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : जिसने ख़्राब में मुझे देखा, पस उसने मुझ ही को देखा, शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता।

हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : जिसने मुझे ख़्राब में देखा, हक़ीक़ी तौर पर उसने मुझे बेदारी में देखा। (दारमी, कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द 19, पेज 274)

अबू बक्र असफ़हानी ने बयान किया कि साअद बिन क़ैस ने अपने वालिद से नक़ल किया है कि रसूले पाक (सल्ल०) का इरशादे मुबारक है कि जो रूहों में मुहम्मद (सल्ल०) की रूह पर, जिस्मों में मुहम्मद (सल्ल०) के जिस्म पर, क़ब्रों में मुहम्मद (सल्ल०) की क़ब्र पर दुरूद पढ़ेगा, वह मुझे ख़्राब में देखेगा और जो मुझे ख़्राब में देखेगा क़ियामत में मुझे देखेगा और जो मुझे क़ियामत में देखेगा मैं उसकी सिफ़ारिश करूँगा, और जिसकी मैं सिफ़ारिश करूँगा वह मेरे हौज़ से पानी पिएगा, और अल्लाह जल्ले-शानहू उसके बदन को जहन्नम पर हराम फ़रमा देंगे।

(क़ौल बदीअ सख़ावी, पेज 42, फ़ज़ाइले-दुरूद, पेज 51)

फ़ायदा : नबी पाक (सल्ल०) को ख़्राब में देखना बड़ी मुबारक बात है। हर मोमिन बन्दे को इस अम्रे अज़ीम का इश्तियाक़ रहता है, कितने ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे जो तमन्ना लिए इस दुनिया से रुख़्सत हो गए, मगर उनको यह दौलत मयस्सर नहीं आई। ख़्याल रहे कि ख़्राब में आप (सल्ल०) का दीदार होना ज़रूर एक अच्छी और क़ाबिले रश्क व तारीफ़ की बात है, मगर न होना दीन के नुक़्स और ख़लल की बात नहीं।

ख़्राब में अगर आप (सल्ल०) को उस शक्ले मुबारक में देखा है, जो अहादीसे पाक में मज़्कूर है, तो हक़ीक़तन आप (सल्ल०) ही को देखा, अगर कुछ मामूली फ़र्क़ के साथ देखा है तो आप का मिस्ल है। ऐसे ख़्राब को, "अज़ग़ास" ख़्राबहा-ए-परेशाँ में दाख़िल नहीं किया जाएगा।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 386)

अगर ऐसी हालत में ख़ाब देखा जो आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ थी तो यह देखनेवाले का क़ुसूर है। जैसे ख़िलाफ़े सुन्नत लिबास में देखा। अल्लामा तैबी (रह०) ने कहा है कि जिस हालत में भी आपको देखा बशारते ख़ाब का मुस्तहिक़ होगा। (फ़तहुलबारी, पेज 388)

अगर आपको ख़िलाफ़े सुन्नत व ख़िलाफ़े शरअ हुक्म करते हुए देखा तो यह देखनेवाले का क़ुसूर है। और ख़ाबी हुक्म ज़ाहिरी उसूले शरअ के मुताबिक़ ख़िलाफ़े सुन्नत या ख़िलाफ़े शरअ रहेगा। जैसे हुक्म करता देखा कि कोट पतलून पहनो, या फ़ुलाँ को क़त्ल कर दो या शराब पियो, तो इसपर अमल करना दुरुस्त न होगा। यह दर-असल उसके ख़्यालात का आईना है, जो मुतसव्विर हुआ है (फ़तहुलबारी, पेज 268)। इसी तरह ख़ाब से अहकामे शरीअत साबित नहीं होते।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 388)

मुनावी ने बयान किया है कि आप (सल्ल०) को ग़ैर मारूफ़ सिफ़त पर देखनेवाला भी आप (सल्ल०) ही को देखनेवाला है।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 23)

बाज़ अहले इल्म की राय है कि जिसने आपको ख़ाब में देखा वह मौत के बाद आप (सल्ल०) के मख़्सूस दीदारे मुबारक से नवाज़ा जाएगा।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 385)

मुल्ला अली क़ारी (रह०) ने बयान किया है कि जिसने आप (सल्ल०) को मुस्कुराता हुए देखा, उसे इत्तिबाए-सुन्नत की तौफ़ीक़ होगी।

(जमअ, पेज 232)

हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) की रिवायत है कि जिसने ख़ाब में मुझको देखा उसने हक़ीक़त में मुझ ही को देखा, इसलिए कि शैतान मेरी सूरत नहीं बना सकता। (शुमाइल तिर्मिज़ी, पेज 30)

फ़ायदा : हक़ तआला जल्ले शानहू ने जैसा कि आलमे हयात में हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) को शैतान के असर से महफ़ूज़ फ़रमा दिया था ऐसे ही विसाल के बाद भी शैतान को यह क़ुदरत मरहमत नहीं फ़रमाई कि वह आपकी सूरत बना सके। (ख़साइल, पेज 387)

कलीब (रह०) कहते हैं कि मुझे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) ने हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) का इरशादे मुबारक सुनाया जो मुझे ख़्वाब में देखे, वह हक़ीक़त में मुझ ही को ख़्वाब में देखता है। इसलिए कि शैतान मेरा शबीह नहीं बन सकता। कलीब कहते हैं कि मैंने इस हदीस का हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से तज़्किरा किया और यह भी कहा कि मुझे ख़्वाब में ज़ियारत हुई है। उस वक़्त हज़रत हसन (रज़ि०) का ख़्याल आया, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से कहा कि मैंने इस ख़्वाब की सूरत को हज़रत हसन (रज़ि०) की सूरत के बहुत मुशाबा पाया, इसपर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने इसकी तस्दीक़ फ़रमाई कि वाक़ई हज़रत हसन (रज़ि०) आप (सल्ल०) के बहुत मुशाबेह थे।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 389)

अल्लामा मुनावी (रह०) ने ज़िक्र किया है कि हज़राते अम्बिया और फ़रिश्तों की शक्ल में शैतान नहीं आ सकता। (जमअ, पेज 232)

फ़ायदा : बाज़ रिवायात में आया है कि सीना और उसके ऊपर के बदन का हिस्सा तो हज़रत हसन (रज़ि०) का हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) के मुशाबेह था और बदन के नीचे का हिस्सा हज़रत हुसैन (रज़ि०) का हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) के ज़्यादा मिलता था। (ख़साइल, पेज 388)

ज़ियारत मुतबर्रक के कुछ फ़वाइद व ताबीरात

जिसने आप (सल्ल०) को ख़्वाब में देखा, उसके सलाह व कमाले दीन की अलामत है। हज़राते अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम को ख़्वाब में देखना सलाहे-तक़वा, कमाले मर्तबा और फ़लाह की अलामत है।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 387)

जिसने आप (सल्ल०) को ख़्वाब में मुस्कुराता हुआ देखा उसे इत्तिबा व अह्या-ए-सुन्नत की बेश-बहा दौलत मिलेगी। जिसने आपको ग़ुस्सा व ग़ैज़ की हालत में देखा उसके दीन में नुक़सान या उससे दीन में नुक़सान की अलामत है। (जमअ, पेज 232)

आप (सल्ल०) को ख़्वाब में देखना इस्लाम पर मौत और आख़िरत में

मुलाक़ात और ज़ियारत की अलामत है। (जमूअ, पेज 232)

जो आपको ख़्वाब में देखेगा, मरने के बाद उसे ख़ुसूसी ज़ियारत का शर्फ़ मिलेगा। (फ़तहुलबारी, जिल्द 12, पेज 385)

आप (सल्ल०) की ज़ियारते पाक क़ियामत में शफ़ाअत व सिफ़ारिश की अलामत है। (अलक़ौल अल-बदीअ, पेज 43)

इब्ने सीरीन ने बयान किया अगर मदयून आपकी ज़ियारत करेगा तो क़र्ज़ा अदा होगा। मरीज़ ज़ियारत करेगा तो मर्ज़ से शिफ़ा पाएगा। अगर ज़ुल्म के मक़ाम में देखेगा तो अद्ल व इंसाफ़ का ज़माना आएगा, अगर जन्नत के मौक़े पर देखेगा तो ग़लबा की अलामत है।

(मुंतख़बुल-कलाम, जिल्द 1, पेज 57)

ख़्वाब में ज़ियारते-नबी के हुसूल का बयान

शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रह०) ने तर्ग़ीबे अहलुस्सआदत में लिखा है कि शबे जुमा में दो रकअत नफ़्ल नमाज़ अदा करे, हर रकअत में ग्यारह (11) बार आयतुल-कुर्सी और ग्यारह (11) बार क़ुलहु वल्लाहु अहद (पूरी सूरह), और सौ (100) बार दुरूद शरीफ़ सलाम के बाद पढ़े। इंशा-अल्लाह तीन जुमा गुज़रने न पाएँगे कि ज़ियारत नसीब होगी।

दुरूद शरीफ़ यह है :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ۔

इसी तरह शैख़ ने लिखा है कि जो शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में *अलहम्दुलिल्लाह* के बाद 25 बार *क़ुलहु वल्लाहु* अहद (पूरी सूरह), और सलाम के बाद यह दुरूद शरीफ़ हज़ार मर्तबा पढ़े, ज़ियारत नसीब होगी। वह दुरूद शरीफ़ यह है : صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

अल्लामा वमीरी (रह०) ने हयातुल हैवान में लिखा है कि जो शख़्स जुमा के दिन जुमा की नमाज़ के बाद बावुज़ू एक पर्चा पर *मुहम्मद रसूलुल्लाह अहमद रसूलुल्लाह* 25 मर्तबा लिखे, और उस पर्चे को अपने

साथ रखे। अल्लाह जल्ले शानहू उसको ताअत पर क़ुव्वत अता फ़रमाते हैं, बरकत में मदद फ़रमाते हैं, शयातीन के वसाविस से हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं, और अगर उस पर्चे को रोज़ाना तुलूअ आफ़ताब के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ते हुए ग़ौर से देखता रहे तो नबी पाक (सल्ल०) की ज़ियारत ख़्वाब में बकसरत हुआ करेगी।

(फ़ज़ाइले-दरूद शरीफ़, पेज 53)

अल्लामा सख़ावी रह० ने क़ौले-बदीअ में बयान किया है कि जो इस दरूद शरीफ़ को पढ़ेगा वह नबी (सल्ल०) को ख़्वाब में देखेगा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَهٗ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِی الْاَرْوَاحِ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْسَادِ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِی الْقُبُوْرِ

(صفحه ۱۳۰)

ज़ुबैदा मलका की बख़्शिश

ज़ुबैदा ख़ातून एक नेक मलका थी। उन्होंने नहरे ज़ुबैदा बनवाकर मख़्लूक़े ख़ुदा को बहुत फ़ायदा पहुँचाया। अपनी वफ़ात के बाद वह किसी को ख़्वाब में नज़र आईं। उसने पूछा कि ज़ुबैदा! आपके साथ क्या मामला पेश आया? ज़ुबैदा ने जवाब दिया कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बख़्शिश फ़रमा दी। ख़्वाब देखनेवाले ने कहा कि आपने नहर ज़ुबैदा बनवाकर मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ायदा पहुँचाया, आपकी बख़्शिश तो होनी ही थी। ज़ुबैदा ख़ातून ने कहा, नहीं! नहीं! जब नेहरे ज़ुबैदावाला अमल पेश हुआ तो परवरदिगारे आलम ने फ़रमाया कि काम तो तुमने ख़ज़ाने के पैसों से करवाया। अगर ख़ज़ाना न होता तो नेहरे भी न बनती। मुझे यह बताओ कि तुमने मेरे लिए क्या अमल किया। ज़ुबैदा ने कहा कि मैं तो घबरा गई कि अब क्या बनेगा। मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझपर मेहरबानी फ़रमाई। मुझसे कहा गया कि तुम्हारा एक अमल हमें पसन्द आ गया। एक बार तुम भूख की हालत में दस्तरख़ान पर बैठी खाना खा रही थीं कि इतने में अज़ान शुरू हुई और तुम्हारे कानों में अल्लाहु-अकबर, के अल्फ़ाज़ सुनाई दिए। तुम्हारे हाथ में लुक़्मा था, और सर से

दुपट्टा सरका हुआ था, तुमने लुक़मे को वापस रखा। पहले दुपट्टे को ठीक किया, फिर लुक़मा खाया, तुमने लुक़मा खाने में ताख़ीर मेरे नाम के अदब की वजह से की इसलिए हमने तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा दी।

एक लुहार का वाक़िया

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रह०) के मकान के सामने एक लुहार रहता था, बाल बच्चों की कसरत की वजह से वह सारा दिन काम में लगा रहता। उसकी आदत थी कि अगर उसने हथौड़ा हाथ में उठाया होता कि लोहा कूट सके और इसी दौरान अज़ान की आवाज़ आ जाती तो वह हथौड़ा लोहे पर मारने के बजाए उसे ज़मीन पर रख देता और कहता कि अब मेरे परवरदिगार की तरफ़ से बुलावा आ गया है। मैं पहले नमाज़ पढ़ूँगा, फिर काम करूँगा। जब उसकी वफ़ात हुई तो किसी को ख़्वाब में नज़र आया। उसने पूछा कि क्या बना? कहने लगा कि मुझे इमाम अहमद बिन हम्बल के नीचेवाला दर्जा अता किया गया। उसने पूछा कि तुम्हारा इल्म और अमल इतना तो नहीं था। उसने जवाब दिया कि मैं अल्लाह के नाम का अदब करता था और अज़ान की आवाज़ सुनते ही काम रोक देता था ताकि नमाज़ अदा करूँ। इस अदब की वजह से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझपर मेहरबानी फ़रमा दी।

ख़्वाब में अज़ान देना इज़्ज़त भी और ज़िल्लत भी

इमाम इब्ने सीरीन के पास एक शख़्स ने आकर कहा कि मैंने देखा है कि ख़्वाब की हालत में अज़ान दे रहा हूँ। आपने फ़रमाया तुझे इज़्ज़त नसीब होगी, कुछ अर्से के बाद उस शख़्स को इज़्ज़त मिली। दूसरे शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि वह अज़ान दे रहा है। इब्ने सीरीन ने फ़रमाया कि तुझे ज़िल्लत मिलेगी। वह शख़्स कुछ अर्से बाद चोरी के जुर्म में गिरफ़्तार हुआ, उसके हाथ काटे गए। इब्ने सीरीन के एक शागिर्द ने पूछा कि हज़रत दोनों ने एक जैसा ख़्वाब देखा, मगर ताबीर मुख़्तलिफ़ क्यों हुई? आपने इरशाद फ़रमाया कि जब पहले ने अज़ान देते हुए देखा तो मैंने उस शख़्स में नेकी के आसार देखे तो मुझे क़ुरआन की यह आयत

सामने आई– "और पुकार दे लोगों को हज के वास्ते," (हज, आयत 27)। मैंने ताबीर दी कि इसे इज़्ज़त मिलेगी। जब दूसरे ने ख़्वाब सुनाया तो उसके अन्दर फ़िस्क़ व फ़ुजूर के आसार थे। क़ुरआन मजीद की यह आयत मेरे सामने आई– "फिर पुकारा पुकारनेवाले ने, ऐ क़ाफ़िलावालो! तुम तो अलबत्ता चोर हो," (सूरह् यूसुफ़, आयत 70)। पस मैंने ताबीर यह ली कि उस शख़्स को ज़िल्लत मिलेगी, चुनांचे ऐसा ही हुआ।

मस्जिद के आदाब

(हमारी जमाअतें बहुत एहतिमाम से यह मज़मून पढ़ें)

मस्जिदें, अल्लाह का घर हैं और उसकी दरबारें हैं। दरबारे शाही के कुछ आदाब होते हैं, उन आदाब की ख़िलाफ़वर्ज़ी करनेवाला गुस्ताख़ समझा जाता है, और उन आदाब की रिआयत रखनेवाला बादशाह का मुक़र्रब भी होता है और उसके काम भी बनते हैं और उसकी ज़रूरतें भी पूरी होती हैं। क़ुरआन व हदीस में मसाजिद के आदाब व अहकाम बयान हुए हैं कि मसाजिद में क्या करना है और किन चीज़ों से बचना है। हमारी जमाअतें आम तौर से उन आदाब का ख़याल नहीं रखती हैं, इसलिए तफ़्सील से आदाबे-मस्जिद बयान कर रहे हैं ताकि जमाअतों में जानेवाले उन आदाब का ख़ास ख़्याल रखें।

(1) ख़ुदा की नज़र में रूए-ज़मीन का सबसे बेहतरीन हिस्सा वह है जहाँ मस्जिद तामीर हो, ख़ुदा से प्यार रखनेवाले की पहचान यह है कि वह मस्जिद से भी प्यार रखे। क़ियामत के ख़ौफ़नाक दिन में ख़ुदा उस शख़्स को अपने अर्श का साया नसीब फ़रमाएँगे जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता हो।

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعَةٌ يُّظِلُّهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظِلِّهٖ يَوْمَ لَاظِلَّ اِلَّاظِلُّهٗ وَفِيْهِمْ رَجُلٌ قَلْبُهٗ مُعَلَّقٌ فِي الْمَسَاجِدِ......

हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला सात क़िस्म के लोगों को अपने अर्श के साये में रखेंगे, जिस दिन कि उसके साये के

अलावा और कोई साया नहीं होगा, उन्हीं में एक वह शख़्स है जिसका दिल मस्जिद में अटका रहता है।

(मुत्तफ़िक़ (अलैह, रियाज़ुस्सालिहीन, बाबः फ़ज़्लुल-बका मिन ख़शियतिल्लाह)

(2) फ़र्ज़ नमाज़ें हमेशा मस्जिद में जमाअत से पढ़िए, मस्जिद में जमाअत और अज़ान का बाक़ायदा नज़्म रखिए और मस्जिद के निज़ाम से अपनी पूरी ज़िन्दगी को मुनज़्ज़म कीजिए। मस्जिद एक ऐसा मर्कज़ है कि मोमिन की पूरी ज़िन्दगी इसी के गिर्द घूमती है। हदीस में है—

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اِنَّ لِلْمَسَاجِدِ اَوْتَادًا الْمَلَائِكَةُ جُلَسَاؤُهُمْ اِنْ غَابُوْا يَفْتَقِدُوْنَهُمْ، وَاِنْ مَرِضُوْا عَادُوْهُمْ، وَاِنْ كَانُوْا فِيْ حَاجَةٍ عَانُوْهُمْ، وَقَالَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَلِيْسُ الْمَسْجِدِ عَلٰى ثَلَاثِ خِصَالٍ: اَخٌ مُّسْتَفَادٌ اَوْ كَلِمَةٌ مُّحْكَمَةٌ اَوْ رَحْمَةٌ مُّنْتَظِرَةٌ۔ (رواه احمد)

''हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) इरशाद फ़रमाते हैं कि जो लोग कसरत से मस्जिद में जमा रहते हैं वे मस्जिदों के खूंटे हैं, फ़रिश्ते उनके साथ बैठते हैं। अगर वे मस्जिद में मौजूद न हों तो फ़रिश्ते उन्हें तलाश करते हैं। अगर वे बीमार हो जाएँ तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं। आप (सल्ल०) ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि मस्जिद में बैठनेवाला तीन फ़ायदों में से एक फ़ायदा हासिल करता है। किसी भाई से मुलाक़ात होती है जिससे कोई दीनी फ़ायदा हो जाता है या कोई हिक्मत की बात सुनने को मिल जाती है, या अल्लाह की रहमत मिल जाती है जिसका हर मुसलमान को इंतिज़ार रहता है।''

(3) मस्जिद को साफ़-सुथरा रखिए, मस्जिद में झाड़ू दीजिए, कूड़ा करकट साफ़ कीजिए, ख़ुशबू सुलगाइए। हदीस में है —

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ امْرَءَةً سَوْدَاءَ كَانَتْ تَقُمُّ الْمَسْجِدَ فَفَقَدَهَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَأَلَ عَنْهَا بَعْدَ اَيَّامٍ، فَقِيْلَ لَهُ اِنَّهَا مَاتَتْ

فَقَالَ فَهَلاَّ آذَنْتُمُوْنِيْ فَاَتٰى قَبْرَهَا فَصَلّٰى عَلَيْهَا۔ (متفق علیه)

"अबू हुरैरह् (रज़ि०) से मरवी है कि एक काली औरत मस्जिद में झाड़ू लगाती थी। हुज़ूर (सल्ल०) ने कुछ दिनों तक उस औरत को नहीं पाया, तो उसके बारे में सवाल किया। हुज़ूर (सल्ल०) से कहा गया कि उसका तो इंतिक़ाल हो चुका है, तो हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे क्यों ख़बर न दी। हुज़ूर (सल्ल०) उसकी क़ब्र पर आए और नमाज़ पढ़ी।"

एक दूसरी हदीस में है —

وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: اَمَرَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبِنَاءِ الْمَسَاجِدِ فِي الدُّوْرِ، وَاَنْ تُنَظَّفَ وَتُطَيَّبَ۔ (رواه احمد ترمذی)

"हज़रत आइशा (रज़ि०) इरशाद फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने हमें हुक्म दिया कि महलों में मस्जिदें बनाएँ, मस्जिदों को साफ़- सुथरा रखें और मस्जिदों में ख़ुश्बू सुलगाएँ।"

(4) मस्जिद में सुकून से बैठिए और दुनिया की बातें न क़ीजिए। मस्जिद में शोर मचाना, ठट्ठा-मज़ाक़ करना, बाज़ार का भाव पूछना और बताना, दुनिया के हालात पर तबसिरा करना और ख़रीद व फ़रोख़्त का बाज़ार गर्म करना मस्जिद की बहुर्मती है। मस्जिद ख़ुदा की इबादत का घर है, उसमें सिर्फ़ इबादत कीजिए। इसी तरह मस्जिद में ऐसे छोटे बच्चों को न ले जाइए जो मस्जिद के एहतिराम का शुऊर न रखते हों और मस्जिद में पेशाब, पाख़ाना करें या थूकें। इसी तरह मस्जिद में तीर और तलवार न निकालें।" हदीस में है —

عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: جَنِّبُوْا مَسَاجِدَكُمْ صِبْيَانَكُمْ وَمَجَانِيْنَكُمْ وَشِرَاءَكُمْ وَبَيْعَكُمْ وَخُصُوْمَاتِكُمْ وَرَفْعَ اَصْوَاتِكُمْ وَاِقَامَةَ حُدُوْدِكُمْ وَسَلَّ سُيُوْفِكُمْ............(ابن ماجه باب یکره فی المسجد)

"हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मस्जिदों से दूर रखो : (यानी मस्जिदों में न ले जाओ) अपने बच्चों को, मजनूनों को,

ख़रीद व फ़रोख़्त को, झगड़ों को, शोर व गुल को, हुदूद क़ायम करने को, और तलवारों को निकालने को।'' (इब्ने माजा)

(5) मस्जिद में थूकने से एहतियात करो।

عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَلْبُصَاقُ فِی الْمَسْجِدِ خَطِيْئَةٌ وَّ كَفَّارَتُهَا دَفْنُهَا۔ (رواه البخاری ومسلم)

''हज़रत अनस (रज़ि०) से मरवी है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मस्जिद में थूकना गुनाह है और (अगर थूक दिया तो) उसका कफ़्फ़ारा उस थूक को साफ़ करना है।''

(बुख़ारी)

(6) अगर आपकी कोई चीज़ कहीं बाहर गुम हो जाए तो उसका एलान मस्जिद में न कीजिए। हदीस में है —

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: رَاَيْتُمْ مَّنْ يَّنْشُدُ ضَالَّةً فِی الْمَسْجِدِ فَقُوْلُوْا لَا رَدَّهَا اللّٰهُ عَلَيْهِ۔

''हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) से मरवी है कि हुज़ूर (सल्ल०) इरशाद फ़रमाते हैं कि जब तुम किसी को देखो कि वह मस्जिद में अपनी गुमशुदा चीज़ का एलान कर रहा है तो उसको बद्दुआ दो और कहो कि अल्लाह यह चीज़ तुझे वापस न करे।''

(7) मस्जिद को गुज़रगाह न बनाइए, मस्जिद के दरवाज़े में दाख़िल होने के बाद मस्जिद का यह हक़ है कि आप उसमें नमाज़ पढ़ें या बैठकर ज़िक्र व तिलावत करें।

(8) मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त पहले दायाँ पाँव रखिए और नबी करीम (सल्ल०) पर दुरूद व सलाम भेजिए, फिर यह दुआ पढ़िए। नबी करीम (सल्ल०) का इरशाद है : ''जब तुममें से कोई मस्जिद में आए तो पहले नबी करीम (सल्ल०) पर दुरूद भेजे और फिर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ (مسلم)

''ऐ ख़ुदा! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।''(मुस्लिम)

और मस्जिद में दाख़िल होने के बाद दो रकअत नफ़्ल पढ़िए। इस नफ़्ल को तहीयतुल-मस्जिद कहते हैं। इसी तरह जब कभी सफ़र से वापसी हो तो सबसे पहले मस्जिद पहुँचकर दो रकअत नफ़्ल पढ़िए, और इसके बाद अपने घर जाइए। नबी करीम (सल्ल०) जब भी सफ़र से वापस होते तो पहले मस्जिद में जाकर नफ़्ल पढ़ते और फिर अपने घर तशरीफ़ ले जाते।

(9) मस्जिद से निकलते वक़्त बायां पाँव बाहर रखिए और यह दुआ पढ़िए :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ (مسلم)

"ऐ ख़ुदा! मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।" (मुस्लिम)

(10) मस्जिद में बाक़ायदा अज़ान और नमाज़ बाजमाअत का नज़्म क़ायम कीजिए और मुअज़्ज़िन और इमाम उन लोगों को बनाइए जो अपने दीन व अख़्लाक़ में बहैसियत मज्मूई सबसे बेहतर हों। जहाँ तक मुमकिन हो कोशिश कीजिए कि ऐसे लोग अज़ान और इमामत के फ़राइज़ अंजाम दें जो मुआवज़ा न लें और अपनी ख़ुशी से अज्रे आख़िरत की तलब में इन फ़राइज़ को अंजाम दें।

(11) अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ें। नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने अज़ान सुनकर यह दुआ माँगी, क़ियामत के दिन वह मेरी शफ़ाअत का हक़दार होगा।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَانِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَانِ الَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ۔ (البخاری)

"ऐ अल्लाह! इस कामिल दावत और इस खड़ी होनेवाली नमाज़ के मालिक! मुहम्मद (सल्ल०) को अपना क़ुर्ब और फ़ज़ीलत अता फ़रमा और उनको उस मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ कर जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है।"

(12) मुअज़्ज़िन जब अज़ान दे रहा हो तो उसके कलिमात सुन-सुनकर आप भी दोहराइए, अलबत्ता जब वह *हय्य-अ-लस्सलाह* और

हय्य-अ-लल फ़लाह कहे तो उसके जवाब में कहिए : *ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीमि* और फ़ज्र की अज़ान में जब मुअज़्ज़िन *अस्सलातु ख़ैरुम-मिनन्नौम* कहे तो जवाब में यह कलिमात कहिए : *सदक़्-त व बरर-त*।

(13) तकबीर कहनेवाला जब '*क़दक़ामतिस्सलाह*' कहे तो जवाब में यह कलिमात कहिए : '*अक़ामल्लाहु व अदामहा*' यानी "ख़ुदा इसे हमेशा क़ायम रखे।"

(14) होशियार बच्चों को अपने साथ मस्जिद में ले जाइए, माओं को चाहिए कि वे तर्ग़ीब दे-देकर भेजें ताकि बच्चों में नमाज़ का शौक़ पैदा हो और मस्जिद में उनके साथ निहायत नर्मी, मुहब्बत और शफ़क़त का सुलूक कीजिए।

(15) मस्जिद में डरते लरज़ते जाइए और दाख़िल होते वक़्त '*अस्सलामु अलैकुम*' कहिए और ख़ामोश बैठकर इस तरह ज़िक्र कीजिए कि ख़ुदा की अज़्मत व जलाल आपके दिल पर छाया हुआ हो। हँसते-बोलते ग़फ़लत के साथ मस्जिद में दाख़िल होना, ग़ाफ़िलों और बेअदबों का काम है, जिनके दिल ख़ुदा के ख़ौफ़ से ख़ाली हैं। बाज़ लोग इमाम के साथ रुकूअ में शरीक होने और रकअत पाने के लिए मस्जिद में दौड़ते हैं, यह मस्जिद के एहतिराम के ख़िलाफ़ है। रकअ़त मिले या न मिले, संजीदगी, वक़ार और आजिज़ी के साथ मस्जिद में चलिए और भाग-दौड़ से परहेज़ कीजिए।

(16) मस्जिद में नमाज़ के लिए ज़ौक़ व शौक़ से जाइए। नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो लोग सुबह के अंधेरे में मस्जिद की तरफ़ जाते हैं, क़ियामत में उनके साथ कामिल रौशनी होगी, और यह भी फ़रमाया कि नमाज़ बाजमाअत के लिए मस्जिद में जानेवाले का हर क़दम एक नेकी को वाजिब करता और एक गुनाह को मिटाता है। (इब्ने हिब्बान)

(17) बाज़ लोग मसाजिद में अपने मोबाइल चार्ज करते हैं, यह सही नहीं

है। क्योंकि मस्जिद की तमाम चीज़ें मौक़ूफ़ा हैं और इस तरह की हरकत करना ख़ियामत है। अगर चार्ज करना ज़रूरी हो तो मस्जिद के इतराफ़ से किसी दुकान में चार्ज कर लें और अगर मस्जिद ही में चार्ज कर लिया तो अन्दाज़े से उतनी रक़म मस्जिद में दे दे। इसी तरह मस्जिद में दाख़िल होने से पहले मोबाइल बन्द कर दें, इसलिए कि उसकी घंटी से नमाज़ियों की नमाज़ों में ख़लल वाक़ेअ होगा।

(18) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स बावुज़ू फ़र्ज़ नमाज़ के लिए चलकर मस्जिद जाता है उसका सवाब मेहरम हाजी की तरह होता है और जो चाश्त की नमाज़ की ग़र्ज़ से चलकर जाता है और सिर्फ़ चाश्त की नमाज़ का इरादा ही उसको खड़ा करता है, उसका सवाब उमरा करनेवाले के सवाब के बराबर होता है। और (एक) नमाज़ के पीछे (दूसरी) नमाज़ इल्लिय्यीन में लिख दी जाती है। बुग़वी और तबरानी ने हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) की रिवायत से हदीस मज़्कूरा इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान की है जो शख़्स फ़र्ज़ नमाज़ के लिए पैदल चलकर मस्जिद गया तो यह नमाज़ नफ़्ली हज की तरह होगी, और जो शख़्स नफ़्ल नमाज़ के लिए पैदल चलकर गया तो यह नमाज़ नफ़्ल उमरा की तरह होगी।

(तफ़्सीर मज़हरी, जिल्द 8, पेज 382)

(19) अज़ान व इक़ामत सुनने की हालत में न कलाम करे, न सलाम करे और न सलाम का जवाब दे (यानी मुनासिब नहीं है और ख़िलाफ़े ऊला है)। अज़ान और इक़ामत के वक़्त क़ुरआन शरीफ़ भी न पढ़े और अगर पहले से पढ़ रहा है तो पढ़ना छोड़कर अज़ान या इक़ामत के सुनने और जवाब देने में मशग़ूल हो, यह अफ़ज़ल है और अगर पढ़ता रहे तब भी जाइज़ है। अगर इक़ामत के वक़्त दुआ में मशग़ूल हो तो मुज़ाइक़ा नहीं।

(फ़ज़ाइले अज़ान व इक़ामत, मुसन्निफ़ा : अब्दुर्रहमान हाशमी)

(20) मस्जिद में इजाज़त के बग़ैर पंखा और लाइट इस्तेमाल न करे।

हदीस और साहिबे हदीस का मक़ामे रफ़ीअ

हदीसे-क़ुदसी में वारिद है : لولاك لما خلقت الأفلاك

"ऐ महबूब! अगर आप न होते तो मैं कायनात को पैदा ही न करता"।

यानी अगर मोहसिने इंसानियत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की दुनिया में तशरीफ़ आवरी न होती तो यह जिन्न व बशर, शम्स व क़मर, शजर व हजर, बहर व बर्र, फूलों की महक, चिड़ियों की चहक, सब्ज़े की लहक, समा व समक, रफ़अत व पस्ती, ख़ुशहाली व बदहाली, ज़मीन की नर्मी, सूरज की गर्मी, दरिया की रवानी, कवाकिबे-आसमानी, ख़िज़ाँ व बहार, बयाबान व मर्ग़ज़ार, नबातात व जमादात, जवाहिर व मादनियात, जंगल के दरिन्दे, हवा के परिन्दे, ग़र्ज़ कायनात की किसी चीज़ का नाम व निशान न होता।

फ़ख़्रे मौजूदात, सय्यदुल अव्वलीन, महबूब रब्बुल आलमीन (सल्ल०) वह ज़ाते-सतूदा सिफ़ात हैं कि :

1. जिनकी ख़ातिर कायनाते हस्त व बूद को वुजूद मिला।
2. जिनकी बरकत से इंसानियत को शऊर मिला।
3. जिनके गले में लौला-क हार पहनाया गया।
4. जिनको (रफ़ाना ल-क-ज़िकर-क) का ताज पहनाया गया।
5. जिनकी बरकत से हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को सयादत का तमग़ा मिला।
6. जिनका कलिमा हज़रत सुलैमान (अलैहि०) की अंगूठी पर कुन्दा था।
7. जिनके हुस्न व जमाल का परतो हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) को मिला।
8. जिनके सब्र का नमूना हज़रत अय्यूब (अलैहि०) को मिला।
9. जिनके क़ुर्ब का एक लहज़ा हज़रत मूसा (अलैहि०) को मकालिमात की सूरत में मिला।
10. जिनके मर्तबे का एक हिस्सा हज़रत हारून (अलैहि०) को वज़ारत

की सूरत में मिला।

11. जिनकी नात का एक मिसरा हज़रत दाऊद (अलैहि०) का नग़मा बना।
12. जिनकी इफ़्फ़त का शमूमा अस्मते यह्या (अलैहि०) का जलवा बना।
13. जिनके दफ़्तरे हिक्मत की एक सतर हज़रत लुक़मान को नसीब हुई।
14. जिनकी रफ़अत व बुलन्दी की एक झलक हज़रत ईसा (अलैहि०) को नसीब हुई।
15. जिनका वुजूदे मसऊद दुआ-ए-ख़लील और नवेदे मसीहा बना।
16. जिनकी आमद की बरकत से लश्करे अबरहा क-असफ़िम-मअ्कूल बना।
17. जिनकी विलादत बासआदत से फ़ारस के आतिशकदे बुझे।
18. जिनको पैदाईश से ही सादिक़े अमीन का लक़ब मिला।
19. जिनकी अंगुश्त मुबारक के इशारे पर चाँद दो लख़्त हुआ।
20. जिनकी रिसालत की गवाही जमादात ने भी दी।
21. जिनके हिस्से में मेराज की अज़्मत आई।
22. जिनके दरे अक़दस के ख़ाके नशीन सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) बने।
23. जिनके ख़ुर्रमन ईमान के रेज़ा चीं फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) बने।
24. जिनके हया की किरन से उसमान (रज़ि०) ज़िन्नूरैन बने।
25. जिनके बहरे इल्म के छींटों से अली मुरतज़ा (रज़ि०) बाबुल-इल्म बने।
26. जिनके शहर को रब्बे कायनात ने "ब-लदे-अमीन" कहा।
27. जिनपर नाज़िल होनेवाली किताब को "किताबे-मुबीन" बतलाया।
28. जिनपर रब्बे करीम और उसके फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं।
29. जिनकी उम्मत को ख़ैरुल-उमम के नाम से याद करते हैं।

इस ख़ासा ख़ासाने-रुसुल के आदाब बजा लाने की ताकीद कीजिए। अल्लाह तआला का इरशाद है :

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهٖ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ

(سورۂ فتح، آیت: ۸، ۹)

"यक़ीनन हमने तुझे गवाही देनेवाला, ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा ताकि (ऐ मुसलमानो!) तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाओ और उनकी मदद करो और उनका अदब करो।"

(सुरह् फ़तह, अ 8-9)

हदीसे-नबवी अला साहिबुहिस्सलातु वस्सलाम का अदब

वह शाहे-उमम, वह सारापा जूदो-करम, वह माहे-फ़ज़्ल व कमाल, वह सारापा हुस्नो-जमाल कि :

30. जिनकी आमद की ख़ुशख़बरी हर इल्हामी किताब में दी गई।
31. जिनके नूरे-विलादत ने दुनिया को जगमगा दिया।
32. जिनके हुस्न व जमाल का तज़्किरा क़ुरआन मजीद में आया।
33. जिनके लुआबे-मुबारक ने कड़वे पानी को मीठा कर दिया।
34. जिनकी मुबारक उंगलियों से पानी का चश्मा उबल पड़ा।
35. जिनकी चश्मे मुबारक अगर मह्वे-ख़्वाब होती तो भी दिल मुबारक बेदार रहता।
36. जिनका मुबारक पसीना मुश्क व अम्बर से भी ज़्यादा ख़ुश्बूदार था।
37. जिनके जिस्मे अतहर पर मक्खी भी न बैठती थी।
38. जिनकी विलादत बा-सआदत पर शयातीन को आसमान पर जाने से रोक दिया गया।
39. जिनका क़रीन और मुवक्किल जिन्न भी मुसलमान हो गया।
40. जिनपर दुरूद व सलाम भेजना उम्मत के लिए वाजिब कर दिया गया।
41. जिनको रहमतुल-लिल-आलमीन बनाकर भेजा गया।

42. जिनके सर पर "नुसिर्तु बिर्रोब" का ताज सजाया गया।

43. जिनके हुजरे और मिम्बर का दर्मियानी हिस्सा बहिश्त के बाग़ों में से एक बाग़ है।

44. जिनको-क़ियामत के दिन मक़ामे-महमूद अता किया जाएगा।

45. जिनको हौज़े-कौसर कावाली बनाया जाएगा।

46. जिनकी उम्मत क़ियामत के दिन सब उम्मतों से ज़्यादा होगी।

47. जिनसे दीन की तब्लीग़ पर क़ियामत के दिन गवाही तलब की जाएगी।

48. जिनपर नाज़िल होनेवाली किताब, जन्नत में भी पढ़ी जाएगी।

49. जिनकी ज़बान अरबी अहले-जन्नत की ज़बान बना दी जाएगी।

50. जिनके ख़ैर-मक़दम के लिए कायनात को दुल्हन की तरह सजाया गया। बक़ौले-शख़्स :

किताब फ़ितरत के सरे वर्क़ पर जो नामे अहमद (सल्ल०) रक़म न होता। तो नक़शे-हस्ती उभर न सकता, वुजूदे लौहे-क़लम न होता॥
ज़मीं न होती फ़लक न होता, अरब न होता अजम न होता ।
यह महफ़िल कुन फ़िकाँ न होती अगर वह शाहे उमम न होता ॥

क़ाज़ी अयाज़ (रह०) किताबुश्शिफ़ा में फ़रमाते हैं कि वे तमाम चीज़ें जिनको सय्यदना रसूलुल्लाह (सल्ल०) से निस्बत है, उनकी ताज़ीम व तकरीम करना, हरमैन में आप (सल्ल०) के मुशाहिद व मसाकिन की ताज़ीम करना और वे चीज़ें जो आप (सल्ल०) के नाम से पुकारी जाती हों या जिनको आपने अपने दस्ते मुबारक से छुआ हो, उन सबका अदब व इकराम करना दर-हक़ीक़त नबी करीम (सल्ल०) ही के इकराम में दाख़िल है। सल्फ़े सालहीन का दस्तूर था कि जिन महफ़िलों में हदीस नबवी सुनी या सुनाई जाती उन महफ़िलों में बाअदब और बावक़ार बैठते, जिस तरह सहाबा किराम नबी करीम (सल्ल०) की ख़िदमत में बाअदब होकर बैठते थे। ये सब इसलिए था कि वह हदीसे रसूल के अदब को दर-हक़ीक़त रसूलुल्लाह (सल्ल०) का अदब तसव्वुर करते थे।

हदीसे मुबारक पढ़ने या पढ़ाने और सुनने या सुनाने की मजालिस के चन्द आदाब

(1) अफ़ज़ल दर्जा तो यह है कि गुस्ल कर लिया जाए, अगर यह न हो सके तो कम से कम बावुज़ू होकर शामिले मज्लिस होना चाहिए।

(2) जिस्म और कपड़ों पर ख़ुश्बू लगाना।

(3) दो-ज़ानू होकर बैठना।

(4) पढ़नेवाले के लिए हदीसे मुबारक ऊँची जगह पर बैठकर पढ़ना।

(5) जब हदीसे मुबारक पढ़ी जाए तो आवाज़ को पस्त रखना।

(6) सुननेवालों के लिए हदीसे मुबारक ख़ामोशी से सुनना।

(7) हदीसे मुबारक पढ़ने या पढ़ाने के दौरान अगर कोई मेहमान भी आ जाए तो उसकी ताज़ीम के लिए न उठना।

(8) अगर कोई हदीसे मुबारक पहले पढ़ी या सुनी हो तो उसे भी इस तरह पूरी तवज्जोह से सुनना जैसे पहली बार सुन रहा हो।

हदीस शरीफ़ के अदब के ताल्लुक़ से चन्द वाक़ियात

पहला वाक़िया

एक शख़्स ने हज़रत नानौतवी (रह०) को सब्ज़ रंग का निहायत ख़ूबसूरत जूता हदिया पेश किया, आपने हदिया को सुन्नत की नीयत से क़बूल फ़रमा लिया, मगर जूते को इस्तेमाल न किया। किसी के पूछने पर फ़रमाया : क़ासिम को ज़ैब नहीं देता कि गुंबदे-ख़िज़रा का रंग भी सब्ज़ हो और मेरे जूते का रंग भी सब्ज़ हो। सब्ज़ रंग का जूता पहनना मेरे नज़दीक बेअदबी है।

दूसरा वाक़िया

किसी शख़्स ने हज़रत गंगोही (रह०) को एक कपड़ा पेश करते हुए कहा कि यह मदीना मुनव्वरा से लाया हूँ। आपने उस कपड़े को बोसा

दिया और आँखों से लगाया। एक तालिबे इल्म ने कहा : हज़रत! यह तो ग़ैर मुल्की कपड़ा है, मदीने का बना हुआ तो नहीं है। हज़रत ने फ़रमायाः जिस मुल्क का भी बना हुआ हो, इसे दियारे महबूब (सल्ल०) की हवा तो लगी है। इश्क़े नबवी और अदबे नबवी की कितनी उम्दा मिसाल है।

तीसरा वाक़िया

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह०) के उस्ताद इमाम अब्दुर्रहमान बिन मेहदी (अल-मतूफ़ी 198 हिजरी) का यह मामूल था कि जब उनके सामने हदीसे पाक पढ़ी या सुनाई जाती तो वह लोगों को ख़ामोश रहने का हुक्म देते और फ़रमाते कि अपनी आवाज़ों को नबी अकरम (सल्ल०) की आवाज़ पर बुलन्द न करो और यह भी फ़रमाते कि हदीस शरीफ़ पढ़ते-पढ़ाते वक़्त ख़ामोश रहना उसी तरह लाज़िम है जिस तरह आपके दुनिया में इरशाद फ़रमाते वक़्त लाज़िम था। (मदारि-जुन्नबूवा)

चौथा वाक़िया

रईसुत्ताबिईन हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह०) (अल-मतूफ़ी 93 हिजरी) बीमार होने की वजह से एक पहलू पर लेटे हुए थे, इतने में एक शख़्स ने उनसे एक हदीस के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया : वह फ़ौरन उठकर बैठ गए और हदीस बयान की। साइल ने कहा कि आपने इतनी तकलीफ़ क्यों की। फ़रमाया : मैं इस चीज़ को पसन्द नहीं करता कि नबी अकरम (सल्ल०) की हदीस करवट के बल लेटे-लेटे बयान करूँ।

(मदारि-जुन्नबूवा, जिल्द 1, पेज 541)

पाँचवाँ वाक़िया

जब लोग इमाम मालिक (रह०) के पास इल्म हासिल करने के लिए आते तो एक ख़ादिमा उन लोगों से पहले दरयाफ़्त करती कि हदीस मुबारक के लिए आए हो या फ़िक़्ही मसाइल मालूम करने के लिए? अगर वे कहते कि मसाइल मालूम करने के लिए आए हैं तो इमाम मालिक फ़ौरन निकल आते। अगर वे कहते कि हम हदीस मुबारक की

समाअत के लिए आए हैं, तो इमाम मालिक ग़ुस्ल करके ख़ुश्बू लगाते और नया लिबास ज़ेबतन करके बाहर तशरीफ़ लाते। आपके लिए एक तख़्त बिछाया जाता, जिसपर बैठकर आप हदीस बयान फ़रमाते। इसना-ए-रिवायत मज्लिस में ऊद (ख़ुश्बू) की धुनी दी जाती। किसी तालिबे इल्म ने इस एहतिमाम की वजह पूछी तो फ़रमाया : मैं चाहता हूँ कि इस तरह सय्यदना रसूलुल्लाह (सल्ल०) की हदीस की ताज़ीम करूँ।

छठा वाक़िया

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ (रह०) एक मर्तबा दर्से हदीस में मशग़ूल थे कि उन्हें सख़्त प्यास की वजह से हलक़ इतना ख़ुश्क महसूस हुआ कि बोलना भी मुश्किल हो गया। उन्होंने एक तालिबे इल्म से फ़रमाया : पानी ले आओ। तालिबे इल्म जब घर पहुँचा और पीने के लिए पानी तलब किया तो शाह वलीउल्लाह महद्दिस देहलवी (रह०) यह सुनकर बहुत परेशान हुए और फ़रमाया : "अफ़सोस! हमारे ख़ानदान से इल्म रुख़्सत हो गया।" अहलिया साहिबा ने कहा कि आप जल्दी न करें, चुनांचे उन्होंने पानी के गिलास में सिरका मिलाकर भेजा। शाह अब्दुल अज़ीज़ (रह०) ने पी लिया और उन्हें पता ही न चला कि पानी में सिरका मिला हुआ है। जब शाह वलीउल्लाह (रह०) को यह सूरते हाल मालूम हुई तो फ़रमाया : "अलहम्दुलिल्लाह! अभी हमारे ख़ानदान में इल्म बाक़ी है।"

सातवाँ वाक़िया

इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) अदब की वजह से इमामे-आज़म बने। हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा (रह०) अपनी वालिदा का बहुत अदब व एहतिराम किया करते थे, जब कभी उनकी वालिदा साहिबा को मसला मालूम करना होता तो वह एक सिने रसीदा फ़क़ीह से दरयाफ़्त करतीं, ऐसे मौक़े पर इमामे-आज़म अबू हनीफ़ा (रह०) अपनी वालिदा को ऊँट पर सवार करते और ख़ुद नकैल पकड़ कर पैदल चलते। जब लोग देखते तो अदब व एहतिराम की वजह से रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े होकर

सलाम करते। इमामे-आज़म अबू हनीफ़ा (रह०) की वालिदा उनसे मसला दरयाफ़्त करतीं। कई बार ऐसा होता कि मामर फ़क़ीह को मसले का सही हल मालूम न होता तो वह ज़ेरे लब इमामे-आज़म अबू हनीफ़ा (रह०) से पूछ लेते। फिर ऊँची आवाज़ से आपकी वालिदा को बता देते। इमामे-आज़म अबू हनीफ़ा (रह०) की तवाज़ो और अदब का यह आलम था कि सारी ज़िन्दगी अपनी वालिदा पर यह ज़ाहिर न होने दिया कि जो मसाइल आप उनसे पूछती हैं वह मैं ही तो बताता हूँ। यह सब इसलिए था कि वालिदा साहिबा की तबीयत जिस तरह मुत्मइन होती है होनी चाहिए, इस अदब व एहतिराम के सदक़े ही इमामे आज़म बने।

आख़िर में दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको हदीस और साहिबे हदीस का अदब करने की भरपूर तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, इसलिए कि अदब ही से इंसान दर्जए-कमाल को पहुँचता है और बेअदब महरूम रहता है।

सात अजीबो-ग़रीब सवाल और सात अजीबो-ग़रीब जवाब

एक आदमी इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के पास आया और एक अजीबो-ग़रीब सवाल किया कि आप उस शख़्स के बारे में क्या कहते हैं, जो –

1. बिन देखे गवाही देता है।
2. यहूद व नसारा के क़ौल की तस्दीक़ करता है।
3. अल्लाह की रहमत से दूर भागता है।
4. मुरदार खा लेता है।
5. जिसकी तरफ़ अल्लाह ने बुलाया हो उसकी परवाह न करता हो।
6. जिससे अल्लाह ने डराया हो उसका ख़ौफ़ न करता हो।
7. फ़ितने को महबूब रखता हो।

इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) ने फ़रमाया : वह शख़्स मोमिन है।

सवाल पूछनेवाला बड़ा हैरान हुआ, कहने लगा : जी वह कैसे? फ़रमाया :

(1) देखो! तुमने कहा कि बिन देखे गवाही देता हो; तो मोमिन अपने परवरदिगार को बिन देखे गवाही देता है।

(2) देखो! तुमने कहा कि यहूद व नसारा के क़ौल की तस्दीक़ करता हो; क़ुरआन में आया है :

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ (سورة بقرة ۱۱۳)

"यहूद कहते हैं कि नसरानी हक़ पर नहीं और नसरानी कहते हैं कि यहूदी हक़ पर नहीं।" तो मोमिन उन दोनों के इस क़ौल की तस्दीक़ करता है।

(3) देखो! तुमने कहा कि अल्लाह की रहमत से दूर भागता है। तो देखो! बारिश अल्लाह की रहमत है, और बारिश से तो हर बन्दा भागता है कि कहीं कपड़े न भीग जाएँ।

(4) देखो! तुमने कहा कि मुरदार खाता है; तो मछली मुर्दा होती है, उसको तो हर बन्दा मज़े ले-लेकर खाता है।

(5) देखो! तुमने कहा कि जिसकी तरफ़ अल्लाह ने बुलाया है उसकी तरफ़ रग़बत नहीं करता; पस वह जन्नत है कि अल्लाह ने उसकी तरफ़ बुलाया है : (वल्लाहु यदऊ इला दारिस्सलाम) मगर उसको मुशाहिद-ए-हक़ इतना मत्लूब है, अल्लाह की रज़ा इतनी मत्लूब है कि महबूबे हक़ीक़ी की तरफ़ से नज़र हटाकर वह जन्नत की तरफ़ नज़र डालना कभी पसन्द नहीं करता।

(6) देखो! तुमने कहा कि जिससे अल्लाह ने डराया है उससे वह डरता नहीं; तो वह दोज़ख़ है, उसको अपने महबूब की नाराज़गी की इतनी फ़िक्र रहती है कि जहन्नम में जलने की परवाह नहीं करता।

(7) देखो! तुमने कहा कि उसे फ़ितना महबूब है; पस औलाद को क़ुरआन में फ़रमाया गया : (*इन्नमा अमवालुकु व औलादुकु फ़ित-*

नतन) (सूरह् तग़ाबुन, आयत 15) और औलाद से हर शख़्स को तबअी मुहब्बत होती है। पस वह शख़्स मोमिन है, सवाल पूछनेवाला हैरान रह गया।

एक और आदमी हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के पास आया और कहने लगा कि मैंने सुना है कि आप हर सवाल का जवाब देते हैं। फ़रमाया कि तुम भी पूछो। कहने लगा : आप यह बताएँ कि पाख़ाना मीठा होता है या नमकीन? आपने फ़रमाया कि मीठा होता है। कहने लगा : आपके पास इसकी दलील क्या है? फ़रमाया कि नमकीन चीज़ पर मक्खियाँ नहीं बैठतीं, हमेशा मीठी चीज़ पर बैठती हैं।

हज़रत फ़ातिमा ने रोते हुए कहा कि ऐ अल्लाह! तेरी रातें बहुत छोटी हो गई हैं मैंने दो रकअत की नीयत की और तेरी रात ख़त्म हो गई

एक वक़्त था कि औरतें सारा दिन घर के काम काज में मसरूफ़ रहती थीं और जब रात आती तो मुसल्ले पर रात गुज़ार दिया करती थीं। सय्यदा फ़ातिमा ज़ोहरा (रज़ि०) के बारे में आता है कि सर्दियों की लम्बी रात थी, इशा की नमाज़ पढ़कर दो रकअत नफ़्ल की नीयत बाँध ली। तबीयत में ऐसा सुरूर था, ऐसा मज़ा था कि तिलावते-क़ुरआन में ऐसी हलावत नसीब हुई कि पढ़ती रहीं, यहाँ तक कि जब सलाम फेरा तो देखा कि सुबह का वक़्त होने को है, तो रोने बैठ गईं और यह दुआ करने लगीं कि ऐ अल्लाह! तेरी रातें भी छोटी हो गईं कि मैंने दो रकअत की नीयत बाँधी और तेरी रात ख़त्म हो गई।

एक वे औरतें थीं जिनको रातों के छोटा होने का शिकवा हुआ करता था, आज हमारी माएँ-बहनें हैं जिनमें से क़िस्मतवालियों को पाँच वक़्त की माज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब होती हैं।

आपका शौहर जब तिजारत के लिए जाए तो आप चाश्त की नमाज़ पढ़कर बरकत की दुआ करें तो रोज़ी में बरकत होगी

एक वक़्त था जबकि ख़ाविन्द हज़रात तिजारत के लिए घर से निकला करते थे तो उनकी बीवियाँ मुसल्ले पर बैठकर चाश्त की नमाज़ें पढ़ा करती थीं। उनकी बीवियाँ अपने दामन फैलाकर अल्लाह से दुआएँ माँगती थीं कि ऐ अल्लाह! मेरा ख़ाविन्द इस वक़्त रिज़्क़े हलाल के लिए घर से निकल पड़ा है, उसके रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा, उसके काम में बरकत अता फ़रमा, औरत रो-रोकर दुआ माँग रही होती थी और अल्लाह तआला मर्द के काम में बरकत दे देते थे।

मुसलमान मुआशिरे में औरत घर की मलिका का दर्जा रखती है। लिहाज़ा घर के माहौल का दारोमदार औरत की दीनदारी पर मौक़ूफ़ होता है। औरतें अगर नेक-तबा होंगीं तो बच्चों को भी दीनी रंग से रंग देंगी। पस मुसलमान लड़कियों और औरतों को दीनी तालीम और अख़्लाक़ी तर्बियत पर बिल ख़ुसूस मेहनत की ज़रूरत है। किसी ने सच कहा है, "मर्द पढ़ा फ़र्द पढ़ा, औरत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा।" दानायाने फ़िरंग में से किसी का क़ौल है कि "तुम मुझे अच्छी माएँ दो मैं तुम्हें अच्छी क़ौम दूँगा।"

उम्मते मुस्लिमा को मुसलमान लड़कियों की दीनी तालीम व तर्बियत पर मेहनत करने की ज़्यादा ज़रूरत है ताकि हमारी आनेवाली नस्लें माँ की गोद से ही दीन की मुहब्बत और उम्दा अख़्लाक़ की दौलत पाएँ और उफ़ुक़े आलम पर आफ़ताब व माहताब की तरह नूर बरसाएँ।

पहले ज़माने में औरतें रोटियाँ पकाते-पकाते कई पारे क़ुरआन पढ़ लिया करती थीं

जिस तरह मर्द इबादत करके अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ताल्लुक़ हासिल कर सकता है उसी तरह औरत भी इबादत करके अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ताल्लुक़ और उसकी मारफ़त हासिल कर सकती है। एक

4

सहाबिया (रज़ि०) ने तन्नूर पर रोटियाँ पकवाईं और उनको अपने सर पर रखा और चलते हुए कहने लगी, ऐ बहन! मेरें तो तीन पारे भी मुकम्मल हो गए, और मेरी रोटियाँ भी पक गईं। तब पता चला कि ये औरतें जितनी देर रोटी पकने के इंतिज़ार में बैठती थीं उनकी ज़बान पर क़ुरआन जारी रहता था, यहाँ तक कि उस दौरान में तीन-तीन पारे क़ुरआन की तिलावत कर लिया करती थीं।

पहले ज़माने में माएँ बच्चों को दूध पिलाते-पिलाते कई पारे क़ुरआन पढ़ लेती थीं

आज है कोई माँ जो कहे कि मैं बच्चे का यक़ीन अल्लाह के साथ बनाती हूँ? है कोई माँ जो कहे कि मैं तो सुबह-शाम खाना खिलाते हुए अपने बच्चे को तर्ग़ीब देती हूँ कि हर हाल में सच बोलना है? इन चीज़ों की तरफ़ तवज्जह ही नहीं होती। बाप ज़रा-सी नसीहत कर दे तो माँ फ़ौरन कहती है : बड़ा होगा तो ठीक हो जाएगा। हालांकि बचपन की बुरी आदतें बाद में नहीं छूटतीं। आज तर्बियत न होने की वजह से औलाद जब बड़ी होती है तो वह अपने बाप से यूँ नफ़रत करती है जैसे पाप से नफ़रत की जाती है।

एक वक़्त था कि औरत सुबह की नमाज़ पढ़ा करती थी और बच्चों को अपनी गोद में लेकर कभी सूरह् यासीन पढ़ रही होती थी, कभी सूरह् वाक़िआ पढ़ रही होती थी, उस वक़्त बच्चे के दिल में अनवारात उतर रहे होते थे। आज वे माएँ कहाँ गईं जो सुबह के वक़्त बच्चे को गोद में लेकर क़ुरआन पढ़ा करती थीं? आज तो सूरज निकल जाता है, मगर बच्चा भी सोया हुआ होता है, माँ भी सोई हुई होती है। शाम का वक़्त होता है, बच्चे को माँ ने गोद में डाला। इधर सीने से लगाकर दूध पिला रही है, साथ ही बैठी टीवी पर ड्रामा देख रही है। ऐ माँ! जब तू ड्रामे में ग़ैर मेहरम को देखेगी, मौसीक़ी सुनेगी और ग़लत काम करेगी और ऐसी हालत में बेटे को दूध पिलाएगी तो बता तेरा बेटा बग़दादी (रह०) कैसे बनेगा! बता कि तेरा बेटा अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) कैसे बनेगा?

हीरा तुम ढूँढ़ना और क़ीमत हम लगा देंगे

बहावलपुर में एक नवाब साहब ने मदरसा बनवाया। उसने मक़ामी उलमा से कहा कि इमारत मैं बनवा देता हूँ, मगर आबाद कैसे होगा? उलमा ने कहा कि हम आपको एक ऐसी शख़्सियत के बारे में बताएँगे; आप उन्हें ले आना मदरसा चल जाएगा। उसने कहा : हीरा तुम ढूंढ़ना और क़ीमत हम लगा देंगे। नवाब साहब को बड़ा नाज़ था पैसे का। चुनांचे जब इमारत बन गई तो उसने उलमा से पूछा : बताओ कौन-सा हीरा ढूँढ़ा है? कहने लगे : क़ासिम नानौतवी। उसने उलमा से पूछा कि हज़रत की तनख़ाह कितनी होगी? उन्होंने कहा कि हज़रत की तनख़्वाह चार-पाँच रुपये होगी। उस दौर में इतनी ही तनख़ाह होती थी। कहने लगा : जाओ! और मेरी तरफ़ से हज़रत को सौ रुपये माहाना का पैग़ाम दे दो। अब जिस आदमी को पाँच रुपये के बजाए सौ रुपये मिलना शुरू हो जाएँ, तो कितना फ़र्क़ है। चुनांचे उलमा बड़े ख़ुश हुए, जी हाँ! अब तो हज़रत ज़रूर जाएँगे। देवबन्द जाकर हज़रत (रह०) से मिले। हज़रत ने उनकी ख़ूब ख़ातिर तवाज़ो फ़रमाई। पूछा, कैसे आना हुआ? कहने लगे : हज़रत! नया मदरसा बनाया है, आप वहाँ तशरीफ़ लाएँ। नवाब साहब ने आपके लिए सौ रुपये माहाना मुशाहिरा मुक़र्रर किया है। हज़रत ने फ़रमाया : बात यह है कि मेरा मुशाहिरा तो पाँच रुपया है, उसमें से तीन रुपये मेरे ज़ाती ख़र्चे के हैं और दो रुपये मैं ग़रीबों, मिस्कीनों और यतीमों में ख़र्च करता हूँ। अगर मैं वहाँ चला गया और सौ रुपये तनख़ाह हो गई तो मेरा ख़र्च तो तीन रुपये रहेगा और बाक़ी सत्तानवे रुपये ग़रीबों में तक़्सीम करने के लिए मुझे सारा दिन उनको ही ढूँढ़ना पड़ेगा और मैं पढ़ा नहीं सकूँगा, लिहाज़ा मैं वहाँ नहीं जा सकता। ऐसी दलील दी कि उन उलमा की ज़बानें गुँगी हो गईं। इसे ज़ुहद-फ़िद्दुनिया कहते हैं।

हमारे अकाबिरीन इल्म के साथ-साथ अदब का भी एहतिमाम फ़रमाया करते थे। हज़रत थानवी (रह०) फ़रमाते थे कि मैंने हमेशा चार बातों की पाबन्दी की है : (1) एक तो यह कि मेरी लाठी का जो सिरा

ज़मीन पर लगता था उसको कभी काबे की तरफ़ करके नहीं रखा। मैंने बैतुल्लाह शरीफ़ का इतना एहतिराम किया। (2) दूसरी बात यह कि मैं अपने रिज़्क़ का इतना एहतिराम करता था कि चारपाई पर बैठता तो खुद हमेशा पाइंती की तरफ़ बैठता और खाने को सरहाने की तरफ़ रखता, इस तरह बैठकर खाना खाता था। (3) तीसरी बात यह कि जिस हाथ से तहारत करता था उस हाथ में पैसे नहीं पकड़ता था, क्योंकि यह अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ है। (4) चौथी बात यह कि जहाँ मेरी किताबें पड़ी होती हैं मैं अपने इस्तेमालशुदा कपड़ों को उन दीनी किताबों के ऊपर कभी नहीं लटकाया करता था।

एक बार मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह (रह०) ने तलबा से पूछा कि बताओ अनवर शाह कश्मीरी (रह०) इतने ज़्यादा मशहूर क्यों हो गए? किसी ने कहा : अच्छे मुफ़स्सिर थे। किसी ने कहा : अच्छे महद्दिस थे, अच्छे शायर थे, वह मंतिक़ अच्छी जानते थे। फ़रमाया नहीं, किसी ने यही सवाल एक मर्तबा हज़रत कश्मीरी (रह०) से पूछ लिया तो फ़रमाया : दो बातें मेरे अन्दर थीं :

(1) जब मुताला करता था तो बावुज़ू करता था। (2) जब मुझे किताब का हाशिया पढ़ने की ज़रूरत पड़ती थी और हाशिये दूसरी तरफ़ होता तो मैं अपनी जगह छोड़कर दूसरी तरफ़ आकर हाशिया पढ़ लेता था। हदीस की किताबों को मैंने कभी अपने ताबेअ नहीं किया।

उलमा की तीन क़िस्में

सुफ़ियान सौरी (रह०) फ़रमाते हैं कि उलमा की तीन क़िस्में हैं :

(1) आलिम बिल्लाह और आलिम बिअमरिल्लाह, यह वह आलिम है जो अल्लाह से डरता और उसके हुदूद व फ़राइज़ को जानता है।

(2) सिर्फ़ आलिम बिल्लाह, जो अल्लाह से तो डरता है लेकिन उसके हुदूद व फ़राइज़ से बेइल्म है।

(3) सिर्फ़ आलिम बिअमरिल्लाह, जो हुदूद व फ़राइज़ से बाख़बर है लेकिन ख़शीयते इलाही से आरी है। (तफ़्सीर मस्जिद नबवी, पेज 1225)

लोगों की बद-आमालियों के बाइस ख़ुश्की और तरी में फ़साद फैल गया है

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

(سورۃالروم:۴۱)

"ख़ुश्की और तरी में लोगों की बद-आमालियों के बाइस फ़साद फैल गया। इसलिए कि उन्हें उनके बाज़ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखा दे (बहुत) मुमकिन है कि वह बाज़ आ जाएँ।" (सुरह: रूम : 41)

तशरीह : ख़ुश्की से मुराद इंसानी आबादियाँ और तरी से मुराद समुन्द्र, समुन्द्री रास्ते और साहिली आबादियाँ हैं। फ़साद से मुराद हर वह बिगाड़ है जिससे इंसानों के मुआशिरे और आबादियों में अम्न व सुकून तह व बाला और उनके ऐश व आराम में ख़लल वाक़ेअ हो। इसलिए इसका इतलाक़ मआसी व सय्यिआत पर भी सही है कि इंसान एक-दूसरे पर ज़ुल्म कर रहे हैं। अल्लाह की हदों को पामाल और अख़्लाक़ी ज़ाब्तों को तोड़ रहे हैं और क़त्ल व ख़ूँरेज़ी आम हो गई है, और उन अरज़ी व समावी आफ़ात पर भी उसका इतलाक़ सही है जो अल्लाह की तरफ़ से बतौर सज़ा व तंबीह नाज़िल होती हैं। जैसे क़हत, कसरते मौत, ख़ौफ़ और सैलाब वग़ैरह्। मतलब यह है कि जब इंसान अल्लाह की नाफ़रमानी को अपना वतीरा बना लें तो फिर मकाफ़ात अमल के तौर पर अल्लाह तआला की तरफ़ से इंसानों के आमाल व किरदार का रुख़ बुराइयों की तरफ़ फिर जाता है और ज़मीन फ़सादा से भर जाती है। अम्न व सुकून ख़त्म हो जाता है और उसकी जगह ख़ौफ़ व दहशत, सल्बो-नहब और क़त्ल व ग़ारतगरी आम हो जाती है। इसके साथ-साथ बाज़ दफ़ा आफ़ात अरज़ी व समावी का भी नुज़ूल होता है। मक़्सद इससे यही होता है कि इस आम बिगाड़ या आफ़ाते इलाहिया को देखकर शायद लोग गुनाहों से बाज़ आ जाएँ, तौबा कर लें और उनका रुजूअ् अल्लाह की तरफ़ हो जाए।

इसके बरअक्स जिस मुआशिरे का निज़ाम इताअते इलाही पर क़ायम हो और अल्लाह की हदें नाफ़िज़ हों, ज़ुल्म की जगह अद्ल का दौर-दौरा हो, वहाँ अम्न व सुकून और अल्लाह की तरफ़ से ख़ैर व बरकत का नुज़ूल होता है। एक हदीस में आया है : "ज़मीन में अल्लाह की एक हद का क़ायम होना, वहाँ के इंसानों के लिए चालीस दिन की बारिश से बेहतर है।" (नसई, इब्ने माजा)

इसी तरह यह हदीस है कि "जब एक बदकार (फ़ाजिर) आदमी फ़ौत हो जाता है तो बन्दे ही उससे राहत महसूस नहीं करते बल्कि शहर भी, दरख़्त और जानवर भी आराम पाते हैं।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सकरातुल मौत। मुस्लिम, किताब जनाइज़ बाब माजा फ़ी मस्तरीह व मस्तराह मिन्हु; बहवाला तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 1135)

देहात में औरतों के लिए तालीम की अहमियत व ज़रूरत

मुस्लिम समाज में लड़कियाँ बनिस्बत लड़कों के मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पाबन्दियों का शिकार हैं। शरीअत ने उनपर जो पाबन्दियाँ आयद की हैं वह बिल्कुल दुरुस्त हैं और वह उनपर अमल पैरा होकर कामयाबी से हमकिनार हो सकती हैं। इसके बरअक्स हालात के मद्दे-नज़र लोगों का लड़कियों के तयीं पुराना रवैया इख़्तियार करना कहाँ तक दुरुस्त है?

लड़के किसी हद तक अपने मुस्तक़बिल को अपने तसुव्वर में ला सकते हैं, लेकिन लड़कियों के लिए शादी से पहले अपने मुस्तक़बिल का तसव्वुर करना एक निहायत ही मुश्किल काम है। क्योंकि एक लड़की यह नहीं जानती कि उसकी आनेवाली ज़िन्दगी किस गाँव, देहात या किस शहर में गुज़रेगी। गाँव या देहात के मुक़ाबले शहर में पढ़े लिखे लोगों की कसरत है, जिसकी वजह से शहरों में शादी से पहले लड़कियाँ किसी तरह की पाबन्दियों का शिकार नहीं होतीं और अपने बेहतर मुस्तक़बिल के बारे में आसानी से ग़ौर व फ़िक्र कर लेती हैं। इसके बरख़िलाफ़ गाँव-देहात में वालिदैन नाक़िस इल्म की वजह से अपने घर की लड़कियों को

पुराने रस्म व रिवाज की ज़ंजीरों में जकड़े रहते हैं। जैसे लड़कियों की पढ़ाई को फ़िज़ूल समझना, घर से बाहर आने-जाने पर पाबन्दी लगाना वग़ैरह। बहरहाल इसे वालिदैन की लापरवाही नहीं कह सकते बल्कि इन सब बातों से माँ-बाप का अपनी औलाद के तयीं शफ़क़त व मुहब्बत का फ़ितरी जज़्बा ज़ाहिर होता है। गाँव-देहात के वालिदैन का अपनी लड़कियों के ताल्लुक़ से क़दीम तर्ज़ का यह रवैया अपनी जगह दुरुस्त हो सकता है। लेकिन क्या यह रवैया उन बच्चियों को अपने ताल्लुक़ से फ़ैसला करने में मुआविन व मददगार साबित हो सकता है? जी नहीं, बल्कि इस तरह उनकी ख़ुद एतिमादी की दीवार खोखली पड़ जाएगी और वह कमज़ोर हो जाएँगी और यही कमज़ोरियाँ शादी के बाद ससुराल में होनेवाले ज़ुल्म व सितम का सबब बनती हैं, और ज़ाहिर है कि बच्ची पर ढाए जानेवाले मज़ालिम से माँ-बाप भी सदमों से दोचार होते हैं। उस वक़्त उन्हें यह ख़्याल आता है कि काश, हमने अपनी बच्ची को पढ़ाया होता तो आज यह दिन देखना न पड़ता और कोई बिला वजह हमारी बच्ची पर ज़ुल्म ढाने की कोशिश न करता! लेकिन अफ़सोस कि उस वक़्त का उनका पछताना किसी काम नहीं आता।

गाँव और देहात के लोगों को चाहिए कि वे अपनी लड़कियों की तालीम की तरफ़ तवज्जोह दें और फ़रसूदा रस्म व रिवाज की बन्दिशों से उन्हें आज़ाद करें ताकि वे इस नए दौर में, अदब के दायरे में रहकर दूसरों के मुक़ाबले खड़ी रह सकें और अपना दिफ़ाअ (बचाव) कर सकें।

हम सभी जानते हैं कि आए दिन गांव की लड़कियाँ सुसरालवालों के ज़ुल्म का शिकार होती रहती हैं। हर चन्द कि यह मामला शहरों में भी पेश आता है। लेकिन यहाँ उनके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने के लिए कई तन्ज़ीमें मौजूद हैं। अलबत्ता गाँव में अगर किसी औरत पर ज़ुल्म होता है तो गांव में उसे इंसाफ़ दिलानेवाला न कोई इदारा मौजूद है और न तन्ज़ीमें और न ही वे ख़ुद अपना हक़ हासिल कर पाती हैं। इस ज़ुल्म से बचने का बेहतरीन हथियार तालीम है, जिससे हर एक को इस्तिफ़ादा करना चाहिए ताकि वह अपने पैरों पर खड़ी हो जाएँ और ख़ुद कफ़ील हो जाएँ। लड़की एक बार ख़ुद कफ़ील हो गई तो उसे मुस्तक़बिल के

ताल्लुक़ से इतनी फ़िक्र नहीं रह जाती, बल्कि वह अपने मुस्तक़बिल को ख़ुद बनाने और सँवारने लगती है।

गाँव की लड़कियों में तालीम का रुझान बढ़ाने के लिए शहर के पढ़े-लिखे तबक़ात की औरतों को चाहिए कि वे सब एक होकर अपनी मसरूफ़ियात से थोड़ा-सा वक़्त निकालकर अपने इतराफ़ के गांव में ख़वातीन को तालीम से रौशनास कराएँ और उनमें तालीम के लिए बेदारी पैदा करें।

बूढ़े माँ-बाप का हर हाल में ख़याल रखिए

बूढ़े आम तौर पर बोझ समझे जाते हैं और बहुत से घरों में उनकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं होती। उनके मशविरों और नसीहतों को बकवास समझा जाता है। कारोबार करने और पेंशन पानेवाले बुज़ुर्गों को बर्दाश्त कर लिया जाता है, मगर जिन बुज़ुर्गों की आमदनी का कोई ज़रिया नहीं होता वह पूरी तरह से घरवालों के रहम व करम पर होते हैं और उनकी हालत दिगर गूँ होकर रह जाती है। कहने का मतलब यह है कि जब तक ऐसे बुज़ुर्ग जो कमाकर लाते हैं या कारोबार करते हैं या फिर पेंशन पाते हैं तब तक उनकी ख़िदमत में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी जाती और उन्हें बोझ नहीं समझा जाता। वक़्त पर खाना ही नहीं बल्कि वक़्तन-फ़- वक़्तन घरवालों का प्यार भी उमड़ता रहता है और बीमार होने पर उनकी तीमारदारी भी की जाती है क्योंकि वे दवाओं का ख़र्च ख़ुद बर्दाश्त करते हैं।

ऐसे बुज़ुर्गों की भी इज़्ज़त की जाती है जिनके नाम ज़मीन और जायदाद होती है और उनकी तीमारदारी या उनपर मुहब्बतें इसलिए लुटाई जाती हैं कि उन्हें उस जायदाद में से हिस्सा मिल जाए, यानी कमानेवाले, कारोबार करनेवाले या बेशुमार दौलत रखनेवाले बुज़ुर्गों को सर आँखों पर बिठाया जाता है। वह भी उस वक़्त तक जब तक उनके पास दौलत होती है या वे कमाने के क़ाबिल होते हैं। जहाँ उनके पास दौलत ख़त्म हो जाती है या वे कमाने के लायक़ नहीं रह जाते, उन्हें बोझ समझा जाने

लगता है। ऐसा हर घर में नहीं होता, लेकिन बेशतर घरों में बुज़ुर्गों को इसी सूरते-हाल क़ा सामना करना पड़ रहा है।

बात वहीं पर आकर रुक जाती है कि आख़िर इसका ज़िम्मेदार है कौन? क्या वे बच्चे हैं जिनकी परवरिश उन्हीं बुज़ुर्गों ने बड़े नाज़ व नअम से तो की, लेकिन उन्हें बुज़ुर्गों की इज़्ज़त और ख़िदमत का सलीक़ा नहीं सिखाया? उन्हें यह नहीं बताया कि वह भी अपने बच्चों के बीमार होने पर उन्हें बोझ नहीं समझा करते थे। उन्होंने कभी यह सोचकर उन्हें तालीम से महरूम नहीं रखा कि छोड़ो कौन तालीम दिलवाए? कहाँ से मैं इतने पैसे ख़र्च करूँ? उन्होंने अपने बच्चों को भी यह एहसास नहीं होने दिया कि उन्हें अच्छे और उम्दा लिबास पहनने के लिए दिन-रात कितनी मेहनत करनी पड़ी थी। उनका पेट भरने के लिए बाज़ औक़ात वे ख़ुद भूखे सो जाया करते थे लेकिन उन्हें पेट भर खाना खिलाए बग़ैर कभी नहीं सुलाया। बच्चों का मुस्तक़बिल सँवारने के लिए उन्हीं बुज़ुर्गों ने अपने आपको वक़्फ़ कर दिया था। फिर उनके साथ बुरा सुलूक क्यों किया जाता है?

क्या नौजवान यह समझते हैं कि वे कभी बूढ़े नहीं होंगे? अपने वालिदैन और बुज़ुर्गों के साथ बदसुलूकी और बदतमीज़ी करनेवाले नौजवान वालिदैन यह भूल जाते हैं कि कल को उनकी भी औलाद जवान होगी और कल वे भी बूढ़े होंगे और जो सुलूक वे अपने माँ-बाप और बुज़ुर्गों के साथ कर रहे हैं। उनके साथ भी वही किया जा सकता है।

ज़िन्दगी इस हाथ से दे और उस हाथ से ले का नाम है। यानी आप अपने बुज़ुर्गों से जैसा सुलूक रवा रखेंगे, हो सकता है कल आपको भी उसी तरह के हालात का सामना करना पड़े। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर इंसान एक न एक दिन बुढ़ापे की दहलीज़ पर पहुँचेगा। ज़ाहिर है कि हमने जिस तरह अपने माँ-बाप और बुज़ुर्गों के साथ सुलूक किया होगा वैसा ही सुलूक हमें अपने बच्चों से मिलेगा। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने बुज़ुर्गों को अपने आपपर बोझ न समझें बल्कि उनकी क़ुरबानियों और उनकी बुज़ुर्गी का ख़्याल करते हुए उनकी

तीमारदारी, उनकी दिलबस्तगी, उनकी पसन्द-नापसन्द, उनके आराम और उनकी ज़रूरियात का भरपूर ख़याल रखें।

बुज़ुर्ग बुढ़ापे में थोड़े सख़्त और चिड़चिड़े हो जाते हैं और यह उम्र का तक़ाज़ा है। कहते हैं कि बच्चा और एक बूढ़ा बराबर होते हैं। यानी जब इंसान बूढ़ा हो जाता है तो वह बच्चों जैसा हो जाता है। उनका ज़िद करना, बात-बात पर चिढ़ना आम बात है। बुज़ुर्ग बिल्कुल उस बच्चे की तरह हो जाते हैं जो अपनी बात पूरी न होने या किसी चीज़ के न मिलने पर नाराज़ या चिड़चिड़ा हो जाता है। उनकी ख़िदमत इस तरह करें जैसे हम अपने बच्चे की करते हैं।

बुज़ुर्गों की ख़िदमत करना न सिर्फ़ दुनिया में आपको सुर्ख़रू करेगा, बल्कि आपकी आख़िरत भी सँवर जाएगी। बूढ़ों का बीमार होना, बात-बात पर नुकताचीनी करना या घर ही में मौजूद रहना बेशक आपको परेशान करता होगा, लेकिन उन हालात में ही आपकी सही आज़माइश होती है कि आप अपने वालिदैन को या घर के बुज़ुर्गों को कितनी अहमियत देते हैं और उनकी कितनी तीमारदारी करते हैं। एक तरह से यह आपका इम्तिहान है और इस इम्तिहान में कामयाबी के बाद ही आप दुनिया व आख़िरत में सुर्ख़रू हो सकते हैं।

बुज़ुर्गों से भी एक गुज़ारिश है कि वे अपने आपको इतना कमज़ोर और लाचार न बनाएँ कि बच्चे आपको बोझ समझने लगें या आपसे चिढ़ने लगें। यह उसी वक़्त मुमकिन हो सकता है जब बुज़ुर्ग न सिर्फ़ अपने आपको मिसाली वालिदेन बनाकर पेश करें बल्कि बच्चों की तर्बियत भी इस अन्दाज़ में करें कि वे उम्र के किसी भी हिस्से में आपसे बदतमीज़ी करने की हिम्मत न कर सकें और न ही आपके मशविरों को रद्द कर सकें।

बाज़ बुज़ुर्ग बिला वजह घर के मामलात में दख़ल देते हैं या अपनी बात मनवाने के लिए बच्चों को बुरा-भला भी कहते रहते हैं। भले ही उनकी बात नामुनासिब हो, वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उन्हीं की बात मानी जाए। ऐसे हालात में औलाद और वालिदैन के दर्मियान

तल्ख़ियाँ बढ़ जाती हैं, इसलिए बुज़ुर्गों को भी उम्र और तजुर्बात की रौशन में और मस्लेहत से काम लेते हुए अपने ख़ानदान को आगे बढ़ाने में मदद देनी चाहिए और नौजवानों को भी उनका साथ देना चाहिए तब जाकर नौजवानों और बुज़ुर्गों के बीच की इस ख़लिश को ख़त्म किया जा सकता है। मुस्लिम मुआशिरे में इस्लामी तालीमात को पेशे-नज़र रखते हुए बुज़ुर्गों के एहतिराम और उनकी ज़रूरियात का ख़्याल रखना बेहद ज़रूरी है। इससे दो गुना फ़ायदा होगा, दुनियावी भी और उख़रवी भी।

औरत माँ, बेटी, बीवी और बहन की हैसियत से

मुआशिरे में औरत की हैसियत को हमेशा कमज़ोर सिन्फ़ माना गया है और औरत ने भी सरे-तस्लीम ख़म करके इस हक़ीक़त को क़बूल कर लिया जबकि मामला इसके बिलकुल खिलाफ़ है। दर-असल सिन्फ़े नाज़ुक ही ताक़त का सरचश्मा है और उसकी कइ हैसियतें हैं।

माँ : औरत माँ होती है तो इतनी अज़ीम ताक़त उसके पास है कि वह मर्द को जन्म देती है, इस तरह ख़ालिक़े-दो जहाँ ने माँ को वह ताक़त दी कि वह तख़्लीक़ का काम कर सके। वह ज़माने के सर्द व गर्म से अपने बच्चे की हिफ़ाज़त भी करती है और इस तरह अपनी सारी क़ुव्वत सर्फ़ करके, अपने बच्चे को अपना दूध पिलाकर, अपनी गोद में सुलाकर और उसकी सेहत का हर तरह से ख़याल रखकर उसकी परवरिश करती है। क्या यह मर्द जो दौलत कमाकर लाता है, उसमें यह ताक़त है कि वह अपने बच्चे के लिए यह सब कुछ कर सके?

बेटी : एक बेटी अपने वालिदैन के लिए ऐसा सहारा है जिसके न होने से वालिदैन बुढ़ापे में बेयारो-मददगार हो जाते हैं। बेटे के वालिदैन बुढ़ापे में अक्सर यह अफ़सोस करते हैं कि काश हम बेटी की नेमत से महरूम न होते! एक बेटी बचपन से जवानी तक, यहाँ तक कि शादी हो जाने के बावजूद, क़दम-क़दम पर वालिदैन का सहारा बनती है। वह माँ के साथ घरेलू काम काज में हाथ बटाती है, छोटे भाई-बहनों की परवरिश में मदद करती है, बाप थका-मान्दा घर लौटता है तो उसका ख़ैर-मक़दम

करती है और अपनी बिसात भर उसके काम आती है। और आज की बेटी तो इससे भी कहीं आगे वालिदैन के लिए माली सहारा बनती है। अगर घर की आमदनी कम है तो वह माली तौर पर भी मदद करने में पीछे नहीं रहती। वह पढ़ाई के दौरान ट्यूशन वग़ैरह् करके घर की आमदनी में इज़ाफ़ा करती है और उनपर बोझ नहीं बनती।

बीवी : शरीके-हयात की हैसियत से एक औरत वह कारहाए नुमायाँ अंजाम देती है, जो शायद ही कभी मर्द, बहैसियते शौहर के अंजाम दे सके। वह बीवी बनकर मर्द की कमज़ोरियों को अपने दामन में समेट लेती है। वह न सिर्फ़ घर-गृहस्ती संभालती है बल्कि एक क़दम आगे बढ़कर बाज़ औक़ात शौहर की आमदनी में इज़ाफ़ा के लिए खुद मुलाज़िमत वग़ैरह् करती है। बच्चों की परवरिश इस तरह करती है कि कभी-कभी तो शौहर को पता नहीं चलता कि उसके बच्चे किस तरह इस मक़ाम तक पहुँच गए। शौहर के बीमार पड़ने पर औरत दिन-रात एक करके उसकी तीमारदारी करती है।

बहन : औरत एक बहन की सूरत में भी भाई के लिए किसी नेमत से कम नहीं। अक्सर देखा गया है कि दस्तरख़ान पर बहन अपने मुँह का निवाला भी अपने भाई के लिए रख देती है। खुद अपना दिल मारकर भाई को अच्छा कपड़ा पहनने का मौक़ा देती है कि उसे घर से बाहर निकलना होता है। अपनी पढ़ाई से ज़्यादा भाई की तालीम पर तवज्जोह देती है। भाई को जज़्बाती सहारा देने में भी बहन हमेशा आगे-आगे रहती है। बहन के आँचल में मुँह छुपाकर अक्सर भाई अपने सारे ग़म हल्के कर लेते हैं।

इन तमाम हैसियतों के अलावा भी औरत बहैसियते दफ़्तरी कारकुन या अफ़सर, अपनी ड्यूटी हमेशा मर्द की बनिस्बत ज़्यादा अच्छी तरह अंजाम देती है। अगर वह एक टीचर है तो बच्चे को ज़्यादा अच्छी तरह पढ़ाती है। औरत की शफ़क़त और ममता ने इस मैदान में उसे मर्द से कहीं आगे का मक़ाम दिलाया है।

"हर कामयाब मर्द के पीछे एक औरत का हाथ होता है।" यह

कहावत बहुत मशहूर है और ऐसा महसूस होता है कि बहुत सारे तजुर्बात और मुताला के बाद यह कहावत वुजूद में आई है। आदम (अलैहि०) ने जब तनहाई से घबराकर एक साथी की तमन्ना की तो अल्लाह तबारक व तआला ने उनको औरत की शक्ल में एक ऐसा साथी अता किया, जो उनके लिए हर सूरत में एक मुकम्मल साथी साबित हुआ। उसके बावुजूद मर्द ने कभी औरत की क़द्र नहीं की और उसे हमेशा अपना ग़ुलाम समझा। इस्लाम ने औरतों को वह रुतबा अता किया जो किसी और मज़हब ने नहीं दिया है। इसके बावुजूद मुसलमानों में भी औरतों की नाक़दरी और उनपर ज़ुल्म व सितम का सिलसिला जारी रहता है। मर्द उससे अपनी हर जाइज़ व नाजाइज़ बात मनवाने की कोशिश करते हैं और उसके साथ नाइंसाफ़ी करते हैं, इस तरह वह ख़ुदा की बख़्शी हुई इस नेमत की नाक़दरी ही करते हैं। ज़रूरत इस बात की है कि मर्द औरत की ताक़त को पहचानें और उनको वह मक़ाम दें जो इस्लाम ने उन्हें अता किया है।

औरत की अस्ल दर्सगाह उसकी ससुराल है

जिस तरह एक शख़्स के आदात व अतवार और ख़्यालात की तर्तीब किसी मक्तब या तर्बियती इदारे में मुमकिन होती है, बिलकुल उसी तरह एक औरत को ज़िन्दगी बेहतरीन ढंग से गुज़ारने और मामलात से बेहतर तौर पर निमटने का हुनर ससुराल में सीखने को मिलता है। औरत का अस्ल घर उसका ससुराल या उसके शौहर का घर है। इसी घर में वह ज़िन्दगी की हर ऊँच-नीच का मुक़ाबला करना सीखती है। जब तक एक लड़की एक माँ बाप के घर यानी मैके में होती है, लाड़-प्यार के बाइस बहुत-सी बातों पर तवज्जोह मर्कूज़ करने की उसे तर्ग़ीब नहीं मिलती। यह बेफ़िक्री की ज़िन्दगी होती है जिसकी वह ज़्यादा-से-ज़्यादा इंज्वाय करना चाहती है। वालिदैन के घर में रहकर कोई भी लड़की अपनी असल ज़िन्दगी यानी अज़दवाजी ज़िन्दगी के बारे में कुछ नहीं सीख पाती। अज़दवाजी ज़िन्दगी के असरार व रमूज़ शादी के बाद ससुराल में ही खिलते हैं। वालिदैन अपनी बच्ची को ज़्यादा-से-ज़्यादा सुख और

आराम देना चाहते हैं। शादी से पहले लड़की अपने घर में हर लम्हे और हर पल का लुत्फ़ उठाती है, इस ज़िन्दगी को परेशानियों और उलझनों की नज़र करना नहीं चाहती। यही सबब है कि ज़िन्दगी की बहुत-सी बुनियादी बातों की जानिब वह ध्यान नहीं देती और उन बातों का इल्म उसे शादी के बाद ही होता है।

औरत के लिए ससुराल मिसाली दर्सगाह ही नहीं होती बल्कि एक इम्तिहानगाह भी होती है और सास उस दर्सगाह और इम्तिहानगाह की सरबराह होती है। सास की समझदारी और मामला-फ़हमी पर पूरे घर की खुशियों और सुकून का दारोमदार है। अगर ईमानदारी और ग़ैर-जानिबदारी से जाइज़ा लें तो अन्दाज़ा होगा कि बेशतर सासें महदूद ज़ेहनियत और बहुत-सी बातों में अना का मज़ाहिरा करती हैं, जिसके बाइस बहुओं से उनकी चपक़लिश रहती है और अच्छा ख़ासा घर जहन्नम में तब्दील हो जाता है।

यह दुरुस्त है कि मामलात में क़ुसूरवार सिर्फ़ सास ही नहीं होती, मगर यह सच है कि बेशतर सासें इंतिहाई इस्तहक़ाक़-पसन्द होती हैं। वह बेटे और बहू दोनों को मुट्ठी में रखना चाहती हैं और यहीं से बिगाड़ पैदा होता है। बेटा अपनी ज़िन्दगी अपनी मर्ज़ी से गुज़ारना चाहता है और बहू की आँखों में भी खुद मुख़्तार ज़िन्दगी के सपने होते हैं। ऐसे में किसी और की मर्ज़ी का पाबन्द होना उन दोनों को अच्छा नहीं लगता।

ज़्यादातर माएँ अपने बेटों की शादी के लिए बहुत बेताब दिखाई देती हैं। यहाँ तक कि वह अपने बेटे की शादी के लिए हर क़िस्म की क़ुरबानी देने के लिए तैयार रहती हैं। बहू के लिए ज़ेवर तैयार करने की ग़र्ज़ से वह अपना ज़ेवर बेच डालती हैं या अपना ही ज़ेवर बहू को दे देती हैं। ऐसे में सवाल यह पैदा होता है कि शादी के कुछ ही दिनों बाद बहू को ग़ुलाम क्यों समझने लगती हैं और बहू की ख़ातिर सब कुछ क़ुरबान करने का वह जज़्बा सर्द क्यों पड़ जाता है? बाज़ सासें इतनी तंग-नज़र और बदमिज़ाज होती हैं कि बहू को हर वक़्त जहेज़ कम लाने के ताने देती हैं, ऐसे में बहू कोई चीज़ माँग ले तो सास की तरफ़ से

टका-सा जवाब मिलता है कि "अपनी माँ से क्यों नहीं कहा, वह तुम्हें जहेज़ में दे देतीं या अपने बाप से क्यों नहीं माँगतीं।"

हम इस हक़ीक़त को तस्लीम न करें तो सूरते-हाल बदलेगी नहीं कि आज हमारे समाज के बेशतर घरानों में सास और बहू के बीच ख़लीज बहुत ज़्यादा है। इन मसाइल के हल की एक सूरत यह है कि उनसे भागने के बजाय उनका सामना किया जाए। इस मसले को हल करने के लिए ख़ास तौर पर मर्द को अहम किरदार अदा करना होगा। इन हालात में माँ, बीवी दोनों का मौक़िफ़ सुनने की ज़रूरत है। किसी एक की बात सुनकर दूसरे से फ़ौरी नाराज़गी या बरहमी का इज़्हार ग़ैर-दानिशमन्दाना रवैया है। इससे न तो इंसाफ़ होगा और न ही मामलात हल होंगे, लेकिन यह बात अफ़सोस नाक है कि हमारे यहाँ आम तौर पर मर्दों का रवैया यक-तरफ़ा हो जाता है। माँ को समझाने के बजाय वह सारा ग़ुस्सा बीवी पर निकालते हैं या बीवी की नाराज़गी के ख़ौफ़ से उसकी ग़लत और नापसन्दीदा बातों को भी ख़ामोशी से बर्दाश्त कर लेते हैं जिनका बाज़ औक़ात बहुएँ नाजाइज़ फ़ायदा उठाती हैं।

हर माँ चाहती है कि उसकी बेटी जिस घर में जाए राज करे। हालांकि यह राज करनेवाली सोच दुरुस्त नहीं है। राज करने या किसी का राज क़ुबूल करने से मामलात हमेशा बिगड़ते हैं। घरेलू मामलात हुक्म चलाने या किसी का बेजा हुक्म मानने से नहीं चलाए जा सकते, क्योंकि यह दो तरफ़ा मामला होता है। इसमें कभी अपनी बात मनवाई जाती है और कभी दूसरों की बातों पर सर तस्लीमे-ख़म किया जाता है। अगर वालिदैन इस बात के ख़्वाहिशमन्द हैं कि उनकी बेटी को ज़िन्दगी में कोई दुख या किसी मुसीबत का सामना न करना पड़े तो ज़रूरी है कि वह दामाद मुंतख़ब करते वक़्त उसके घरवालों के बारे में भी मालूमात हासिल करें।

दूसरी तरफ़ बहुओं पर यह फ़र्ज़ है कि सुसराल के हर फ़र्द, बिल-ख़ुसूस सास को अपनी माँ की तरह समझें। उनकी कोशिश होनी चाहिए कि शौहर की पूरी तवज्जोह अपनी तरफ़ मर्कूज़ करने के बारे में सोचने

के बजाय सबको अपना समझे और सबके साथ अच्छा सुलूक रवा रखने की कोशिश करे। दूसरी जानिब हर सास का यह फ़र्ज़ बनता है कि वह बहू को बेटी से बढ़कर नहीं तो बेटी के बराबर ज़रूर समझे। इसका फ़ायदा यह होगा कि घर में तबाज़ुन की फ़िज़ा पैदा होगी, और कामयाब ज़िन्दगी तवाज़ुन ही चाहती है। हर घर में मामलात नशीब व फ़राज़ के मराहिल से गुज़रते हैं, उनसे गुज़रकर ही ज़िन्दगी बनती है।

अगर सास ज़रूरत से ज़्यादा अनापरस्ती और बहू ग़ैर ज़रूरी हठधर्मी का मज़ाहिरा करे तो ताल्लुक़ात में कशीदगी बढ़ती रहेगी। दोनों इंसान हैं, दोनों को बहुत-सी ख़ाहिशात तर्क करना पड़ेंगी और अपने नाम-निहाद दायरे से बाहर निकलना होगा, तब कहीं जाकर यह मसाइल ख़त्म होंगे।

तरक़्क़ी सिर्फ़ मआशी ख़ुशहाली का नाम नहीं है

आज पूरी दुनिया इज़्तराब और बेचैनी के आलम में है और कहीं सुकून नहीं है। दुनिया के मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों में जंग के बादल मंडला रहे हैं। जंग व जारहियत आग बरसा रही है। हुक़ूक़ पामाल हो रहे हैं, हर तरफ़ ज़ुल्म व नाइंसाफ़ी का बरहना रक़्स हो रहा है। ज़ुल्म व ज़्यादती अफ़राद ही का नहीं क़ौमों का शैवा बन गई है। मुहब्बत, उख़ुव्वत, इख़्लास, हमदर्दी, सदाक़त, अमानत व दियानत और ईफ़ाए अहद से इंसान का रिश्ता टूट गया है। रिश्वत, चोरी और ख़ून-रेज़ी का बाज़ार गर्म है। शराब और मंशियात का इस्तेमाल बढ़ रहा है। उरयानी और बेहयाई का दौर-दौरा है। मासूम बच्चे जराइम में लतपत कर दिए गए हैं। मामूली बातों पर क़त्ल आम-सी बात है। इश्क़ व अय्याशी के नाम पर हवसकारी फैली हुई है और बहुत सारे स्कूल और कालिज इसके अड्डे बन चुके हैं। यह सारी ख़राबियाँ और बुराइयाँ रूप बदलकर सामने आ रही हैं।

ये हैं नताइज औरत की कोताहियों का जिसे इंसान का किरदार संवारने पर मामूर किया गया था, मगर वह तरक़्क़ी और मुलाज़िमत, मसावात मर्दो-ज़न, फ़ैशन व मेकअप और तफ़रीह की महफ़िलों में खो

गई है। बज़ाहिर आज की औरत बहुत तरक़्क़ी कर गई है। मुलाज़िमत के हर शोबे और बेशतर कारोबार से वाबस्ता है। वह बाँस बनी बैठी है और बिज़निस के बड़े-बड़े शोबे चला रही है। और कौन-सा ऐसा मैदान है जहाँ औरत नहीं! क्लर्क, टीचर, लेक्चरार, कारोबार से लेकर आई. पी. एस. अफ़सर तक के ओहदे पर फ़ाइज़ है। तालीमी मैदान में अपनी क़ाबलियत और कामयाबी के झंडे गाड़ती चली जा रही है। तरक़्क़ी की धुन में वह आगे ही आगे बढ़ती जा रही है। उसकी यह मेहनत, जुस्तुजू और कामयाबी क़ाबिले सताइश है। लेकिन इस दौड़ में वह अपना नाम, शनाख़्त और पहचान भूल चुकी है, पीछे मुड़ना उसे गवारा नहीं। निस्वानियत को वह बाइ-बाइ कह चुकी है। दौड़ते-दौड़ते उसने शर्म व हया का लबादा उतार कर फेंक दिया है। पर्दे को ख़ैरबाद कह दिया है। अपनी इज़्ज़त व अस्मत की धज्जियाँ ख़ुद ही बिखेर दी हैं। उसके दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे उसके चारों तरफ़ ख़ूंख़ार भेड़िये हैं जिन्हें वह अपना हमदर्द, परस्तार और दोस्त समझ रही है। यह उसकी बेवक़ूफ़ी नहीं तो और क्या है? आज़ादी, तरक़्क़ी और मुलाज़िमत के चक्कर में वह जैसे ही घर से निकलती है उसकी तबाही और बर्बादी की दास्तान शुरू हो जाती है।

शैतान जानता था कि इंसान का सबसे मज़बूत मोर्चा उसका घर है, इसलिए उसने अपने चेलों को इशारा किया कि जब तक उस "घर की निगहबान" को बेघर न किया जाए उस वक़्त तक कामयाबी नहीं मिल सकती। चुनांचे उसके चेलों ने औरत की आज़ादी का नारा बुलन्द किया, फिर आवाज़ लगाई कि औरत और मर्द दोनों हर हैसियत से बराबर हैं और औरत को घर में रखना उसपर ज़ुल्म करना है। लिहाज़ा उसे भी मर्दों के शाना-बशाना खड़ा किया जाए। औरत की नादानी देखिए कि वह मसावात मर्दो-ज़न के चक्कर में ख़ुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार बैठी और अब उसपर दोहरी ज़िम्मेदारी आयद है।

उसे घर संभालना है और दफ़्तर भी। क्या यह सिन्फ़े-नाज़क पर ज़ुल्म नहीं है? सुबह सवेरे उठना, घर के सारे काम अंजाम देना, बच्चों

को खिलाना, टिफ़िन तैयार करना और फिर दफ़्तर जाने के लिए अपनी तैयारी करना, घर की सफ़ाई ख़ादिमा के हवाले, शाम में जब मियाँ-बीवी दोनों थके हारे आते हैं और ग़ुस्सा उनकी नाक पर होता है और ज़रा-सी बात को लेकर झगड़ा हो जाता है। जबकि पहले होता यह था कि जब शौहर दफ़्तर से थका हारा घर लौटता था तो बीवी मुस्कुराते हुए उसका इस्तक़बाल करती, चाय पेश करती, घर साफ़-सुथरा रखती और इस तरह बच्चों को हँसता-खेलता देखकर शौहर भी अपनी थकान भूल जाया करता था। मगर अब ऐसे मंज़र कम ही देखने को मिलते हैं।

इस हाई-टेक दौर में दोनों मियाँ-बीवी के कमाने और मेयारे-ज़िन्दगी बुलन्द करने के चक्कर में कहाँ घर का सुख-चैन मिलेगा। दोनों को इतनी फ़ुरसत नहीं कि वे एक-दूसरे को समझ सकें या बच्चों की ज़रूरतों को महसूस कर सकें और ऐसे माहौल में तर्बियत पानेवाले बच्चे कैसे हो सकते हैं? आप ख़ुद ही अन्दाज़ा लगा सकते हैं। ये बच्चे जब बड़े होते हैं तो उन्हें माँ-बाप से भी कोई मुहब्बत नहीं होती और जहाँ ख़ून के रिश्ते में मुहब्बत न हो, वहाँ इंसानियत कहाँ बाक़ी रहती है। पैसे कमाने की धुन में हम आज किसी से भी पीछे नहीं हैं। जितनी भी दौलत हमारे हाथ आती है वह हमारा पेट नहीं भरती, बल्कि आतिशे हिर्स और भड़कती है। अगर औरत सलीक़ा शेआर हो तो कम आमदनी में भी गुज़ारा कर लेगी और हर्फ़े शिकायत भी ज़बान पर नहीं लाएगी, लेकिन यही औरत अगर सलीक़ा-शेआर और सिघड़ न हो तो उसे माहाना बीस हज़ार भी कम पड़ेंगे और शिकवे-शिकायत का पिटारा अलग खोल देगी। आज कई ख़्वातीन ऐसी हैं जो मुलाज़िमत भी करती हैं और घरदारी भी बहुस्न व ख़ूबी निभाती हैं। शौहर भी उनसे ख़ुश हैं और बच्चे भी तर्बियत-याफ़्ता हैं क्योंकि वे मुलाज़िमत के साथ घर के सारे फ़राइज़ बख़ूबी अंजाम दे रही हैं। वे मुलाज़िमत या कारोबार करने के बावजूद अपनी अस्मत व इज़्ज़त की निगहबानी करना ख़ूब जानती हैं।

तरक़्क़ी सिर्फ़ मआशी ख़ुशहाली का नाम नहीं है। अगर ख़्वातीन नई नस्ल को अच्छी तर्बियत दें, इंसानियत सिखाएँ और उनके अन्दर

अख़्लाक़ पैदा करने की कोशिश करें तो यह न सिर्फ़ क़ौम व मिल्लत के लिए मुफ़ीद है बल्कि मुल्क की तरक़्क़ी के लिए भी सूदमन्द (फ़ायदेमन्द) हो सकता है। अलग़र्ज़ औरत का असल मैदान उसका अपना घर है, इस हक़ीक़त को न भूलें।

बेटी अल्लाह की रहमत भी है और नेमत भी

खुदावन्द करीम ने इस कायनात में कोई तख़्लीक़ बेमक़सद, बेकार और बेफ़ायदा नहीं पैदा की, चाहे उसका ताल्लुक़ हैवानात, जमादात और नबाताब से हो या अशरफ़ुल-मख़्लूक़ात हज़रते इंसान से हो। यह तो हो सकता है कि बाज़ की इल्लते तख़्लीक़े-फ़हम इंसानी और उसके शऊरे-अदराक से मावरा हो लेकिन यह हक़ किसी को हासिल नहीं है कि रब्बुल आलमीन की तख़्लीक़ पर एतिराज़ करे, नाराज़गी और नापसन्दीदगी का इज़्हार करे, क्योंकि ख़ालिक़े कायनात अपनी तख़्लीक़ की इफ़ादियत व अहमियत से ख़ूब वाक़िफ़ है, ख़्राह देखने में वह चीज़ हमें कितनी ही हक़ीर लगे। हज़रत मूसा (अलैहि०) के दौर में बनी इसराईल की एक औरत ने हज़रत मूसा (अलैहि०) से सवाल किया कि हज़रत! परवरदिगारे आलम ने छिपकली को क्यों पैदा किया? यह तो किसी काम की नहीं, देखने में भद्दी और शक्ल व सूरत ऐसी कि डर लगे, कोई ख़ूबसूरती नहीं, किसी काम की नहीं। हज़रत मूसा (अलैहि०) ने फ़रमाया, "यही सवाल इंसान के बारे में परवरदिगारे आलम से छिपकली ने किया कि ऐ खुदावन्द आलम! आपने इंसान को क्यों पैदा फ़रमाया? यह नाशुक्रा, बेसबरा, लड़ने-झगड़ने वाला, रूए-ज़मीन पर फ़साद बरपा करने वाला, तमा पसन्द, बुग्ज़-कीना रखनेवाला है, इसकी तख़्लीक़ से क्या फ़ायदा? उसको जवाब मिला, "मैं अपनी मख़्लूक़ की इफ़ादियत और हिक्मत से ज़्यादा वाक़िफ़ हूँ।"

किसी की पैदाइश हमारी ख़्राहिश और मर्ज़ी के मुताबिक़ हो, यह सोच और यह ख़्याल नादानी पर ही नहीं अक़्ल व हम से भी बईद है। इस सोच का मज़ाहिरा अगर इंसान की तरफ़ से हो जिसको अपनी फ़हम व फ़िरासत पर नाज़ है, अपने इल्म और अक़्ल पर घमंड है तो ताज्जुब

ही नहीं अफ़सोस भी होता है।

ज़मान-ए-जाहिलियत से वतीरह चला आ रहा है कि इंसान लड़के की पैदाइश पर ख़ुशी और लड़की की पैदाइश पर नाख़ुशी का इज़्हार करता है। क़ुरआन पाक में इस तर्ज़े अमल पर नाराज़गी का इज़्हार करते हुए इरशाद फ़रमाया गया है :

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝ يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ

(سورہ النحل: ٥٨،٥٩)

"जब उनमें से किसी को लड़की की पैदाइश की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है, गुस्से की वजह से वह लोगों से छिपता फिरता है। क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या मिट्टी में छिपा देगा।" (नह्ल : 58-59)

उनके इस संगदिलाना और वहशियाना तर्ज़े अमल से तो दुनिया वाक़िफ़ है कि वे लड़की को ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे और उसपर फ़ख़्र भी करते थे। बदक़िस्मती से हमारे मुआशरे में आज भी लड़की के हवाले से यह मंफ़ी रवैया पाया जाता है। लड़के की पैदाइश पर ख़ुशी का जो इज़्हार नज़र आता है, लड़की की पैदाइश पर वह मफ़्क़ूद होता है। आलिम, फ़ाज़िल और जाहिल सब ही कम व बेश इस मर्ज़ में मुब्तला हैं। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाएँ कि लड़की की पैदाइश में औरत का क्या क़ुसूर है? जो चीज़ उसकी क़ुदरत में नहीं, जिसपर उसे इख़्तियार नहीं, बल्कि वह 9 माह की मुद्दत तक जो मशक़्क़त और तकलीफ़ बर्दाश्त करती है, मर्द 9 दिन तो क्या शायद 9 घंटे भी बर्दाश्त न कर सके, हमारा तर्ज़े अमल उसके साथ ज़ालिमाना और बेरहमाना होता है। हम लड़की की पैदाइश पर नाराज़ हो जाते हैं, त्योरी पर बल आ जाता है बल्कि कई दिन तक बीवी से बात तक नहीं करते और बच्ची का चेहरा नहीं देखते। फिर औरत का औरत के साथ यह ज़ुल्म होता है कि सास, ननदें बुरा-भला कहती हैं। बदकलामी, बदज़मानी से पेश आती हैं। यहाँ तक कि अपने लड़के की दूसरी शादी करने की धमकी देकर उसका दिल दुखाती हैं।

बल्कि कुछ तो ऐसा कर गुज़रती हैं। एक मुसलमान होने के नाते हमारा यह तर्ज़े-अमल ख़ुदा की नेमत का नाशुक्रापन है। उसकी अता की नाक़दरी है। इंसानियत के नाते बेक़ुसूर को क़ुसूरवार ठहराना एक ज़ालिमाना तर्ज़े अमल है।

बेटी ख़ुदा की नेमत भी है और रहमत भी। हुज़ूर अकरम (सल्ल०) का इरशादे गिरामी है, "जिसने दो लड़कियों की परवरिश की और उन्हें हुस्ने तर्बियत से माला-माल किया, यहाँ तक कि वह सिने शुऊर को पहुँचीं, क़ियामत के दिन मैं और वह इस तरह आएँगे जिस तरह मेरे हाथ की यह दो उंगलियाँ।" इस मौक़े पर आप (सल्ल०) ने अपनी शहादत और उसके साथवाली उगली को मिलाकर दिखाया। सहीह मुस्लिम में हदीस मुबारक है। हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स लड़कियों की पैदाइश से आज़माइश में डाला जाए, फिर उनके साथ अच्छा बर्तारव करे तो वह लड़कियाँ उसके लिए क़ियामत के दिन दोज़ख़ से आड़ होंगी। इसके अलावा कई अहादीस मुबारका में लड़कियों की परवरिश और हुस्ने तर्बियत पर नवेद बख़्शिश है और उनके फ़ज़ाइल बयान किए गए हैं। इसी लिए कहा गया है कि बेटी नेमत भी है और रहमत भी। औलाद होने की वजह से नेमत और बख़्शिश का सबब होने की वजह से रहमत।

इस्लाम ने औरत को बड़े मरातिब अता किए हैं। औरत को माँ, बहन और बेटी के मुक़द्दस रिश्ते से सरफ़राज़ किया है। आज की पैदा होनेवाली बेटी कल माँ के मुक़द्दस रिश्ते की हामिल होगी कि उसकी रज़ा बख़्शिश का सबब, उसकी दुआ क़ुबूलियत का ज़रिया, उसको इज़्ज़त व एहतिराम से देखना हज का सवाब, उसकी ख़िदमत में दख़ूल जन्नत का रास्ता। यह बेटी ही तो है जो इस मुक़द्दस मर्तबे की हामिल बनी। सिलसिल-ए-नसब में सबसे आला व अरफ़ा सिलसिल-ए-सादात का है। इसपर ग़ौर कीजिए तो बहुत वाज़ेह तौर पर यह चीज़ सामने आती है, इस सिलसिल-ए-नसब का ताल्लुक़ हुज़ूर अकरम (सल्ल०) की साहबज़ादी ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि०) से है। यह शर्फ़

एक बेटी को हासिल है कि वह सिलसिल-ए-सआदत की मुंबअ है।

अहादीस मुबारका की रौशनी में क्या हमें यह बात ज़ेब देती है कि हम बेटी की विलादत पर ग़म, रंज, नाराज़गी और ख़ुदा की नेमत की नाशुक्री करें और जिसकी तख़्लीक़ यानी उसकी पैदाइश में जिसका कोई दख़ल न हो, कोई क़ुसूर न हो उसको क़ुसूरवार ठहराएँ? हमारा यह तर्ज़े अमल जहाँ ज़ालिमाना है, वहाँ नेमते ख़ुदावंदी पर नाशुक्रापन भी है और ग़ज़बे इलाही को दावत देने के मुतरादिफ़ है। रोज़-मर्रा की ज़िन्दगी में यह तजुर्बा है कि बेटे के मुक़ाबले में बेटी ज़्यादा वफ़ादार, मुहब्बत की मज़हर, शरीके-ग़म और दुख-दर्द में शामिल रहती है।

माँ की दुआएँ औलाद के हक़ में क़बूल होती हैं

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०) का नाम हममें से किसने नहीं सुना है? छियासी (86) साल की उम्र में चन्द साल पहले 31 दिसम्बर 1999 ई० को रमज़ान की तेईसवीं शब में आपका इंतिक़ाल हुआ। अल्लाह ने आपसे दीन का वह काम लिया जिसकी नज़ीर माज़ी क़रीब की इस्लामी तारीख़ में मुश्किल से मिलती है। आपको अल्लाह तआला ने ग़ैर-मामूली महबूबियत और मक़बूलियत अता फ़रमाई थी। इंदल्लाह आपके मक़बूल व महबूब होने के दसियों क़राइन पाए जाते हैं। जुमा के दिन, रोज़े की हालत में, ऐन नमाज़े जुमा से पहले सूरह यासीन की तिलावत करते हुए आपकी रूह क़फ़्से अंसरी से परवाज़ कर गई। दुनिया के तक़रीबन तमाम बर्रे-आज़मों और अहम मुमालिक में आपकी नमाज़ ग़ायबाना अदा की गई। रमज़ानुल मुबारक की सत्ताइसवीं शब को हरम मक्की व मदनी यानी हरम शरीफ़ और मस्जिदे नबवी में सत्ताइस लाख से ज़ायद अल्लाह के बन्दों ने आपकी नमाज़े ग़ायबाना अदा की और आपकी मग़फ़िरत व रफ़ा दर्जात के लिए अल्लाह से दुआएँ कीं। इस तरह की इंदल्लाह महबूबियत व मक़बूलियत दुनिया में अल्लाह के बहुत कम ही बन्दों के हिस्से में आती है।

मौलाना अपने बचपन में न बहुत ज़हीन थे और न बहुत चुस्त व चालाक। आपकी इल्मी सलाहियत भी मदरसा में आम और दर्मियाना दर्जे के तालिबे इल्म की थी। इसके बावजूद आपसे अल्लाह ने दीन का जो काम लिया वह हैरतअंगेज़ भी है और ताज्जुब-ख़ेज़ भी। हज़रत मौलाना से जब उनको हासिल होनेवाली इस तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी के असबाब व मुहर्रिकात के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया जाता तो आप बयान करते कि अल्लाह ने हमारे लिए मुक़द्दरे दीन की इस ख़िदमत में हमारी वालिदा माजिदा की ख़ुसूसी दुआओं का बड़ा हिस्सा रखा था और यह उसी की बरकत थी। आपकी वालिदा बड़ी आबिदा, ज़ाहिदा और ज़ाकिरा थीं। 93 साल की उम्र में उनका इंतिक़ाल हुआ। वह अपनी वफ़ात तक हमेशा रोज़ाना दो रकअत सलातुल हाजत पढ़कर अपने इस बेटे के लिए दुआ करती थीं कि "ऐ अल्लाह मेरे नूरे-नज़र अली से कोई ग़लत काम न हो, ज़िन्दगी के हर मोड़ पर ऐ अल्लाह तू ही इसकी सही रहनुमाई फ़रमा।" उन्होंने अपने इस बेटे को वसीयत की थी कि "अली तुम रोज़ाना अपने मामूलात में इस दुआ को शामिल करना कि ऐ अल्लाह तू मुझे अपने फ़ज़्ल से अपने नेक बन्दों को दिए जानेवाले हिस्सों में से अफ़ज़लतरीन हिस्सा अता फ़रमा।" (*अल्ला हुम्म इन्नी बिफ़ज़लि-क अफ़ज़-ल मा तुअती इबाद-क-स्सालिहीन*) आपकी वालिदा ने आपकी विलादत से पहले एक ख़्वाब देखा था। इसकी ताबीर उन्होंने ख़ुद अपनी वफ़ात से पहले देखी। ख़्वाब यह था कि हातिफ़े-ग़ैबी ने उनकी ज़बान पर क़ुरआन की इस आयत को जारी कर दिया है कि हमने तुम्हारी आँखों की ठंडक के लिए जो मख़्फ़ी ख़ज़ाना छुपा रखा है, उसका तुम्हें अन्दाज़ा नहीं : (*फ़ला तअ़लमु नफ़्सु-म्मा उख़्फ़ि-य लहुम-मिन-क़ुर्रति आयुनि*) (सजदा : 17) मौलाना की उन्होंने इस तरह तर्बियत फ़रमाई कि उनसे अगर किसी ख़ादिम या मुलाज़िमा के बच्चे पर ज़्यादती होती तो न सिर्फ़ माफ़ी मंगवातीं बल्कि उनसे मार भी खिलातीं। इसी का नतीजा था कि बचपन ही से मौलाना को ज़ुल्म, ग़ुरूर व तकब्बुर से नफ़रत थी और किसी की दिल-आज़ारी से वहशत-सी होती थी। इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर अगर सो जाते तो आपकी वालिदा उठाकर नमाज़ पढ़वातीं, सुबह को जमाअत के

साथ नमाज़ के लिए भेजतीं, फ़ज्र के बाद तिलावत का नाग़ा नहीं होने देतीं।

इन वाक़िआत की रौशनी में हम अपना जायज़ा लें तो शायद ही हममें से दो फ़ीसद वालिदैन इसके मुताबिक़ अपने को पाएँ। रोज़ाना सलातुल-हाजत पढ़कर अपनी औलाद के लिए दुआ माँगना तो दूर की बात, ज़िन्दगी भर में अल्लाह से अपनी औलाद की नेकनामी और सलाह माँगने के लिए हमने एक बार भी सलातुल-हाजत नहीं पढ़ी होगी जबकि अल्लाह ने हमें अपनी औलाद की भलाई और नेक नामी के लिए माँगने का तरीक़ा भी सिखाया है और उसके आदाब भी बताए हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है कि अपनी औलाद के लिए तुम मुझसे इस तरह माँगो कि

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ○

"ऐ अल्लाह, हमें ऐसी बीवियाँ और बच्चे अता फ़रमा जो हमारे लिए आँखों की ठंडक हों और हमें मुत्तक़ीन का इमाम बना।" (सुरह: फ़ुरक़ान : 74)

फ़ालतू बातों से परहेज़ कीजिए

जब दो ख़वातीन आपस में मुलाक़ात करती हैं तो वह किसी तीसरी ख़ातून के बारे में फ़िज़ूल बातें करने लगती हैं। इस तरह की फ़ालतू और बेमतलब बातों का असर क्या होता है?

अगर आप कोई कहानी बयान करना चाहती हैं जो किसी और के बारे में हो और किसी दूसरी ख़ातून ने आपको सुनाई हो तो इस बात को कहने से पहले आप तीन मरहलों पर अच्छी तरह से ग़ौर कर लीजिए, और ये तीन बिल्कुल मुख़्तलिफ़ तरीक़े हैं। पहला मरहला तो यह है कि आप जो कुछ कहने जा रही हैं, क्या वह सच है? दूसरा मरहला यह है कि क्या ज़रूरी है? आख़िरी मरहला यह है कि आया यह बात दूसरों के लिए तकलीफ़देह तो नहीं है?

अंग्रेज़ी का लफ़्ज़ "गोसिप" जिसे हम उर्दू में गपबाज़ी कह सकते हैं आज के दौर में एक दिलचस्प और वसीअ मफ़्हूम का हामिल बन गया है और उसकी अपनी एक तारीख़ है। इस लफ़्ज़ के अस्ल मानी लोगों के दर्मियान क़राबतदारी के हैं। लेकिन अब दूसरे लोगों के ज़ाती मामलात के बारे में ग़ैर ज़िम्मेदारी के साथ गुफ़्तगू करना है।

हममें से बहुत से लोगों के लिए गपशप करना एक दिलचस्प मशग़ला है। लोग आपस में बैठकर गपशप करते रहते हैं। इसके अलावा बेशुमार रसाइल व जराइद और अख़बारात हैं जो हमारे सामने ख़ूब चटपटी कहानियाँ पेश करते हैं, जो आम तौर से मुबालिग़ा-आमेज़ और फ़र्ज़ी ही होती हैं या जिन्हें तरह-तरह के लालच और रिश्वत देकर लिखवाया जाता है।

गपबाज़ी या गपशप क्या है? गपबाज़ी की बहुत-सी शक्लें होती हैं। इधर-उधर ख़बरें फैलानेवाले सीधे-साधे और बेज़रर लोगों से लेकर बात का पतंगड़ बनानेवालों और बदनाम करनेवालों तक का एक तवील सिलसिला फ़ैला हुआ है। बेफ़िक्र लोगों की यह एक आदत होती है कि वे लोगों के बारे में आपस में गपशप करते हैं। जब ऐसे दो अफ़राद मिलते हैं तो उनकी गुफ़्तुगू का रुख़ लाज़िमी तौर पर अपने पड़ोसियों और दोस्तों की जानिब मुड़ जाता है और वह उनके बारे में झूठी-सच्ची बातें करते हैं।

यह ज़रूरी नहीं है कि तरह-तरह की ख़बरें फैलानेवाले दानिस्ता तौर पर ऐसा करते हैं और उनका मक़सद दूसरों के लिए मसाइल पैदा करना हो, लेकिन वह इस बात का अन्दाज़ा भी नहीं लगा पाते कि उनकी ज़बान से निकली हुई ग़ैर ज़िम्मेदाराना बातों का सिलसिला दूसरी जगहों तक जा पहुँचा है जिससे बात का बतंगड़ बनता है और उसके नतीजे में शर-अंगेज़ी और दिलों में तल्ख़ी जन्म लेती है।

बातूनी शख़्स किसी बात को सेग़-ए-राज़ में नहीं रख सकता। जिन राज़ों से वह वाक़िफ़ होगा उसे ज़रूर दूसरों तक पहुँचाएगा। इस क़िस्म की सरगोशियाँ बुनियादी तौर पर ख़ुद पर क़ाबू रखने की सलाहियत से

महरूमी के बाइस जन्म लेती हैं और उनको रोकने के लिए शऊरी कोशिश की ज़रूरत होती है, ताकि हम उन बातों का इज़्हार न करें जिनको राज़ रखने के लिए हमपर एतिमाद किया गया हो।

सबसे ज़्यादा ख़राब और नुक़सानदेह क़िस्म की गपशप वह है जो किसी को बदनाम करने के लिए की जाए। वह शख़्स जो दूसरों के ख़िलाफ़ दशनाम तराज़ी की मुहिम चलाता है और उन्हें बदनाम करता है, हक़ीक़त में वह अपनी बग़ल में ऐसे हथियार छिपाए होता है जिनके ज़रिए वह किसी भी नामवर किरदार का सिर्फ़ एक वार के ज़रिए ख़ात्मा कर देता है। दशनाम-तराज़ी करनेवाला शख़्स आम तौर पर हासिद भी होता है और वह हसद के तहत लोगों की पीठ पीछे बुराइयाँ करता है। उनकी ज़ाती ज़िन्दगी के बारे में ग़लत-सलत बातें फैलाता रहता है। ग़लत बातों, झूठी और मनगढ़त कहानियों के ज़रिए लोगों के दर्मियान निफ़ाक़ के बीज बोता है। वह किसी भी बात में अपनी तरफ़ से रंग-आमेज़ी करता है और उसके ज़रिए लोगों के दर्मियान फ़ितना और फ़साद को हवा मिलती है। ऐसा मालूम होता है इस क़िस्म के लोग किसी के भी ख़ैर-ख़्वाह नहीं होते और उनकी ज़बान से किसी के लिए भी कलिमा-ख़ैर नहीं निकलता। इस तरह के लोगों को गपशप करने में, दूसरों के बारे में झूठ घड़ने में और उसे फैलाने में सुकून मिलता है। अगर हम दूसरों की मदद नहीं कर सकते तो हमें उनके मामलात में ज़्यादा दिलचस्पी का भी मज़ाहिरा नहीं करना चाहिए।

अपनी इस्लाह आप करें

अल्लाह की मख़्लूक़ कम व बेश छत्तीस हज़ार है, जिसमें इंसान भी एक है। अल्लाह ने इंसान को जो ख़ूबियाँ अता की हैं, ऐसी ख़ूबियाँ किसी भी ख़ल्क़ में नापैद हैं। इंसान को अल्लाह ने सबसे बड़ा तोहफ़ा नतक़ का दिया है। इंसान को अल्लाह ने आज़ा व जवारिह अता किए जिसका इस्तेमाल इंसान अच्छे या बुरे कामों में करता है। और सबसे बेहतरीन अतिया अल्लाह तआला का यह है कि उसने इंसान को अक़्ल

व फ़हम और दानाई से नवाज़ा है। इसके लिए ज़मीन व आसमान मुसख़्ख़र किए और अपनी निशानियों को इंसान के सामने बयान किया ताकि इंसान का अक़ीदा और ईमान पुख़्ता हो जाए और इंसान उसकी इताअत करे।

इंसान ग़लतियों और गुनाहों का पुतला है। ग़लती करना उसकी सरिश्त में शामिल है, इसके बावजूद अल्लाह ने अपने बन्दों की मग़फ़िरत का वादा किया है, लेकिन कुछ ऐसे भी इंसान इस दुनिया में बसते हैं जो सिर्फ़ दूसरों की ग़लतियों पर अंगुश्तनुमाई करते हैं और दूसरों की ग़लतियों की निशानदेही करते हैं। लेकिन शायद वह यह भूल जाते हैं कि उनके अन्दर भी कुछ ख़ामियाँ हैं। उनके अन्दर भी बुराई के कुछ अंसर मौजूद हैं। असल बात यह है कि इंसान खुद अपनी ख़ामियों और अपनी ग़लतियों को नहीं गिनवाता बल्कि अपनी ग़लती और कोताही छुपाने के लिए दूसरों के ऐबों को अयाँ करता है।

चुनांचे हमें यह बात ज़ेहननशीन कर लेनी चाहिए कि जितना आसान ग़ैरों की ऐबजोई करना है उतना ही मुश्किल खुदशनासी है। हम दूसरों की इस्लाह का बीड़ा उठा तो सकते हैं, मगर अपनी इस्लाह के मामले में कोताह नज़र आते हैं।

एक बात क़ाबिले-ग़ौर भी है और क़ाबिले-मुशाहिदा भी कि अगर एक उंगली हम किसी की ग़लती की जानिब उठाते हैं तो चार उँगलियाँ हमारी जानिब उठ जाती हैं। उस वक़्त भी हमें यह एहसास नहीं होता कि शायद वही ख़ामी हमारे अन्दर भी मौजूद हो, और यह बात सद-फ़ीसद सच है कि जब तक हम अपने क़ौल पर अमल नहीं करेंगे हम दूसरों को उसके ज़ेरे-असर नहीं ला सकते। यही कमी हमारी तरक़्क़ी की राह में रुकावट बनती है और हम इसे 'नामुमकिन' कह देते हैं।

अगर हमारी सोच में गहराई और गीराई हो तो यही नामुमकिन हमारी कामयाबी की बुनियाद बन सकती है। लफ़्ज़ नामुमकिन से 'ना' निकाल दें तो 'मुमकिन' हो जाता है और हम इसे आसानी से अंजाम दे सकते हैं। 'ना' लफ़्ज़ ही तो तमाम जिद्दोजुहद और काविशों की जड़

है। इसी 'ना' के लिए तो हम बार-बार कोशिशें करते हैं और यही 'ना' हमारी राह में रुकावटें पैदा करता है। तमाम तगो-दौ इसी 'ना' के लिए होती है।

नेपोलियन बोना पार्ट की कामयाबियों का राज़ इसी 'ना' या नहीं में मुज़मिर था। बक़ौल नेपोलियन उसकी ज़िन्दगी की लुग़त में लफ़्ज़ 'नही' या 'ना' नहीं है। कुछ यही दास्तान अंग्रेज़ी के लफ़्ज़ (इंपॉसबिल Impossible) की है। अंग्रेज़ी में सलीस अन्दाज़ में लफ़्ज़ को अदा करके किसी काम के ना होने की मुहर सब्त कर देते हैं, लेकिन यही लफ़्ज़ ख़ुद मुतकल्लिम को इस बात की दावत देता है कि उसमें जो राज़ मख़्फ़ी है वह ख़फ़ीफ़-सी काबिश के बाद अयाँ होता है। यही Impossible जो अपने ज़बान से कहता है IM (am) possible यानी वह नामुमकिन चीज़ कर कहता है 'मैं मुमकिन हूँ' फिर भी हमारी फ़हम व फ़िरासत इसको क़बूल नहीं करती।

कभी-कभी इंसान यह क्यों सोच लेता है कि अगर उसमें कोई ख़ामी है तो वह दूर नहीं हो सकती, जबकि ऐसा नहीं है। अगर इंसान कोशिश करे तो क्या कुछ नहीं हो सकता। लेकिन ऐसा कम ही होता है कि इंसान अपने अन्दर अच्छी आदतें पैदा करके एक मिसाल क़ायम करे। बल्कि होता तो यूँ है कि "अंधे के हाथों में चिराग़" जिससे अंधे को तो कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता बल्कि दूसरे उससे मुस्तफ़ीद होते हैं।

हम दूसरों पर हँसते हैं और दूसरे हमारी ज़ात से अपनी इस्लाह करते हैं। हम दूसरों की ग़लतियों पर हँसते हैं, हम दूसरों की क़ाबीलियत देखकर हसद करते हैं, जबकि होना तो यूँ चाहिए कि बजाय हसद के हम उनपर रश्क करें और अपने अन्दर इतनी ज़्यादा क़ाबलियत व अहलियत पैदा करें कि वही हमारी ताक़त बन जाए। दूसरों को टोकने से ज़्यादा बेहतर है कि अपनी इस्लाह की जाए।

यह काम उसी वक़्त शुरू कर दें। हो सकता है कि हमारी नज़र इस सवाल पर जाए कि कैसे शुरू करें और कहाँ से शुरू करें? तो इसका जवाब यह है कि जिससे पहले कुछ न हुआ हो, उसे शुरुआत कहते हैं,

बिल्कुल इसी तरह अगर हम खुद अपनी इस्लाह के बारे में आज ही से इब्तिदा करें और दूसरों की ग़लतियों को नज़र-अन्दाज़ करना शुरू कर दें तो शायद बहुत हद तक हम एक कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारनेवालों में शामिल हो सकते हैं।

क्या आप (सल्ल०) के बदन का साया नज़र आता है?

सवाल : क्या आप (सल्ल०) का साया होता था?

जवाब : हज़रत ज़कवान (रह०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) का साया न तो दिन में नज़र आता था और न ही रात में।

इसको हकीम तिर्मिज़ी ने नक़ल करने के बाद फ़रमाया :

वजह यह है कि कोई काफ़िर आपके साये पर न चले, अगर कोई काफ़िर आपके साया-मुबारक पर चलेगा तो यह आपके लिए बाइसे ज़िल्लत होगा।

इब्ने सबा फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) का साया-मुबारक ज़मीन पर पड़ता ही नहीं था। आप तो नूर थे, रात-दिन में जब भी चलते साया ज़ाहिर नहीं होता था। बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि उसकी ताईद आप (सल्ल०) के फ़रमान : *"अल्लाहुम्मजअलनी नूरा"* से भी होती है।

(सुब्लुल हुदा वर्रिशाद फ़ी सीरत ख़ैरुल-इबाद, जिल्द 2, पेज 9)

आपकी किताब "मोमिन का हथियार" पढ़ती हूँ मगर...

सवाल : हम आपकी किताब 'मोमिन का हथियार' बिला नाग़ा सुबह व शाम पढ़ती हूँ, लेकिन कभी-कभी किसी मशग़ूलियत की वजह से नहीं पढ़ पाती तो क्या उसको दूसरे वक़्त में पढ़ सकती हूँ?

जवाब : इमाम नववी अपनी किताब 'अल अज़कार' सफ़ा 4 पर फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स का रात या दिन के किसी वक़्त में या नमाज़ के बाद या किसी और वक़्त में ज़िक्र का वज़ीफ़ा मुतय्यन हो और उससे

उस वक़्त में वह वज़ीफ़ा फ़ौत हो जाए तो मुनासिब है कि जब भी वक़्त मिले उसको पढ़ लें, तर्क न करें इसलिए कि जब वज़ीफ़ा की आदत बन जाएगी तो वह वज़ीफ़ा उससे नहीं छूटेगा। लेकिन अगर वह उस वज़ीफ़े को पूरा करने में ग़फ़लत करेगा तो फिर वज़ीफ़ा का उस वक़्त में ज़ाया होना भी आसान हो जाता है। चुनांचे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) की रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "जो आदमी अपने कुल वज़ीफ़े या उसमें से कुछ हिस्सा पूरा किए बग़ैर सो गया फिर सुबह उसको फ़ज्र की नमाज़ से लेकर ज़ोहर की नमाज़ तक किसी वक़्त में पूरा कर लिया तो उसके लिए ऐसा ही लिखा जाएगा गोया उसने उसको रात ही में पढ़ा है।" (सहीह मुस्लिम, जिल्द 1, पेज 256) लिहाज़ा बन्दे की राय यह है कि उसको नाग़ा न कीजिए।

जहेज़ की लानत से बचिए

अल्लाह तबारक व तआला ने तमाम मख़्लूक़ात में इंसान को सबसे अफ़ज़ल व आला दर्जा अता फ़रमाया है। इसमें सोचने और समझने की सलाहियत मौजूद है। सारी दुनिया के इंसानों से क़ता नज़र, हम अगर सिर्फ़ मुसलमानों की बात करें तो उनकी कुछ हरकतें देखकर अफ़सोस होता है कि वह क़ौम, जिसे पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मा (सल्ल०) ने अपने हर-हर अमल से ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा बताया है, किस तरह कुछ हरकतों की वजह से बदनाम है। "जहेज़" का शुमार भी ऐसी ही हरकतों में होता है जिसका इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं, इसके बावजूद मुसलमानों में इसकी वबा आम है। हालांकि हुज़ूर (सल्ल०) का इरशाद गरामी है कि "वह शादी बहुत बाबरकत है जिसका बार कम से कम पड़े।" (शोबुल ईमान लिल बैहक़ी)

जहेज़ एक ख़तरनाक वबा की तरह हमारे समाज में मौजूद है। इसके लिए किसी हद तक नौजवानों को भी ज़िम्मेदार क़रार दिया जा सकता है जो अपने वालिदैन के साथ जहेज़ की फ़रमाइशों में पेश-पेश रहते हैं। हालांकि नौजवानों के इख़्तियार में है कि वे अपनी ज़िन्दगी का

फ़ैसला ख़ुद करें और उसके लिए वालिदैन को राज़ी भी कर सकते हैं। जहेज़ के ख़िलाफ़ इंक़लाब लाने में नौजवान अहम किरदार अदा कर सकते हैं। वालिदैन अपनी बेटी को जहाँ तक मुमकिन होता है, अपनी औक़ात से ज़्यादा देने की कोशिश करते हैं लेकिन इसके बावजूद जहेज़ के लालची इंसानों का दिल नहीं भरता और हैरत की बात तो यह है कि ऐसे लोगों को समाज के इज़्ज़तदार लोगों में शुमार किया जाता है।

इस ज़िम्न में जहाँ नौजवानों पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ आयद होती हैं वहीं लड़की और उसके अहले ख़ाना को भी इससे बरी नहीं किया जा सकता। क्योंकि अक्सर देखा गया है कि लड़की के वालिदेन, उसकी ख़ुशी के लिए क़र्ज़ लेकर या घर बेचकर किसी भी तरह जहेज़ का सामान ख़रीदते हैं, चाहे लड़केवालों की तरफ़ से मुतालबा हो या न हो। यह लड़कीवालों का ग़लत फ़ैसला होता है कि सामान देने से उनकी बेटी ख़ुश रहेगी। अव्वल तो जहेज़ देना ही नहीं चाहिए, दूसरे यह कि जहेज़ माँगनेवालों के यहाँ अपनी बेटी का रिश्ता नहीं करना चाहिए क्योंकि जो लोग आज मुतालबा कर रहे हैं इसकी क्या गारंटी है कि वे इतने पर ही इक्तफ़ा कर लेंगे? कभी कभी तो ऐसा भी देखने में आता है कि मंगनी के चन्द महीने बाद लड़केवाले जहेज़ का मुतालबा करते हैं और लड़कीवाले इज़्ज़त के मारे चुपचाप उनका मुतालबा क़बूल कर लेते हैं। क्योंकि दूसरी सूरत में मंगनी तोड़ देने की धमकी दी जाती है और यह हर कोई जानता है कि अगर लड़की की किसी वजह से मंगनी टूट गई तो क़ुसूरवार न होते हुए भी सारा इल्ज़ाम उसी लड़की व लड़कीवालों पर धर दिया जाता है कि यक़ीनन उनमें कोई ख़राबी होगी तब ही तो इतने दिनों पुरानी मंगनी टूट गई। लेकिन इस तरह का धोखा लड़कीवालों को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। इस तरह के अनासिर से निपटने के लिए क़ानून का सहारा भी लिया जा सकता है।

जहेज़ की वबा ने हमारे पूरे मुआशरे को अपनी लपेट में ले लिया है। अब क्या पढ़े-लिखे और क्या जाहिल, सब ही इस मसले में एक सफ़ में नज़र आते हैं। ऐश व आराम और ग़ैर ज़रूरी इख़राजात को पूरा करने के लिए शादी के बरसों बाद भी फ़रमाइशें की जाने लगी हैं और

पूरी न होने की सूरत में, जिन्दगी भर का साथ निभाने का वादा पलों में तोड़ दिया जाता है। और इस तरह लड़की जब वापस अपने वालिदैन के घर आती है तो अकेली नहीं होती, बल्कि उसके साथ बच्चे भी होते हैं जिनकी ज़िम्मेदारी उसके वालिदैन को उठानी पड़ती है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि अगर लड़का कोई काम वग़ैरह नहीं करता है तो उसके वालिदैन सऊदी वग़ैरह भेजने का ख़र्च भी लड़की से माँगते हैं। इस तरह के वाक़िआत आम हैं लेकिन उसे हमारी बेहिसी के अलावा और क्या कहा जा सकता है कि हम देखकर भी अनजान बने रहते हैं।

जहेज़ के मुतालबे की वजह से कितनी ही बेटियाँ वालिदैन की चौखट नहीं पार कर पाती हैं और उनकी उमर गुज़री जा रही है। दौरे जदीद में लोगों ने जहेज़ को फ़ैशन बना लिया है। हर चन्द कि आज भी ऐसे लोग हैं जो सादगी से इस मुक़द्दस फ़र्ज़ को अंजाम दे रहे हैं, इसके बावजूद अक्सरियत मुतालबा करनेवालों की है। इस वबा के तदारुक के लिए नौजवानों के साथ ख़्वातीन भी अहम किरदार अदा कर सकती हैं, क्योंकि आम तौर से फ़रमाइशें सास व ननदों की तरफ़ से ज़्यादा होती हैं।

इस्लाम जैसे आसान मज़हब के पैरोकार होने के नाते, हमारा यह फ़र्ज़ है कि हम इस तरह की मुआशरती बुराइयों से खुद भी बचें और दूसरों को भी बचाएँ। क्योंकि यही इस्लाम का शेवा है। अगर हम अपने मुआशरे की इस्लाह करना चाहते हैं तो हमें अपने घर से ही इसकी शुरुआत करनी चाहिए।

इस्लामी सज़ाएँ इंसानी मुआशरे के लिए रहमत हैं

इस्लाम में औरत को जो मक़ाम व मर्तबा दिया गया है वह उसे तारीख़ के किसी दौर में भी हासिल नहीं रहा है। जहाँ तक औरत और मर्द के दर्मियान तक़ाबुल की बात है, हुक़ूक़ व एहतिराम के मामले में

औरत और मर्द के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं है। अलबत्ता दोनों का मिज़ाज और फ़ितरी तक़ाज़ों का लिहाज़ रखते हुए दोनों की ज़िम्मेदारियों में फ़र्क़ रखा गया है। इस वजह से दोनों का मक़ामे-अमल एक-दूसरे से मुख़्तलिफ़ है। यह कोई अफ़ज़लियत और अदम-अफ़ज़लियत या बरतरी और कमतरी की बात नहीं बल्कि एक नागुज़ीर मुआशरती ज़रूरत है। औरत और मर्द के फ़राइज़ के मामले में शरीअत के अहकामात को इसी नुक़त-ए-नज़र से देखा जाना चाहिए।

दोनौ का ख़ालिक़ व मालिक एक है। वे रिश्त-ए-इज़दुवाज में मुंसलिक होने के बाद से उमर के आख़िरी लम्हे तक दोनों के दर्मियान कोई इम्तियाज़ नहीं बरतता है। और न ही एक के दुख-दर्द को दूसरे से हल्का तसव्वुर करता है। इसी वजह से इलाम में औरत और मर्द के दर्मियान नाइत्तिफ़ाक़ी की सूरत में जिस तरह मर्द को तलाक़ का इख़्तियार है उसी तरह औरत को भी खुला का हक़ दिया गया है। जबकि दूसरे मज़ाहिब में इस तरह की कोई सहूलत नहीं पाई जाती। मिसाल के तौर पर हमारे मुल्क का एक क़दीम मज़हब हिन्दूइज़्म या सनातन धर्म है, जिसकी इंसान दोस्ती और रवादारी नज़रयाती सतह पर ही सही, ज़बाने ज़द आम है। लेकिन हम देखते हैं कि अज़दुवाजी ज़िन्दगी के नाज़ुक मामलात में हिन्दू धर्म कोई वाज़ेह रहनुमाई नहीं कर पाता। तलाक़ व खुला जैसे ऐन फ़ितरी उसूल हिन्दू धर्म में नहीं मिलते। खुला का तसव्वुर तक इस धर्म के ग्रंथों में नहीं पाया जाता। औरत ने जिस मर्द के साथ अग्नि के सात फेरे लगा लिए उसी के दामन से उसे आख़िरी सांस तक बँधे रहना है चाहे आइली ज़िन्दगी में कैसा ही उतार-चढ़ाव आए और मियां- बीवी की ज़िन्दगी ज़हर से भी तल्ख़तर क्यों न हो जाए। बेवा के मसाइल तो इससे भी ज़्यादा संगीन हैं। औरत अगर बेवा हो जाए तो उसका बन- ठनकर निकलना और बनाव-सिंगार करना तो दरकिनार, बनाव सिंगार की अशया रखने तक की उसे इजाज़त नहीं होती। दूसरी शादी का हक़ तो बहुत दूर की बात है। उसके बख़िलाफ़ इस्लाम में औरत के हुक़ूक़ की कितनी ठोस ज़मानत है और वह औरत की अज़्मत का कितना ऊँचा तसव्वुर रखता है, इसका अन्दाज़ा इस एक मसले से

लगाया जा सकता है। मसला यह है कि अगर कोई शख़्स किसी औरत की पाकदामनी पर उंगली उठाए तो उसे अपने इल्ज़ाम के सुबूत में चार आदमियों को पेश करना पड़ेगा। अगर वह चार मर्दों की गवाही न पेश कर सका तो उसकी नंगी पीठ पर 80 कोड़े मारे जाएँगे। इस बाब में इस्लाम का मौक़िफ़ यह है कि किसी औरत पर अंगश्त-नुमाई करने से पहले ख़ूब अच्छी तरह सोच लो, सोचे-समझे बिना महज़ क़यास आराई की बुनियाद पर हरगिज़ ज़बान न खोलो।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आयली व मुआशरती ज़िन्दगी हमारे लिए मशअले-राह है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) पर तोहमत लगाई गई, लेकिन आप (सल्ल०) ने कामिल तहक़ीक़ के बिना कोई रद्दे अमल ज़ाहिर नहीं किया, यहाँ तक कि आप (सल्ल०) के असहाब दूसरे अल्फ़ाज़ में उस वक़्त के इस्लामी मुआशरे ने भी हुस्ने ज़न से काम लिया और सब्र व इंतिज़ार की पॉलिसी पर चलते हुए हद दर्जे क़ुव्वते बर्दाश्त और ज़ब्त व तहम्मुल का मुज़ाहिरा किया। बिल आख़िर उम्मुल मोमिनीन की बराअत में पूरा एक रुकूअ नाज़िल हुआ, और मुनाफ़िक़ीन की फैलाई हुई अफ़वाह के ग़ुब्बारे की हवा निकल गई।

मग़रिबी मुसन्निफ़ीन जिन इस्लामी सज़ाओं का बर-सरे-आम मज़ाक़ उड़ाते हैं, उन्हीं में एक हदे-ज़िना है। इन सज़ाओं को वे दौरे-वहशत की यादगार क़रार देते हैं। लेकिन इस्लामी ताज़ीरात में दौरे-वहशत की यादगारों जैसी कोई चीज़ नहीं आती। सच्ची बात तो यह है कि इस्लामी सज़ाएँ इंसानी मुआशरे के लिए ज़हमत नहीं बल्कि रहमत हैं। अब ज़िना की हद (सज़ा) ही को ले लीजिए। यह महज़ ताज़ीर नहीं, सोसायटी के लिए तंबीह भी है। इसका मक़सद सोसाइटी को अख़्लाक़ी आलूदगी से पाक व साफ़ रखना है। मग़रिब के वज़अ करदा क़वानीन के नज़दीक ज़िना एक मालूमी चीज़ है। इसके गुनाह होने का तसव्वुर तक मग़रिबी तहज़ीब में नहीं है।

जदीद क़वानीन या मग़रिबी तहज़ीब में सिर्फ़ ज़िना बिलजब्र (बलात्कार) को जुर्म में शुमार किया जाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में मग़रिब का

तसव्वुरे आज़ादी यह है कि आज़ादी उस वक़्त तक जब तक है वह दूसरे की आज़ादी से मुतसादुम न हो। लेकिन इस्लाम में आज़ादी का तसव्वुर इससे मुख़्तलिफ़ है। इस्लाम इसी के साथ एक क़ैद और लगाता है, वह यह भी देखता है कि बेक़ैद आज़ादी के इस्तेमाल से मुआशरे पर किस क़िस्म के असरात मुरत्तब होंगे। गोया मग़रिब में बराहे-रास्त मुदाख़लत ही को आज़ादी के मनाफ़ी समझा जाता है जबकि इस्लाम इसका दायरा फ़र्द से मुआशरे तक वसीअ करता है। बराहे रास्त मुदाख़लत के साथ वह बिल-वास्ता मुदाख़लत को भी आज़ादी के ख़िलाफ़ मानता है और उसे इंसानी समाज के लिए मुज़िर क़रार देता है।

मुमकिन है कोई शख़्स यह कहे कि इस्लाम का तसव्वुरे-आज़ादी और सोसायटी को साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रखने का दावा सर आँखों पर, लेकिन ऐसी भी क्या संगदिली कि अगर किसी से ज़िना का सुदूर हो जाए तो उसे पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिया जाए। संगसार किए जाने की यह सज़ा (रजम) इंतिहाई वहशतनाक और आला दर्जे की संगदिली की अलामत है। लेकिन ऐतराज़ उठाने से पहले यह देखना चाहिए कि जिन मुमालिक में इस्लामी क़वानीन नाफ़िज़ हैं वहाँ पर रजम, क़िसास और इसी तरह क़ता-ए-यद (हाथ काटने) के कितने मुक़द्दिमात सामने आते हैं। इसके बरअक्स जिन मुमालिक में बेक़ैद आज़ादी का रुझान और जदीद कल्चर का ग़लबा है, बिल ख़ुसूस मग़रिबी मुमालिक में ज़िना, क़त्ल, अग़वा, डकैती और गुंडागर्दी की शरह किस तेज़ी से आगे बढ़ रही है। इस्लाम अपने मज़बूत मौक़िफ़ के ज़रिए मुआशरे को इस अंजामे बद से बचाना चाहता है और जदीद इंसानों को उन अख़्लाक़ी बीमारियों और आलाइशों से पाक रखना चाहता है जो बदक़िस्मती से मग़रिबी अक़वाम का मुक़द्दर बनी हुई हैं।

आज वे ताज़ीरात नहीं हैं चुनांचे देख लीजिए इंसान शतुर-बेमहार बना हुआ है और इधर-उधर मुँह मारता फिर रहा है। ख़ुसूसन मग़रिबी मुमालिक में जहाँ इस्लामी अफ़्कार व नज़रियात का मज़ाक़ उड़ाया जाता है, वहाँ आला इंसानी औसाफ़ और रूहानी व अख़्लाक़ी इक़्दार ख़्वाब में

भी देखने को नहीं मिलते। मग़रिबी सोसायटी में रूहानियत पर मब्नी सोच को रजअत-पसन्दी से ताबीर किया जाता है। इसके उलट आप उन मुमालिक में जाकर देखिए जहाँ पर किसी न किसी दर्जे में इस्लामी क़वानीन नाफ़िज़ हैं या जहाँ के अवाम में इस्लामी क़वानीन और इस्लाम अफ़्कार व अक़ाइद को फ़िक्र व नज़रियाती सतह पर बरतरी हासिल है, वहाँ वह हया-सोज़ मनाज़िर देखने को नहीं मिलते जो लंदन, पेरिस या दीगर यूरोपीय मुमालिक में बरसरे-आम देखे जाते हैं।

ज़रूरत है कि इस्लाम के आइली व मुआशरती क़वानीन के बारे में पाई जानेवाली ग़लत-फ़हमियों को ज़राए इब्लाग़ के ज़रिए दूर किया जाए और इस्लाम के अबदी व आफ़ाक़ी उसूलों को समझा जाए।

तेरी गोद में पलती है तक़दीरे-उमम

इल्म की अहमियत व इफ़ादियत अपनी जगह मुसल्लम है। आज के इस अहद में तालीम उतनी ही ज़रूरी है जितना कि ज़िन्दगी के लिए सांस की आमद व रफ़्त। एक बच्चे के लिए माँ की गोद सबसे पहला मदरसा होता है। एक नौमालूद जब इस दुनिया में आता है तो वह बिल्कुल मासूम और फ़रिश्ते की तरह हर गुनाह से पाक होता है। तमाम दुनियावी उमूर और मसाइल से आज़ाद होता है। लेकिन जैसे-जैसे वह अपनी ज़िन्दगी के इब्तिदाई मराहिल को तै करते हुए अपनी तिफ़लाना ज़िन्दगी का आग़ाज़ करता है, हर शै लाशऊरी तौर पर उसके सामने आती है। बच्चा जब अपनी माँ की गोद से उतरता है तों वह अपने घर की ज़मीन पर क़दम रखता है, गोया उसे यहीं एहसास हो जाता है कि उसके अतराफ़ का माहौल क्या है। वह अपने अतराफ़ के माहौल से मानूस होता चला जाता है और उन चीज़ों को क़बूल करता है जो उसके इर्द-गिर्द फैली हुई होती हैं।

समाजी नुक़्त-ए-नज़र से एक बच्चे का समाज उसका घर होता है और बच्चा अपने इस माहौल के तमाम तौर-तरीक़ों से मुताबिक़त करना सीखता है या वालिदैन उसे सिखाते हैं। उसमें मर्कज़ी किरदार माँ का

होता है, इसलिए कि बाप तो तलाशे-मआश में घर से बाहर होता है। अगर माँ तालीमयाफ़्ता है तो सबसे पहले बच्चे को लिखना-पढ़ना सिखाती है, लेकिन माँ अगर अनपढ़ है तो वह उसकी कुछ फ़िक्र नहीं करती, लिहाज़ा बच्चा उससे आज़ाद और खेल-कूद में मगन रहता है। इसका नतीजा यह होता है कि जब वह स्कूल में दाख़िल होता है तो उसमें वह दिलचस्पी या रग़बत मफ़्क़ूद होती है जो तालीमयाफ़्ता माहौल से आनेवाले बच्चों में होती है।

माँ की गोद के बाद और स्कूल में दाख़िले से पहले एक बच्चे का जो पहला मक्तब होता है वह उसका घर और आस-पास का माहौल होता है। घर के बाहर का माहौल भी बच्चे को उतना ही मुतास्सिर करता है जितना कि अन्दर का। अमूमन बच्चे घर के बाहर नाज़ेबा कलिमात और गाली-गलोच सीखते हैं और उसका रद्दे-अमल कम या ज़्यादा घर में भी नज़र आता है। भाई-बहन की लड़ाई में उनकी ज़बान से ये कलिमात न चाहते हुए भी अदा होते हैं। यह बच्चों की आदत होती है कि बैरूनी माहौल से अपने हमउम्र बच्चों से सुननेवाली बातें वे जल्द क़बूल करते हैं। मुश्तरका ख़ानदानों में बच्चे ज़्यादा नफ़्सियाती और हस्सास होते हैं। मुश्तरका ख़ानदान में अफ़राद की तादाद ज़्यादा होने के सबब तू-तू मैं-मैं आम बात होती है और दो अफ़राद के बीच रद्दे-अमल को जब देखते हैं तो उसका असर क़बूल कर लेते हैं। इसका नतीजा यह भी निकलता है कि अक्सर बच्चे घर के बाहर लड़ाई-झगड़े में पेश-पेश रहते हैं। अगर मुश्तरका ख़ानदान में बच्चों के सामने एहतियाती तदाबीर इख़्तियार न की जाएँ तो बच्चे इसी रू में बहना शुरू कर देते हैं जिसके नतीजे में आगे चलकर ख़ानदान के दूसरे अफ़राद मुतास्सिर हो सकते हैं। तजुर्बात और मुशाहिदात यह साबित करते हैं कि बच्चों का ज़ेहन व दिमाग़ एक कोरे काग़ज़ की तरह होता है। बचपन में जो बातें या आदतें उन्हें सुनने और देखने को मिलती हैं वे उनके दिमाग़ में सब्त हो जाती हैं और उमर के साथ-साथ उनमें पुख़्ता भी हो जाती हैं।

हमें अपने मुआशरे को सेहतमन्द बनाने के लिए इस क़ौल को अहमियत देकर एक बच्चे को आनेवाले कल का एक बेहतरीन इंसान

बनाना होगा ताकि वे एक अच्छे और समझदार इंसान बन सकें। जिस तरह एक समझदार इंसान एक छोटे से बच्चे से बहुत सारी बातें सीखता है, उसी तरह एक बच्चा भी अपने बड़े बुज़ुर्गों से बहुत सारी नहीं, बल्कि तमाम बातें सीखता और क़बूल करता है।

बच्चे फ़ितरतन नक़्क़ाल होते हैं। इसलिए घर के अफ़राद को यह बात ज़ेहननशीन कर लेनी चाहिए कि जो भी हरकात व सकनात उनसे सरज़द होंगी, बच्चा उसे फ़ौरन क़बूल कर लेगा, इसलिए बच्चों के सामने लग़वियात और फ़िज़ूलियात से परहेज़ करना वालिदैन और दीगर बड़ों की अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी ही नहीं बल्कि समाजी ज़िम्मेदारी भी है। अगर हम ऐसा करते हैं तो हम उन बच्चों के साथ इंसाफ़ करते हुए उनके लिए एक सालेह, साफ़-सुथरे माहौल की तशकील के लिए फ़िज़ा साज़गार करते हैं।

बच्चे मुस्तक़बिल का सरमाया हैं। इसलिए यह बात निहायत ही अहम है कि उनकी परवरिश के लिए घर का माहौल ख़ुशगवार और सेहतमन्द रखें। क्योंकि एक बच्चा अपने घर में वालिदैन के साथ-साथ घर के दीगर अफ़राद के साथ भी वक़्त गुज़ारता है। एक नेक और सालेह बच्चा जब घर के बाहर क़दम रखता है तो समाज में मुख़्तलिफ़ लोगों से उसका साबिक़ा पड़ता है। मुतअल्लिक़ा अफ़राद बच्चे के आदत व अतवार और किरदार व गुफ़्तार से यह अन्दाज़ा कर लेते हैं कि इस बच्चे के घर का माहौल किस तरह का है।

माहौल दीनी हो तो इसका असर बच्चे के ज़ेहन को मुतास्सिर ज़रूर करता है वर्ना उमूमन नई नस्ल अपने मज़हब और दीन से कोसों दूर नज़र आ रही होती है। इस कमी के लिए भी वालिदैन और घर के अफ़राद ही ज़िम्मेदार ठहराए जाएँगे। बच्चे क़ुदरती तौर पर मासूम होते हैं और उनकी इस मासूमियत में आनेवाले कल का मुस्तक़बिल पोशीदा होता है। बिल-ख़ुसूस एक माँ की गोद में बच्चे की तक़्दीर पलती है जो कि इस मिसरे की ग़म्माज़ है :

तेरी गोद में पलती है तक़दीरे-उमम

क़ुरैश की औरतें

हज़रत उम्मे हानी (रज़ि०) रसूलल्लाह (सल्ल०) की चचाज़ाद बहन थीं। नुबूवत से पहले अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने चचा से उनका रिश्ता माँगा था, मगर बावजूह उन्होंने इंकार कर दिया और उनकी शादी किसी और जगह हो गई। फिर एक वक़्त आया जब वे बेवा हो गईं। हज़रत अली (रज़ि०) की बड़ी ख़्वाहिश थी कि अगर उनकी शादी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से हो जाती तो बड़े शर्फ़ की बात होती। चुनांचे एक दिन उन्होंने मौक़ा पाकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि अगर आप (सल्ल०) उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब से निकाह कर लें तो अल्लाह तआला उन्हें दो रिश्तों से नवाज़ देगा। वह पहले भी आप (सल्ल०) की क़रीबी रिश्तेदार हैं और दूसरा यह कि आप (सल्ल०) की ज़ौजियत में आ जाएँगी।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) के मशविरे को पसन्द फ़रमाया और उम्मे हानी (रज़ि०) को पैग़ामे निकाह भिजवा दिया। उन्होंने जवाब दिया : "अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मुझे अपनी जान से बढ़कर अज़ीज़ हैं। लेकिन आप (सल्ल०) का हक़ बहुत अज़ीम है। मेरे बच्चे यतीम हैं जिनकी मैं परवरिश कर रही हूँ। मुझे अन्देशा है कि अगर मैं आप (सल्ल०) की ख़िदमत का हक़ अदा करने लग जाऊँगी तो मेरे बच्चों के हुक़ूक़ मुतास्सिर होंगे, और अगर बच्चों के हुक़ूक़ अदा करने लग गई तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के हुक़ूक़ की अदायगी में कमी आ जाएगी।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जब उम्मे हानी (रज़ि०) का जवाब सुना तो निहायत ख़ुश हुए और इरशाद फ़रमाया : "क़ुरैश की औरतें तमाम औरतों से बेहतर हैं। ऊँट की सवारी भी कर लेती हैं, छोटे बच्चों पर निहायत मेहरबान और मुशफ़िक़ हैं और अपने शौहर के ज़ाती कामों पर भरपूर तवज्जोह मर्कूज़ करनेवाली हैं।" (अल असाबा, जिल्द 8, पेज 185)

यह ज़मान-ए-जाहिलियत की बात है। मक्का में एक बड़े सरदार की

बेटी थी जिसका नाम हिन्द बिन्ते उतबा बिन रबीआ था। वह अपने ज़माने की निहायत ज़हीन व फ़तीन और हसीन व जमील लड़की थी। उससे शादी के लिए एक ही वक़्त में सुहैल बिन अम्र और अबू सुफ़ियान बिन हरब ने पैग़ाम भेजा। उसके वालिद उतबा अपनी बेटी के पास आए और कहा, "बेटी! मक्का के दो बेहतरीन नौजवानों ने तुमसे शादी की ख़्वाहिश ज़ाहिर की है। अब तुम्हारी मर्ज़ी है जिसको तुम पसन्द करोगी मैं उससे तुम्हारी शादी कर दूँगा।" हिन्द कहने लगी कि अब्बा जान! उन दोनों की आदात और ख़साइल से मुझे आगाह करें ताकि मुझे फ़ैसला करने में आसानी हो।

उतबा ने सुहैल बिन अम्र का तआरुफ़ यूँ करवाया :

"सुहैल बिन अम्र ख़ानदान का मुंतख़ब और बेहतर आदमी है और ज़िन्दगी के नाज़ व नअम की सहूलतें उसको मयस्सर हैं। दौलत व सरवत के सिक्कों की उसके आँगन में कसरत रहती है। मेरी लाडली! अगर तूने उसका पैग़ाम क़ुबूल कर लिया तो वह तेरा होकर रहेगा, तेरी बातों की मुवाफ़िक़त को अपनी शान तसव्वुर करेगा। अगर तूने उसकी हाँ में हाँ मिला दी और उसकी तरफ़ मुहब्बत व मीलान को मुक़द्दम कर दिया तो यक़ीनन उसकी निगाहों का तारा बन जाएगी। तेरा हर क़दम उसकी हथेली पर होगा और तेरी हर बात उसके सर आँखों पर। उसके अहले ख़ाना की बागडोर तेरे हाथ में होगी और माल व दौलत पर तेरी हुक्मरानी होगी।

जहाँ तक अबू सुफ़ियान बिन हरब की बात है तो वह ख़ुशहाल है, हसब व नसबवाला और पुख़्ता व मज़बूत राय का मालिक है। उसका घराना शराफ़त में मारूफ़ है। यह ख़ानदान मूंछों पर हाथ फैरने वाला, शदीद ग़ैरत उसकी फ़ितरत है और कसरते फ़ाल उसकी आदत है, अपने माल के ज़ियाअ से वह ग़ाफ़िल नहीं रहता और न अपने अहले ख़ाना पर लाठी उठाने से कभी बाज़ आता है।"

हिन्द ने वालिद की बात सुनकर अर्ज़ किया :

"वालिद मोहतरम! पहला आदमी सुहैल बिन अम्र सरदार और

अपनी बीवी के नशे में उसके क़दमों के नीचे माल व दौलत बिछानेवाला है, इसलिए मुमकिन है बीवी की नाखुशगवारी के बावजूद उसके लिए उल्फ़त व मुहब्बत का नज़राना पेश करना अपना शेवा बना ले और अपने दिल के नर्म गोशों में उसे जगह देकर अपना तन-मन-धन सब कुछ उसके सुपुर्द कर दे, लेकिन जब उसके अहले ख़ाना की ज़िम्मेदारी बीवी के कमज़ोर कंधों पर आ पड़ेगी तो फिर उसकी ज़िन्दगी का सितारा गर्दिश करने लगेगा और वह ग़लती का शिकार हो जाएगी। और जब अहले ख़ाना उससे कोई रुकावट महसूस करेंगे तो फिर इत्मीनान की सांस लेना भी उसके लिए दूभर हो जाएगा। ऐसी सूरत में उसकी हैसियत कम से कमतर हो जाएगी और उसका सारा नाज़-नख़रा खड़ाऊँ की धूल की तरह मुंतशिर हो जाएगा। अगर उसके बतन से कोई बदसूरत बच्चा जन्म लेगा तो अहमक़ों की फ़ेहरिस्त में उस औरत का एक नाम का इज़ाफ़ा हो जाएगा और अगर कोई शरीफ़ बच्चा जन्म लेगा तो ऐसे घराने में उसकी बदक़िस्मती उसका साथ छोड़ने को तैयार न होगी। लिहाज़ा ऐ वालिदे मोहतरम! इस रिश्ते को नामंज़ूर कर दीजिए। जहाँ तक दूसरे आदमी अबू सुफ़ियान बिन हरब की बात है तो वह इफ़्फ़त मआब, आज़ाद और शर्मीली दोशीज़ा का शौहर बनने के लिए बिल्कुल मुनासिब है, और हाँ, मैं भी उसके ख़ानदान का एक ऐसा फ़र्द बनकर रहूँगी कि उसे मेरे ख़िलाफ़ ग़ैरत खाने का मौक़ा ही न मिलेगा यानी बिल्कुल पाकदामन रहूँगी और अपनी सारी तवज्जोह अपने शौहर ही पर मर्कूज़ रखूंगी और ख़ानदान को मेरी तरफ़ से कोई शिकायत न होगी ताकि मेरी होनेवाले शरीक हयात को उसकी तरफ़ से किसी नुक़सान का सामना न करना पड़े। मैं ऐसे ग़ैरतमन्द आदमी से शादी पर इत्तिफ़ाक़ करती हूँ। सो अब्बू जान आप मेरी शादी उसी से कर दीजिए।"

बेटी का यह दूररस तजज़िया सुनने के बाद उतबा बिन रबीआ ने अपनी इस बेटी की शादी अबू सुफ़ियान बिन हरब से कर दी। यह वही हिन्दा है जो एक वक़्त में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सबसे बड़ी दुश्मन थी। ग़ज़्व-ए-बदर में उसका बाप उतबा हज़रत अमीर हमज़ा (रज़ि०) के हाथों वासिले जहन्नम हुआ तो उसने इंतिक़ाम लेने की ठानी।

चुनांचे ग़ज़व-ए-उहुद से पहले वहशी को इसी ने बदला लेने के लिए तैयार किया था। ख़ुद औरतों के एक वफ़्द की क़यादत करती हुई उहुद में शरीक हुई फिर वक़्त आया कि फ़तह मक्का के बाद उसने इस्लाम क़बूल कर लिया। छिपती हुई अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास बैअत के लिए आई। जब आप (सल्ल०) ने बैअत की शराइत में यह ज़िक्र फ़मराया कि ज़िना नहीं करना तो बेइख़्तियार पुकार उठी कि क्या आज़ाद औरत भी ऐसी घटिया हरकत की मुरतकिब हो सकती है? उस ख़ातून के बतन से एक ऐसी शख़्सियत ने जन्म लिया जो अरब की निहायत ज़हीन व फ़तीन, मुतहम्मुल मिज़ाज और कामयाब सियासी शख़्सियत थी, जिसको दुनिया अमीर मुआविया (रज़ि०) के नाम से जानती है।

किब्र की तारीफ़ और उसका नतीजा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "वह शख़्स जन्नत में दाख़िल न होगा जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी किब्र होगा।"

एक शख़्स ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह! आदमी यह चाहता है कि उसका कपड़ा अच्छा हो और उसका जूता भी अच्छा हो।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "अल्लाह जमील है और जमाल को पसन्द करता है। किब्र तो हक़ के मुक़ाबले में इतराने और लोगों को हक़ीर समझने का नाम है।" (मुस्लिम)

फ़ायदा : इस हदीस से यह बात मालूम हुई कि जाइज़ हद के अन्दर लिबास में, रिहाइश में, ज़ेबाइश (सजावट) में ख़ूबसूरती और नफ़ासत इख़्तियार करना और अपने जी को ख़ुश करना दीन के ख़िलाफ़ नहीं है। अलबत्ता यह सब लोगों के सामने बड़ा बनने के लिए और दूसरों को हक़ीर समझने के लिए किया जाए तो यह किब्र और ग़ुरूर है और इसका नतीजा जहन्नम है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है : आराइश भी जाइज़, ज़ेबाइश भी जाइज़, पर नुमाइश नाजाइज़! अल्लाह हमको इससे महफ़ूज़ रखे।

हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) का अमीर बनने से इनकार

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) ने उनको अमीर बनाने के लिए बुलाया। उन्होंने अमारत क़बूल करने से हज़रत उमर (रज़ि०) को इंकार कर दिया। हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया : क्या तुम अमीर बनने को बुरा समझते हो; हालांकि उसे तो उस शख़्स ने माँगा था जो तुमसे बेहतर थे। हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) ने कहा कि वह कौन? हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया : वह हज़रत यूसुफ़ बिन याक़ूब (अलैहि०) हैं। हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) ने कहा, हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) तो ख़ुद अल्लाह के नबी थे और अल्लाह के नबी के बेटे थे (उन्हें ऐसा करने का हक़ था)। मैं तो उमैमा नामी औरत का बेटा अबू हुरैरह् हूँ, और अमीर बनने में मुझे तीन और दो (कुल पाँच) बातों का डर है। हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा कि पाँच ही क्यों नहीं कह देते? हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) ने कहा? (दो बातें तो ये हैं कि) (1) मैं बग़ैर इल्म के कोई बात कह दूँ (2) और कोई ग़लत फ़ैसला कर दें। (अमीर बनकर मुझसे यह दो ग़लतियाँ हो सकती हैं जिसके नतीजे में मुझे ये तीन सज़ाएँ अमीरुल मोमिनीन की तरफ़ से मिल सकती हैं कि) (1) मेरी कमर पर कोड़े मारे जाएँ (2) मेरा माल छीन लिया जाए और (3) मुझे बेआबरू कर दिया जाए। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 63)

अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ फ़ैसला करनेवाला हलाक होगा

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत उसमान (रज़ि०) ने उन्हें क़ाज़ी बनाना चाहा तो उन्होंने माज़रत कर दी और फ़रमाया : मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना है कि क़ाज़ी तीन क़िस्म के हैं— जिनमें एक निजात पाएगा और दो दोज़ख़ में जाएँगे। जिसने ज़ालिमाना फ़ैसला किया या अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ फ़ैसला किया वह हलाक होगा और जिसने हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला किया वह नजात पाएगा। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 64)

सबसे पहले इस्लाम में अमीर कौन बना?

सवाल : सबसे पहले इस्लाम में अमीर कौन बना?

जवाब : "हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश असदी (रज़ि०) सबसे पहले सहाबी हैं, जिनको इस्लाम में अमीर बनाया गया।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 54)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का तैर कर तवाफ़ करना

सवाल : हमने सुना है कि किसी ज़माने में लोग तैर कर तवाफ़ करते थे। क्या यह सही है?

जवाब : जी हाँ, सही है।

क़िस्सा : हज़रत मुजाहिद (रह०) कहते हैं कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि०) इबादत में इस दर्जे को पहुँचे जिस दर्जे को कोई और न पहुँच सका। एक मर्तबा इतना ज़बरदस्त सैलाब आया कि उसकी वजह से लोग तवाफ़ न कर सकते थे। लेकिन हज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि०) एक हफ़्ते तक तैर कर तवाफ़ करते रहे। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 715)

मुंतख़ब अशआर

हमने काँटों को भी नर्मी से छुवा है लेकिन
लोग बेदर्द हैं फूलों को मसल देते हैं।
न जाने कितने चिराग़ों को मिल गई शोहरत
इक आफ़ताब के बे-वक़्त डूब जाने से।

आप बहुत अच्छे माँ-बाप बन सकते हैं

आप बहुत अच्छे माँ-बाप बन सकते हैं, बशर्ते कि आप अपने बच्चों को समझें, उनका ख़्याल रखें, उनकी बातें तवज्जोह से सुनें और अपनी राय दें। आप उस वक़्त भी अपने जज़्बात को क़ाबू में रखें जब आपका

बच्चा आधी रात को उठाकर आपसे कोई सवाल करे और कोई ऐसा मसला पैदा करे जिसे फ़ौरी हल करना ज़रूरी हो। जब आप बच्चों की दिन-रात की परेशानियों का हल निकालेंगे तो बच्चों को घर में तहफ़्फ़ुज़ का एहसास होगा और वे पुरे एतिमाद होंगे।

अगर आप बच्चों को ज़िन्दगी में कामयाब देखना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि उनकी मुसलसल निगरानी करना छोड़ दें, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वे जो चाहे करते रहें। आप उनपर नज़र रखें लेकिन इस तरह कि उन्हें यह एहसास न हो कि उनपर हर वक़्त नज़र रखी जा रही है।

आजकल के वालिदैन बच्चों के मामले में बहुत ज़्यादा हस्सास होते हैं। वह बच्चों के सवालात का भी न सिर्फ़ सख़्ती से जवाब देते हैं बल्कि उनको मार-पीटकर समझाने की कोशिश करते हैं। अगर आपका बच्चा अपने हम-उम्रों के साथ दोस्ताना तरीक़े से रहता है और अपने माहौल से मानूस है तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। कुछ बच्चे जिनमें फ़न्काराना सलाहियतें होती हैं लेकिन वे अपना ज़्यादा वक़्त बेकार कामों में सर्फ़ करते हैं, ऐसा क्यों होता है? याद रखें! बचपन की मार, बच्चों की सलाहियतों को ख़त्म कर देती है। अगर आप मुसलसल बच्चों के बारे में परेशान रहेंगे तो इसका नतीजा यह निकलेगा कि आप ख़ुद उलझन और परेशानी का शिकार हो जाएँगे। इसलिए बच्चों की हरकतों की वजह से जज़्बात में न आएँ बल्कि ठंडे दिल से उनकी बातों पर ग़ौर करें। बच्चों के माहिर डॉक्टरों का कहना है कि वालिदैन ख़ुशबाश या चिड़चिड़े बच्चे का अन्दाज़ा तीन साल की उम्र तक लगा सकते हैं। अगर उसकी सेहत अच्छी है और वह माँ-बाप की तवज्जोह के बग़ैर अपने आपसे काफ़ी देर तक खेलता रहता है तो यह अच्छी बात है। आप अपने बच्चे को बहुत ज़्यादा तवज्जोह देकर अपना मोहताज न बनाएँ। उसकी शख़्सियत बनाने में उसकी मदद करें। घर के माहौल को पुरसुकून रखें, क्योंकि माँ-बाप ही बच्चों का आइडियल होते हैं। जब आप दोनों घर पर मौजूद हों तो अपना वक़्त बच्चों को दें। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो बच्चे आपसे दूर होना शुरू हो जाएँगे, बच्चे को तेरह साल की

उम्र तक आपकी ज़्यादा ज़रूरत होती है, जब वह कालेज जाना शुरू करता है तो फिर अपना वक़्त गुज़ारने का ख़ुद फ़ैसला कर लेता है उस वक़्त उसकी मसरूफ़ियात पूछें, मगर बिला वजह रोक-टोक न करें। छुट्टी के दिन बच्चों को घुमाने ज़रूर ले जाएँ। बच्चों की बेहतर नशो-नुमा के लिए उनकी ग़ैर-महसूस तरीक़े से मदद करें, ताकि उनमें अच्छे इंसान बनने की सलाहियतें ब-तदरीज पैदा हों।

अमूमन पहली बार वालिदैन बननेवाले अपने बच्चे से बहुत जल्द ग़लतफ़हमी का शिकार हो जाते हैं और उनकी समझ में नहीं आता कि बच्चे को कैसे एक मुकम्मल और अच्छा इंसान बनाएँ। वह अपना ज़्यादा वक़्त बच्चे को मुख़्तलिफ़ बातें समझाते हुए गुज़ारते हैं और बच्चे के सामने लोगों को यह बताते रहते हैं कि वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करते हैं और उसके लिए बहुत क़ुरबानी दे रहे हैं। इस तरह की बातें कहना और वह भी बच्चों के सामने, मुनासिब नहीं है।

बच्चे कभी-कभी अपने रवैये से परेशानी में मुब्तला कर देते हैं। मसलन माली लिहाज़ से या सेहत की ख़राबी की वजह से। ये ऐसे लम्हात हैं जिनमें बच्चे अपने आपको ग़लत नहीं समझते। यक़ीनन यह बहुत अहम मसला है। इस तरह के मसाइल में अव्वल तो आप ख़ुद में थोड़ा सब्र पैदा करें, ग़ुस्से को क़ाबू में रखें, और हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा करें, इससे आपकी बेज़ारी और ग़ुस्सा कम होगा।

अपने बच्चों को मुकम्मल इंसान बनाने के लिए आप दर्ज ज़ैल नुकात को ज़रूर ज़ेहन में रखें :

(1) बच्चों को हर वक़्त नसीहत न करें।

(2) ख़ुद उनको अपने तौर पर सोचने का मौक़ा दें, ताकि वे आपके सामने अपने आपको अच्छा पेश कर सकें।

(3) आप इस बात पर ग़ौर करें कि आप अपने बच्चे से क्या कह रहे हैं।

(4) बच्चे की बेइज़्ज़ती न करें।

(5) उन्हें यह एहसास न दिलाएँ कि आप उनकी वजह से परेशानी में मुब्तला हैं।

(6) बच्चों पर हर वक़्त तंक़ीद न करें वरना एक वक़्त आएगा कि वे भी आपकी बातों को नज़रअन्दाज़ करना शुरू कर देंगे। या फिर आपको पलटकर जवाब दे देंगे।

(7) ज़्यादा बुलन्द आवाज़ में बच्चों से बात न करें।

(8) बहुत सारी नसीहतें एक साथ न करें।

(9) बच्चों को घर में बन्द रखने की कोशिश न करें, बल्कि उनकी उम्र के मुताबिक़ उनको खिलवाने या मैदान में खेलने की तर्बियत दें।

(10) अपने रवैये पर ग़ौर करें। बच्चा आपके ग़ुस्सा, ख़ुशी और मायूसी से बहुत ज़्यादा सीखता है।

(11) बच्चे को सज़ा देने के बजाए समझाएँ।

सिन्फ़े-नाज़ुक की हिफ़ाज़त बेहद ज़रूरी है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ (سورہ الاحزاب:۵۹)

"ऐ पैग़म्बर! अपनी शरीके हयात, अपनी बेटियों और मुसलमान औरतों को हुक्म दो कि वे घर की चार दीवारी से बाहर निकलें तो अपने चेहरों पर शराफ़त का दुपट्टा ओढ़ लें ताकि उन माओं, बहनों और बेटियों का शरीफ़ होना साबित हो जाए और सरे बाज़ार रुसवाई का सबब न बन जाएँ।"

औरत सिन्फ़े-नाज़ुक है, जिसकी हिफ़ाज़त बेहद ज़रूरी है। चुनांचे अगर यह पर्दे में है तो इसकी हिफ़ाज़त आसान हो जाती है। पर्दा और पर्दे की ग़र्ज़ व ग़ायत ज़ाहिर अमल की पहचान है, यानी जो चीज़ पर्दे में रहकर महफ़ूज़ है गोया उसको किसी चीज़ का ख़तरा लाहिक़ नहीं होता। यही बात मैं उन दानिशवरों, शायरों और अदीबों से कहना चाहता हूँ जो समाजी एतिबार से सरगर्म और फ़आल वाक़ेअ हुए हैं और समाज में

जिनका असर व रसूख़ है। अगर वे पर्दे की वकालत करेंगे तो ज़ाहिर है कि इसका असर समाज पर होगा।

फ़ितरत का तक़ाज़ा ही ऐसा है कि वालिदैन का असर औलाद की नफ़्सियात पर पड़ता है, यानी औलाद के शब-व-रोज़ का ख़याल रखना, अच्छे और बुरे की तमीज़ सिखाना और ज़िन्दगी का लाएहा-ए-अमल मुरत्तब करना हमारी ज़िम्मेदारी होती है। अब रहा माहौल की नज़ाकत, हालात की कैफ़ियत जो ज़माने की रफ़्तार के मुताबिक़ बदलती रहती है लेकिन हमें उस वक़्त यह नहीं भूलना चाहिए कि हम कौन हैं और हमारी हक़ीक़त क्या है?

असूल में हमपर वे सारे आदाब लाज़िम आते हैं जो इस्लामी क़वानीन कहलाते हैं। दर-हक़ीक़त हमने अपनी पहचान की नौइयत भी बदल डाली है। दीन से ग़फ़लत और दुनियावी ख़ुशहाली हमपर कुछ ज़्यादा ही हावी हैं। ग़र्ज़ कि मुआशरे का मिज़ाज बदलता जा रहा है। नफ़्सा-नफ़्सी के आलम में अख़्लाक़ी गिरावट का पहलू नुमायाँ है। ख़ास कर हमारी माओं और बहनों ने इसे अपना लिया है, यही वजह है कि आज हमारी फूल जैसी बच्चियाँ दुनिया के बाज़ार में पिसी जा रही हैं और हम ख़सारे की तरफ़ जा रहे हैं। अय्यारी, मक्कारी और ख़ुदग़र्ज़ी ने हमें लापरवाह कर दिया है। हमारी इज़्ज़त-मआब माएँ घर से निकलकर दुनिया के बाज़ारों में खो जाती हैं, अपना क़ीमती वक़्त ज़ाया कर रही हैं।

सोचिए और ग़ौर कीजिए, कहीं न कहीं आपको ऐसी ख़्वातीन देखने में आएँगी जिनकी पेशान दीन की ख़ूबियों से चमकती होंगी, जिनका ज़मीर ईमान की ख़ुश्बू से महकता होगा। ऐसा आइडियल किरदार हमारे समाज के इर्द-गिर्द आज भी मौजूद है, लेकिन क़ुसूर हमारी नज़रों का है। सब कुछ देखते हुए भी अनजान बने रहते हैं। ग़फ़लत के ख़ुमार ने, लापरवाही के सुरूर ने हमें अंधा कर दिया है और हम इस आइडियल को देखकर भी कुछ सीखते नहीं हैं।

इस्लाम का पाकीज़ा तसव्वुर रोज़े-रौशन की तरह अयाँ है। यह

हमारी अपनी ग़लती है जिसका ख़मियाज़ा आज हम भुगत रहे हैं। इंसानियत का भरम हमारे मुआशरे से ख़त्म होता जा रहा है। क्या होगा और क्या होनेवाला है यह सोचने की हम ज़रूरत ही महसूस नहीं करते। हमारे मुआशरे में जो होना चाहिए था वह नहीं हो रहा है, हमारी बहुत-सी बहनों ने पर्दे को अपनाया ज़रूर लेकिन उसकी नौइयत बदल दी है जिसके सबब अब हमारा पर्दा रियाकारी और नुमाइश में दाख़िल हो गया है।

हमारी बेपर्दगी ने हमें कहीं का नहीं रखा। पहले हम यहूदियों को देखकर शर्माते थे और आज हमको देखकर ग़ैर क़ौमें हँस रही हैं। हमारी चन्द एक ख़वातीन की बेपर्दगी को देखकर दुनिया हैरतज़दा है। मौक़ापरस्त इस बात का इंतिज़ार कर रहे हैं कि वे हमारी बेपर्दा माओं, बहनों को देखकर आवाज़ें कसें।

आख़िर यह कैसा इंक़लाब है? नए ज़माने की नई मंतिक़ ने हमारे अहवाल खोल दिए हैं। फिर भी हम ख़ामोश तमाशाई बनकर कफ़ अफ़सोस मिल रहे हैं। 'न विसाले यार मिला न सनम कदे के साथ हुआ', पर्दा एक था, उसका रंग अनोखा था। अब उसकी नौइयत बदल चुकी है, अनगिनत बुर्क़ाओं ने नए-नए डिज़ाइन का रूप धर लिया है जिसका पहनना और न पहनना बराबर होकर रह गया है।

मैं उन माओं, बहनों से कहना चाहता हूँ जो ज़माने की रविश को अपनाकर अपने वुजूद से और अपनी पहचान से बेवफ़ाई कर रही हैं। रोना तो इस बात का है कि घर उनके लिए क़ैदख़ाना, पार्क, सिनेमा हाल और बाज़ार उनके लिए सुकून व इंबिसात की जगह बन गए हैं। निगाहें नीची रखना तो दूर की बात, निगाहें लड़ाना उनका शिआर बनता जा रहा है। सिरों से चादर सरकनी शुरू हो गई है, अब वह बाज़ार में नंगे सर घूमती हैं। बेशक औरत को बाहर निकलने की इजाज़त है लेकिन इस तरह कि वह अग़यार की नज़रों में महफ़ूज़ हैं, और शराफ़त, नफ़ासत और तक़द्दुस को नेमुल बदल बनाएँ।

मेरी क़ाबिले-सद एहतिराम माओ, बहनो और बेटियो! अगर आप

चाहती हैं कि मुआशरे का वुजूद क़ायम रहे तो सबसे पहले आपको अपने अन्दर झाँकना होगा। कुछ पाने के लिए कुछ खोना ज़रूरी है। शुरू में मुश्किलात से दो-चार होना पड़ेगा। काँटों से उलझना होगा, तारीकियों से निकलना होगा। तब कहीं जाकर गुमशुदा मंज़िल की बाज़याबी मुमकिन हो सकेगी। क्या आप इसके लिए तैयार हैं?

हमें अपनी तर्जीहात मुतैयन करनी होंगी। अपनी इज़्ज़त और इफ़्फ़त के नज़रिये को क़ायम रखना है तो इसका अहम ज़रिया पर्दा है। बेपर्दगी के चलन से हमारे मुआशरे में सिवाए बुराई के भलाई की उम्मीद नहीं की जा सकती। बुराई को रोका न गया तो तहज़ीब व तमद्दुन के परख़च्चे उड़ जाएँगे। बस वही मिसाल दोहराई जाएगी :

हो रहा होने दो चल रहा चलने दो :

तुम अपनी शमा से इस घर में रोशनी कर दो
मेरा चिराग़ सरे-रहगुज़र रखा है।

मुआशरे की तामीर में औरत का रोल

मर्द और औरत के मिलाप से ही इंसानी नस्ल बढ़ रही है। दोनों के ताल्लुक़ से आगे चलकर ख़ानदान और मुआशरा वुजूद में आता है। इंसान आपस में मिल-जुलकर रहते हैं, एक-दूसरे की मदद और तआवुन से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, यानी कि इंसान मुआशरे के बग़ैर नहीं रह सकता। मुआशरे में तरह-तरह के वाक़िआत पेश आते हैं जैसे कि शादी-बियाह, ग़म-ख़ुशी, इयादत, ताज़ियत और मज़हबी व दुनियावी इज्तिमा। इन तमाम मौक़ों पर औरतें एक जगह जमा होती हैं, उनमें आपस में गुफ़्तुगू पहले मौक़े और महल के लिहाज़ से फिर आहिस्ता-आहिस्ता मौक़े से हटकर दीगर मसाइल पर बातचीत शुरू हो जाती है और बातचीत शिकवा शिकायात तक पहुँच जाती है।

अक्सर ख़वातीन ज़बान का इस्तेमाल मोहतात होकर नहीं करती हैं। अगर औरतें ज़बान का इस्तेमाल सही और मोहतात होकर करें तो हमारा मुआशरा बहुत-सी ख़राबियों से पाक रह सकता है। क़ुरआन मजीद में

इरशाद है, "उन मुसलमानों ने फ़लाह पाई जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ करनेवाले हैं और लग़्व बातों से दूर रहते हैं।" (अल मोमिनून : 1-3)

मुआशरे में शादी को ले लीजिए। शादी से पहले मंगनी की रस्म होती है। दोनों तरफ़ से औरतों का आना-जाना होता है। रात भर ढोल बजाकर गीत गाया जाता है, औरतें और लड़कियाँ बन-सँवर कर महरम और नामहरम सबके सामने नाज़ व नख़रे से चलती-फिरती हैं। इस तरह की महफ़िलों में ज़्यादातर बहू अपनी सास की शिकायत और नन्द, भावज की बुराइयाँ बयान करती हैं। इस तरह की महफ़िलों में मज़ाक़-मज़ाक़ में झूठ भी बोला जाता है जो कि जाइज़ नहीं है। एक हदीस में आया है।

हुज़ूर (सल्ल०) से हज़राते सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! आप हमसे मज़ाक़ फ़रमाते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बिला शुब्हा मैं (मज़ाक़ में भी) सच्ची ही बात कहता हूँ।"

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 672)

बहुत-से ऐसे (दुनियावी) इज्तिमाआत होते हैं जिनमें औरतों को जाना ही नहीं चाहिए, मगर औरतें जाना फ़र्ज़े-ऐन समझती हैं। औरतों को चाहिए कि इस्लामी तालीमात पर अमल करें। क्योंकि औरत मुआशरे की तामीर में अहम रोल अदा करती है। इस्लाम का तसव्वुर है कि औरत और मर्द मिलकर मुआशरे को बनाते या बिगाड़ते हैं। ख़ुदाशनास औरत और मर्द एक-दूसरे के मुआविन होते हैं और मुआशरे को तक़्वा की राह पर ले जा सकते हैं।

इमाम अबू हनीफ़ा की दानिशमन्दी ने एक घर बर्बाद होने से बचा लिया

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) का ज़माना था। एक मर्तबा एक शख़्स के घर में चोरी हो गई। चोर उसी मुहल्ले के थे। चोर ने उस शख़्स को पकड़ा और ज़बरदस्ती हलफ़ लिया कि अगर तू किसी को हमारा पता बतलाएगा तो तेरी बीवी पर तलाक़। उस बेचारे ने मजबूरन तलाक़ का

हलफ़ ले लिया और चोर उसका सारा माल लेकर चला गया। अब वह बहुत परेशान हुआ कि अगर मैं चोर का पता बतलाता हूँ तो माल तो मिल जाएगा बीवी हाथ से निकल जाएगी और अगर पता नहीं बतलाता हूँ तो बीवी तो रहेगी मगर सारा घर ख़ाली हो जाता है। चुनांचे माल और बीवी में तक़ाबुल पड़ गया कि या तो माल रखे या बीवी रखे। बड़ी उलझन का शिकार था, किसी से कह भी नहीं सकता था क्योंकि चोर ने उससे अह्द ले रखा था। चुनांचे वह शख़्स हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) की मज्लिस में हाज़िर हुआ। वह बहुत ग़मगीन और उदास व परेशान था। इमाम साहब ने फ़रमाया कि आज तुम बहुत उदास हो, क्या बात है? उसने कहा : हज़रत! मैं कह भी नहीं सकता। इमाम साहब ने फ़रमाया कि कुछ तो कहो। उसने कहा कि हज़रत! अगर मैंने कुछ कहा तो न जाने क्या हो जाएगा। उन्होंने कहा कि इज्मालन कहो। तो उसने कहा कि हज़रत! चोरी हो गई है और मैंने यह अह्द कर लिया है कि अगर मैंने उन चोरों का पता किसी को बतलाया तो बीवी पर तलाक़ हो जाएगी, मुझे मालूम है कि चोर कौन हैं, वे तो मुहल्ले ही के हैं।

इमाम साहब ने फ़रमाया कि तुम मुत्मइन रहो, बीवी भी नहीं जाएगी और माल भी मिल जाएगा और तुम्ही चोरों का पता भी बताओगे। कूफ़ा में शोर हो गया कि अबू हनीफ़ा (रह०) यह क्या कर रहे हैं! यह तो एक अह्द है, जब वह पूरा करेगा तो बीवी को तलाक़ हो जाएगा। यह इमाम साहब ने कैसे कह दिया कि न बीवी जाएगी और न माल जाएगा। ग़र्ज़ उलमा व फ़ुक़्हा परेशान हो गए।

इमाम साहब ने फ़रमाया कि कल ज़ुहर की नमाज़ मैं तुम्हारे मुहल्ले की मस्जिद में आकर पढ़ूँगा। चुनांचे इमाम साहब तशरीफ़ ले गए, वहाँ नमाज़ पढ़ी और उसके बाद एलान कर दिया कि मस्जिद के दरवाज़े बन्द कर दिए जाएँ, कोई बाहर न जाए। उसमें चोर भी थे। उस मस्जिद का एक दरवाज़ा खोल दिया। एक तरफ़ ख़ुद बैठ गए और एक तरफ़ उस शख़्स को बिठा दिया और फ़रमाया कि एक-एक आदमी निकलेगा। जो चोर न हो, उसके मुताल्लिक़ कहते जाना यह चोर नहीं है और जब चोर निकलने लगे तो चुप होकर बैठ जाना।

चुनांचे जो चोर नहीं होते थे उनके मुताल्लिक़ वह कहता जाता था कि यह चोर नहीं है, यह भी नहीं। और जब चोर निकलता तो ख़ामोश होकर बैठ जाता। इस तरह गो उसने बतलाया भी नहीं मगर बिना बताए सारे चोर मालूम हो गए। चुनांचे वे पकड़े भी गए, माल भी मिल गया और बीवी भी हाथ से नहीं गई।

एक लाख हदीसें इस तरह याद हैं जैसे लोगों को सूरह् फ़ातिह् याद है

अबू ज़रआ (रह०) एक मुहद्दिस गुज़रे हैं। उनकी महफ़िल में एक शागिर्द आया करता था। उसकी नई-नई शादी हुई थी। एक दिन महफ़िल ज़रा लम्बी हो गई तो उसको घर जाने में देर हो गई। जब वह रात देर से घर पहुँचा तो बीवी उलझ पड़ी कि मैं इंतिज़ार में थी, तुमने आने में क्यों देर की? उसने समझाया कि मैंने वक़्त ज़ाया नहीं किया, मैं तो हज़रत के पास था। वह कुछ ज़्यादा ग़ुस्से में थी। ग़ुस्से में कह बैठी कि तेरे हज़रत को कुछ नहीं आता, तुझे क्या आएगा। उस्ताद के बारे में बात सुनकर यह नौजवान भड़क उठा।

जब बीवी ने यह कहा कि तेरे उस्ताद को कुछ नहीं आता, तुझे क्या आएगा तो यह सुनकर नौजवान को भी ग़ुस्सा आया और कहने लगा कि अगर मेरे उस्ताद को एक लाख अहादीस याद न हों तो तुझे मेरी तरहफ़ से तीन तलाक़ हैं।

सुबह उठकर दिमाग़ ज़रा ठंडा हुआ तो सोचने लगे कि मैंने तो बहुत बड़ी बेवक़ूफ़ी की। बीवी ने ख़ाविन्द से पूछा कि मेरी तलाक़ मशरूत थी, अब बताएँ कि यह तलाक़ वाक़ेअ हुई या नहीं। उसने कहा कि यह तो उस्ताद साहब से पूछना पड़ेगा। उसने कहा कि जाएँ, पता करके आएँ। चुनांचे यह नौजवान अपने उस्ताद के पास पहुँचा और कहा कि रात यह वाक़िआ पेश आया, अब आप बताइए कि निकाह सलामत रहा या तलाक़ वाक़ेअ हो चुकी है? उनके उस्ताद यह बात सुनकर मुस्कुराए और फ़रमाने लगे कि जाओ तुम मियाँ-बीवीवाली ज़िन्दगी गुज़ारो। क्योंकि एक

लाख अहादीस मुझे इस तरह याद हैं जिस तरह लोगों को सूरह् फ़ातिह् याद होती है। सुब्हानल्लाह! यह क़ुव्वते हाफ़िज़ा की बरकत थी और इल्म की बरकत थी जो अल्लाह तआला ने अता कर दी थी।

नोट : मज़्कूरा क़िस्से बन्दे ने अपनी वालिदा मोहतरमा को सुनाया तो वालिदा ने किताब में लिखने का ज़िक्र किया। चुनांचे बहुक्मे वालिदा इस क़िस्से को बन्दे ने अपनी किताब में लिख लिया।

शहवत का मफ़्हूम और उससे बचने का तरीक़ा

सवाल : बाद सलाम अर्ज़ है कि हमने बारहा आपके और दीगर बुज़ुर्गों के बयानों में शहवत के संगीन गुनाह होने को सुना है, तो शहवत किस चीज़ का नाम है? बराए करम क़दरे तफ़्सील से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाइए और इस गुनाह से बचने की कोई अहम तदबीर बतलाइए।

जवाब : शहवत का लफ़्ज़ इश्तहा से निकला है। अरबी ज़बान में इश्तहा किसी चीज़ की तलब और भूख को कहते हैं। जब इंसान भूखा होता है तो गोया उसको रोटी की शहवत होती है, प्यासे बन्दे को पानी पीने की शहवत होती है, बाज़ लोगों को अच्छे खाने की शहवत होती है, कई लोगों को अच्छे से अच्छा लिबास पहनने की शहवत होती है। इसी तरह जब इंसान जवान की उम्र को पहुँचता है तो उसे बीवी की ज़रूरत होती है, उसके लिए भी शहवत का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं। इस तरह शहवत के मफ़हूम में बड़ी वुसअत है, बच्चों के अन्दर मीठी चीज़ें खाने की शहवत होती है। उनको माँ-बाप चुइंगम और टाफी खाने से मना भी करते रहें फिर भी वे छुप-छुपकर खाते रहते हैं। उनके अन्दर मीठी चीज़ों की इश्तहा रख दी गई है। कुछ लोगों को खाने-पीने की इश्तहा इतनी ज़्यादा होती है कि वह बेचारे खाने के चटोरे बने फिरते हैं। उनको हर वक़्त खाने-पीने की फ़िक्र दरपेश रहती है। कुछ लोगों को दुनिया में हुकूमत करने की इश्तहा होती है, वे बेचारे इसकी ख़ातिर ज़िन्दगी बर्बाद कर बैठते हैं। कुछ तो पा लेते हैं और कुछ महरूम रहते हैं।

नौजवान मर्दों के अन्दर औरत की शहवत ज़्यादा होती है जबकि

औरत के दिल में कपड़े वग़ैरह की नुमाइश का रुझान ज़्यादा होता है। हर एक के अन्दर अलग-अलग बीमारियाँ होती है। आजकल के मर्दों को जमाल ने बर्बाद कर दिया है और औरतों को माल ने बर्बाद कर दिया है। गोया पूरी दुनिया के मुसलमान माल और जमाल के हाथों बर्बाद हुए पड़े हैं। मर्द नेक हो, शरीफ़ हो या सूफ़ी हो, जमाल उसकी कमज़ोरी है, इसी लिए आँखें क़ाबू में नहीं रहतीं। इस मर्ज़ से छुटकारा पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। किताबें भी पढ़ लेते हैं और नेकी के दूसरे काम भी करते रहते हैं, लेकिन आँखों पर क़ाबू पाने के लिए पैदल चलना राहे खुदा में ख़ासकर मत्लूब होता है, जो नफ़्स के तज़्किये का बाइस है। तब जाकर फ़िक्र की गन्दगी दूर होती है।

नमाज़ के फ़वाइद; हुज़ूर (सल्ल०) की ज़बानी

1. नमाज़ दीन का सुतून है।
2. नमाज़ शैतान का मुँह काला करती है।
3. नमाज़ मोमिन का नूर है।
4. नमाज़ अफ़ज़ल जिहाद है।
5. जब कोई आफ़त आसमान से उतरती है तो मस्जिद के आबाद करनेवालों से हट जाती है।
6. अगर आदमी किसी वजह से जहन्नम में जाता है तो उसकी आग सज्दे की जगह को नहीं खाती।
7. अल्लाह ने सज्दे की जगह को आग पर हराम फ़रमा दिया है।
8. सबसे ज़्यादा पसन्दीदा अमल अल्लाह के नज़दीक वह नमाज़ है जो वक़्त पर पढ़ी जाए।
9. अल्लाह जल्ले-शानहू को आदमी की सारी हालतों में सबसे ज़्यादा पसन्द यह है कि उसको सज्दे में पड़ा हुआ देखें कि पेशानी ज़मीन पर रगड़ रहा है।

10. अल्लाह जल्ले-शानहू के साथ आदमी को सबसे ज़्यादा क़ुर्ब सज्दे में होता है।

11. जन्नत की कुंजियाँ नमाज़ हैं।

12. जब आदमी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और अल्लाह जल्ले-शानहू के और उस नमाज़ी के दर्मियान के पर्दे हट जाते हैं जब तक कि खाँसी वग़ैरह में मशग़ूल न हो।

13. नमाज़ी शहंशाह का दरवाज़ा खटखटाता है और क़ायदा है कि जो दरवाज़ा खटखटाता ही रहे तो खुलता ही है।

14. नमाज़ का मर्तबा दीन में ऐसा है जैसा कि सर का दर्जा बदन में।

15. नमाज़ दिल का नूर है, जो अपने दिल को नूरानी बनाना चाहे नमाज़ के ज़रिए बना ले।

16. जो शख़्स अच्छी तरह से वुज़ू करे उसके बाद ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से दो या चार रकअत नमाज़ फ़र्ज़ या नफ़्ल पढ़कर अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहे, अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देते हैं।

17. ज़मीन के जिस हिस्से पर नमाज़ के ज़रिए से अल्लाह की याद की जाती है वह हिस्सा ज़मीन के दूसरे टुकड़ों पर फ़ख़्र करता है।

18. जो शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़कर अल्लाह तआला से दुआ माँगता है तो हक़ तआला शानहू वह दुआ क़बूल फ़रमा लेते हैं।

19. जो शख़्स तंहाई में दो रकअत नमाज़ पढ़े और उसे अल्लाह और उसके फ़रिश्तों के सिवा कोई न देखे तो उसको जहन्नम की आग से बरी होने का परवाना मिल जाता है।

20. जो शख़्स एक फ़र्ज़ नमाज़ अदा करे, अल्लाह जल्ले-शानहू के यहाँ एक मक़बूल दुआ उसकी हो जाती है।

21. जो पाँचों नमाज़ों का एहतिमाम करता रहे, उनके रुकूअ और सुजूद और वुज़ू वग़ैरह को एहतिमाम के साथ अच्छी तरह से पूरा करता रहे तो जन्नत उसके लिए वाजिब हो जाती है और दोज़ख़ उसपर हराम हो जाती है।

22. मुसलमान जब तक पाँचों नमाज़ों का एहतिमाम करता रहता है शैतान उससे डरता रहता है और जब वह नमाज़ों में कोताही करता है तो शैतान को उसपर जुर्रत हो जाती है और उसके बहकाने की कोशिश करने लगता है।

23. नमाज़ हर मुत्तक़ी की क़ुरबानी है।

24. सबसे अफ़ज़ल अमल अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ना है।

25. सुबह को जो शख़्स नमाज़ को जाता है उसके हाथ में ईमान का झंडा होता है और जो बाज़ार को जाता है उसके हाथ में शैतान का झंडा होता है।

26. ज़ुहूर की नमाज़ से पहले चार रकअतों का सवाब ऐसा है जैसा कि तहज्जुद की चार रकअतों का।

27. जब आदमी नमाज़ को खड़ा होता है तो रहमते इलाही उसकी तरफ़ मुतवज्जह होती है।

28. अफ़ज़लतरीन नमाज़ आधी रात की है मगर उसके पढ़नेवाले बहुत ही कम हैं।

29. इसमें कोई तरद्दुद नहीं कि मोमिन की शराफ़त तहज्जुद की नमाज़ है।

30. अख़ीर रात की दो रकअतें तमाम दुनिया से अफ़ज़ल हैं। हुज़ूर (सल्ल०) फ़रमाते हैं अगर मुझे मशक़्क़त का अन्देशा न होता तो उम्मत पर फ़र्ज़ कर देता।

31. तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो कि तहज्जुद सालहीन का तरीक़ा है और अल्लाह के क़ुर्ब का सबब है। तहज्जुद गुनाहों से रोकती है और ख़ताओं की माफ़ी का ज़रिया है, इससे बदन की तंदुरुस्ती भी होती है।

32. जब आदमी नमाज़ में दाख़िल होता है तो हक़ तआला शानहू उसकी तरफ़ पूरी तरह तवज्जोह फ़रमाते हैं। जब वह नमाज़ से हट जाता है तो वह भी तवज्जोह हटा लेते हैं।

33. हक़ तआला शानहू ने कोई चीज़ ईमान और नमाज़ से अफ़ज़ल फ़र्ज़ नहीं की, अगर उससे अफ़ज़ल किसी और चीज़ को फ़र्ज़ करते तो फ़रिश्तों को इसका हुक्म देते कि फ़रिश्ते दिन-रात कोई रुकूअ में रहे कोई सज्दे में।

34. आदमी और शिर्क के दर्मियान नमाज़ ही हाइल है।

35. अल्लाह जल्ले-शानहू ने मेरी उम्मत पर सब चीज़ों से पहले नमाज़ फ़र्ज़ की और क़ियामत में सबसे पहले नमाज़ का ही हिसाब होगा।

36. नमाज़ के बारे में अल्लाह से डरो।

37. इस्लाम की अलामत नमाज़ है। जो शख़्स दिल को फ़ारिग करके और औक़ात और मुस्तहिबात की रिआयत रखकर नमाज़ पढ़े वह मोमिन है।

38. हक़ तआला शानहू का इरशाद है कि ऐ आदम की औलाद! तू दिन के शुरू में चार रकअतों से आजिज़ न बन, मैं तमाम दिन तेरे कामों की किफ़ायत करूँगा।

39. नमाज़ी पर से रिज़्क़ की तंगी हटा दी जाती है।

40. उससे अज़ाबे क़ब्र हटा दिया जाता है।

41. क़ियामत के दिन नाम-ए-आमाल उसके दाएँ हाथ में दिए जाएँगे।

42. पुलसिरात पर से बिजली की तरह गुज़र जाएगा।

43. हिसाब से महफ़ूज़ रहेगा। (माखूज़ अज़ फ़ज़ाइले-आमाल)

माले-हराम की नुहूसत

हज़रत अबू हुरैरह् (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि आदमी को इस बात की परवाह न होगी कि जो माल वह ले रहा है वह हलाल है या हराम है।" (हदीसः बुख़ार)

यानी क़ियामत के क़रीब जहाँ बहुत-सी गुमराहियाँ फैलेंगी और

बहुत-सी ख़राबियाँ पैदा होंगी, वहीं एक बड़ी ख़राबी यह भी पैदा होगी कि लोग माल व दौलत के बेइंतिहा हरीस और लालची बन जाएँगे और उस लालच की वजह से वे हलाल व हराम की परवाह नहीं करेंगे। आदमी की नज़र सिर्फ़ माल पर होगी और वह यह नहीं देखेगा कि यह माल हराम है या हलाल, मेरे लिए इसका इस्तेमाल जाइज़ है या नाजाइज़। अपनी आँखें बन्द करके माल के पीछे दौड़ेगा, बिल्कुल यही सूरते-हाल आज के ज़माने में पाई जा रही है। झूठ, धोखादेही, फ़रेबकारी, क़त्ल व डाकाज़नी, लूट-मार और वादा-ख़िलाफ़ी कौन-सा ऐसा काम है जो माल को पाने के लिए न अपनाया जा रहा हो। जुआ, सट्टा, शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त, सूद और रिश्वत बाज़ारी आम है और अब तो यह तसव्वुर आम किया जाने लगा है कि इन कामों को अपनाए बिना कोई कारोबार नहीं चल सकता और न ही माल व दौलत का हुसूल मुमकिन है, हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत के दरवाज़े खुले हुए हैं और कोई अल्लाह का बन्दा ख़ौफ़े ख़ुदा अपने दिल में रखता हो और वह उन हराम ज़राए से बचकर रिज़्क़ की तलब में सरगरदाँ हो तो अल्लाह तआला उसको महरूम नहीं करते, बल्कि उसको अपने फ़ज़्ले-ख़ास से इनायत फ़रमाते हैं और उसकी मुख़्तसर-सी रोज़ी में बरकतों का नुज़ूल होता है, जबकि हराम रोज़ी से अल्लाह तआला अपनी बरकत उठा लेते हैं और उसके अन्दर बेबरकती और नहूसत पैदा हो जाती है जिसके असरात दुनिया व आख़िरत दोनों में नुमायाँ होते हैं। आप (सल्ल०) ने मुतअद्दिद मवाक़ेअ पर माले-हराम की नहुसत और उसके बुरे नताइज के बारे में बयान फ़रमाया है।

माले-हराम की नुहूसत यह है कि अख़्लाक़े-रज़ीला पैदा होते हैं, इबादत का ज़ौक़ जाता रहता है और दुआ क़बूल नहीं होती। इसी तरह हलाल खाने से एक नूर पैदा होता है, अख़्लाक़े-रज़ीला से नफ़रत और अख़्लाक़े-फ़ाज़िला की रग़बत पैदा होती है, इबादत में दिल लगता है, गुनाह से दिल घबराता है, दुआएँ क़बूल होती हैं। इस तरह इंसान् अगर माले हराम कमाता है और फिर उसके ज़रिए से कारे-ख़ैर करता है, जैसे सदक़ा देता है या ग़रीबों पर ख़र्च करता है या हज्जे-बैतुल्लाह के लिए

जाता है तो उसका कोई अमल क़बूल नहीं होता, बल्कि अमले-हराम को तो अल्लाह तआला किसी क़ीमत पर क़बूल नहीं करते। हराम माल की नहूसत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप (सल्ल०) ने एक मर्तबा क़सम खाकर फ़रमाया, "जब किसी बन्दे के पेट में हराम लुक़मा पहुँच जाता है तो चालीस दिन उसका कोई अमल क़बूल नहीं किया जाता है।"

अल्लाह तआला हमें और पूरी उम्मते-मुस्लिमा को हराम माल से बचाए और हलाल कमाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

वालिदैन का फ़रमाँबरदार बनने का तरीक़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَلَهُ الْعَظَمَةُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ هُوَ الْمَلِكُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَالَمِيْنَ وَلَهُ النُّوْرُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

अल्लामा ऐनी (रह०) ने शरह बुख़ारी में एक हदीस नक़ल की है कि जो शख़्स एक मर्तबा ये कलिमात कहे, और उसके बाद यह दुआ करे कि "या अल्लाह इसका सवाब मेरे वालिदैन को पहुँचा दे तो उसने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया और तीन मर्तबा क़ुलहु वल्लाहु, तीन मर्तबा अहम्दुलिल्लाह शरीफ़ और तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़ भी शामिल कर ले तो वालिदैन का फ़रमाँबरदार शुमार होगा। हदीस में है कि आदमी अगर कोई नफ़्ल सदक़ा करे तो इसमें क्या हरज कि इसका सवाब वालिदैन को बख़्श दिया करे बशर्ते कि वे मुसलमान हों, इस सूरत में उनको सवाब पहुँच जाएगा और सदक़ा करनेवाले के सवाब में कोई कमी न होगी।

(कन्ज़ुल उम्माल)

नोट : औज़ाई (रह०) कहते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि जो शख़्स अपने वालिदैन की ज़िन्दगी में नाफ़रमान हो, फिर उनके इंतिक़ाल

के बाद उनके लिए इस्तिग़फ़ार करे, अगर उनके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो उसको अदा करे और उनको बुरा न कहे तो वह फ़रमाँबरदारों में शुमार हो जाएगा। और जो शख़्स वालिदैन की ज़िन्दगी में फ़रमाँबरदार था लेकिन उनके मरने के बाद उनको बुरा-भला कहता है, उनका क़र्ज़ भी अदा नहीं करता और उनके लिए इस्तिग़फ़ार भी नहीं करता तो वह नाफ़रमान शुमार हो जाता है। (दुर्रे-मन्सूर)

ओरतों के चौबीस घंटे के मुख़्तसर काम

औरतों का असल काम तो यह है कि अपने घरों में पाँचों नमाज़ें अव्वल वक़्त में ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से खड़ी होकर पढ़ती रहें और क़ुरआन पाक की तिलावत करती रहें। अगर पढ़ी हुई नहीं हैं तो रोज़ाना अपने किसी महरम से या सही पढ़नेवाली किसी औरत से 2-2, 4-4 आयतें सब्क़न-सब्क़न सीखती रहें। सुबह व शाम 3-3 तस्बीहात बैठकर पढ़ती रहें तो ज़्यादा अच्छा है। अपने बच्चों की दीनी तर्बियत व तालीम और अपने ख़ाविन्द की ख़िदमत करती रहें और अगर कोई अज़ीज़ रिश्तेदार ख़ातून या सहेली किसी भी काम के लिए आएँ तो उन्हें प्यार व मुहब्बत से और हिक्मत से दीन पर चलने और घर में तालीम करने और अपने महरमों को अल्लाह के रास्ते में निकलने की तर्ग़ीब दें। अगर आपने उनको इन बातों के लिए तैयार कर दिया तो यह बहुत बड़ी कमाई कर ली। रोज़ाना अपने घर में फ़ज़ाइले आमाल की तालीम करती रहें। जब तालीम करते-करते ज़ेहन बन जाए तो एक जमाअत पाँच औरतों की बना ली जाए।

उसमें 2-2 पुरानी और 2-3 नई औरतें हों। हर एक के साथ उनका हक़ीक़ी महरम (बाप, बेटा, भाई, ख़ाविन्द, मामूँ) हो। बच्चे साथ न हों। ऐसी जगह जाएँ-जहाँ पूरी जान पहचान हो और पहले से उनको अपने आने की इत्तिला दे दी जाए। वहाँ पहुँचकर मर्दों में से कोई दुआ कराए और औरतें एक तरफ़ खड़ी होकर चुपके-चुपके आमीन कहती रहें। यह जब है कि इस्तक़बालवालों की भीड़ न हो, अगर इस्तक़बालवाले ज़्यादा हों तो मर्द बाहर दुआ करें और औरतें अन्दर चली जाएँ और वुज़ू करके

नफ़्लें पढ़ें बशर्ते कि मकरूह वक़्त न हो। मर्दों की दुआ काफ़ी हो जाएगी। बेहतर तौबा यह है कि जहाँ जाना है उस शहर में दाख़िल होते ही दुआ कर लें। अपनी मख़्सूस गाड़ी हो तो गाड़ी में बेहतर है। मर्द मस्जिद में जाकर बाद तहीयतुल-वुज़ू मशविरा करें। और औरतों के लिए तै करें कि कौन-सी ख़ातून तालीम कराएगी और कौन ख़िदमत करेगी। पर्चे में लिखकर भेज दें और जमाअत के दो हिस्से हरगिज़ न करें। जब तक मशविरे का पर्चा आए उस वक़्त तक औरतें नफ़्ल पढ़ने के बाद जो मक़ामी बहनें आई हुई हैं उनसे दीनी तर्ग़ीबी बात करें। जब मशविरे का पर्चा आ जाए तो उसके मुताबिक़ काम करें। औरतें सिर्फ़ किताबी तालीम करेंगीं, तक़रीर की बिल्कुल इजाज़त नहीं है। अपने ही साथ आई हुई बहनों से क़ुरआन मजीद की तसहीह करने का हल्क़ा चलाएँ। जितनी देर मुनासिब समझें फिर किताबी तालीम करें। किताबी तालीम इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता करें कि जो बहनें बेपढ़ी लिखी हैं वे भी समझ जाएँ और छः नम्बर का मुज़ाकरा भी हल्क़ा बनाकर बैठकर करें। यह ज़ुहर से पहले का काम है।

ज़ुहर के बाद मक़ामी औरतें तालीम में आएँगी। मशविरे से जिसका तालीम करना तै हुआ है वह ख़ातून तालीम करे। तालीम और बयान के इंतिज़ार में तस्बीह वग़ैरह पढ़ सकती हैं। तालीम बैठकर शुरू करें, अगर औरतें कम हों। तादाद बढ़ जाए तो स्टूल या चौकी पर बैठकर तालीम कर सकती हैं। कुर्सी या सोफ़े पर न बैठें। मज्मा ज़्यादा हो और घर में गुंजाइश हो तो दो हल्क़े कर सकती हैं। फ़ज़ाइले आमाल के अलावा कोई दूसरी किताब न पढ़ी जाए। किसी ख़ातून को किसी मसले की ज़रूरत पड़े तो अपने किसी महरम के ज़रिए मोतबर व माक़ूल आलिम से मालूम कर ले। मसाइल की इज्तमाई तालीम नहीं होगी। इंफ़िरादी तौर पर मसाइल की किताब पढ़ी जा सकती है।

जब कोई मर्द बयान करने आए तो औरतें अपनी तालीम बन्द कर दें। औरतें इसका पूरा एहतियात करें कि उनकी आवाज़ मर्दों तक न पहुँचे। मर्द बयान के बाद तश्कील का मौक़ा दें। औरतें मक़ामी मस्तूरात

की तश्कील करें कि कौन-कौन अपने शौहरों को अपने बेटों को या दूसरे अज़ीज़ों को अल्लाह के रास्ते में तीन चिल्ले, या चिल्ले के लिए भेजेंगी। और दुआ से पहले उनके नाम पूरे पते के साथ लिखवाकर भिजवा दें ताकि उनकी वुसूली में आसानी हो। पर्चा मक़ामी ज़िम्मेदारों को भिजवाएँ। मर्द दुआ करके चले आएँ। फिर औरतें अस्र की नमाज़ अदा करें और तस्बीहात पूरी करें। अगर कुछ मक़ामी औरतें बैठी हों तो उनसे दीनी तर्ग़ीबी बात करें। मग़रिब की नमाज़ के बाद अव्वाबीन पढ़ें और अगर मौक़ा हो तो इंफ़िरादी आमाल सीखना-सिखाना वग़ैरह् करें या आराम करें। इशा की नमाज़ के बाद कोई तालीम न हो। ईशा की नमाज़ के आद सोने में जल्दी करें ताकि तहज्जुद में उठना आसान हो। खाना इशा से पहले या बाद जैसी सहूलत हो खा लें। नमाज़े तहज्जुद के बाद दुआ माँगें, अपने माँ-बाप और परी उम्मत के लिए, नीज़ नमाज़ खुशूअ व खुज़ूअ से पढ़ने की मश्क़ करें। बाद नमाज़ फ़ज्र नाश्ते में देर हो तो आराम कर लें। नाश्ता जारी हो जाए तो बाद नाश्ता मुख़्तसर आराम कर लें। तालीम का जो वक़्त मुक़र्रर है उससे पहले अपनी इंफ़िरादी आमाल व ज़रूरियातों से फ़ारिग़ हो जाएँ, अगर मर्दों में से कोई साथी बात करनेवाले हों तो नमाज़े फ़ज्र के बाद 30-40 मिनट बात करें, बशर्ते कि नाश्ते में देर हो। वर्ना नाश्ते के बाद बात करें ताकि औरतें शाम तक कामों में लगी रह सकें। नाश्ते से फ़ारिग़ होने के बाद अगर आराम करें तो मशविरा से एक बहन ऐसी जगह बैठे जहाँ से बाहर आनेवाली बहनों पर नज़र रहे। यह बहन क़ुरआन शरीफ़ लेकर न बैठे बल्कि तस्बीह लेकर बैठे ताकि आनेवाली बहनों का इस्तिक़बाल कर सके। उनसे ऐसी जगह बैठकर बात करे कि सोनेवाली बहनों की नींद में ख़लल न हो, इसलिए कि जहाँ मस्तूरात की जमाअत होती है, मक़ामी औरतें मिलने के लिए आया करती हैं। अगर सबको सोता पाएँगी तो मायूस होकर वापस होंगी। इसलिए मशविरे से कभी कोई कभी कोई बैठा करे। जमाअत में आनेवाले मेहरम मर्द अपनी औरतों से मिलने मग़रिब से पहले आ सकते हैं, मग़रिब के बाद मुनासिब नहीं। लोगों ने जो औरतों का इज्तिमा नाम रखा है, असल में वह औरतों की तालीम है। औरतें

गश्त नहीं करेंगी, न छोटी न बड़ी उम्र की, न मक़ाम पर न जमाअत में। बाहर निकलने के ज़माने में जो महरम साथ आए हैं वे मक़ामी मर्दों के साथ मिलकर गश्त करें। और मक़ामी मर्दों को अपनी मस्तूरात को जहाँ तालीम हो रही हो वहाँ भेजने की दावत दें और ताकीद करें कि वह सादा लिबास और सादा तरीक़े से शिरकत करें। बन-सँवर कर ज़ेवरों से आरास्ता होकर न जाएँ। अगर मुमकिन हो तो होटल से रोटी मंगवा लें और कोई औरत घर में सालन बना ले। औरत तालीम में बैठे-बैठे सालन देख सकती है। ये सोलह (16) बातें हैं जिनको शाह मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) फ़रमाते थे : चार काम ख़ूब करने के हैं (1) दावत (2) तालीम व तअल्लुम (3) इबादात (4) ख़िदमत। चार कामों में वक़्त कम लगाना (1) खाने-पीने में (2) सोने में (3) नहाने-धोने में (4) जाइज़ दीगर कामों में।

चार कामों में दख़ल न दे (1) सियासत (2) बहस व मुबाहिसा (3) मसाइल के तज़किरे (4) हालाते-हाज़िरा। बस दीन व ईमान की फ़िक्र हो और आख़िरत की सोच। आपने अच्छा किया जो पूछ लिया। जो पूछ-पूछ कर चलेगा वह सही काम कर सकेगा।

नोट : इन बातों में जान डालने के लिए घर पर फ़ज़ाइल आमाल की तालीम बच्चों को एहतिमाम से साथ लेकर रोज़ाना फ़िक्र व लगन से करें।

औरतों में दावत के काम की शुरुआत

मौलाना दाऊद अटावड़ी का ख़त राइवंड हाजी बशीर अहमद साहब के नाम।

मुकर्रम बन्दा जनाब भाई अलहाज मुहम्मद बशीर अहमद साहब! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

उम्मीद है कि मिज़ाजे गरामी बआफ़ियत होंगे। यहाँ पर भी ख़ैरियत ही है। दो साल से घुटनों में वरम है और दर्द है। और अब दो हफ़्ते से नाफ़ के नीचे रग में एक गिलटी उठी है, जिसमें दर्द रहता है। बोलने से दर्द में इज़ाफ़ा हो जाता है। दुआओं की ज़रूरत है।

अच्छा, मस्तूरात (औरतों) के काम की इब्तिदा 1926 ई०, 1928 ई० में बिल्कुल नहीं हुई। बन्दा 1940 ई० में मदरसे से फ़ारिग़ हुआ। 1941 ई० में ग़ालिबन मैं निज़ामुद्दीन में हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद इलयास (रह०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। बन्दा मदरसा सुब्हानिया में पढ़ता था। हज़रत मौलाना अब्दुस्सुबहान और आपकी घरवाली, हम उन्हें अम्माँ जी कहा करते थे, बहुत मुहब्बत करती थीं। अम्माँ जी दिल्ली में मुख़्तलिफ़ जगहों में किताबें सुनाया करती थीं। बन्दा उनकी कारगुज़ारी हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद इलयास को सुनाता और हज़रत जी (रह०) की हिदायात उनको बतलाया करता था। एक दिन अम्माँ जी ने कहा कि हज़रत जी (रह०) से कहो कि "हज़रत मर्दों की जमाअत भेजते हैं तो औरतों की जमाअत क्यों नहीं भेजते।" मैंने हज़रत (रह०) से अर्ज़ किया कि अम्माँ जी यूँ कहती हैं कि हज़रत औरतों की जमाअत क्यों नहीं भेजते। हज़रत (रह०) यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए और बेशुमार दुआएँ दीं। फिर मुझसे कहा कि तुम उन तीनों से मशविरा लो कि मस्तूरात की जमाअत भेजना चाहता हूँ आपकी क्या राय है? हज़रत मौलाना इनआमुल हसन साहब मदज़ल्लहुल आला के पास गया कि हज़रत मस्तूरात की जमाअत भेजना चाहते हैं आपकी क्या राय है? हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब मदज़ल्लहुल आला के अल्फ़ाज़ तो मुझे याद नहीं, मतलब यह था कि अभी तो मर्दों का निकलना ही उलमा की समझ में नहीं आ रहा है औरतों का निकलना कैसे मान लेंगे। इसलिए मेरी राय नहीं है। यही बात क़ारी दाऊद साहब मरहूम ने फ़रमाई। फिर मैं हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) की ख़िदमत में गया। आप मस्जिद के बराबर ऊपर के मक्तब में रहा करते थे जहाँ आजकल हाफ़िज़ा का मक्तब हैं।

जब मैंने राय ली तो यूँ फ़रमाया कि मेरी तो राय नहीं है, अगरचे एक औरत के साथ दो महरम हों और उसका बाप भी हो और ख़ाविन्द भी हो, जब भी मेरी राय नहीं है। बस जैसी उन तीनों हज़रात ने अपनी-अपनी राय दी थी, मैंने वैसे ही हज़रत जी से अर्ज़ कर दिया कि फ़ुलाँ ने

यूँ फ़रमाया, फ़ुलाँ ने यूँ फ़रमाया। हज़रत शाह मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) की बात सुनकर ग़ुस्सा फ़रमाया और मुझे फ़रमाया कि जो औरतें जमाअत में जाने के लिए तैयार हैं तो उनको दिल्ली में जाकर एक घर में जमा करके बात शुरू कर दें और मैं देखता हूँ उन मुसलमानों को, उनकी राय क्यों नहीं है। पहाड़गंज मुल्तानी डांढा में एक घर में जमा करके बात शुरू कर दी। ज़ुह्र की नमाज़ के बाद हज़रत मौलवी नूर मुहम्मद मरहूम बाझोठ को लेकर पहाड़गंज पहुँच गए और मौलवी नूर मुहम्मद मरहूम ने बयान शुरू किया। दौराने बयान मौलवी साहब ने फ़रमाया कि दीन सीखने के लिए औरतों का भी निकलना ज़रूरी है। मगर औरतें बग़ैर महरम नहीं जा सकतीं। बयान के ख़त्म होने के बाद हज़रत जी (रह०) ने मौलवी नूर मुहम्मद साहब को डाँटा कि तुझे मुफ़्ती किसने बनाया था। जो तुमने बग़ैर महरम निकलने को मना कर दिया यानी पहली जमाअत है, अभी से मसाइल पर ज़ोर मत दो, ख़ाली निकलने की तग़ीब दो। यहाँ तो ये हुआ और जब बड़े हज़रत जी (रह०) ने मुझे दिल्ली भेज दिया तो लकड़ी यानी अपनी बेत लेकर हज़रत मौलाना यूसुफ़ (रह०) के पास गए और फ़रमाया कि तू ही मुसलमान है, मैं मुसलमान नहीं हूँ, तूने कैसे कहा कि औरतों को तब्लीग़ में नहीं जाना चाहिए। ये औरतें कहाँ नहीं जातीं। ये शादियों में जाती हैं, ग़मी में जाती हैं, दिल्ली की औरतें महरौली जाती हैं, सैर करने को ओखला जाती हैं, फिर तुमने कैसे कहा कि मेरी राय नहीं है। जब हज़रत जी (रह०) मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) से ख़फ़ा होकर आए तो मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) मेरे ऊपर ख़फ़ा हुए कि दाऊद ने अब्बा जी को क्या कह दिया। मग़रिब के बाद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) ने दो लड़के हौज़ पर बिठा दिए कि जब दाऊद दिल्ली से आए तो मेरे पास पकड़ कर लाओ, मैं दिल्ली से इशा पढ़कर आया, गर्मियों के दिन थे। वे लड़के मुझे हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) के पास ले गए। हज़रत ने फ़रमाया कि मेरे ऊपर कभी इतने ख़फ़ा नहीं हुए जितना आज हुए। आज तो सिर्फ़ इतनी कसर रही कि लकड़ी से मारा नहीं। वर्ना ज़बान से बहुत कुछ कहा। तो तक़रीबन आधा इश्काल तो मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) का हज़रत की ख़फ़्गी से निकल गया और मेवात

को बार-बार जमाअत जाने लगी। तो हज़रत मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह मुफ़तिए-आज़म हिन्द को औरतों का निकलना मालूम हुआ तो बहुत ख़फ़ा हुए कि यह मौलाना मुहम्मद इलयास (रह०) ने क्या किया और दूसरे हज़रात को जो ख़तरा था वह सामने आ गया।

मुफ़्ती साहब के ख़फ़ा होने का किसी ने बड़े हज़रत (रह०) को आकर कहा तो बड़े हज़रत (रह०) ताँगा लेकर मदरसा अमीनिया तशरीफ़ ले गए और हज़रत मुफ़्ती आज़म (रह०) के सामने औरतों के निकलने के फ़ायदे बतलाए। साथ-साथ औरतों के निकलने का एहतिमाम पेश किया कि जब मस्तूरात क़ी जमाअत निकाली जाती है तो हर औरत को महरम के साथ निकाला जाता है। अव्वल तो ख़ाविन्द हो या बेटा या बाप हो या भाई हो, अगर कोई औरत बग़ैर महरम आ गई और कहा कि मेरा महरम कल-परसों आएगा तो उस औरत को वापस कर दिया जाता है। मस्तूरात की जहाँ जमाअत जा रही होती है वहाँ के ज़िम्मेदार को पहले मुतला कर दिया जाता है ताकि वे मकान तै करके ख़ाली करा लें। जिस मकान में औरतें ठहरती हैं वह उसी मकान में रहती हैं। गांववाली औरतें जमाअत के पास आती हैं। औरतों के महरम और मक़ामी मर्द मिलकर गश्त करते हैं। ये मर्द, मर्दों से बात करते हैं कि अपनी मस्तूरात को फ़लाँ साहब के घर में जमाअत के पास भेज दें। जमाअत की औरतें कहीं नहीं जातीं। पर्दे का पूरा एहतिमाम किया जाता है। हज़रत मुफ़्ती साहब (रह०) को पूरा इत्मीनान हो गया कि अगर इतना एहतिमाम करते हैं तो कोई हरज नहीं। फिर जो जमाअत मस्तूरात की काम करके आती तो हज़रत मौलाना यूसुफ़ (रह०) को कारगुज़ारी देती। इन तमाम बातों से हज़रत मौलाना यूसुफ़ (रह०) का इश्काल आहिस्ता-आहिस्ता ख़त्म हो गया। सबसे पहली जमाअत घासीड़ा और नूह के क़रीब आस-पास के इलाक़े में आठ यौम लगाकर आई। बन्दा जमाअत के साथ था। जब आठ दिन में वापस हुए तो बड़े हज़रत (रह०) ख़फ़ा हुए कि इतनी जल्दी क्यों आ गए। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत औरतें ज़्यादा कपड़े लेकर नहीं गई थीं। तो फ़रमाया कि तू नूह से नए

कपड़े बनवाकर देता, पैसे मुझसे आकर ले लेता। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत मशविरेवालों ने फ़रमाया था कि यह पहली जमाअत है इनके वाजिबात का ख़्याल रखना, इसलिए जल्द आ गए। मशविरे की बात सुनकर हज़रत बहुत ख़ुश हुए और बहुत दुआएँ दीं। जब यह जमाअत मशविरे से घासीड़ा वग़ैरह के लिए तै हुई तो हज़रत ने चौधरियों के नाम ख़त लिखा कि मैं तुम्हारे यहाँ दिल्ली की पर्दानशीन मस्तूरात भेज रहा हूँ तुम उनकी ख़ूब नुसरत करना वग़ैरह-वग़ैरह। घासीड़ावालों को जमाअत का इंतिज़ार था। सड़क पर इस्तक़बाल के लिए आ गए। जब जमाअत पहुँची तो गाँववालों ने इस्तिक़बाल में काफ़ी बन्दूक़ें चलाईं, और पुरज़ोर इस्तिक़बाल किया कि मस्तूरात की पहली जमाअत हमारे गाँव में आई है और हर गाँव में ऐसा ही इस्तिक़बाल हुआ। फिर थोड़े-थोड़े वक़्फ़े से कई जमाअतें निकलीं। बादही मेवात से मस्तूरात की जमाअत के मुतालबे आने लगे। मस्तूरात का काम ग़ालिबन 1942 ई० में शुरू हुआ है। इससे पहले नहीं। इसलिए कि बन्दा 1941 ई० में मर्कज़ आया था। मर्कज़ में आने के बाद मस्तूरात का काम शुरू हुआ है। अगर हज़रत (रह०) के इंतिक़ाल से दस साल पहले शुरू होता तो हिन्दुस्तान के कई शहरों में मस्तूरात की बेशुमार जमाअतें पहुँच जातीं। हज़रत (रह०) की हयात में मेवात के अलावा कहीं ये जमाअतें नहीं गईं — अज़ मुहम्मद दाऊद

ईमान आमाले सालेहा के बग़ैर ऐसा है जैसे फूल ख़ुशबू के बग़ैर

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۡ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ۝ (النساء:٥٧)

"और जो लोग ईमान लाए और शाइसता आमाल किए हम अंक़रीब उन्हें उन जन्नतों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, उनके लिए वहाँ साफ़-

सुथरी बीवियाँ होंगी और हम उन्हें घनी छाँव (और पूरी राहत) में रखेंगें।" (सूरह् अन-निसा:57)

तशरीह : अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में हर जगह ईमान के साथ आमाले-सालेहा का ज़िक्र करके वाज़ेह कर दिया कि उनका आपस में चोली-दामन का साथ है। ईमान, अमले-सालेह के बग़ैर ऐसे ही है जैसे फूल हो मगर ख़ुश्बू के बग़ैर, दरख़्त हो मगर बेसमर। सहाबा-किराम रिज़वानुल्लाहि (अलैहिम अजमईन और ख़ैरुल क़रून के दूसरे मुसलमानों ने इस नुकते को समझ लिया था। चुनांचे उनकी ज़िन्दगियाँ ईमान के फल, आमाले-सालेहा से माला-माल थीं। उस दौर में बेअमल या बदअमली के साथ ईमान का तसव्वुर ही नहीं था। इसके बरअक्स आज ईमान सिर्फ़ ज़बान जमा ख़र्च का नाम रह गया है। आमाले-सालेहा के दावेदारों का दामन ईमान से ख़ाली है। इसी तरह अगर कोई शख़्स ऐसे आमाल करता है जो आमाले सालेहा हैं, जैसे रास्तबाज़ी, अमानत व दियानत, हमदर्दी व ग़मगुस्सारी और दीगर अख़्लाक़ी ख़ूबियाँ, लेकिन ईमान की दौलत से महरूम है तो उसके ये आमाल, दुनिया में तो उसकी शोहरत व नेक-नामी का ज़रिया साबित हो सकते हैं, लेकिन अल्लाह की बारगाह में उनकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं होगी। इसलिए कि उनका सरचश्मा ईमान नहीं है जो अच्छे आमाल को इंदल्लाह बार-आवर बनाता है।

जहन्नमी जहन्नम में बहुत मोटे हो जाएँगे

सहाबा किराम से मंक़ूल बाज़ आसार में बतलाया गया है कि जहन्नम में जहन्नमियों की खाल आग से बिल्कुल जल जाएगी तो अल्लाह तआला दूसरी खाल में तब्दील कर देगा और खालों की यह तब्दीली दिन में बीसियों बल्कि सैकड़ों मर्तबा अमल में आएगी। और मुस्नद अहमद की एक रिवायत की रू से जहन्नमी जहन्नम में इतने फ़रबा हो जाएँगे कि उनके कानों की लौ से पीछे गर्दन तक का फ़ासला सात सौ साल की मुसाफ़त जितना होगा और उनकी खाल की मोटाई

सत्तर (70) बालिश्त और डाड़ उहुद पहाड़ जितनी होगी।

(तफ़्सीर मस्जिदे नबबी, पेज 229)

अल्लाह के फ़ज़्ल से जन्नत मिलेगी

भलाई का मिलना अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से है यानी किसी नेकी या इताअत का सिला नहीं है। क्योंकि नेकी की तौफ़ीक़ भी देनेवाला अल्लाह तआला ही है। इसके अलावा इसकी नेअ़मतें इतनी बेपायाँ हैं कि एक इंसान की इबादत व ताअत उसके मुक़ाबले में कोई हैसियत ही नहीं रखती। इसी लिए एक हदीस में नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : जन्नत में जो भी जाएगा महज़ अल्लाह की रहमत से जाएगा (अपने अमल की वजह से नहीं)। सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया कि 'या रसूलुल्लाह! वला अन्त' यानी आप (सल्ल०) भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में नहीं जाएँगे? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "हाँ, जब तक अल्लाह मुझे भी अपने दामने रहमत में नहीं ढाँक लेगा जन्नत में नहीं जाऊँगा।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ बाब क़सदुलमदौमा अलीउल अमल)

फ़रीक़ैन की बात सुनकर कोई फ़ैसला करें

फ़रीक़ैन में से जब तक किसी की बाबत पूरा यक़ीन न हो कि वह हक़ पर है, उसकी हिमायत व वकालत करना जाइज़ नहीं है। इसके अलावा अगर कोई फ़रीक़ धोखे और फ़रेब और अपनी चर्ब ज़बानी से अदालत या हाकिम मजाज़ से अपने हक़ में फ़ैसला करा ले हालाँकि वह साहिबे-हक़ न हो तो ऐसे फ़ैसले की इंदल्लाह कोई अहमियत नहीं है। इस बात को नबी (सल्ल०) ने एक हदीस में इस तरह बयान फ़रमाया : "ख़बरदार! मैं एक इंसान ही हूँ और जिस तरह मैं सुनता हूँ, उसी की रौशन में फ़ैसला करता हूँ। मुमकिन है कि एक शख़्स अपनी दलील व हुज्जत पेश करने में तेज़ तर्रार और होशियार हो और मैं उसकी गुफ़्तुगू से मुतास्सिर होकर उसके हक़ में फ़ैसला कर दूँ, हालांकि वह हक़ पर न हो और इस तरह मैं दूसरे मुसलमान का हक़ उसे दे दूँ, तो उसे याद

रखना चाहिए कि यह आग का टुकड़ा है। यह उसकी मर्ज़ी है चाहे तो ले ले या छोड़ दे।" (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

किसी के अन्दर बुराई देखो तो उसका चर्चा न करो

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝۱۴۸ (سورہ النساء:۱۴۸)

"बुराई के साथ आवाज़ बुलन्द करने को अल्लाह तआला पसन्द नहीं फ़रमाता मगर मज़्लूम को इजाज़त है और अल्लाह तआला ख़ूब सुनता, जानता है।" (सूरहः अन-निसा, 148)

तशरीह : शरीअत ने यह ताकीद की है कि किसी के अन्दर कोई बुराई देखो तो उसका चर्चा न करो, बल्कि तंहाई में उसे समझाओ, इल्ला यह कि कोई दीनी मस्लेहत हो। इसी तरह खुलेआम और अलल-एलान बुराई करना भी सख़्त नापसन्दीदा है। बुराई का इर्तिकाब वैसे ही मना है, चाहे पर्दे के अन्दर ही क्यों न हो। इसे बर-सरे-आम किया जाए यह मज़ीद एक जुर्म है और इसकी वजह से इस बुराई का जुर्म दो-चन्द बल्कि दह- चन्द (दस गुना) हो जाता है। क़ुरआन के अल्फ़ाज़ मज़्कूरा से दोनों क़िस्म की बुराइयों के इज़्हार से मुमानियत मालूम होती है और उसमें यह भी दाख़िल है कि किसी शख़्स को गो उसके करदा या नाकरदा हरकत पर बुरा-भला कहा जाए। अलबत्ता इसमें एक इश्तहा है कि अगर किसी ने तुमपर ज़ुल्म किया है तो तुम लोगों के सामने बयान कर सकते हो। जिसका एक फ़ायदा यह है कि शायद वह ज़ुल्म से बाज़ आ जाए या उसकी तलाफ़ी की कोशिश करे। दूसरा फ़ायदा यह है कि लोग उससे बचकर रहें। हदीस में आता है कि एक शख़्स नबी (सल्ल०) की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और कहा कि मुझे मेरा पड़ोसी ईज़ा देता है। आप (सल्ल०) ने उससे फ़रमाया : "तुम अपना सामान निकाल कर बाहर रास्ते में रख दो।" उसने ऐसा ही किया। चुनांचे जो भी गुज़रता उससे पूछता, वह पड़ौस के ज़ालिमाना रवैये की वज़ाहत करता, जिसे सुनकर हर रहगुज़र उसपर लानत मलामत करता। पड़ोसी ने यह

तकलीफ़देह सूरते हाल देखकर माज़रत कर ली और आइंदा के लिए ईज़ा न पहुँचाने का फ़ैसला कर लिया और उससे अपना सामान अन्दर रखने की इल्तजा की। (सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब)

अल्लाह तआला की रहमत के सौ हिस्से हैं

अल्लाह तआला की वुसअते रहमत ही है कि दुनिया में सालेह व फ़ासिक़ और मोमिन व काफ़िर दोनों ही उसकी रहमत से फ़ैज़याब हो रहे हैं। हदीस में आता है "अल्लाह तआला की रहमत के 100 हिस्से हैं।" यह उसकी रहमत का एक हिस्सा है कि जिससे मख़्लूक़ एक-दूसरे पर रहम करती और वहशी जानवर अपने बच्चों पर शफ़क़त करते हैं और उसने अपनी रहमत के 99 हिस्से अपने पास रखे हैं।

(सहीह मुस्लिम, 2108; इब्ने माजा, हदीस 4293, बहवाला तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 459)

हर मुत्तक़ी मोमिन अल्लाह का वली है

हर मुत्तक़ी मोमिन अल्लाह का वली है। लोग विलायत के लिए इज़हार को ज़रूरी समझते हैं और फिर वे अपने बनाए हुए वलियों के लिए झूठी-सच्ची करामतें मशहूर करते हैं। यह बिल्कुल ग़लत है। करामत का विलायत से चोली-दामन का साथ है न कि उसके लिए शर्त। यह एक अलग चीज़ है कि अगर किसी से करामत ज़ाहिर हो जाए तो अल्लाह की मशीयत है, इसमें उस बुज़ुर्ग की मशीयत शामिल नहीं है। लेकिन किसी मुत्तक़ी मोमिन और मुत्तबा सुन्नत से करामत का ज़हूर हो या न हो, उसकी विलायत में कोई शक नहीं।

(तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 582)

जन्नत और जहन्नम में झगड़ा

हदीस में आया है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जन्नत और दोज़ख़ आपस में झगड़ पड़ीं। जन्नत ने कहा क्या बात है कि मेरे अन्दर वही लोग आएँगे जो कमज़ोर और मुआशरे के गिरे-पड़े लोग होंगे?"

जहन्नम ने कहा "मेरे अन्दर तो बड़े-बड़े जब्बार और मुतकब्बिर क़िस्म के लोग होंगे।" अल्लाह ने जन्नत से फ़रमाया : "तू मेरी रहमत की मज़हर है, तेरे ज़रिए से मैं जिसपर चाहूँ अपना रहम करूँ। और जहन्नम से अल्लाह तआला ने फ़रमाया, तू मेरे अज़ाब की मज़हर है, तेरे ज़रिए से मैं जिसको चाहूँ सज़ा दूँ। अल्लाह तआला जन्नत और दोज़ख़ दोनों को भर देगा। जन्नत में हमेशा उसका फ़ज़्ल होगा, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ऐसी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाएगा जो जन्नत के बाक़ी मान्दा रक़बे में रहेगी और जहन्नम, जहन्नमियों की कसरत के बावजूद *हल मिम मज़ीद* का नारा बुलन्द करेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसमें अपना क़दम रखेगा, जिसपर जहन्नम पुकार उठेगीः "बस बस! तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, मुस्लिम किताबुल जन्नत)

सज्दा तिलावत की मसनून दुआ

सज्दा तिलावत की मसनून दुआ यह है :

سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَسَوَّرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ

"स-ज-द वजहि-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू, व सव्वर-हू, व शक़्-क़ सम-अहू व ब-स-र-हू, बिहौलिही व क़ुव्वतिहि।"

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई बहवाला मिश्कात, बाब सुजूदुल-क़ुरआन) बाज़ रिवायात में यह इज़ाफ़ा है :

फ़-तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ

(औनुल-माबूद, जिल्द 1, पेज 533)

मुन्तख़ब अश्आर

1. आज उन ज़र्रों को भी नाज़ अपनी ताबानी पे है।
   मेरी दर का नक़्शे-सज्दा जिनकी पेशानी पे है ॥

2. एक हाथ, एक राजा, एक रानी के बग़ैर।
   नींद बच्चों को नहीं आती कहानी के बग़ैर ॥

3. दीवाने भाग जा दामन की सारी धज्जियाँ लेकर।
यहाँ तारे गरेबाँ से नई ज़न्जीर बनती है ॥

4. वापसी का कोई सवाल नहीं।
घर से निकले हैं आँसुओं की तरह ॥

5. हम तो वफ़ा के आदी हैं।
ज़ुल्म तेरा दस्तूर सही ॥

6. प्यासे ने ख़ुश्क होंठ न रखे फ़रात पर।
तारीख़ में यह पानी की पहली शिकस्त है ॥

7. परियों से देस वाली कहानी भी ख़ूब है।
बच्चों को माँ ने फिर यूँ ही भूखा सुला दिया ॥

8. मेरे सज्दे इसी दुनिया में मेरे काम आए हैं।
मेरे क़ातिल ने मुझको मेरी पेशानी से पहचाना ॥

9. पानी की तरह बह गईं सदियाँ कभी-कभी।
अक्सर हुआ है यूँ भी कि लम्हा ठहर गया ॥

10. हमने निगाहे नाज़ को समझा था नेशतर।
तुमने तो मुस्कुराके रगे जाँ बना दिया ॥

11. नहीं तेरा नशेमन क़सरे सुल्तानी के गुंबद पर।
तू शाहीं है बसेरा कर पहाड़ों की चट्टानों पर ॥

12. कुछ ऐसे बदहवास हुए आँधियों में लोग।
जो पेड़ खोखले थे उन्हीं से लिपट गए ॥

13. चांद का किरदार अपनाया है हमने दोस्तो।
दाग़ अपने पास रखे, रौशनी बांटा किए ॥

14. जब बुलन्दी पर पहुँच जाते हैं लोग।
किस क़दर छोटे नज़र आते हैं लोग ॥

15. वह हब्स था कि दुआ दो हमें जहाँ वालो।
न हम चिराग़ जलाते, न यह हवा चलती ॥

16. काम कोई न आएगा फ़क़त दिल के सिवा।
रास्ते बन्द हैं सब कूच-ए-क़ातिल के सिवा ॥

17. कुछ न कहने से भी छिन जाता है एजाज़े-सुख़न।
ज़ुल्म सहने से भी ज़ालिम की मदद होती है ॥

18. उस दिल पर ख़ुदा की रहमत हो जिस दिल की यह हालत होती है।
एक बार ख़ता हो जाती है सौ बार नदामत होती है ॥

19. सूरज की सरपरस्ती से नुक़सान यह हुआ है।
अब शमा माँगता हूँ तो देता नहीं कोई ॥

20. दिल की आज़ादी शहंशाही, शिकम सामाने मौत।
फ़ैसला तेरा तेरे हाथों में है दिल या शिकम ॥

ख़ुश रहकर दूसरों को ख़ुश रखिए

इंसान की ज़िन्दगी ख़ाहिशात, उम्मीदों और ज़िम्मेदारियों से इबारत है। अपनी इब्तिदाई ज़िन्दगी में वह सिर्फ़ अपने लिए ख़ाहिशात और उम्मीदें रखता है। लेकिन उसे बहुत जल्द एहसास हो जाता है कि वह एक ऐसे मुआशरे में रहता है, जहाँ उसे सिर्फ़ अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी बहुत कुछ करना है। तब उसकी ख़ाहिशात और उम्मीदों में कुछ ज़िम्मेदारियाँ भी शामिल हो जाती हैं। और ऐसे मौक़े पर अपनी शख़्सियत को क़ाबिले-क़दर और क़ाबिले-क़बूल बनाना भी एक अहम ज़रूरत है, ऐसा करते हुए जहाँ चन्द नादानिस्ता और फ़ितरी और ज़ेहनी अवामी शख़्सियत पर असर-अन्दाज़ होते हैं वहाँ ख़ुद इंसान भी लोगों में अपनी ज़ात को तब्दील करने लगता है। यह एक ऐसा हस्सास मरहला होता है कि अक्सर औक़ात इंसान अपनी तर्जीहात और पसन्द को भी यकसर फ़रामोश कर बैठता है। वह "अपने" लिए नहीं बल्कि "दूसरों" के लिए जीता है। ज़ैल में उन तमाम अवामिल को ज़ेरे बहस लाया गया है जो आपकी शख़्सियत को बनाने और बिगाड़ने के ज़िम्मेदार

होते हैं। अब यह इंसान पर मुन्हसिर है कि वह अपने लिए किस रास्ते का इंतिख़ाब करता है।

अन्दरूनी एहसासात को छुपाना सीखिए

बाज़ नाखुशगवा-सच्चाइयाँ, तल्ख़ हक़ीक़तों और वाक़िआत से हम कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। चेहरे के तास्सुरात और जिस्मानी हरकात व सकनात के ज़रिए अपने अन्दरूनी एहसास व जज़्बात को ज़ाहिर न करना भी सीख लेते हैं। हमारी शख़्सियत का यह बनावटी नक़ाब कई लिहाज़ से हमारे लिए सूदमन्द साबित होता है। ज़रा तसव्वुर तो करें कि अगर हमारा चेहरा किसी आईने की तरह हमारे अन्दरूनी ख़यालात व एहसासात की अक्कासी करने लगे तो ज़िन्दगी कैसी हो जाएगी?

हो सकता है कि हममें से अक्सर अपनी मुलाज़िमत से हाथ धो बैठें और यह भी हो सकता है कि अज़दुवाजी ज़िन्दगी भी मुतास्सिर और इंतिशार का शिकार हो जाए। कोई दोस्त हो और न कोई रिश्तेदार, क्योंकि अपने चेहरे से झलकनेवाले "सच्चे तास्सुरात" के जुर्म में हम सबको अपना दुश्मन बना चुके होंगे, लिहाज़ा आप इस बात के लिए परेशान न हों कि आपकी शख़्सियत में मुनाफ़िक़त या दोग़लापन का अन्सर क्यों मौजूद है या आप तज़ाद से समझौता कर रहे हैं। आप उसे मस्लेहत का नाम भी दे सकते हैं। एक ऐसी मस्लेहत जो समाजी ताल्लुक़ात को बेहतर बनाने के लिए निहायत ज़रूरी है।

मुआशरती दबाव से मिज़ाज़ को हमआहंग बनाएँ

हम मुआशरे में मुख़्तलिफ़ लोगों के साथ किस तरह पेश आएँ, इसका दारो-मदार हमारी ज़िहानत और मआशी हालत पर है। मुआशिरे के मिज़ाज के मुताबिक़ हम किस तरह अपने जज़्बात का इज़्हार करें, यह चीज़ रवैयों के बनने में अहम रोल अदा करती है। लोग चाहते हैं कि हम उनकी पसन्द व नापसन्द के मुताबिक़ अपनी शख़्सियत को बनाएँ, क़ता-नज़र इससे कि हमारे क्या एहसासात हैं और फ़ितरतन हमें क्या बात अच्छी लगती है और क्या बुरी। वे मुसलसल अपनी मनवाने पर तुले

रहते हैं। जो शख़्स अपने आपको उनसे हमआहंग करने में कामयाब हो जाता है वह अपनी ज़िन्दगी को कामयाब व कामरान बना देता है और जो उनसे बग़ावत करता है उसने गोया ख़ुद को लोगों की नज़र में बुरा बना लिया। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि आप मुकम्मल तौर पर अपनी शख़्सियत को फ़रामोश कर दें।

तल्ख़ बातों को भूल जाएँ

ज़रा ग़ौर करें! ज़िन्दगी के छोटे-छोटे सानेहात या वाक़िआत को अगर हम याद रखें तो ज़िन्दगी कितनी तकलीफ़देह हो जाएगी। किसी ने क्या ख़ूब कहा है कि –

> "अगर आप अपने ताल्लुक़ात को ख़ुशगवार और देरपा बनाना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आपकी याददाश्त महदूद हो।"

भूल जाने की यह आदत एक और इफ़ादियत रखती है। अक्सर औक़ात लोग किसी ख़ौफ़नाक वाक़िये से दो-चार होते हैं (जैसे एक्सीडेंट, क़त्ल या कोई क़ुदरती सानेहा) तो उनका दिमाग़ उनके असरात से बचने के लिए अपनी याददाश्त की धुंध में उसे छुपाने की कोशिश करता है। नतीजतन दिमाग़ पर एक ख़ुद-फ़रामोशी की कैफ़ियत तारी हो जाती है। इस ख़ुदकार दिफ़ाअी अमल की वजह से जिस्मानी आसाब पर बुरे असरात नहीं पड़ते। जिन लोगों में तल्ख़ और नापसन्दीदा बातों को फ़रामोश करने की आदत नहीं होती, वह ज़्यादातर परेशानकुन ज़िन्दगी से दो-चार रहते हैं और लोगों से उनका रवैया भी तल्ख़ रहता है। लिहाज़ा आपकी कोशिश होनी चाहिए कि जो बातें आपकी तकलीफ़ का बाइस बनें, उन्हें जहाँ तक मुमकिन हो ज़ेहन से निकाल दें।

लोगों के जज़्बात की क़द्र करें

आपका लोगों के साथ जज़्बाती रवैया कैसा होता है? यह चीज़ मुआशरे में ख़ुद को हर दिल अज़ीज़ बनाने के लिए बहुत ज़रूरी है। बहुत से अफ़राद ज़हानत और क़ाबलियत के मालिक होते हैं लेकिन वे लोगों के जज़्बात की क़दर नहीं करते, उन्हें सिर्फ़ इस बात की परवाह

होती है कि लोग उनकी शख़्सियत को समझने की कोशिश करें और यही चीज़ उन्हें मुआशरती तौर पर नुक़सान पहुँचाती है, जबकि अक्सर लोग ज़ेहनी तौर पर इतने क़ाबिल नहीं होते, लेकिन चूंकि वे दूसरों के जज़्बात का पूरा-पूरा ख़याल रखते हैं और समझदार अफ़राद से भी ज़्यादा ज़हीन नज़र आते हैं। आप बेजा और नाम-निहाद अनापसन्दी का शिकार न हों। और न आपके किसी अमल से लोगों के जज़्बात को ठेस पहुँचे।

चापलूसाना रविश से गुरेज़ कीजिए

मुआशरे में दौलत और ज़ाहिरी ख़ूबसूरती की बुनियाद पर इंसान को अहमियत दी जाती है और इसी बुनियाद पर दूसरों के जज़्बात का ख़याल रखते हैं। यहाँ तक कि उनकी शख़्सियत मुकम्मल तौर पर दिखावा और बनावट बनकर रह जाती है। उनके दिल में कुछ होता है और ज़बान पर कुछ। उन्हें ख़ुद अपनी शख़्सियत पर यक़ीन नहीं होता कि वह क्या हैं और उनकी हक़ीक़ी क़द्र व क़ीमत क्या है?

यह एक ऐसी नफ़्सियाती बीमारी है, जिसमें इंसान की 'अना' अन्दर ही अन्दर घुटकर रह जाती है। अक्सर फ़िल्म स्टार इसके शिकार होते हैं। हममें से भी हर एक शख़्स अपनी ज़िन्दगी में कभी न कभी इस कैफ़ियत से ज़रूर दो-चार होता है। और अगर कोई शख़्स यह दावा करता है कि वह कभी इस मर्ज़ में मुब्तला नहीं होता तो वह ग़लत बयानी से काम ले रहा है। यह इंसान पर मुन्हसिर करता है कि इस बनावटी माहौल से निकलने की किस क़द्र सलाहियत रखता है और यह हौसलामन्दाना क़दम जितनी जल्दी उठाया जाएगा, एक मुतवाज़ुन और अच्छा इंसान बनने के लिए उतना ही बेहतर होगा।

नज़रियात में लचक पैदा कीजिए

हम अपनी ज़िन्दगी में बाज़ मौक़े पर ऐसी बातें कहते हैं जिससे हमारे ख़यालात व एहसासात की तर्जुमानी नहीं होती और इसकी कई वजूहात हो सकती हैं। हो सकता है कि हम मुरव्वतन दूसरों को नाराज़ करना नहीं चाहते हों या फिर दूसरे की दिल से तारीफ़ करने के

ख़्वाहिशमन्द न हों, लेकिन अख़्लाक़न करनी पड़ती हो। इसी तरह बाज़ औक़ात अपनी ज़ात के लिए भी अपने हक़ीक़ी एहसासात को छुपाने की ज़रूरत पड़ती है। वजह कुछ भी हो, सच तो यह है कि हम अपनी ज़िंदगी का ज़्यादा हिस्सा "आधे सच और आधे झूठ" के सहारे बसर करते हैं। एक शख़्स कितना ही अना-परस्त या ख़ुद्दार होने का दावा क्यों न करता हो वह सारी ज़िन्दगी अपनी अना के हिसार में नहीं जी सकता। कहीं न कहीं उसे लाज़मी तौर पर ख़ुद को दूसरों की ख़ातिर थोड़ा-सा मुंकसिरुल-मिज़ाज और लचकदार बनना पड़ता है और अक्सर औक़ात न चाहते हुए भी दूसरों के जज़्बात का ख़याल रखना पड़ता है।

नेक किरदार बीवी एक अनमोल ख़ज़ाना है

नेक किरदार शरीके हयात-बिला शुबहा एक अनमोल ख़ज़ाने के मानिन्द है। तारीख़ बतलाती है कि बाज़ बड़े नामवर लोगों की नामवरी और शोहरत में नेक सीरत शरीके-हयात (बीवी) का भी बड़ा दख़ल रहा है। चुनांचे दुनिया के सबसे मोहतरम इंसान हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर जब ग़ारे हिरा में पहली वह्य हज़रत जिबरील (अलैहि०) के ज़रिए नाज़िल हुई, तो आप (सल्ल०) बेहद मुतवह्हिश और परेशान हुए। घबराहट और पसीना-आलूद पेशानी लिए जब घर तशरीफ़ लाए तो सबसे पहले आप (सल्ल०) को तसल्ली देने, माथे का पसीना पोछने, हिम्मत व हौसला बढ़ाने और आप (सल्ल०) के कलिम-ए-हक़ पर ईमान लानेवाली, हमदर्द और ग़मगुसार हस्ती उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा आप (सल्ल०) की ज़ौजा (बीवी) मोहतरमा थीं, जिन्होंने क़दम-क़दम पर जानिसारी का हक़ अदा किया और अपनी तमाम दौलत इशाअत इस्लाम के लिए वक़्फ़ कर दी थी। और जब आप (सल्ल०) मर्ज़े वफ़ात में मुब्तला हुए उस वक़्त भी आपका सर मुबारक ज़ानुए उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) पर ही था। वह उम्मत की माएँ थीं जिन्होंने हुज़ूर सरवरे कायनात (सल्ल०) के तब्लीग़ी मिशन के लिए अपना सब कुछ क़ुरबान किया। ख़ानदानी अहले सरवतवाली बाज़ ज़ौजा मोहतरमा भी थीं जो अगर चाहतीं तो उस दौलत का सहारा लेकर बड़े ऐश व राहत की

ज़िन्दगी बसर कर सकती थीं, मगर उन्होंने ज़ौज-ए-रसूल (सल्ल०) (रसूल (सल्ल०) की बीवी) बनकर मशक्कत की ज़िन्दगी को दौलत पर तर्जीह दी। एक हदीस पाक में है कि बेहतरीन ख़ज़ाना नेक सीरत शरीके-ज़िन्दगी है कि जब मर्द उसको देखे तो वह उसे ख़ुश कर दे और जब शौहर उसे कुछ हुक्म दे तो वह दिल व जान से उसको पूरा करे और अगर शौहर घर में मौजूद न हो तो वह अपने नफ़्स और अस्मत की हिफ़ाज़त, शौहर के घर की हिफ़ाज़त नीज़ बच्चों की बेहतरीन तर्बियत करे और ऐसे किसी शख़्स को शौहर की अदम मौजूदगी में घर के अन्दर न आने दे जिसका आना शौहर को नापसन्द हो।

(नसई किताबुन्निकाह, मुस्नद अहमद)

यह सच है कि दौलत तो सिर्फ़ माद्दी ज़रूरियात की तक्मील करती है, लेकिन सालेह औरत (बीवी) ख़ानदान को और घर को ख़ुशी और अम्न व अमान का गहवारा बना देती है। वह अपनी शीरीं गुफ़्तुगू और बुलन्द अख़्लाक़ से घर की फ़िज़ा में मिठास घोल देती है और मुहब्बत की ख़ुश्बू सारे घर में बिखेर देती है। उसका बुलन्द अख़्लाक़ और घर के सभी अफ़राद के साथ ख़ुशगवार बर्ताव ख़ानदान के तमाम अफ़राद के लिए तर्बियतगाह बन जाता है। आप (सल्ल०) का इरशादे-गिरामी है कि "पूरी कायनात तो आरज़ी नफ़ा पहुँचाती है मगर औरत (बीवी) दायमी ख़ुशी और ख़ुशगवार ज़िन्दगी (दुनिया में आरज़ी जन्नत का नमूना) की ज़मानत है। किसी दानिश्वर ने इसको इस अन्दाज़ से साबित करने की कोशिश की जो हिकायत के तौर पर दर्जे-ज़ैल है, जिसमें औरतों के लिए लायक़े तक़लीद दर्स भी है।

एक ज़ईफ़ा जो बावजूद कब्रसनी के इंतिहाई ख़ूबसूरत और नूरानी चेहरा की मालिका थीं। उनसे किसी जवान शादीशुदा औरत ने इस नूरानियत और ख़ूबसूरती का राज़ दरयाफ़्त किया। उस मामर औरत ने जो कुछ कहा उसका ख़ुलासा यह है कि "मैंने अपने होठों पर हमेशा हक़ की सुर्ख़ी लगाई, अपनी ज़बान को हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रखा, जिन चीज़ों को अल्लाह ने देखने से मना फ़रमाया है उनसे हमेशा परहेज़

किया यानी परहेज़ का सुर्मा इस्तेमाल किया, अपने हाथों में अता (सख़ावत व फ़य्याज़ी) की मैंहदी लगाई और अपने आमाल पर सब्र व इस्तिक़ामत का पाउडर लगाया, अपने दिल पर ख़ुदा की मुहब्बत और उसका ख़ौफ़ लाज़िम किया, अपनी अक़्ल पर हिक्मत व बसीरत को ग़ालिब रखा और अपने नफ़्स पर अल्लाह के हुक्म के बाद अपने शौहर की इताअत और ख़ुशनूदी को मुक़द्दम जाना। नफ़्स को इस ख़्याल से बांधकर रखा कि अल्लाह तो हर जगह है और वह हर बात से वाक़िफ़ है। वह सब कुछ देख रहा है। यह मेरे चेहरे का नूर उसी नेक आमाल का सदक़ा है।"

दुआ है कि अल्लाह तआला मोमिनीन के घरों के माहौल को भी इसी बुज़ुर्ग मोमिना ख़ातून के आमाल जैसा बना दे। आमीन!

अपनी इज़्दवाजी ज़िन्दगी को ख़ुशगवार बनाइए

मियां-बीवी के दर्मियान मामूली बात पर इख़्तिलाफ़ की सूरत में अगर अक़्लमन्दी और हिक्मत का मुज़ाहिरा न किया जाए तो मामलात बिगड़ जाते हैं। इज़्दवाजी ज़िन्दगी में तल्ख़ियां भी आती हैं लेकिन फ़ी ज़माना दोनों जानिब से महज़ जज़्बात का मज़ाहिरा किया जाता है। लड़की और लड़के के वालिदैन भी औलाद की मुहब्बत और ज़ाती अना की ख़ातिर मसले को हल करने के बजाय उसे और पेचीदा बना देते हैं। ख़ानदान के वे बुज़ुर्ग जिन्हें सुलह-सफ़ाई करानी चाहिए वे भी मामले का एक पहलू देखकर हालात ख़राब करने का बाइस बनते हैं।

मियाँ-बीवी के तल्ख़ ताल्लुक़ात में यूँ तो हर दो फ़रीक़ का बुनियादी किरदार होता है। लेकिन उन ताल्लुक़ात को दोबारा मुहब्बत के रास्ते पर लाने की हमें भरपूर और मुख़्लिसाना कोशिश करनी चाहिए। हुज़ूर (सल्ल०) की ज़िन्दगी हमारे लिए मुकम्मल तौर पर क़ाबिले तक़्लीद है, इसलिए हमें इज़्दवाजी ज़िन्दगी के इस पहलू को भी हुज़ूर (सल्ल०) की हयाते तय्यिबा से समझने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) आप (सल्ल०) की चहेती बेटी थीं और

आप (सल्ल०) अपने जिगर का टुकड़ा और ख़वातीने-जन्नत की सरदार कहा करते थे। उनकी शादी हज़रत अली (रज़ि०) से हुई थी जो अशरा-मुबश्शरा में से हैं। इतने अज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ उन शख़्सियात के दर्मियान भी कभी-कभार तल्ख़ियाँ हो जाया करती थीं।

सीरत की किताबों में यह वाक़िआ दर्ज है कि एक बार दोनों के दर्मियान किसी बात पर झगड़ा हो गया। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) अपने शफ़ीक़ बाप की ख़िदमत में पहुँचीं। पीछे-पीछे दामादे रसूल (सल्ल०) हज़रत अली (रज़ि०) भी घबराए हुए पहुँचे और दरवाज़े की आड़ में खड़े हो गए। सोचने लगे कि अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) नाराज़ हो गए तो दीन व दुनिया दोनों तबाह हो जाएँगी।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने हुज़ूर (सल्ल०) से अपने शौहर की शिकायत की, हाल सुनाया और ज़ारो-क़तार रोने लगीं। लेकिन आप (सल्ल०) ने जो रद्दे-अमल ज़ाहिर किया वह हमारी सोच के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। घर बसानेवाला रवैया था, बाप ने बेटी को जो इस तरह रोते देखा तो दिल भर आया, आबदीदा हो गए। बेटी को समझाते हुए शफ़ीक़ बाप ने कहा : "बेटी, मैंने तुम्हारा निकाह उस शख़्स से किया है जो क़ुरैश के जवानों और इस्लाम लानेवालों में सबसे अफ़ज़ल है। बेटी मियां-बीवी में कभी- कभी ऐसी बातें हो ही जाती हैं, चाहे कोई मियां-बीवी हों। और बेटी यह कैसे मुमकिन हे कि मर्द सारे काम हमेशा औरत की मर्ज़ी के मुताबिक़ ही किया करे और अपनी बीवी को कुछ न कहे। जाओ अपने घर जाओ, ख़ुदा तुम्हें ख़ुश और आबाद रखे और मैं तुम दोनों को ख़ुश देखकर अपनी आँखें ठंडी रखूं।"

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) रुख़्सत हुईं और हज़रत अली (रज़ि०) का दिल भर आया। आड़ से निकल कर सामने आए। आँखों में आँसू थे। रिक़्क़त के अन्दाज़ में हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) से कहा : ख़ुदा की क़सम! आइंदा तुम ऐसी कोई बात न देखोगी जिससे तुम्हारे नाज़ुक दिल को दुख पहुँचे। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) का दिल भर आया और कहने लगीं कि ग़लती तो मेरी ही थी। फिर दोनों ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट आए।

अपने घर का माहौल इस्लामी तरीक़े पर बेहतर बनाइए

इस्लाम दुश्मन तहरीकें और तन्ज़ीमें अपने अहदाफ़ व मक़ासिद के पेशे-नज़र आलमी पैमाने पर पूरी दुनिया ख़ुसूसन मुसलमानों के अन्दर इल्हाद व लादीनियत और उरयानियत व फ़हाशियत, आम करने और इस्लामी तहज़ीब व सक़ाफ़त को मिटाने की कोशिश करती रही हैं। लेकिन अस्रे हाज़िर में उनके अन्दर किसी क़दूर तेज़ी आ गई है। इसके लिए वे मुतअद्दिदद तर्कीबें और तदबीरें इख़्तियार कर रही हैं जैसे वीड़ियो, टेलीविज़न, रेडियो, ऑडियो कैसेट, मुख़र्रब अख़्लाक़ किताबें, रसाइल व जराइद और लिट्रेचर। उन तमाम आलाते-जदीदा से मुस्लह होकर वे मुसलमानों के ज़ेहन व शऊर से इस्लामी तालीमात और इस्लामी तहज़ीब व सक़ाफ़त को खुरच कर फेंक देना चाहते हैं। ख़ुसूसन नापुख़्ता शऊर रखनेवाले बच्चों और बच्चियों को मग़रिबी तहज़ीब के सांचे में ढाल कर उनसे उनकी मासूमियत, उनका भोलापन, उनकी पाकीज़गी और इफ़्फ़त को छीन लेना चाहती हैं।

सबसे ज़्यादा तकलीफ़ देह अम्र यह है कि वह मुसलमान जो कभी अपने अख़्लाक़ और तहज़ीब व सक़ाफ़त के ज़रिए पूरी दुनिया पर हुकूमत करते थे आज वही जदीदियत और तरक़्क़ी के नाम पर मग़रिब तहज़ीब में ढलते जा रहे हैं। उनपर आलमगीर फ़िक्री इंहितात और अमली ज़वाल तारी होता जा रहा है। अक्सर मुस्लिम घरानों में तमाम मुख़र्रिबे अख़्लाक़ चीज़ें भर आई हैं। मुसलमान बच्चे और बच्चियाँ ग़ैर इस्लामी अफ़्कार व नज़रियात की दिलदादा नज़र आ रही हैं और इस्लामी तालीमात से कोसों दूर होती जा रही हैं। बहुत-से ख़ानदान ऐसे भी हैं जिन्हें मुसलमान होने के बावजूद कलिमा तौहीद *"ला इला-ह इल्लल्लाहु"* तक याद नहीं है। वे सिर्फ़ ख़ानदानी मुसलमान हैं। उनसे अगर किसी फ़िल्म या सीरियल की कहानी पूछी जाए तो वह मिनो-अन नक़ल करने में ज़र्रा बराबर भी झिझक महसूस नहीं करेंगे लेकिन अगर उनसे यह पूछा जाए कि हमारे नबी (सल्ल०) का क्या नाम है? आप

(सल्ल०) पर कौन-सी किताब नाज़िल हुई? खुल्फ़ा-ए-राशिदीन कौन थे? इस्लाम के बुनियादी अरकान और तक़ाज़े क्या हैं? तो वे कोई जवाब नहीं दे पाते। यह सूरते- हाल उम्मते मुस्लिमा के लिए बड़ा इल्मिया और लम्हाए फ़िक्रिया है।

बच्चों के मौजूदा बिगाड़ के जुमला असबाब में सबसे अहम सबब वालिदैन का अपने फ़रीज़े से बेतवज्जोही बरतना है। बच्चे और बच्चियाँ अल्लाह की जानिब से एक अमानत हैं। उनकी अच्छी तर्बियत और देखभाल करना, उन्हें इस्लामी तालीमात का पाबन्द बनाना वालिदैन का दीनी फ़रीज़ा है, क्योंकि बच्चों के बनाव और बिगाड़ में वालिदैन का बड़ा अमल होता है। इरशादे नबवी है : "हर बच्चा फ़ितरते-इस्लाम पर पैदा होता है। फिर उसके वालिदैन उसे यहूदी, नसरानी, या मजूसी बना देते हैं।" (बुख़ारी, मुस्लिम) यानी बच्चे अपने वालिदैन का अक्स हुआ करते हैं। उनकी मिसाल छोटे पौधे के मानिन्द होती है कि उन्हें शजरकारी करनेवाला लगाने के बाद अगर देखभाल करता है, उनकी सिंचाई करता है और हवा के झोंकों से बचाने के लिए लकड़ियों का सहारा देता है और उन्हें हत्तुल-इम्कान सीधा रखने की कोशिश करता है तो वे पौधे बड़े होने के बाद सीधे और लायक़ दीद होते हैं और अगर उनको उनकी हालत पर छोड़ देता है तो डालियाँ और शाख़ें इधर-उधर झुक जाती हैं और बेढंगी मालूम होती हैं। इसी तरह बच्चों की अच्छी और ग़लत तर्बियत उनके मुस्तक़बिल के बनने और सँवरने में अहम रौल अदा करती हैं।

बच्चों की तामीर और तख़रीब में माँ की ज़िम्मेदारी बहुत अहम होती है। क्योंकि वही नस्ल इंसानी की मुरब्बिया होती है। पूरे ख़ानदान और मुआशरे के बनाव और बिगाड़ का दारोमदार उसी पर होता है। अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया : "औरत अपने शौहर के घर और उसकी औलाद की निगराँ है और उससे औलाद के बारे में पूछगच्छ होगी।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

एक माँ यह फ़र्ज़ उस वक़्त अंजाम दे सकती है जब वह ख़ुद तर्बियत के तमाम उसूल व ज़वाबित से मुज़य्यन होगी। एक माँ के लिए

ज़रूरी है कि वह पुख़्ता और आला सीरत व किरदार की मलका हो, अपने मक़ाम व मर्तबे का शऊर रखे, ख़ुद को इस्लामी तालीमात का नमूना बनाए, मारफ़त और अच्छी बातों को अपनाने की कोशिश करे और मुंकिर से बचे। हलाल व हराम की पाबन्दियों का लिहाज़ करे। लालच, हसद, झूठ, बुग्ज़ और मुनाफ़िक़त जैसी बीमारियों से दूर रहने की कोशिश करे। अपने ख़यालात, इबादात, मुआशरत, दीन, अख़्लाक़ ग़र्ज़ यह कि ज़िन्दगी के हर शोबे को दीन के ताबेअ कर दे। इसके बाद वह अपने बच्चों की तर्बियत करती है तो उसके घर का माहौल इस्लामी बन जाएगा। घर से ग़ैर-इस्लामी रसूम व रिवाज और क़दीम व जदीद जाहिलियत के आसार यकलख़्त ख़त्म हो जाएँगे। सहाबियात और अहदे ताबईन की ख़वातीन की ज़िन्दगियाँ वाज़ेह सुबूत हैं। अब भी वक़्त है कि मुसलमान वालिदैन अपने अख़्लाक़ व किरदार को सँवार कर एक नए दौर और नए मुआशरे की तश्कील व तामीर का अहद करें। ईसार व मुहब्बत और उख़ुव्वत व भाईचारगी को आम करने की कोशिश करें। अगर वालिदैन ने ऐसा नहीं किया तो क़ियामत के दिन उन्हें अल्लाह के सामने जवाबदेह होना पड़ेगा, जैसा कि इरशादे नबवी (सल्ल०) है कि : "तुममें हर शख़्स निगराँ है और उससे उसकी रईयत के बारे में सवाल किया जाएगा।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह हमें इसकी तौफ़ीक़ दे।

हिक्मत के मोती

(1) ईमानदारी से ख़रीद व फ़रोख़्त करनेवाले का अंजाम नेकोकार और शहीदों के साथ होगा।

(2) तंगदस्त आदमी, जो रिश्तेदारों से मेल-मिलाप रखता है, उस मालदार से अच्छा है जो उनसे क़ता ताल्लुक़ रखता है।

(3) बुरा आदमी किसी के साथ नेक गुमान नहीं रह सकता।

(4) इस्लाह के बग़ैर पशेमानी ऐसी है जैसे सुराख़ बन्द किए बग़ैर

जहाज़ में से पानी निकालना।

(5) परेशानी दूर करने का आसान तरीक़ा यह है कि अपने आपको किसी तामीरी काम में मसरूफ़ रखें।

(6) चालाक लोग उन दरिन्दों के मानिन्द हैं जो अपने शिकार की ताक में नाख़ून छुपाए बैठे हैं।

(7) बनी इसराईल इसलिए तबाह हुए कि वे ग़रीबों को सज़ा देते थे और अमीरों को छोड़ देते थे।

(8) दुनिया ख़राब अख़्लाक़ का नमूना पेश करे तब भी इंसान को अपने अख़्लाक़े-हसना को नहीं छोड़ाने चाहिए।

(9) अल्लाह से उसका फ़ज़्ल तलब किया करो। क्योंकि अल्लाह तआला को यह पसन्द है कि उससे माँगा जाए।

(10) हर मक़सद में ख़ुदा तआला की बड़ाई, मुल्क की भलाई और हक़ की तलाश मद्दे-नज़र रखो।

(11) अपने दिलों से दोस्ती का हाल पूछो, क्योंकि ये ऐसे गवाह हैं जो किसी से रिश्वत नहीं लेते।

(12) अपने माल की ख़ातिर लड़नेवाला आख़िरत में शहीदों में शामिल होगा।

(13) क़ुरआन करीम और ज़िक्रे-इलाही को लाज़िम पकड़ लो, क्योंकि ये चीज़ें तुम्हारे लिए रू-ए-ज़मीन पर नूर और आसमान पर ज़िक्रे-ख़ैर का ज़रिया हैं।

(14) जो लोगों का शुक्रिया अदा न करे वह ख़ुदा का शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता।

(15) सबसे बेहतर जिहाद यह है कि तुम इंतिक़ाम की क़ुदरत रखते हुए भी ग़ुस्से को पी जाओ।

(16) इल्म माल से बेहतर है कि वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है और तुम माल की हिफ़ाज़त करते हो।

(17) सिर्फ़ ख़ाहिश करने से हर चीज़ नहीं मिल जाती, ख़ाहिश के साथ जिद्दोजुहद भी लाज़मी है।

(18) अगर ऊँची परवाज़ करना चाहते हो तो अपनी हिम्मत को बुलन्द रखो क्योंकि हिम्मत ही आपकी ताक़त है।

(19) खुद खुश रहना चाहते हो तो दूसरों को भी खुश रखा करो।

(20) किसी की ख़ूबियों की तारीफ़ करने में अपना वक़्त बर्बाद न करो बल्कि उसकी ख़ूबियाँ अपनाने की कोशिश करो।

शादीशुदा लड़के और लड़की की ज़िम्मेदारियाँ

शादीशुदा मर्द अपनी नई नवेली दुल्हन की मुहब्बत में मगन और मदहोश हो जाता है और वह बाक़ी सारी दुनिया को भुला बैठता है। उसकी पूरी तवज्जोह बीवी की खुशियों की तरफ़ होती है और वह खुद भी उन खुशियों के गहवारे में झूलना शुरू कर देता है, बाज़ औक़ात उसके नताइज बड़े तबाहकुन निकलते हैं।

गुज़िश्ता दिनों एक लड़के की शादी हुई। लड़के के वालिद को किसी ज़रूरी काम से शहर से बाहर जाना पड़ा। वह अपने बेटे को बिज़नेस की देखभाल करने की हिदायत देकर रवाना हो गए, जो अमूमन दोनों मिलकर सँभालते थे। नौजवान दूल्हा अपनी नई नवेली दुल्हन की मुहब्बत में ऐसा सरशार रहा कि वालिद की तमाम हिदायात को यकसर फ़रामोश कर दिया जिसके नतीजे में ज़बरदस्त माली ख़सारे का सामना करना पड़ा। अगर बीवी में अक़्ल होती तो वह अपने मियाँ को मजबूर कर सकती थी कि वह मुहब्बत की गरदाब से निकलकर कारोबार की तरफ़ भी तवज्जोह दे। ऐसी सूरत में यह अफ़सोसनाक सूरते-हाल न देखनी पड़ती।

एक बीवी का फ़र्ज़ है कि वह इस बात को यक़ीनी बनाए कि उसका शौहर अपनी ड्यूटी और फ़राइज़ से ग़फ़लत न बरते और इसी तरह किसी शौहर के लिए मुनासिब नहीं है कि वह किसी सानिहा के पेश आ जाने की सूरत में सारी ज़िम्मेदारी बीवी के सर पर डाल दे। उसपर ख़ुदग़र्ज़, मतलब-परस्त और ग़ैर-हस्सास होने का इल्ज़ाम लगाए।

एक शादीशुदा जोड़ा हनीमून मनाकर जब घर लौटा तो शौहर बजाए दफ़्तर जाने के तीन दिनों तक मुसलसल दफ़्तर में फ़ोन करके यह कहता रहा कि उसकी तबीयत ख़राब है। शुरू में यह बात बीवी को भी अच्छी मालूम हुई कि उसका शौहर उसे कितना चाहता है और उसके दिल में उसकी कितनी अहमियत है। लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि यह तरीक़ा ग़लत है और उसने ख़ुद ही अपने शौहर को काम पर जाने के लिए इस तरह मजबूर किया कि उसे बुरा भी न लगे और अपनी ज़िम्मेदारी भी बख़ूबी निभाता रहे।

बाज़ मर्तबा बेटा माँ-बाप के लिए अपने फ़राइज़ से कोताही बरतने लगता है। शादी के बाद तो बूढ़े वालिदैन के लिए उसके पास वक़्त ही नहीं रहता। लेकिन अगर दुल्हन को सास-सुसर की तकलीफ़ का बख़ूबी अहसास हो तो वह बड़ी आसानी से सास-सुसर और शौहर के दर्मियान "पुल" का काम अंजाम दे सकती है और अपने शौहर को वालिदैन के फ़राइज़ याद दिला सकती है।

फ़िज़ूल ख़र्च शौहरों को उनकी बीवियाँ मौक़ा-शनासी से काम लेकर और थोड़ी समझदारी से उन्हें अपने पैसे की अहमियत का एहसास दिला सकती हैं। एक साहब जो अपनी पूरी तनख़ाह 20 तारीख़ तक ख़त्म कर देते और फिर उसके बाद वह इख़राजात पूरे करने के लिए दोस्तों से क़र्ज़ लेकर गुज़ारा करते थे। लेकिन शादी करने के बाद उनकी ज़िन्दगी यकसर तब्दील हो गई। बीवी ने शौहर की तनख़ाह का हिसाब अपने हाथों में ले लिया। ज़हानत से बजट बनाने और ख़र्च करने के बाइस उन्होंने इख़राजात पूरे करने के अलावा हंगामी ज़रूरतों के लिए थोड़ी-सी रक़म पस-अन्दाज़ भी करना शुरू कर दी।

कभी-कभी कोई लड़का शादी के वक़्त किसी प्रोफ़ेशनल इदारे में तालीम हासिल कर रहा होता है। चुनांचे अपनी ख़ूबसूरत दुल्हन की ज़ुल्फ़ का असीर होकर वह अपनी सारी पढ़ाई भुला बैठता है। यह सूरते-हाल भी ख़तरे से पुर है। सिर्फ़ ज़हीन दुल्हन ही समझदारी से काम लेते हुए अपने शौहर को पढ़ाई की तरफ़ रागिब कर सकती है। वह अपनी कोशिश से इस बात को यक़ीनी बनाए कि पढ़ाई पर तवज्जोह मर्कज़ू करने के लिए शौहर को ख़ामोश माहौल मयस्सर आए, और वह अपने शौहर को हल्की, लेकिन ग़िज़ाइयत से पुर ख़ुराक भी दे। इस तरह शौहर की कामयाबी के इनाम से बीवी भी नवाज़ी जाएगी। ज़ाहिर है अच्छे नताइज़ हासिल करने के बाद जब वह आला ओहदे पर फ़ाइज़ होगा तो बीवी को भी राहत और ख़ुशियाँ मयस्सर आएँगी।

यह एक सिर्फ़ पहलू है जिसमें हम औरत को हर चीज़ का ज़िम्मेदार क़रार देते हैं। क्या हम यह नहीं सोच सकते कि किसी भी ग़लती या कोताही में तनहा लड़की ही ज़िम्मेदार नहीं होती? हम यह बख़ूबी जानते हैं कि लड़की अपने माँ-बाप के घर से रुख़सत होकर एक नए माहौल, नए लोगों के बीच एक नए हमसफ़र के साथ नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ करती है। ऐसे में अगर उसे प्यार करनेवाला शौहर मिल जा-जो उसका हर मुमकिन ख़्याल रखता हो, उसे सर आँखों पर बिठाता हो, और उसकी हर बात पूरी करता हो और साथ ही अपने घरवालों के तयीं अपनी दूसरी ज़िम्मेदारियों से खुद ही मुँह मोड़ लेता हो तो इसमें किसकी ग़लती है? क्या इसकी ज़िम्मेदार सिर्फ़ लड़की है, जिसने अभी पूरी तरह से घर के माहौल को न समझा और न ही अफ़रादे-ख़ाना के मिज़ाज को ही समझ पाई। इसमें अगर उसका शौहर अपने फ़राइज़ से कोताही कर रहा है तो उसका ज़िम्मेदार सिर्फ़ और सिर्फ़ उस औरत को ही क्यों ठहराया जाता है। अगर लड़का यानी शौहर अपनी बीवी से प्यार और मुहब्बत का बर्ताव करता है तो यह उसका फ़र्ज़ है और साथ ही यह भी उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने वालिदैन और अपने अफ़रादे-ख़ाना की भी ज़रूरतों और घर के तयीं ज़िम्मेदारियों को समझे। अगर वह ऐसा नहीं करता तो

लड़की पर यह तोहमत नहीं लगानी चाहिए कि उसने अपने शौहर को उसपर मजबूर किया है।

अगर किसी कारोबार में नुक़सान हो जाए, घर में किसी भी क़िस्म की माली परेशानी हो जाए या ख़ुदा-न-ख़ास्ता किसी की मौत हो जाए तो, तरक़्क़ीयाफ़्ता और तालीमयाफ़्ता समाज होने के बावुजूद उसका इल्ज़ाम नई नवेली दुल्हन के सर डाल दिया जाता है।

शादी के बाद लड़का वालिदैन और घर के अफ़राद के तयीं अपनी ज़िम्मेदारियों से कोताही बरतता है तो यक़ीनी तौर पर बीवी का यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी सलाहियत और क़ाबलियत से उसे इस तरह की ग़फ़लत बरतने से बाज़ रखे। लेकिन इसके बावजूद अगर लड़का अपनी ज़िम्मेदारियों को नहीं निभाता तो उसका इल्ज़ाम लड़की पर लगाना सरासर ग़लत है। हाँ, अगर लड़की भी अपनी ज़िम्मेदारियों से कोताही बरते तब मियाँ-बीवी दोनों ही उसके ज़िम्मेदार होंगे, क्योंकि लड़के का न सिर्फ़ यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवी का हक़ अदा करे बल्कि अपने वालिदैन और घर के तमाम अफ़राद की ख़ुशहाली का ख़्याल रखे और समझदार वही है जो न सिर्फ़ बीवी से प्यार करे बल्कि वालिदैन और तमाम अफ़रादे-ख़ाना के तयीं अपनी ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी अंजाम दे।

सितारों से आगे जहाँ और भी है

क़ुदरत का यह एहसाने अज़ीम है कि अनगिनत सलाहियतों और एहसासात को यकजा करते हुए इंसान को अशरफ़ुल-मख़्लूक़ात का दर्जा दिया। ऐसा भी हो सकता था कि बजाए इंसान के हैवान या कोई चरिन्द की शक्ल दे देता। क़ुदरत ने इंसान को एक निहायत ही ख़ूबसूरत सांचे में ढाला है और उसके जिस्म के हर अज़ू को तवाना, कारआमद और कामिल बनाया है। ऐसी भी सूरतें हैं कि किसी मस्लेहत की बिना पर क़ुदरत ने इंसान को किसी अज़ू या एहसास से जुज़वी या कुल्ली तौर पर महरूम कर दिया और उसको पैदाइशी बदसूरत या बीमार या फिर माज़ूर बना दिया या बजाय किसी मुमताज़ व मुअज़्ज़िज़ क़ौम, क़बीले या

ख़ानदान में पैदा किए जाने के इसके बरअक्स अमल किया।

हक़ीक़त में माज़ूर वह है जो अपने आपको लाचार मजबूर समझे या किसी माक़ूल या मामूली काम की अंजामदेही में भी अपनी माज़ूरी का उज़्र पेश करते हुए ख़ुद को दूसरों के रहम व करम के हवाले कर दे। क़ुदरत का एक अटल उसूल व फ़ितरी मस्लेहत है कि हममें से कोई न कोई किसी न किसी छोटी या बड़ी ख़ामी मे मुब्तला और नुक़्स से दोचार है। हम सिर्फ़ एक नामुकम्मल शख़्स की नुमाइंदगी करते हैं। कोई भी यह दावा कभी भी नहीं कर सकता कि वह हर ज़ाविया से एक मुकम्मल शख़्सियत है। ज़िन्दगी के इस तवील सफ़र में कहीं-न-कहीं इसका नुक़्स व लाचारी उभर कर आती है। इसलिए मायूस होने और अफ़सोस करने के बजाय हमको अपनी ख़ामियों से आगाह होना और उनको क़बूल करना चाहिए।

इस दुनिया में कोई शख़्स या चीज़ बावुजूद अपने नुक़्स और ख़ामी के नाकारा और बेमसरफ़ नहीं है। अल्लाह तआला हमारे उन नक़ाइस को बेहतर तौर पर इस्तेमाल करने और दुनिया को फ़ैज़याब होने के मौक़े फ़राहम करता है ताकि इंसान में यह ख़ुशगवार एहसास पैदा हो कि उसकी ज़िन्दगी उन ख़ामियों के बावुजूद उसके लिए, बल्कि दुनिया और उसके ख़ानदान के लिए, ख़ूबसूरत तोहफ़ा है। यह हक़ीक़त सिर्फ़ और सिर्फ़ महसूस करने, जानने और अमल करने से ताल्लुक़ रखती है।

दुनिया में बेशुमार मिसालें ऐसी हैं कि बिल्कुल माज़ूर इंसानों ने जो पैदाइशी तौर पर या पैदाइश के बाद किसी मुहलिक बीमारी या किसी हादसे के बाइस किसी अज़्ू (अंग) की ख़राबी या ख़ामी और सलाहियत से जुज़वी या मुकम्मल तौर पर महरूम हो चुके हैं, अपनी माज़ूरी के बावुजूद ज़िन्दगी का दिलेराना मुक़ाबला किया, हालात से नबर्द-आज़मा हुए और अपनी पोशीदा सलाहियतों को बरूए-कार लाकर अपने वक़्त की निहायत ही कामयाब और मिसाली शख़्सियत बनकर उभरी और दुनिया उनकी ताज़ीम व तकरीम करने पर मजबूर हुई। रश्क आता है और हैरत होती ऐसे लोगों के बड़े कारनामों पर जिनकी तवक़्क़ो भी उनसे नहीं की जा सकती, मगर वह काम उन लोगों ने कर दिखाया।

मशरिक़ी और मग़रिबी तहज़ीब का फ़र्क़

मशरिक़ व मग़रिब के तज़ाद और मग़रिब की बुराइयों के बारे में हम बहुत-सी बातें करते हैं और मशरिक़ी तहज़ीब को सबसे बेहतर और अच्छी तहज़ीब क़रार देते हैं। क्या मग़रिबी तहज़ीब को बुरा कहने से हम अपनी तहज़ीब और अपने मुआशरे की बुराइयों को छुपा सकते हैं या इस बात का दावा कर सकते हैं कि हम अपनी मशरिक़ी तहज़ीब और अपने मुआशरे की हर ज़रूरत को सच्चाई और हर रिश्ते को पूरी ईमानदारी से निभा रहे हैं? इन सब बातों का जवाब हमें खुद ही तलाश करना होगा तब कहीं जाकर हम अपने आपको मशरिक़ी तहज़ीब और इंसानी रिश्तों की अहमियत और ज़रूरत को समझने और उसे पूरा करनेवाला कह सकते हैं। आगे में इसी बात पर रौशनी डालने की कोशिश की गई है।

एक मुफ़क्किर ने कहा था : "मशरिक़, मशरिक़ है, मग़रिब मग़रिब, और ये दोनों कभी बाहम नहीं मिल सकते।" हर आदमी की हर बात दुरुस्त नहीं होती, लेकिन यह बात ज़रूर दुरुस्त मानी जा सकती है कि वाक़ई मशरिक़ की कुछ बातें मग़रिब की कुछ बातों से क़तई मुख़्तलिफ़ हैं। कुछ ख़ूबियाँ हमारी मशरिक़ी रिवायात और इक़्तदार में पाई जाती हैं। कुछ अच्छाइयाँ मग़रिब के उसूल-पसन्द मुआशरे का लाज़मी और बेहतरीन हिस्सा हैं। मशरिक़ अपनी अख़्लाक़ी क़दरों और रूहानी पाकीज़गी के हवाले से मग़रिब से कहीं बुलन्द है और तरीक़ा-हाए-ज़िन्दगी को दुरुस्त तौर पर चलाने में मग़रिब हमसे कहीं बेहतर है।

कहा जाता है कि अंग्रेज़ बर्रे-सग़ीर से जाते हुए तीन चीज़ें लेकर गएः ख़ौफ़े ख़ुदा, क़ानून का एहतिराम और वक़्त की पाबन्दी। अगर हम अपने मामूलाते ज़िन्दगी पर नज़र डालें तो वाक़ई हमारा दामन उन चीज़ों से ख़ाली दिखाई देता है। लेकिन मग़रिब ने वालिदैन का एहतिराम, बुज़ुर्गों की इज़्ज़त, रिश्ते-नातों की अहमियत और घर-गृहस्थी जैसी अनमोल चीज़ों को खो दिया है, इसलिए यह बात कही जा सकती है कि मशरिक़ बहरहाल मशरिक़ है। लेकिन सिर्फ़ चन्द अच्छी बातों पर फ़ख़्र

करने से हम अपनी ख़ामियों की पर्दापोशी नहीं कर सकते।

यह बात हमारे ज़ेहनों में रहे कि मुआशरा अफ़राद से तश्कील पाता है। इंसान कभी अकेला नहीं रह सकता। उसे अपनी ज़िन्दगी बेहतर और महफ़ूज़ तरीक़े से बसर करने के लिए गिरोह की ज़रूरत होती है। उसका ख़ानदान क़बीला, क़ौम और मुल्क उसकी इस ज़रूरत को पूरा करने में उसके साथ शरीक होते हैं।

इंसान बिला शुबहा एक मुआशरती हैवान है। इसलिए उसे अपने दिल का हाल सुनने-सुनानेवाला कोई हमदम, कोई साथी दरकार होता है। तारिकुद्दुनिया हो जाने से, दुनिया को त्याग देने से इंसान को कभी सुकून मयस्सर नहीं आता। इसलिए अल्लाह तआला ने अहले-ईमान को रिश्ता निभाने, घर बनाने, ख़ानदान के साथ मिल-जुलकर रहने की तल्क़ीन की कि इंसान एक-दूसरे के दुख-दर्द को बाँट सके, एक-दूसरे की ख़ुशियों में शरीक हो सके, मुश्किलात में एक-दूसरे की मदद कर सके और जब ख़ुद किसी परेशानी का शिकार हो तो उसे चार लोग हौसला देनेवाले मौजूद हों। लेकिन ज़रा अपने मुआशरे के मज्मूई हालात पर नज़र डालिए तो मुआशरे की हालत कुछ और ही नज़र आती है। ऐसे ही हालात पर मिर्ज़ा ग़ालिब का यह शेर सही साबित होता है :

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो।
हम सुख़न कोई न हो और हम ज़बाँ कोई न हो॥

और मुआशरे की हालते ज़ार को देखते हुए फ़ैज़ को अपना दर्द इन लफ़्ज़ों में बयान करना पड़ा :

ज़िन्दगी क्या मुफ़्लिस की क़ुबा है जिसमें।
हर घड़ी दर्द के पेवन्द लगे जाते हैं॥

यह कैफ़ियत हर उस दर्दमन्द और हस्सास शख़्स के दिल पर तारी होती है जो इंसान को इंसान से मुहब्बत करते हुए देखना चाहता है। जब वह इंसान को महज़ औलादे-आदम नहीं बल्कि शर्फ़े-इंसानियत से भी हमकिनार देखना पसन्द करता है, मगर क्या हमारा मुआशरा जिसमें

बेशुमार ख़ूबियाँ हैं, वाक़ई इतना ही क़ाबिल है जितना हम कहते हैं या समझते हैं। हम घर और गृहस्थी यानी चादर और चारदीवारी के तहफ़्फ़ुज़ की बात करते हैं, लेकिन यह हमारा ही मुआशरा है जहाँ औरत अगर अकेली हो तो ख़ुद को ग़ैर-महफ़ूज़ समझती है और अपने हक़ीक़ी रिश्तों के साथ हो तब भी इस्तहसाल का शिकार होती है।

आज हमारे मुआशरे में ख़वातीन अपने हक़ीक़ी रिश्तों के हाथों ज़्यादा ज़लील व ख़्वार होती हैं। अगर वह बेटी है तो बाप की इज़्ज़त पर क़ुरबान हो रही है। माँ है तो बेटे की मुहब्बत पर मर रही है, बहन है तो भाई की ग़ैरत के बोझ तले पिस रही है और बीवी शौहर की ज़्यादती का शिकार है। ग़र्ज़ वह सास है या बहू, ननद है या भावज, देवरान है या जेठानी, जहाँ-जहाँ मर्द उसके साथ है वह अपनी जैसी दूसरी औरत का इस्तहसाल कर रही है क्योंकि कमज़ोर की हुकूमत कमज़ोर ही पर होती है। मर्द पर वह हाकिम नहीं हो सकती, इसलिए अपनी जैसी औरत को महकूम बनाकर ख़ुश होती है।

एक तरफ़ तो हम अपने बुज़ुर्गों का ख़याल रखने का दावा करते हैं, और दूसरी तरफ़ पब्लिक ट्रांस्पोर्ट में खड़े होकर सफ़र करनेवाले बुज़ुर्गों पर नज़र डालिए। बैंकों की क़तार में, टेलीफ़ोन और बिजली वग़ैरह के बिल जमा करने की क़तार में, सौदा सल्फ़ लाने ले जानेवाले, बोझ उठानेवाले अपनी जिस्मानी ताक़त से ज़्यादा मुश्किल काम करनेवाले, अस्पतालों में खड़े हुए बेबस व लाचार बुज़ुर्गों को देखिए! क्या हममें से ज़्यादातर लोग ऐसे हैं या चन्द लोग ऐसे हैं जो उन बुज़ुर्गों की मदद करके ख़ुशी महसूस करते हैं? सोचने और करने के लिए हमारे पास बेशुमार बातें और बहुत-से काम हैं, बस साहिबे दिल होना चाहिए। हमारे यहाँ इन बातों को बयान करने का मक़सद, सिर्फ़ आपके ज़ेहन पर दस्तक देना है। यह सब तै-शुदा बातें हैं लेकिन मज्मूई तौर पर जो नज़र आता है उसे देखकर उसपर ग़ौर करके अगर अपनी ख़ामियों को दूर कर लिया जाए तो मशरिक़ यक़ीनन अपनी ख़ूबियों के साथ मग़रिब से ज़्यादा बेहतर मुआशरा बन सकता है, क्योंकि ज़िन्दगी टेक्नालॉजी के साथ नहीं, इंसानों के साथ बसर की जाती है।

फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर बिला उज़्र सो जाना मना है

सुबह की नमाज़ पढ़कर तुलूअ आफ़ताब तक बग़ैर किसी वजह के सोना दुरुस्त नहीं है। यह इबादत और ज़िक्रे इलाही का वक़्त है। तमाम चीज़ें अपनी-अपनी ज़बान में ख़ुदा की हम्द व सना और तस्बीह में मसरूफ़ होती हैं। इंसान को ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिए। सुबह को सोने से आदमी की रोज़ी सल्ब हो जाती है। नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं : "सुबह का सोना रोज़ी से महरूम कर देता है।" हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) रिवायत करती हैं कि मैं सुबह को सोई हुई थी, रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे पास से गुज़रे तो आप (सल्ल०) ने पाँव से मुझे हिलाकर फ़रमाया : "ऐ मेरी प्यारी बच्ची! खड़ी हो जा। परवरदिगार की रोज़ी के पास हाज़िर हो। ग़ाफ़िलीन में से मत हो। अल्लाह तआला सुबहे सादिक़ और आफ़ताब निकलने के दर्मियान लोगों की रोज़ियाँ तक़्सीम करता है।" और हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आफ़ताब निकलने से पहले सोने से मना फ़रमाया है। लिहाज़ा सुबह की नमाज़ के बाद ज़िक्रे-इलाही, तिलावते-क़ुरआन मजीद और वज़ाइफ़ में मशग़ूल रहना चाहिए। अल्लाह तआला हमको नेक अमल की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाए। (आमीन!)

ऐ मालिके दो-जहाँ
ऐ मेरे प्यारे ख़ुदा
हमपर रहमत हो सदा

आँख से जो बहता है पानी
उसपर हो तेरी मेहरबानी

सीने में जो दर्द जागे
तेरा मरहम उसपर लागे

जान पर बन आई है
हर सू रुसवाई है
हमपर रहमत हो सदा

लब भले ख़ामोश हों
सुन रहा है तू सदा

सब का तू हाजत रवा
मुश्किल में तू मुश्किल-कुशा

रास्ते ख़ामोश हैं
गुलिस्ताँ वीरान है
हमपर रहमत हो सदा

तेरी रहमत से है रौशन
यह जहाँ तो इब्तदा तू इंतिहा

तूफ़ाँ में शमा जला
कश्ती तू साहिल पर लगा
हमपर रहमत हो सदा

कुछ मुन्तख़ब अश्आर

ग़ैर आबाद घर का दरवाज़ा
कौन खोलेगा खटखटाने से

शाम होते ही महक उठी फ़िज़ा
याद उनकी रात रानी हो गई

बू कहाँ से आएगी माँ-बाप के अतवार की।
दूध है डिब्बे का और तालीम है सरकार की ॥

आदमी कोई हो चेहरे से न परखा जाए।
क्या ज़रूरी है कि अन्दर भी हो बाहर जैसा ॥

✓